बाबूलाल ठाकुर ज्योतिषाचार्य

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

(भाग ६) मुहूर्त खण्ड
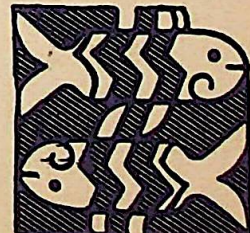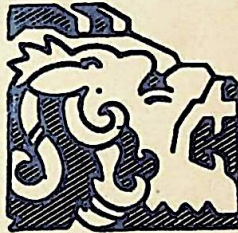
सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

[भाग ६]

मुहूर्त खण्ड

बी० एल० ठाकुर, ज्योतिषाचार्य

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली • मुम्बई • कलकत्ता • चेन्नई • बंगलौर

पुणे • वाराणसी • पटना

भूमिका

समय के अनुसार किसी विशेष कार्य को करने के निमित्त विद्वान ऋषियों ने मुहूर्त का निर्माण किया है। अर्थात् विशेष कार्य के लिए विशेष समय निर्धारित किया है। इसके लिए तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्र मास, सूर्य मास, अयन, ग्रहों के उदय अस्त का विचार, सूर्य चन्द्र ग्रहण, दैनिक लग्न आदि सबका विचार कर शुभ कार्य के निमित्त शुभ मुहूर्त का निर्माण किया है।

शुभ कार्य के इच्छुक मनुष्यों को इसका विचार अवश्य कर शुभ मुहूर्त में ही अपना कार्य सम्पादन करना चाहिए। विशेष कार्य में शुभता लाने को विशेष मुहूर्त ऋषियों ने क्यों निर्माण किया है? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। समय परिवर्तनशील है जो आज है वह कल नहीं है।

सृष्टि में अनेक शक्तियाँ कार्य कर रही हैं जिनका प्रभाव भूमण्डल और भू वासियों पर पड़ रहा है जिनकी खोज के निमित्त वैज्ञानिक भिड़े हुए हैं। विज्ञानवेत्ताओं ने खोज कर पता लगाया है कि प्रत्येक प्राकृतिक एवं कृत्रिम वस्तुओं में प्रकाश, उष्णता एवं किरण होती है। इसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्र एवं ग्रहों में अनेक शक्तियाँ होती हैं जिनका प्रभाव भूमण्डल पर पड़ रहा है। प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भी अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार किरण का प्रकाश होता है जिनकी फोटो लेकर विज्ञान ने प्रगट कर दिया है। महात्माओं की शक्ति के अनुसार उनके मस्तिष्क से किरण निकलती है जिसे औरा (बल्व) कहते हैं। आधुनिक चित्रकार जिसे अपने चित्र में भी बना कर प्रगट करते हैं। प्रत्येक मनुष्य के शरीर में विद्युत एवं चुम्बक शक्ति कम रहती है जिसमें बाहरी गुप्त अदृश्य शक्तियों का प्रभाव पड़ता रहता है।

देखो वायु मण्डल में भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ने से ओले गिरते हैं, बिजली चमकती है, वज्रपात होता है। वायु के कोप से संहारक चक्रवात होता है। अधिक वृष्टि से प्रलय सदृश धन-जन की हानि होती है। आकाश में उल्कापात होता है। बदलई होने से वनस्पति आदि में भिन्न प्रकार के कीटाणु उत्पन्न होते हैं। मनुष्यों में जुकाम, फ्लू, बुखार, हैजा, मलेरिया आदि विकार भिन्न-भिन्न समय के अनुसार होते रहते हैं।

इनके अतिरिक्त पृथ्वी पर आकर्षण शक्ति, चुम्बक शक्ति, विद्युत शक्ति, ब्रह्माण्ड किरण (कास्मिक रेज) अदृश्य रेडियो तरंगें विद्युत तरंगें आदि का प्रभाव पड़ता रहता है। चाँद की तिथियों के अनुसार समुद्र में घट-बढ़ ज्वार-भाटा होता रहता है। सूर्य पर जब काले धब्बे दिखते हैं उस समय संसार में घटनाएँ और मृत्यु अधिक होती हैं ऐसा वैज्ञानिकों का कहना है।

सूर्य चन्द्र का प्रभाव प्रत्यक्ष देखने में आता है। सूर्य जब रोहणी में आता है बहुत तपन होती है। मृगशिर में कुछ ठंडक आ जाती है। आर्द्रा में वर्षा आरम्भ हो जाती

है। सूर्य नक्षत्र के अनुसार किसान खेतों में बीज बोते हैं। नक्षत्र चूकने पर फसल की उत्पत्ति में अन्तर पड़ जाता है। इसी प्रकार चान्द्र मास में भी भिन्नता मिलेगी। जिस का प्रभाव भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न होता है। कृष्ण और शुक्ल पक्ष के विचार से कार्य में अन्तर पड़ता है। चान्द्र मास का सम्बन्ध नक्षत्रों से है जैसे जिस मास की पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र हुआ वह चैत्र, विशाखा में वैशाख आदि मास जाने जाते हैं। चंद्र मास और नक्षत्रों का घना सम्बन्ध है। तिथि, योग, करण आदि भी इसी प्रकार चन्द्र सूर्य से सम्बन्धित हैं। वार का सम्बन्ध ग्रहों से है। शुभ ग्रह का शुभ, अशुभ ग्रह का अशुभ वार प्रभावशील होते हैं।

पृथ्वी में भिन्न मौसम का प्रभाव किसी वस्तु विशेष पर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रगट होता है जैसे गेहूँ का घुन दूसरे प्रकार का है चने का घुन दूसरी प्रकार का है छुल्ली लगती है। गेहूँ की फसल में गेरुआ लगता है आदि इस भिन्नता का कारण और भेद विज्ञान भी अभी तक नहीं जान पाया है।

ऐसे ही कई भविष्य दर्शक स्वप्न होते हैं। स्वप्न में देखी बात वर्तमान में, कोई-कोई भविष्य में, दिखे स्वप्न के अनुसार ही घटित होते हैं जिनके ऐतिहासिक अनेक उदाहरण हैं इस प्रकार सृष्टि में अनेक गुप्त शक्तियाँ काम कर रही हैं। गुप्त शक्तियों की खोज में वैज्ञानिक भिड़े हुए हैं। विना चालक के उपग्रह चन्द्र, मंगल, शुक्र आदि ग्रहों को भेजे जा रहे हैं जिनका नियन्त्रण पृथ्वी से ही हो रहा है। रेडियो और टेलीविजन आदि शक्तियों के द्वारा मंगल आदि ग्रहों का भेद और शक्तियाँ जानने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इन सबका उदाहरण देने का आशय यह है कि सूर्य चन्द्र नक्षत्रों आदि का भिन्न प्रभाव पृथ्वी पर पड़ रहा है। मनुष्य नहीं जान सकता कौन प्रभाव अच्छा और शुभ दायक है और कब अशुभ है। समय का बड़ा प्रभाव है कोई फूल प्रातः खिलता है कोई मध्याह्न में कोई अर्द्ध रात्रि में खिलता है। ज्वार भाटा समय के अनुसार होता है। चन्द्र आदि ग्रहों की गति समय के अनुसार होती है। सम्पूर्ण संसार समय से बँधा हुआ है। इसलिए प्रत्येक परिस्थिति के अनुसार समय का बड़ा महत्त्व है। इस कारण प्राचीन ऋषियों ने शुभ कार्य करने का शुभ समय निर्धारित कर दिया है। उसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को अवश्य शुभ समय विचार कर अपना कार्य सम्पादन कर लेना चाहिये।

गृहस्थी में प्रत्येक मनुष्य के अनेकों कार्य ऐसे होते हैं जिनके सम्पादन के निमित्त पंडितों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। कहीं पंडित नहीं मिलते। इस कठिनाई को दूर करने के निमित्त मुहूर्त खंड में सरल रीति से समस्त मुहूर्तों का विचार दिया है जिस से प्रत्येक मनुष्य अपने शुभ कार्य के निमित्त स्वयं शुभ मुहूर्त का विचार कर सकें।

आशा है कि पाठक इससे लाभ उठायेंगे।

—लेखक

विषयसूची

विषय **पृष्ठ**

संस्कार

विवाह

विषय	पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

विषय **पृष्ठ**

———

श्री गणेशाय नमः

गणप गिरा शिव सूर्य नित, सुमरो मंगल हेत।
पूर्ण करेंगे काज सब, विघ्न सकल हर लेत ॥ १ ॥
ग्रह तारागण आदि सब, रवि प्रभाव आधार।
सकल कीजिये काज निज, शुभ समय निर्धार ॥ २ ॥
तिथि नक्षत्र योगादि ये, चंद्र सूर्य आधीन।
जैसे तिमिर प्रकाश वत, समय शुभाशुभ कीन ॥ ३ ॥
समयानुसार चतुर जन, साध लेंहि सब काम।
तभी मनोरथ पूर्ण हो, सुधरे कार्य ललाम ॥ ४ ॥

वर्ज्यावर्ज्य प्रकरण

शुभ मुहूर्त विचारने के समय नीचे बताये योगों को साधारण प्रकार से शुभ कार्य में वर्जित करना।

(१) जन्मर्क्ष (जन्म नक्षत्र), जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिन (माता-पिता की मृत्यु का दिन), माता का रजोदर्शन, चित्त भंग, रोग या उत्पात आदि।

(२) क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिमास, क्षय वर्ष, दग्ध तिथि।

(३) विष्कुम्भ, वज्र इन योगों के आदि की ३ घड़ियाँ वर्जित हैं। परिघ योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रथम ५ घड़ी, गंड, अतिगंड इनके आदि की ५ घड़ी, अन्य मत से ६ घड़ी, व्याघात के आदि की ९ घड़ियां वर्जित हैं। व्यतीपात और वैधृति सम्पूर्ण वर्जित करना।

(४) तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार के गंडांत।

(५) भद्रा (विष्टि करण)।

(६) रविवार, मंगलवार, शनिवार को पाप ग्रह की होरा।

(७) तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जो अन्यत्र दिये हैं।

(८)

तिथि	सप्तमी	५	६	८	९	१०	११
नक्षत्र	अश्विनी	हस्त	मृग	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
वार	मंगल	रवि	सोम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

इनका योग शुभ कार्य में वर्जित है।

(९) पापग्रह युक्त, पाप भुक्त या पाप भोग, पाप विद्ध नक्षत्र या लत्ता वाला नक्षत्र, नक्षत्रों की विष संज्ञक घटियां।

(१०) पापग्रह युक्त चंद्र, पापयुक्त लग्न, या पापयुक्त लग्न का नवांश।

(११) जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न, दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चंद्र क्षीण चंद्र वर्जित है। शुक्ल पक्ष सब कार्यों में शुभ है। कृष्ण पक्ष की १३, १४, ३ तिथि अन्य मत से ८ तिथि भी वर्जित है। शेष तिथियां शुभ हैं।

(१२) लग्नेश ६, ८, १२ स्थान में हो, जन्मेश अस्त हो, पापग्रहों का कर्तरी योग हो तो वर्जित है।

(१३) दोपहर और अर्द्ध रात्रि की संधि के १० पल पहिले के १० पल बाद के अर्थात् २० पल वर्जित हैं।

(१४) मास के अंत का दिन, नक्षत्र के आदि की २ घड़ियाँ, तिथि के अंत की १ घड़ी, लग्न के अंत की आधी घड़ी वर्जित हैं।

(१५) वर्ष में अषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक वर्जित है।

(१६) जिस नक्षत्र पर मंगल आदि पाप ग्रहों का युद्ध हो ६ महीने बाद तक शुभ कार्य नहीं करना। ग्रहों के एक राशि एक अंश कला आदि समान होने पर ग्रह युद्ध कहा जाता है जिसका स्पष्टीकरण गणित खंड में दिया है।

(१७) पात, एकार्गल, क्रांति साम्य इसका वर्णन विवाह प्रकरण में दिया है। वर्जित हैं।

(१८) ग्रहण के पहिले ३ दिन और बाद के ७ दिन वर्जित हैं। जिस नक्षत्र पर ग्रहण पड़ा है वह नक्षत्र वर्जित है। उस दिन कोई शुभ काम नहीं करना। ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास तक वर्जित है। यदि आधा ग्रहण हो तो ३ महीने तक, चौथाई ग्रहण हो तो एक मास तक वह नक्षत्र वर्जित है। यदि ग्रहअस्तोदय या ग्रहअस्तास्त हो तो ३ दिन पहले और ३ दिन बाद के वर्जित हैं। अर्थात् ग्रहण पड़ते समय सूर्य या चंद्र अस्त हो जाय तो पहिले ३ दिन में कोई शुभ काम नहीं करना। यदि ग्रहण पड़ते समय सूर्य चन्द्र उदय हो तो ग्रहण के बाद के ३ दिन में कोई शुभ काम नहीं करना।

(१९) गुरु शुक्र का अस्त बाल्य वार्द्धक्य गुर्वादित्य (गुरु सूर्य जब तक एक राशि में रहें) गुरु की वक्रता व अतिचार। गुरु के अस्त के पूर्व १५ दिन, वार्द्धक्य और उसके बाद १५ दिन बाल्य शुक्र के पूर्व अस्त के पूर्व १५ दिन पश्चिम अस्त के पूर्व ५ दिन वार्द्धक्य है। पूर्वोदय के बाद ३ दिन पश्चिम उदय के पूर्व १० दिन बाल्य है। अन्य मत से गुरु और शुक्र के १०-१० दिन, अन्य मत से ७-७ दिन ही बाल्य और वार्द्धक्य है। आवश्यकता में किसी ने कहा है कि बाल्य और वार्द्धक्य के ३ दिन ही वर्जनीय हैं।

सिंह और मकर का गुरु वर्जनीय है।

चंद्र कृष्णपक्ष १४ का वार्द्धक्य और शुक्ल १ का बाल्य है।

अमावस्या का चंद्र अस्त है।

(२०) केतु उदय, भूकम्प आदि उत्पात होने के पश्चात् ७ दिन तक ७ दिन मना है। वसंत आदि ऋतुओं में बिजली गिरना आदि शुभ उत्पात है। परन्तु इनको छोड़कर दूसरे ऋतुओं में होने के कारण उनको उत्पात कहा गया है।

परिहार—गर्भाधान से अन्नप्राशन तक संस्कारों में उक्त अस्त आदि दोषों का प्रतिबंध नहीं है।

उत्पात प्रकार

उत्पात ३ प्रकार के संसार में होते हैं (१) भौम, (२) दिव्य, (३) आंतरिक्ष। प्रकृति के विरुद्ध जो बातें प्रगट हों उनको उत्सर्ग या उत्पात कहते हैं।

(१) भौम उत्पात—भूमि चल-अचल पदार्थों में जो उत्पात हैं वे एकदेशीय भौम उत्पात कहलाते हैं। भौम उत्पातों का तुच्छ फल होता है।

(२) दिव्य उत्पात—ग्रह नक्षत्र और केतुओं के उत्पात दिव्य उत्पात कहलाते हैं। इनका पूर्ण फल होता है।

(३) आन्तरिक्ष उत्पात—निर्घात, परिवेश, उल्का, इन्द्रपुर आदि उत्पातों को आंतरिक्ष उत्पात कहते हैं जिसका पूर्णफल ६ मास या १ वर्ष में होता है।

यदि रात्रि में इंद्र धनुष दिखाई दे, दिन में उल्का तथा तारा दिखे, बड़ी उल्का का गिरना, आकाश से लकड़ो, घास तथा रुधिर की वर्षा, दिशाओं में धुँआँ, रात-दिन भूकम्प हो ये सब दुष्ट लक्षण हैं और देश को हानि पहुँचाते हैं। गंधर्व नगर आकाश में महल आदि दिखें, विना अग्नि के चिनगारी उड़ना, विना ईंधन के अग्नि का जलना रात में सफ़ेद काक दिखना, गाय हाथी घोड़ ऊँटों आदि के शरीर में से चिनगारी निकलना, २-३ सिर वाले काले जंतु या किसी जाति के जंतु में दूसरी जाति का जंतु उत्पन्न होना, सूर्य के चारों ओर अन्य सूर्य का दिखाई देना, मनुष्य वस्ती में गीदड़ का रहना, पूछ वाले तारा का दिखाई देना। रात्रि में कौआ का तथा कबूतरों का शब्द, विना समय वृक्षों में फूल-फल निकलना आदि महा उत्पात कहलाते हैं। किसी का फल स्थाननाश किसी का मृत्यु है, किसी का फल शत्रुभय, किसी का उदासीन से भय, किसी का फल पशु नाश, किसी का फल नाश, अपयश होता है किसी का दुःख-सुख मिश्र फल होता है।

उल्कापात—आकाश से तारे गिरना। हरिश्चंद पुर गंधर्व नगर=आकाश महल आदि दिखना। निर्घात=भयंकर शब्द के साथ बिजली गिरना। दिग्दाह=दिशाओं का लाल रंग आदि दिखना।

उपरोक्त योगों का स्पष्टी करण और भी आगे दिया गया है।

कुलिक अर्द्धयाम आदि योगों का विचार

वर्तमान वार से शनि तक गिन कर×२=जो अंक आवे वही=कुलिक
,, ,, बुधवार ,, ,, ×२= ,, ,, ,, =कालवेला
,, ,, गुरुवार ,, ,, ×२= ,, ,, ,, =यमघंट
,, ,, मंगल ,, ,, ×२= ,, ,, ,, =कंटक

उदाहरण—रविवार को जानना है।

रवि से शनि तक ७×२=१४ वाँ मुहूर्त रवि को=कुलिक हुआ
,, बुध ,, ४×२=८ वाँ ,, ,, =कालवेला
,, गुरु ,, ५×२=१० वाँ ,, ,, =यमघंट
,, मंगल ,, ३×२=६ वाँ ,, ,, =कंटक

दिन के १६ वें अंश को मुहूर्त कहते हैं।

कुलिक में शुभ कार्य करे तो = कार्य सर्वथा नाश
कालवेला में ,, ,, ,, = मृत्युदायक
यमघंट में ,, ,, ,, = दरिद्रता
कंटक में ,, ,, ,, = विघ्नकर्ता

कालवेला में यात्रा = मृत्यु हो। विवाह = स्त्री विधवा हो। व्रतबंध = ब्रह्म हत्या का पाप लगे। इस कारण इसे वर्जित करना। परन्तु इनका रात्रि में दोष नहीं है। यदि अति आवश्यक कोई कार्य हो तो इन दोनों का उत्तरार्द्ध त्याग करना।

वार	रविवार	सोम०	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
कुलिक दिन में	१४ वाँ	१२	१०	८	६	४	२
रात्रि में	१३	११	९	७	५	३	१
कालवेला दिन	पंचम	२	६	३	७	४	१-८ यमार्द्ध कालवेला
रात्रि में	६	४	२	७	५	३	१-८ यमार्द्ध कालरात्रि

वार	रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्द्धयाम	७	९	३	९	१५	५	१

अर्द्धयाम (यमार्द्ध) = १ प्रहर का आधा। अर्द्धयाम चक्र

वार	रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
संख्या	४	७	२	५	८	३	६
प्रहर	१२	२४	४	१६	२८	८	२०
तिथि	१	२८	८	२०	२२	१२	२४

रविवार को चतुर्थ सोम को सप्तम आदि ऊपर बताये अनुसार यमार्द्ध वार वेला होता है। प्रत्येक वार में पूर्वोक्त वार वेला राहु की होती है यह वर्जित है। यही चौघड़िया चक्र में नीच बताया है। दिनमान ÷ ८ = १ यमार्द्ध। १ दिन = ४ प्रहर = ८ घड़ी। यमार्द्ध = आधा प्रहर = ४ घड़ी। एक मुहूर्त = २ घड़ी = $\frac{\text{दिनमान}}{१६}$ दिनमान के घटने बढ़ने से उपरोक्त समय में अन्तर पड़ता है।

दिन रात्रि का चौघड़िया = नाम सदृश फल = यमार्द्ध वारवेला

वार	रविवार		सोम		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
समय	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
	उद्वेग	चर	अमृ०	का०	रो	उ	ला	अ	शु	रो	च	ला	का	शु
	चर	लाभ	का	शु	उ	च	अ	का	रो	उ	ला	अ	शु	रो

वार	रविवार		सोम		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
समय	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
	लाभ	अमृत	शु	रो	च	ला	का	शु	उ	च	अ	का	रो	उ
	अमृत	काल	रो	उ	ला	अ	शु	रोग	च	ला	का	शु	उ	च
	काल	शुभ	उ	च	अ	का	रो	उ	ल	अ	शु	रो	च	ल
	शुभ	रोग	च	ला	का	शु	उ	च	अ	का	रो	उ	ला	अ
	रोग	उद्वेग	ला	अ	शु	रोग	च	ला	का	शु	उ	च	अ	का
	उद्वेग	चर	अ	का	रो	उ	ला	अ	शु	रो	च	ला	का	शुभ

चौघड़िया मुहूर्त के स्वामी

मुहूर्त	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
स्वामी	रवि	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल

इनमें चर, लाभ, अमृत और शुभ श्रेष्ठ है। इनमें शुभ कार्य करना। परन्तु यात्रा में इनके साथ दिशाशूल का भी विचार करना। जिसके विषय में आगे बताया है।

कार्य में चौघड़िया का लोग स्थूल रूप से इस प्रकार विचार कर लेते हैं। दिन हो तो मध्याह्न तक ४ पश्चात् ४ सूर्य अस्त तक मुहूर्त सूर्योदय के पश्चात अनुमान कर समय का विभाग कर लेते हैं। परन्तु रीति यह हैं कि दिनमान को ६० घड़ी से घटाने पर रात्रिमान होता है। दिनमान या रात्रिमान में ८ का भाग देने पर एक मुहूर्त का समय निकल आता है। इस समय के घड़ी पल को $\times \frac{२}{५}$ अर्थात् २ का गुणा कर ५ का भाग देकर घंटा मिनट बना लो। सूर्योदय के घटा मिनट में जोड़ते जाने से एक मुहूर्त का समय निकल आयगा। आगे और जोड़ते जाने से सूर्य अस्त तक के आठों मुहूर्त का समय निकल आयगा।

उदाहरण—सोमवार को दिनमान मान लो ३३ घ०–३० प० है। ६० से इसे घटाने पर रात्रिमान २६–३० प्राप्त हुई। रात्रि का मुहूर्त जानना है। रात्रिमान २६–३० ÷ ८ = ३ घ०–१८ प०–४५ वि० = घंटा १–१९–३०। उस दिन सूर्योदय ५-१८ अस्त घंटा ६–४२ पर है। रात्रिमान का अष्टमांश घंटा १–१९–३० में सूर्य अस्त का समय ६–४२ जोड़ा तो सोमवार की रात्रि को ८–१–३० बजे तक काल का चौघड़िया रहेगा। पश्चात् इसमें १–१९–३० और जोड़ा तो प्रगट हुआ कि रात्रि को ९–२१ बजे पर शुभ नाम का दूसरा मुहूर्त आयगा वह अच्छा है। इसी प्रकार और आगे के मुहूर्त निकाल लेना।

दिशाशूल विचार के सम्बन्ध में मत यह है कि यात्रा में जो चौघड़िया चुना है देखना उस चौघड़िया का स्वामी ग्रह यात्रा की दिशा का दिशाशूल सूचक है या नहीं, यदि है तो उसे त्याग कर अन्य में यात्रा करना। जैसे लाभ में उत्तर जाने का विचार है। लाभ का स्वामी बुध है जैसा ऊपर बताया है। उत्तर में बुध दिशाशूल सूचक है अतः लाभ की यात्रा में कष्ट होगा इस कारण उसे त्याग अन्य चौघड़िया में यात्रा करना।

अर्द्धयाम चक्र में राहु की वारवेला दी है उसके अनुसार चौघड़िया चक्र में रविवार को चौथा, सोमवार को सातवाँ, मंगल को दूसरा इत्यादि अर्द्धयाम में बताये चक्र के अनुसार चौघड़िया में वारवेला राहु की समझना ।

कालवेला चक्र के अनुसार रविवार को दिन में पाँचवाँ कालवेला और छठवाँ काल वेला रात्रि में । सोमवार को दूसरा यामार्द्ध कालवेला चौथा कालवेला रात्रि आदि चक्र के अनुसार होगा उसे चौघड़िया चक्र में विचार लेना ।

राहु की वारवेला, कालवेला, कालरात्रि शुभ कार्य में त्यागना ।

भद्रा विचार

तिथि के आधे को करण कहते हैं । विष्टिकरण को भद्रा कहते हैं । शुक्ल पक्ष की अष्टमी और पूर्णमासी इन दोनों तिथियों के पूर्वार्द्ध में और चौथ और एकादशी के उत्तरार्द्ध में भद्रा होती है । कृष्ण पक्ष की तीज और दशमी इन दोनों तिथियों के उत्तरार्द्ध में और सप्तमी एवं चतुर्दशी इन दोनों तिथियों के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है ।

भद्रा तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
भद्रा मुख प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
भद्रा पूछ प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४

इन प्रहरों में पूर्व ५ घड़ी भद्रा का मुख अशुभ है । नीचे बताये प्रहरों में अन्त की ३ घड़ी पूछ के शुभ हैं ।

तिथि के उत्तरार्द्ध में होने वाली भद्रा यदि दिन में हो तो वह = शुभ करणी होती है ।
,, पूर्वार्द्ध ,, ,, ,, रात्रि ,, ,, = शुभ करणी होती है ।

भद्रा का निवास

लोक	स्वर्गवास	पातालवास	मृत्यलोकवास
चन्द्र राशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, १०-११

जिस लोक में भद्रा का निवास हो उसी लोक में उसका शुभाशुभ फल भी होता है । अर्थात् मृत्युलोक में भद्रा हो तब मृत्युलोक वासियों को अशुभ होता है । भद्रा भूलोक में हो तो सदा वर्जित करना । कार्य सिद्ध नहीं होता । स्वर्ग में = धन धान्य प्राप्ति । पाताल में भी धन प्राप्ति फल कहा है ।

भद्रा मुख पुच्छ विचार

भद्रा	मुख	गला	छाती	नाभि	कमर	पुच्छ
घटी	५	१	११	४	६	३
फल	कार्यनाश	मरण	धन हानि	बुद्धिनाश	कलह	विजय
			दरिद्रता	कलह	उन्मत्तता	जय

अति आवश्यक कार्य में भद्रा का मुख केवल छोड़ देना क्योंकि सर्प के मुँह में विष है । इससे सर्पणी भद्रा का मुँह छोड़ देना । वृश्चिक के पूंछ में विष है इससे वृश्चिक की भद्रा की पूंछ छोड़ देना ।

भद्रादोष—जो अपनी भलाई चाहता हो तो कोई काम भद्रा में नहीं करना, युद्ध में, राज दर्शन में, वैद्य बुलाने में, जल के तरने में, शत्रु के उच्चाटन करने में, स्त्री सेवा करने में, यज्ञ स्नान में और गाड़ी की सवारी में भद्रा का विचार नहीं करना।

करण नाम और फल

	शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष			
	पूर्व दल	उत्तर दल	पूर्व दल	उत्तर दल	स्वामी	फल
किंस्तुघ्न	१	स्थिर	०	०	वायु	सब शुभ कार्य करे
बव	५ १२	१ १५	४ ११	७ ०	इंद्र	व्रत उत्सव देवालय आदि शुभ कर्म
बालव	२ ९	५ १२	१ ८	४ ११	ब्रह्मा	ब्राह्मणों से हित करे
कौलव	६ १३	२ ९	५ १२	१ ८	पित्र	उन्माद और मित्रता करे
तैतिल	३ १०	६ १३	२ ९	५ १२	सूर्य	विवाह आदि मङ्गल कार्य करे।
गर	७ १४	३ १०	६ १३	२ ९	भूमि	बीज बोना हल चलाना।
वणिज	४ ११	७ १४	३ १०	६ १३	लक्ष्मी	देव प्रतिष्ठा घर दूकान व्यापार।
विष्टि	८ १५	४ ११	७ १४	३ १०	यम	सब वर्जित परन्तु विप घात क्रूर कर्म वर्जित नहीं।
शकुनि	स्थिर	० ०	० ०	० १४	कलि	मित्रोंपदेश औषधि ग्रहपूजा।
चतुष्पद	स्थिर	० ०	३० ०	० ०	वृषभ	गौ ब्राह्मण राज्य पितृ सम्बन्धी कार्य।
नाग	स्थिर	० ०	० ०	० ३०	सर्प	सौम्य कर्म, युद्ध में जाना धीरज, विद्याभ्यास कर्म।

मुहूर्त बनाना

किसी शुभ कार्य को वर्ष मास दिन आदि की शुद्धि देख कर जिस कार्य के लिये जो मास तिथि नक्षत्र विहित कहे गये हैं वे किस दिन मिलें उस दिन अपनी जन्म राशि के अनुसार चंद्र, तारा और लग्न की शुद्धि देख कर मुहूर्त निश्चित करना चाहिये जैसा आगे बताया है।

वर्ष शुद्धि—जिस बृहस्पति सम्वत्सर के भीतर स्पष्ट गुरु का मार्गी गति से एक राशि में संचार हो वह शुद्ध वर्ष कहा जाता है।

अतिचार—जिस सम्वत्सर में मार्गी गुरु का दो राशियों में संचार हो अर्थात् वर्तमान राशि सम्वत्सर की समाप्ति के पूर्व ही अग्रिम राशि में संचार हो तो वह गुरु का अतिचार कहा गया है। इसके २ भेद हैं।

(१) यदि अतिचारानन्तर पुनः वक्र होकर वह पूर्व राशि में आ जावे तो लघ्वतिचार कहलाता है। उस स्थिति में केवल २८ दिन शुभ कर्म त्याज्य होते हैं।

महा अतिचार क्षय सम्वत्सर—यदि अतिचारानन्तर वक्र होकर पूर्व राशि में नहीं आवे तो महा अतिचार कहलाता है। इस स्थिति में पूर्व राशि सम्वत्सर का लोप हो जाता है। इस लिये लुप्त या क्षय सम्वत्सर कहलाता है।

अधिक सम्वत्सर—जिस सम्वत्सर में स्पष्ट गुरु का राशि संचार नहीं हो वह अधिक सम्वत्सर कहलाता है।

शुद्ध चंद्र मास—जिस चन्द्र मास (२ दर्शान्त के भीतर) में सूर्य की एक संक्रांति हो वह शुद्ध मास है।

क्षयमास—जिस चन्द्र मास में सूर्य की दो संक्रांति हों वह क्षयमास है।

अधिकमास— ,, ,, ,, संक्रांति न हो वह अधिकमास है।

तिथि शुद्ध—जिस तिथि में एक सूर्योदय हो वह शुद्ध तिथि है।

क्षयतिथि—जिस तिथि में सूर्योदय न हो वह क्षय तिथि है।

अधिक तिथि—जिस तिथि में दो सूर्योदय हों वह अधिक तिथि है।

मुहूर्त शुद्धि—जिस कार्य में जो नक्षत्र विहित कहे गये हैं। कार्य काल में उन्हीं नक्षत्रों को शुद्ध समझना।

लग्न शुद्धि—जन्म राशि से ८–१२ वीं राशि छोड़कर अन्य राशि लग्न हो। तथा ८–१२ स्थान में कोई ग्रह न हों। एवं लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह और ३-६-११ स्थान में पापग्रह हों तो लग्न शुद्धि कही जाती हैं। यदि अपनी जन्म राशि से ३-६-१० या १२ वीं राशि लग्न हो तो श्रेष्ठ है।

चन्द्र शुद्धि—जन्म राशि से ४, ८, १२ छोड़कर अन्य राशि में चन्द्र हो।

तारा शुद्धि—जन्म नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र की संख्या में ९ का भाग देना शेष २, ४, ६, ८ बचे तो तारा शुद्ध समझो।

कार्य विशेष में सूर्य शुद्धि—जन्म राशि से २, ५, ७, ९, ११ वीं राशि में गुरु हो। इस प्रकार शुद्ध वर्षादि में चन्द्र तारा आदि की शुद्धि देख कर कार्य करना।

विशेष विचार—शास्त्र में कहा जाता है कि सब प्रकार से शुद्ध योग मिलना कठिन है इसलिये यदि निषिद्ध से विहित की संख्या अधिक हो तो अशुभ फल न होकर शुभ ही फल होता है। इससे अन्य अशुभ योग रहते हुए भी केवल लग्न शुद्धि हो जाय तो अशुभ योगों के फल न होकर शुभ फल होता है।

गुण दोष विचार—गुण या दोष में कौन अधिक है। इसका विचार यत्न से करना। क्योंकि कई गुण ऐसे हैं जो १०० दोषों को नाश करते हैं। जैसे एक बूंद गङ्गाजल लाख दोषों का नाश करता है। एक बूंद मदिरा कई शुभ नाशक है। इससे बलाबल का विचार कर समय का निर्णय करना। निर्बल दोष गुणों से नष्ट हो जाते हैं और अधिक बलवाला फल देता है।

तिथि आदिका गुण विचार—

तिथि फल	नक्षत्र	वार	करण	योग	तारा	चन्द्र	
१ गुणा	चौगुणा	८गुणा	१६गु०	३२गु०	६०गु०	१००गु०	लग्न करोड़ गुणा

मासादि शुद्ध फल—जिस मास में शुद्धि हो सुख और भोग मिलता है। अच्छी तिथि = धन और आरोग्य। नक्षत्र = कार्य सिद्धि। करण = धन प्राप्ति। शुभ योग = इष्ट वस्तु की प्राप्ति। शुभ चन्द्र = अभीष्ट सिद्धि। शुभवार = सर्व सम्पत्तियों की प्राप्ति।

शुभ मुहूर्त = चित्त प्रसन्न हो। शुभ लग्न = बड़ा आनन्द। शुभ लग्नेश = पराक्रम वृद्धि। लग्न बलवान हो = सर्व गुणों का उदय।

कार्य विशेष में ग्रहबल—विवाह तथा उत्सव में गुरु का बल देखना। रजोदर्शन में—सूर्य का। संग्राम में—मङ्गल का। विद्याध्ययन में—बुध का। यात्रा में—शुक्र का। दीक्षा में—शनि का। सब कार्य में—चन्द्र का बल देखना। तारा बली होने से—शुभ चन्द्रमा बली जानो। चन्द्र बल से—सूर्य बली। सूर्य बल से—मङ्गल आदि सब ग्रह बली जानो।

जन्म राशि या नाम राशि विचार—देश, ग्राम, गृह, युद्ध, सेवा तथा व्यवहार में नाम राशि का प्रभाव है। जन्म राशि का विचार नहीं करना। विवाह एवं मंगलादि कार्य, यात्रा तथा गोचर में जन्म राशि प्रधान है नाम राशि नहीं विचारना। कईयों के जन्म नाम के अतिरिक्त व्यवहारों में दूसरा नाम चालू होता है।

स्त्री की राशि शुद्धि—विवाह तथा गर्भाधान में स्त्रियों का चन्द्र बल देखना। शेष कार्यों में पति का चन्द्र बल विचारना। स्त्रियों के सब काम पति की शुद्धि से करना। गर्भाधान आदि का काम स्त्री तथा उसको पति को शुद्धि से करना। विवाह रजोदर्शन, गर्भाधान स्त्री की शुद्धि से करना। शेष कार्य पति की शुद्धि से करना। यदि स्त्री का पति न हो तो स्त्री की शुद्धि से करना।

१२ चन्द्र कब शुभ है—उत्सव, अभिषेक, जन्म, व्रतबंध, विवाह तथा यात्रा में १२ वां चन्द्र शुभ है। पहिले कहा गया है कि ४, ८, १२ स्थान का चन्द्र शुभ कार्य में वर्जित है यह उसका अपवाद है।

चन्द्रतारा बल—शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा बलवान होता है। कृष्ण पक्ष में तारा बलवान होता है।

वर्जित तारा—	पहिला	दशवाँ	१६ वाँ	१८ वाँ	२३ वाँ	२५ वाँ
	जन्म नक्षत्र	कर्म न.	संघात न.	समुदाय न.	विनाश न.	मानस न.

सब कार्यों में इन नक्षत्रों को वर्जित करना।

क्षीण चन्द्र—कृष्ण अष्टमी से शुक्ल अष्टमी तक क्षीण। शुक्ल अष्टमी से कृष्ण ८ तक पूर्ण चंन्द्र है।

शुद्ध स्थान	विवाह में	यात्रा	गृहारंभ	गृहप्रवेश	अन्नप्राशन	सबकार्यों में
ग्रह रहित	सप्तम स्थान	अष्टम स्थान	दशम स्थान	चतुर्थ स्थान	दशम स्थान	अष्टम स्थान

ये स्थान ग्रह रहित होना शुभ है।

गृह प्रवेश, यात्रा, विवाह में वर्जित नक्षत्र—गृह प्रवेश में वर्जित = मङ्गल को अश्वनी में। यात्रा में = शनिवार को वर्जित। विवाह में = गुरुवार को पुष्य में वर्जित करना।

पञ्चांग शुद्धि—तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण को मिलाकर पञ्चाङ्ग कहते हैं। इन पांचों की शुद्धि को पञ्चाङ्ग शुद्धि कहते हैं। यदि पञ्चाङ्ग शुद्धि न हो तो लग्न शुद्धि करना व्यर्थ है।

लग्न शुद्धि—कहा जाता है चन्द्र का बल प्रधान है परन्तु शास्त्रों के अनुसार लग्न बल ही प्रधान है। लग्न में ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं। ३,८ स्थानों में सूर्य या शनि शुभ १२ या ३ स्थान में चन्द्र शुभ। ३-६ स्थान में मगल शुभ। २,३,४, ५,६,९,१० स्थानों में वुध और शुक्र शुभ। २,५,६,८,९,१०,१२ स्थानों में राहु शुभ।

सब कार्यों में ग्रह शुद्धि—सब शुभ कार्यों में ८,१२ स्थानों में ग्रह शुभ नहीं होते। लग्न में पाप ग्रह, छटे स्थान में सौम्य ग्रह, केन्द्र या त्रिकोण में पाप ग्रह शुभ नहीं होते। केन्द्र या त्रिकोण में शुभ ग्रह—शुभ। ३,६,११ में पाप ग्रह शुभ। जो भाव अपने स्वामी या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, वह अधिक बली होता है और पूर्ण फल देता है। यदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो विपरीत फल देता है। सम्पूर्ण शुभ कार्यों में क्रूर ग्रह से युक्त लग्न छोड़ देना चाहिए। छठा शुक्र, आठवाँ मङ्गल, छठा व आठवाँ चन्द्र दोष कारक है। जो लग्नेश नीच का हो या शत्रु गृही हो या अष्टम स्थानी हो या अस्तङ्गत हो या वक्री हो ऐसे लग्न को सब कार्यों में त्याग देना, यदि ऐसे योग में कर्म करे तो सङ्कट उपस्थित हो।

लग्न प्रशंसा—लग्न का विचार न कर कोई कार्य किया जाय वह निष्फल होता है। तिथि, नक्षत्र, योग या चन्द्र का बल लग्न की अपेक्षा कोई चीज नहीं है। लग्न की प्रशंसा गर्ग आदि ऋषियों ने की है। जो लग्न वलवान हो अर्थात् अपने स्वामी या शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, पाप युक्त या दृष्ट न हो।

चन्द्र विचार—लग्न में स्थित पाप ग्रह और चन्द्र वर्जित है। किसी का मत है पूर्ण चन्द्र ४,२ या मेष राशि का लग्न में हो तो शुभ है। चन्द्रमा पर गुरु दृष्टि हो या गुरु से युक्त हो तो अशुभ भी चन्द्र शुभ हो जाता है। जब चन्द्र अपने उच्च का हृ या शुभ नवांश में हो या अपने अधिमित्र के घर में या अपने अधिमित्र के नवांश का हो तो शुभ होता है।

कन्या को चन्द्र दोष लग्न दोष—लग्न शुभ ग्रहों से और सब गुणों से युक्त ह तव भी चन्द्रमा ६,८,१२ स्थानों में हो तो लग्न दोष होता है। वह लग्न वर्जित करना क्योंकि वह कन्या को आपत्ति कारक है।

चन्द्र संग्रह दोष—जव चन्द्र पाप ग्रह युक्त हो तो इस दोष का नाम संग्रह कारक है।

लग्न दोष परिहार—लग्न में शुक्र हो तो हजार दोष शान्त होते हैं। वुध—१० हजार। गुरु—१ लाख दोष शांत करते हैं। जव त्रिकोण में वुध हो या सप्तम स्थान को छोड़कर शेष केन्द्र स्थान में वुध हो तो हजार दोषों का नाश कारक है। शुक्र= २००, गुरु १ लाख दोषों को शान्त करता है।

जब ग्यारहवें स्थान या केन्द्र में लग्नेश या लग्न नवांशेश हो तो सब दोष नाश होते हैं। ग्यारहवें सूर्य सब दोष नाश करते हैं। केन्द्र या त्रिकोण में शुक्र, गुरु या बुध हो तो सब दोष नाश करते हैं।

सुयोग—जब एक ही दिन में अच्छा योग हो और दूसरा बुरा योग हो तो अच्छा बली योग बुरे योगों को नाश कर देता है। किसी का मत है जब लग्न की शुद्धि हो तो बुरे योग का नाश हो जाता है। तथा दोपहर के बाद भद्रा का दोष भी नहीं रहता।

रात्रि योग—जब सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र का नक्षत्र ४, ५, ६, १०, ११ या २० वाँ हो तो रवि योग होता है, यह सब दोषों को नाश करता है। अन्य मत—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनने से ४, ९, ६, १०, १३, २० ये अंक हों तो रवि योग सब दोषों का नाश करता है।

नक्षत्रों से शुभा-शुभ समय जानना—जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक संख्या गिनकर ९ का भाग देना। शेष १ गर्दभ = अर्थ नाश, २ घोड़ा = धन लाभ, ३ हस्ती = लक्ष्मी, ४ गेंडा = मरण, ५ जंबुक=स्वल्प लाभ, ६ सिंह = सर्व कार्य सिद्धि, ७ काक = निष्फल, ८ मोर = सुख प्राप्ति, ९ हंस = सर्व सिद्धि।

जन्म चन्द्र में वर्जित विशेष—जन्म का चन्द्र सब कार्यों में शुभ है। परन्तु यात्रा, युद्ध, विवाह प्रवेश व क्षौर कर्म इन ५ कार्यों में वर्जित है।

चन्द्रमा का और भी शुभाशुभ विचार—चन्द्र पाप ग्रहों के मध्य हो या पाप युक्त हो व पापग्रह से सप्तम हो तो चन्द्र शुभ भी हो तो भी उसे अशुभ जानो। शुभ ग्रह के नवांश में चन्द्र हो व अपने मित्र नवांश में हो या गुरु से दृष्ट हो तो चन्द्र अपनी राशि से अशुभ हो तो भी शुभ है। अन्य विचार—शुक्ल पक्ष की परिवा को जिसकी राशि से चन्द्र शुभ हो तो दोनों पक्ष में चन्द्र को शुभ समझना अर्थात शुक्ल पक्ष में अशुभ हो कृष्णपक्ष में शुभ हो तो दोनों पक्ष में अशुभ समझना। यह चन्द्र का बल सङ्कट में विवाह में और यात्रा में लेना।

चन्द्र का लोकवास—वर्तमान तिथि में ५ का गुणा कर एक जोड़कर तीन का भाग देना। शेष १—चन्द्र स्वर्ग में। २—पाताल में। ३—मृत्यु लोक में।

चन्द्र का भाव फल—पहिले—लक्ष्मी कारक। २—मन को सन्तोष। ३—धन-सम्पत्ति। ४—कलह। ५—ज्ञान वृद्धि। ६—सम्पत्ति दायक। ७—राज्य सम्मान। ८—मरण प्रद। ९—धर्म लाभ। १०—मनवांछित सिद्धि। ११—सर्व लाभदायक। १२—वें स्थान में हानि कारक।

ग्रह बल और दिन अनुसार कार्य—रविवार सूर्य बली हो = राजा का दर्शन। सोमवार = चन्द्र बली = सर्व कार्य। मंगलवार मंगल बली = युद्ध। बुधवार बुध बली = शास्त्र पढ़ना। गुरुवार गुरुबली = विवाह। शुक्रवार शुक्र बली = यात्रा। शनिवार शनि बली = यज्ञ की दीक्षा।

ग्रहों की संक्रान्ति में ग्रह बल से शुभत्व विचार—चन्द्रमा की संक्रान्ति काल में तारा बली हो तो अशुभ भी चन्द्र २¼ दिन तक शुद्ध हो जाता है और शुभ की बात ही

उत्तम है। सूर्य की संक्रान्ति काल में यदि चन्द्र बली हो तो अशुभ भी सूर्य एक महीने तक शुभ कारक होता है, यदि शुभ हो तो और अच्छा है। मंगल की संक्रान्ति काल में यदि सूर्य बली हो तो अशुभ भी मङ्गल १॥ मास तक शुभ होता है। ऐसा ही बुध का भी सूर्य सम्बन्ध से विचारना। अन्य मत—भौमादि संक्रमण में केवल उपचय आदि में होने से शुभ होता है।

गुरु, शुक्र अस्त विचार—गुरु व शुक्र के अस्त रहते जिन-जिन शुभ कर्मों का निषेध किया है वे सब कार्य सिंह व मकर इन दोनों राशियों में गुरु के रहते वर्जित हैं। कोई आचार्य कहते हैं गुरु के वक्री रहते, अतिचार करते सूर्य और गुरु के एकत्र रहते पूर्वोक्त शुभ काम नहीं करना, इसी प्रकार दाँत से व रत्न से बने हुए आभूषणों को गुरु व शुक्र के अस्त काल में नहीं धारण करना।

सिंह के गुरु में विवाह निषेध—सिंह राशि में, सिंह के ही नवांश में गुरु हो तो उतने समय तक विवाह मना है अर्थात सिंह के नवांश छोड़कर सिंह राशि के शेष अंशों में गुरु के रहते विवाह श्रेष्ठ है। अथवा सिंह राशि में गुरु रहते गोदावरी नदी के उत्तर किनारे से लेकर गंगा के दक्षिण किनारे तक के देशों में विवाह आदि शुभ कर्म करने में दोष है। अन्य देशों में नहीं है। अथवा सिंह के गुरु रहते भी मेष के सूर्य हों तो विवाह आदि शुभ कर्म में दोष नहीं है।

सिंहस्थ गुरु दोष परिहार—मघा नक्षत्र के प्रथम चरण से लेकर पूर्वा फा० के प्रथम चरण तक पाँचों चरणों में रहते गुरु सब देशों में निन्दित है। शेष चरणों में अर्थात् पूर्वा फा० के दूसरे चरण से उ० फा० के प्रथम चरण तक ४ चरणों में रहते गङ्गा व गोदावरी इन दोनों नदियों के मध्य में बसने वाले देशों को छोड़कर अन्य देशों में गुरु दोष कारक नहीं है।

यदि मेष के सूर्य हों और गुरु सिंह के हों तो गङ्गा, गोदावरी के मध्य के देशों में भी यज्ञोपवीत व विवाह शुभ है। परन्तु कलिंग, गौड़, गुर्जर इन देशों में सम्पूर्ण सिंहस्थ गुरु वर्जनीय है।

रेवा नदी के पूर्व और गंडकी नदी के पश्चिम और शोण नदी के उत्तर दक्षिण देशों में मकर के गुरु आदि शुभ कार्यों में वर्जित नहीं हैं। किन्तु कोंकण मागध सिन्धु इन देशों में मकरस्थ गुरु शुभ कार्य में वर्जित है।

गुरु शुक्र अस्त में वर्जित कर्म—बावली, कुआँ, तालाब, बगीचा का आरंभ करना, प्रतिष्ठा करना, नवीन व्रत का आरंभ करना, वधू प्रवेश, महा दानादि, यज्ञ आरंभ करना, श्राद्ध, दाढ़ी बनाना, नवान्न, पौशाला, प्रथम रक्षा बंधन, वेद व्रत, वृषोत्सर्ग, बाजार लगाना, बालक का अन्न-प्राशन आदि संस्कार, देव प्रतिष्ठा करना, मंत्र लेना (शिष्य होना) यज्ञोपवीत, विवाह, मुंडन, प्रथम तीर्थ, प्रथम देव का दर्शन, संन्यास लेना, अग्नि तपना, राजा का दर्शन, राजगद्दी पर बैठना, यात्रा करना, चातुर्मास का व्रतारंभ, कर्णवेध, दीक्षा लेना ये सब कर्म गुरु व शुक्र के अस्त, बाल, वृद्ध में वर्जित हैं।

मकर सिंह का गुरु अस्त अतिचार—अस्त में जो कर्म वर्जित हैं वह सिंह मकर के गुरु में भी वर्जित हैं।

मतांतर—वक्र या अतिचार गुरु हो तो भी पूर्वोक्त कर्म वर्जित हैं। गुर्वादित्य में भी वर्जित हैं।

वर्जित पक्ष—पूर्वोक्त कार्यों में १३ दिन का पक्ष पड़े वह भी वर्जित हैं।

वर्जित समय—गुर्वादित्य १० दिन मानना चाहिए। सिंह का गुरु ३ महीने वर्जित है। अतिचार और वक्री हो तो २८ दिन वर्जित हैं। गुरु सूर्य अलग-अलग होकर फिर एक राशि में प्रवेश करें तो गुर्वादित्य का दोष निश्चय नहीं होता।

कुयोग वर्जित परिहार—तिथि युक्त, तिथि नक्षत्र से मिले और नक्षत्र वार आदि से मिले कुयोग हूण देश, वंग देश, खस देश में वर्जित हैं। तिथि वार नक्षत्र इन तीनों से बने कुयोग भी उपरोक्त देशों में वर्जित हैं। कुयोग में जो सिद्ध योग पड़े तो कुयोग का नाशकर सिद्धि देता हैं।

अन्य मत—लग्न शुद्ध होने से कुयोग आदि नाश होते हैं और दोपहर के बाद भद्रा आदिक कुयोग शुभ हैं।

लघु सम्वत्सर दोष अपवाद–२, १, ११, १२ राशियों में से किसी में गुरु उस राशि से अगली राशि में अतिचार कर गये हुए वक्री होकर फिर पूर्व राशि में जिस वर्ष में नहीं आता वह लघु सम्वत्सर कहा जाता हैं। यह विवाह आदि शुभ कर्म करने के लिये अति निंदित है। परन्तु नर्मदा और गंगा इन दोनों नदियों के मध्य में निन्दित नहीं है।

२७ योगों के नाम—१ विष्कम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगंड, ७ सुकर्म, ८ धृति, ९ शूल, १० गंड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ बरियान, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्ध, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति।

योग वर्जित समय—विष्कंभ आदि योगों में खगव नाम वाले जो योग हैं उनका पहिला चरण अनिष्टकर है। परन्तु धृति और व्यतीपात योगों में चारों चरण, परिधि योग में २ चरण अनिष्ट हैं। अन्य मत है विष्कंभ और वज्रयोग में ३ घड़ी, व्याघात में ९, शूल में ५, गंड और अति गंड में ६ घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित है।

सकल कर्म सिद्धयर्थं अभिजित मूहूर्त ज्ञान—

रविवार	सोमवार	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
२०	१६	१५	१४	१३	१२	१२ अंगुल

उपरोक्त बताये दिन को उपरोक्त अंगुल नाप की शंकु खड़ा करे जैसे इतवार को २० अंगुल नाप का शंकु खड़ा करे। दोपहर को जब छाया शंकु के मूल बराबर हो उस समय से लगाकर एक घड़ी तक अभिजित संज्ञक मूहूर्त होता हैं। इस समय में सर्व कार्य आरंभ करने से सिद्ध होता है। अभिजित मुहूर्त में जन्म होने से राजयोग होता है। इसमें व्यापार करने से सफलता होती है।

गल ग्रह—तिथि १३, १४, १५ (पूर्णमासी) और कृष्ण पक्ष में १, ७,८, ९, ४, ३० (अमावस्या) इन तिथियों का नाम गलग्रह है। ये यज्ञोपवीत आदि कर्म में वर्जित हैं।

ग्रह दिशा आदि—

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	अंत्यज
वर्ण	लाल	श्वेत	लाल	हरा	पीत	श्वेत	श्याम	श्याम

अवम तिथि—कभी कभी एक तिथि दो दिन में हो जाती है। कभी कभी एक तिथि का लोप हो जाता है। इसे अवम तिथि कहते हैं सौर मास से तारीख २४ घंटे की होती है। सौर दिन और चन्द्र दिन में २४ मिनट (२⅙ घड़ी) का अन्तर हो जाता है। चन्द्र मास २९॥ दिन का होता है। चन्द्र वर्ष ३५४ दिन का होता है इस कारण तिथि नक्षत्र योग घट बढ़ जाते हैं।

नन्दा आदि तिथियों का चक्र

तिथि नाम	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
तिथियाँ	१, ६, ११	२, ७, १२	३, ८, १३	४-९-१४	५-१०-१५-३०
सिद्धा	शुक्रवार	बुधवार	मंगलवार	रविवार	गुरुवार
अवम तिथि	रविवार	सोमवार	बुधवार	गुरुवार	शनिवार
(मृत्युयोग)	मंगलवार	शुक्रवार			
शुक्लपक्ष में	१—अशुभ	२—अशुभ	३—अशुभ	४अशुभ	५—अशुभ
शुभाशुभ	६—मध्यम	७—मध्यम	८—मध्यम	९—मध्यम	१०—मध्यम
	११—शुभ	१२—शुभ	१३—शुभ	१४—शुभ	१५—शुभ
कृष्णपक्षमें	१ शुभ	२ शुभ	३ शुभ	४ शुभ	५ शुभ
शुभाशुभ	६ सम	७ सम	८ सम	९ सम	११ सम
	११ अशुभ	१२ अशुभ	१३ अशुभ	१४ अशुभ	३० अशुभ
तिथिअनुसार ये लग्न वर्जित हैं	५,७,८,१०	९, १२	३, ६	१, ४	२, ११

तिथि के स्वामी आदि का चक्र

तिथि	विशेष नाम	संज्ञा	स्वामी	फल	शुक्ल पक्ष में	कृष्ण पक्ष में	तिथि में वर्जित
१ प्रतिपदा	वृद्धि	नंदा	अग्नि	सिद्धि	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२ द्वितीया	सुमंगला	भद्रा	ब्रह्मा	कार्यसाधिनी	,,	,,	कटेरीफल
३ तृतीया	सबला	जया	गौरी	आरोग्य	,,	,,	लवण
४ चतुर्थी	खला	रिक्ता	गणेश	हानि	,,	,,	तिल
५ पंचमी	श्रीमती	पूर्णा	सर्प	शुभा	,,	,,	खटाई

६	षष्ठी	कीर्ति	नंदा	स्कंद	अशुभा	मध्यम	मध्यम	तैल
७	सप्तमी	मित्रपदा	भद्रा	सूर्य	शुभा	,,	,,	आँवला
८	अष्टमी	कलावती	जया	शिव	व्याधिनाशिनी	,,	,,	नारियल
९	नवमी	उग्रा	रिक्ता	दुर्गा	मृत्यु	,,	,,	काशीफल
१०	दशमी	धर्मिणी	पूर्णा	यम	धनदा	,,	,,	परवल
११	एकादशी	नंदा	नदा	विश्वेदेव	शुभा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	द्वादशी	यशोवला	भद्रा	हरि	सर्वसिद्धि	,,	,,	मसूर
१३	त्रयोदशी	जयकरा	जया	मदन	सर्वसिद्धि	,,	,,	वैंगन
१४	चतुर्दशी	क्रूरा	रिक्ता	शिव	उग्रा	,,	,,	मधु
१५	पूर्णिमा	सौम्या	पूर्णा	चंद्र	पुष्टिदा	,,	,,	द्यूत
३०	अमावस्या	दर्श	०	पितर	अशुभा	०	०	स्त्री प्रसंग

प्रत्येक तिथि के कर्म

तिथि १—विवाह, यात्रा, व्रतवंध, प्रतिष्ठा, सोमंत, चूड़ा, वास्तु कर्म ग्रह प्रवेश आदि मङ्गल कार्य नहीं करना। परन्तु यहाँ विशेषतः शुक्ल १ या कृष्ण १ में भी कुछ होते हैं जिसका मुहूर्त मैं कहीं कहीं दिया है।

२—राज सम्वन्धी, अंग या चिह्नों के कृत्य, व्रतवंध, प्रतिष्ठा, विवाह, यात्रा भूषणादि कर्म शुभ होते हैं।

३—उक्त कर्म और गमन सम्वन्धी कृत्य, शिल्प, सीमंत, चूड़ा, अन्न प्राशन ग्रह प्रवेश भी शुभ है।

४—४, ९, १४ रिक्ता में अग्नि कर्म, मारण कर्म, बंधन कृत्य, शस्त्र, विष अग्नि दाह घात आदिक कृत्य शुभ और माङ्गलिक कार्य अशुभ हैं।

५—समस्त शुभ कृत्य करना, परन्तु ऋण न देना। देने से नाश होता है।

६—तैलाभ्यंग, यात्रा, पितृ कर्म और दन्त काष्ठों के बिना सभी मङ्गल एवं पौष्टिक कर्म करना तथा संग्राम उपयोगी शिल्प वस्तु भूषण वस्त्र भी शुभ हैं।

७—जो कर्म २, ३, ५, ७ में कहे हैं विरुद्ध होते हैं।

८—रण उपयोगी कर्म, वास्तु कृत्य, शिल्प, राज कृत्य, लिखने का काम, स्त्री रत्न भूषण कृत्य शुभ हैं।

१०—२, ३, ५, ७ में जो कहे हैं वे सिद्ध होते हैं।

११—व्रत उपवास आदि समस्त धर्म कृत्य, देवता उत्सव, वास्तु कर्म, संग्रामिक कर्म, शिल्प शुभ है।

१२—समस्त स्थावर जंगम के धर्म पुष्टि कारक शुभ कर्म सब सिद्ध होते हैं।

१३—२, ३, ५, ७ के उक्त कर्म शुभ दायक होते हैं।

१५—पूर्णिमा यज्ञ कर्म, पौष्टिक, मङ्गल, संग्राम उपयोगी, वास्तु कर्म, विवाह, शिल्प, समस्त भूषण आदि सिद्ध होते हैं।

३०—अमावस्या में पितृ कार्य मात्र होते हैं। कहीं २ शास्त्रोक्त उग्र कर्म भी कहे हैं।

नंदा आदि तिथियों के कार्य

नन्दा में—गीत, नृत्य, कृषि, कर्म, पितृ, उत्सव, गृहादि कर्म, वस्त्र भूषण धारण, शिल्पादि कर्म अर्थात् बढ़ई आदि का काम शुभ है।

भद्रा में—विवाह, जनेऊ, यात्रा, भूषण धारण, शिल्प कर्म, कला सीखना, हाथी घोड़ा व रथ कर्म ये सब शुभ है।

जया—फौज के कर्म, युद्ध कर्म, अस्त्र-शस्त्र का उत्सव, गृहादि कर्म, औषधि कार्य, वणिज कर्म शुभ है।

रिक्ता—शत्रु का वध, बंधनादि कर्म, शस्त्र चलाना, अग्नि लगाना, शुभ है। रिक्ता में मङ्गल कार्य कभी नहीं करना।

पूर्णा—जनेऊ, विवाह, यात्रा, राज गद्दी पर बैठना, शान्ति कर्म पौष्टिक कर्म शुभ है।

तिथि अनुसार वर्जित कर्म—छठ=तेल लगाना। अष्टमी=मांस भक्षण। चतुर्दशी=बाल बनाना। अमावस्या=मैथुन। २, १०, १३, तिथि=उबटन। ७, ९, ३०=आंवले के फल सहित स्नान वर्जित हैं।

ये वर्जित नहीं—छठ को शनिवार हो=तेल सेवन। दुर्गा अष्टमी=मांस खाना। तीर्थ में १४ तिथि को क्षौर में दोष नहीं है। दीप मालिका अमावस को मैथुन वर्जित नहीं है।

ये खाना वर्जित है—१ तिथि=कुम्हड़ा भोजन। २ बिजोरा नीबू ३=परवल। ४=भंटा। ५=बेल। ६=तिपकोरा। ७=आंवला खाना वर्जित है।

दतून निषेध—६-९-३० तिथि को दतून निषेध हैं।

तात्कालिक तिथि में कर्म विचार—स्नान, अभ्यंजन, दन्तधावन, मैथुन, जन्म तथा मरण में तात्कालिक तिथि लेना।

तिथिवार नक्षत्र के योग का चक्र

योग	रविवार	सोमवार	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
सिद्धा तिथि	०	०	३,८,१३	२,७,१२	५,१०,१५, ३०	१,६,११	४,९,१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
अधम तिथि	७,१२	११	१०	९	८	७	६
वर्जित तिथि न०	५ हस्त	६ मृग	७ अश्व	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	.११ रोहि
मृत्यु योग तिथि	१,११,७	२,७,१२	१,६,११	३,८,३३	४,९,१४	१,६,११	४,९,१४
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पूषा	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उफा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा.	उषा०	शत	अश्व.	मृग.	श्ले.	हस्त
काण (काल)	ज्ये०	अभि०	पूभा.	भरणी.	आर्द्रा	मघा.	चित्रा
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उभा.	कृति.	पुनर.	पूफा.	स्वाती

अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्व.	अनु.	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त मूल	रोह.मृग	अश्व.कृति.	रोह.हस्त.	पुष्य रेवती	रेवती अनु.	श्र. स्वा.
	तीनों उत्तरा	पुष्य श्र.	उभा श्ले.	अनु.कृति.	अनु.अश्व.	अश्व. श्रव.	रोह.
	पुष्य अश्व	अनुराधा		मृग	पुनर.	पुनर.	
यम दंष्ट्र	मघा धनि.	मू. विशा	कृति.रोह.	पूषा.पुन.	उषा.अश्व.	रोह.अनु.	श्र.शत.
यम घ०	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृति.	रोहि.	हस्त.
मुसल वज्र	भर०	चित्रा	उषा	धनि.	उफा.	ज्ये.	रेवती
मूसल	अभि०	पूभा.	भर.	आर्द्रा	मघा.	चित्रा	ज्येष्ठा
दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उषा.	धनि.	उफा.	ज्ये.	रेवती
चर	पूषा०	आर्द्रा	विशा.	रोहि.	पुष्य	मघा	मूल
सम्वर्तक	तिथि ७	०	०	ति. १	०	०	०

योगों पर विचार—अमृत सिद्धि योग सर्व प्रकार की सिद्धि देता है। सम्वर्तक सदा वर्जित है। यम दंष्ट्र, यमघण्ट, दग्ध नक्षत्र, काण योग, मृत्यु योग, उत्पात योग, ये नाम सदृश फल देते हैं शुभ कार्यों में वर्जित हैं। क्रकच योग में वार और अंक मिलकर १३ हो जाता है। जैसे बुधवार का अङ्क ९ है बुधवार चौथा वार है मिलकर १३ हो जाते हैं, शुभ कार्य में वर्जित है। दग्ध, विष और हुताशन तिथि और वार से बने योग नाम सदृश फल देते हैं। शुभ कार्य में वर्जित हैं। ज्वालामुखी योग भी शुभ कार्य में वर्जित है। शून्य लग्न भी शुभ कार्य में वर्जित है। पक्षरंध्र तिथियों में जो वर्जित घटी बताई है। उनको छोड़कर शेष शुभ है। इन वर्ज घटियों में कार्य करने से उस कार्य का नाश होता है। ज्वालामुखी योग का अशुभ कार्यों में उपयोग होता है। यमघण्ट विशेषकर यात्रा में वर्जित है।

परिहार—यमघण्ट की ८ घड़ी, मृत्यु योग की १२ घड़ी वर्जित है। पाप योगों में मध्याह्न के उपरांत अशुभ फल नहीं होता, पङ्गु, अन्ध और काण लग्न तथा मास शून्य तिथियाँ गौड़ और मालवा देश में वर्जित है, अन्य देशों में नहीं।

तिथि और पाप से बने योग तथा तिथि और नक्षत्र से उत्पन्न या नक्षत्र और वार से उत्पन्न योग हूण वंग और खश देशों में वर्जित है।

यदि चन्द्रमा शुभ हो तो मृत्यु, क्रकच, दग्ध आदि योगों का अशुभ फल नहीं होता। कुछ आचार्यों का मत है एक प्रहर के बाद इन योगों का दुष्ट फल नहीं होता। अन्य मत से केवल यात्रा में ही वर्जित हैं।

यदि दुष्ट योग और सिद्ध योग दोनों साथ पड़ें तो बुरे योग को शुभ योग नष्ट कर देता है और शुभ फल देता है।

ज्वालमुखी योग = तिथि	३	४	५	८	९
नक्षत्र	अनु.	उत्तरा	मघा	रोहणी	कृतिका

पक्ष रंध्र तिथि	४	६	८	९	१२	१४	
वर्जित घटी	८	९	१४	२५	१०	५	

तिथि में आवश्यकता	तिथि	४	६	८	९	१२	१४
में वर्जित घटी	घटी	८	९	१४	२५	१०	५

तिथि की	तिथि	१	३	५	७	९	११	१३
शून्य लग्न	लग्न	७, १०	५, १०	३,६	४, ९	४, ५	९, १२	२, १२

तिथि अनुसार	१	२	३	५	६	७	८	९	११	१२	१३
निंदित नक्षत्र	उषा	अनु	उत्तरा तीनों	मघा	रोह.	हस्त	पूमा. मूल	कृ.	रोह.	अश्व.	चित्रा स्वा.

युगादि तिथि	शुक्ल पक्ष कार्तिक	वैशाख	कृष्ण पक्ष भाद्र	माघ
	९	३	१२	३०

मन्वाद्य तिथि शुक्ल पक्ष की

चैत्र	कार्तिक	आषाढ़	ज्येष्ठ	फाल्गुन	अश्विनी	माघ	पौष	भाद्र
३	१५-१२	१०-१५	१५	१५	९	७	११	३

कृष्ण पक्ष की	श्रावण
	३०–८

युगादि और मन्वाद्य तिथियों में विवाह आदि शुभ कर्म नहीं करना चाहिये।

नक्षत्र नाम और स्वामी

नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी
१ अश्विनी	अश्विनी कुमार	११ पू. फा.	भग देवता	२१. उ. षा	विश्वे देव
२ भरणी	यमराज	१२ उ. फा.	अर्यमा	२२ अभिजित	विधि (ब्रह्मा)
३ कृतिका	अग्नि	१३ हस्त	सूर्य	२३ श्रवण	विष्णु
४ रोहणी	ब्रह्मा	१४ चित्रा	विश्वकर्मा	२४ धनिष्ठा	वासुदेव
५ मृग.	चन्द्र	१५ स्वाती	वायु	२५ शत.	वरुण
६ आर्द्रा	शिव	१६ विशा.	इंद्र व अग्नि	२६ पू. भा.	अज चरण
७ पुनर्वसु	अदिति देव	१७ अनु.	मित्र	२७ उ. भा.	अहिर्वुध्न्य
८ पुष्य	बृहस्पति	१८ ज्येष्ठा	इन्द्र	२८ रेवती	पूषा
९ आश्लेषा	सूर्य	१९ मूल	राक्षस		
१० मघा	पितर	२० पूषा	जल		

(१) ध्रुव, स्थिर नक्षत्र—उ० फा०, उ० षा०, उ० भा०, रोहिणी ये ४ नक्षत्र व रविवार इन नक्षत्रों में स्थिर कार्य करना; बीज बोना, घर बनाना, शांति कर्म करना व गाँव के समीप बगीचा आदि लगाना और मृदु (६) संज्ञक नक्षत्रों का भी कार्य ये सब सिद्ध होते हैं। इन नक्षत्र और इस वार में कार्य सिद्ध होते हैं।

(२) चर व चल नक्षत्र—स्वाती, पुनर, श्रवण, धनि०, शत०, ये ५ नक्षत्र व सोमवार। इनमें हाथी घोड़ा आदि पर चढ़ना, बगीचे आदि में जाना, यात्रा करना और लघुसंज्ञक (४) नक्षत्रों का भी कार्य सिद्ध होते हैं।

(३) क्रूर व उग्र नक्षत्र—पू० फा०, पू० षा०, पू० भा०, भरणी, मघा और मंगलवार इनमें मारण, अग्नि का कार्य, शठता का कार्य, विष का कार्य, हथियार का कार्य। इसमें दारुण संज्ञक (७) नक्षत्रों का कार्य भी सिद्ध होते हैं।

(४) क्षिप्र व लघु—नक्षत्र = हस्त, अश्व, पुष्य, अभिजित व गुरुवार इसमें बाजार का कार्य, स्त्री संयोग, शास्त्र आदि का ज्ञान, आभूषण बनवाना, दूकान का काम, पहिनना व चित्रकारी, गाना बजाना आदि कला के कार्य और चर संज्ञक (२) नक्षत्रों के भी कार्य सिद्ध होते हैं।

(५) मिश्र या साधारण नक्षत्र—विशाखा, कृतिका और बुधवार इनमें अग्नि होत्र व शुभाशुभ मिला कार्य व वृषोत्सर्ग आदि और उग्र संज्ञक (३) नक्षत्रों का भी कार्य सिद्ध होते हैं।

(६) मृदु व मैत्र नक्षत्र—मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनमें गाना व वस्त्र पहिरना आदि व स्त्री के साथ क्रीड़ा व मित्र कार्य, आभूषण पहिरना आदि सिद्ध होते हैं।

(७) तीक्ष्ण व दारुण नक्षत्र—मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा और शनिवार इनमें अभिचार (जादू) अर्थात् पुरश्चरण आदि से मारना और घात (हथियार से मारना) और उग्र अर्थात् निर्दय कार्य, पशु दमन (हाथी घोड़े आदि का सिखाना) आदि काम सिद्ध होते हैं।

नक्षत्र में वस्तु न मिले—तीक्ष्ण संज्ञक, मिश्र संज्ञक, ध्रुव संज्ञक, उग्र संज्ञक नक्षत्रों में और भद्रा व व्यतीपात में जो द्रव्य किसी को दिया या धरोहर धरा या ब्याज पर कर्ज दिया या कहीं गिर गया या चोरी गया वह फिर किसी प्रकार से नहीं मिले।

(१) अधोमुख नक्षत्र (नीचे देखता है)—तीनों पूर्वा, मघा, श्ले०, विशा०, कृति०, भरणी मूल—इनमें भूमि कार्य, उग्र कार्य, कुआँ, बावली आदि खोदना, युद्ध करना आदि नीचे के कार्य शुभ हैं।

(२) ऊर्ध्व मुख—तीनों उत्तरा, पुष्य, रोह०, श्रव०, धनि०, शत०,—इनमें देव स्थान व मंडप बनाना, बंदनवार पताका बांधना, छत्र धारण, ऊँचे मकान बनवाना, गृह कार्य, अभिषेक, घोड़े की सवारी आदि कार्य शुभ है।

(३) तिर्यङ्मुख—रेवती, अश्व०, ज्ये०, अनु०, हस्त, चित्रा, स्वा०, मृग, पुनरा० इनमें वृक्ष लगाना, वाणिज्य कर्म, वाहन, यंत्रादि अर्थात् गाड़ी आदि, रहंट यात्रा आदि शुभ है।

अन्धाक्ष आदि नक्षत्र

अंधाक्ष = धनि०, पुष्य, रोह०, पूषा, विशा०, उफा० रेवती=अंध लोचन, मंदाक्ष= हस्त, उषा, अनु०, शत०, श्ले०, अश्व, मृग = मंद लोचन, मध्याक्ष = आर्द्रा, मघा, पूभा०, चित्रा, ज्ये०, अभि०, भरणी = काण लोचन = स्वक्ष = स्वा, पुन०, श्रव०, कृति०, उभा०, मूल, पूफा = सुलोचन। फल = कोई वस्तु चोरी जाय या गुमे तो = अंध

लोचन = शीघ्र मिले । मंदाक्ष = प्रयत्न अर्थात् बड़े उपाय से मिले । मध्याक्ष = दूर से सुन पड़े मिले नहीं । ग्वक्ष = किसी तरह भी न मिले ।

६ नाड़ी नक्षत्र

जन्म नाड़ी—जिस नक्षत्र में जन्म हुआ—उपतापित होने से—चेष्टा, देह व अर्थ हानि

कर्म नाड़ी—जन्म नक्षत्र से दशवीं नाड़ी—,, ,, —कर्म की हानि

संघातिक नाड़ी— ,, १६वां नक्षत्र—,, ,, —देह, धन व बंधुओं की हानि

समुदाय ,, — ,, १८वाँ ,, —,, ,, —मित्र भृत्य और अर्थ का नाश

विनाश ,, — ,, २३वाँ ,, —,, ,,—शरीर धन और सम्पत्ति का नाश

मानस ,, — ,, २५वाँ ,, —,, ,, मानस पीड़ा

राजाओं की तीन नाड़ी अधिक हैं ।

स्वजाति नाड़ी = स्वजाति निरूपित नक्षत्र

देश नाड़ी = देश नाम की जो नाड़ी (नक्षत्र)

अभिषेक नाड़ी = जिस नक्षत्र पर अभिषेक हो ।

जन्म प्रभृति ६ नाड़ियों के मध्य में मनुष्य की कोई एक नाड़ी या समस्त नाड़ियाँ दूषित हों तो उन दोषों की शांति के लिये एक दिन उपवास कर गायत्री पाठ पूर्वक अग्नि में दूध वाले वृक्ष की समिधा द्वारा अष्टोत्तर सहस्र हवन करे ।

प्रत्येक नक्षत्रों के कार्य—इनमें करने योग्य कर्म

(१) अश्विनी = वस्त्र, उपनयन, क्षौर, सीमंत, 'भूषण, स्थापना, गज, स्त्री, कृषि कर्म ।

(२) भरणी = वावली, कुआँ, तालाब आदि, विष शस्त्रादि उग्र एवं दारुण कर्म रंध्र प्रवेश, गणित, धरोहर वस्तु रखना ।

(३) कृतिका = अग्न्याधान, अस्त्र शस्त्र, उग्र कर्म, मिलाप, विग्रह, दारुण कर्म, संग्राम, औषधि आदि कर्म ।

(४) रोहिणी = सीमंत, विवाह, वस्त्र भूषण, स्थिर कर्म, अश्व, गज के कर्म अभिषेक प्रतिष्ठा ।

(५) मृग० = प्रतिष्ठा, भूषण, विवाह, सीमंत, क्षौर, वास्तु कृत्य, यात्रा, गज, अश्व, ऊँट के कृत्य ।

(६) आर्द्रा = ध्वजा, तोरण, संग्राम, दीवाल, संधि, विग्रह, अस्त्र शस्त्र कर्म, वैर, रसादि कर्म ।

(७) पुन० = प्रतिष्ठा, सवारी, सीमंत, वस्त्र, वास्तु, उपनयन, धान्य भक्षण ।

(८) पुष्य = विवाह विना, समस्त शुभ कृत्य ।

(९) श्लेषा = झूठ, व्यसन, द्यूत, धातुवाद, औषधि, संग्राम, विवाद, रस क्रिया, व्यापार ।

(१०) मघा = कृषि, व्यापार, गौ, अन्न, विवाह, नृत्य गीत, रण उपयोगी कृत्य ।

(११) तीनों पूर्वा = कलह, विष, शस्त्र, अग्नि, दारुण, उग्र संग्राम, मांस विक्रय ।

(१२) तीनों उत्तरा = प्रतिष्ठा, सीमंत, अभिषेक, व्रतवंध, प्रवेश, स्थापना, वास्तु कर्म ।

(१३) हस्त = प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत, उपनयन, सवारी, वस्त्र, क्षौर, वास्तु, भूषण, अभिषेक ।

(१४) चित्रा=क्षौर, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, व्रतवंध, प्रतिष्ठा, वास्तु, विद्या, भूषण ।

(१५) स्वा०=प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, सीमंत, वस्त्र, भूषण, विवाद, कृषि, क्षौर, हस्ति कर्म ।

(१६) विशा०=वस्त्र, भूषण, व्यापार, लिखना, नृत्य गीत, रस, धान्य संग्रह, शिल्प आदि ।

(१७) अनु०=प्रवेश, स्थापना, विवाह, व्रतवंध, अष्ट प्रकार मंगल, वस्त्र, भूषण, संधि विग्रह, वास्तु, स्थापना ।

(१८) ज्ये०=क्रूर कर्म, उग्र कर्म, शस्त्र व्यापार, भैंसे गौ का कृत्य, जल कर्म, नृत्य, आदि शिल्प, लोहे का कर्म, पत्थर का काम लिखना ।

(१९) मूल-विवाह, कृषि, वाणिज्य, उग्र, दारुण, संग्राम, औषधि, नृत्य, शिल्प, संधि विग्रह, लेखन ।

(२२) श्रवण=प्रतिष्ठा, क्षौर, सीमंत, उपनयन, यात्रा, औषधि, पुर, ग्राम गृह प्रवेश, पट्टाभिषेक ।

(२३) धनि०=शस्त्र सीमंत, उपनयन, क्षौर, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, वास्तु प्रवेश ।

(२४) शत०=प्रवेश, स्थापना, क्षौर, मौंजी, सीमंत, औषधि, अश्व कर्म, वास्तु कर्म ।

(२७) रेवती=विवाह, व्रतवंध, सीमंत, प्रतिष्ठा, सवारी, अश्व कर्म, प्रवेश, वस्त्र, क्षौर, औषधि, कृत्य ।

अन्तरङ्ग वहिरङ्ग नक्षत्र—सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र अन्तरङ्ग हैं । बाद ३ नक्षत्र वहिरङ्ग । फिर ४ अन्तरङ्ग इसी क्रम से गिनना । इसमें वैसा ही कर्म करना । जैसे पशुओं का लाना अन्तरङ्ग में भेजना वहिरङ्ग में ।

तारा ज्ञान—जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना फिर ९ का भाग देना । शेष १—जन्म तारा । २—सम्पत । ३—विपत् । ४—क्षेम । ५—प्रत्यरि । ६—साधक । ७—वध । ८—मैत्र । ९—अति मैत्र तारा । कृष्ण पक्ष में तारा वली है । शुक्ल पक्ष में चन्द्र वली है । पण्डित लोग कृष्ण पक्ष में तारा ग्रहण करते हैं । चन्द्रमा नहीं ग्रहण करते ।

शुभ तारा ६ है १, २, ४, ६, ८, ९, अशुभ तारा ३, ५, ७ हैं ।

प्रथम आवृत्ति में अधिक दोष होता है । दूसरे में दोष कम हो जाता है । तीसरे आवृत्ति के तारे को ग्रहण करना ।

दोष परिहार—वध तारा = सुवर्ण तिल । विपत = गुड़ । प्रत्यरि = लवण दान करना । तीनों जन्म ताराओं में शाक के दान से दोष शान्त होता है ।

तारा दोष का दूसरा परिहार—जन्म नक्षत्र से २७ वें नक्षत्र तक तीन आवृत्तियाँ होती हैं । उसमें पहिली आवृत्ति में (३) विपत, (५) प्रत्यरि, (७) मृत्यु (वध)

ये सम्पूर्ण तारा शुभ नहीं होते, दूसरी आवृत्ति में इन्हीं ताराओं का पहिला विपत, दूसरा प्रत्यरि, तीसरा वध का अंश शुभ नहीं होता। अर्थात तीसरा विपत तारा के पहिले २० अंश अशुम और अगले ४० अंश शुभ हैं। पाँचवाँ प्रत्यरि तारा के मध्य के २० अंश अशुम आदि के २० अंश और अन्त के २० अंश शुभ होते हैं। सातवाँ वध तारा में अन्त के २० अंश अशुम और मध्य के ४० अंश शुभ होते हैं। तीसरी आवृत्ति में ये तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ तारा सम्पूर्ण शुभ है। अर्थात पहिली आवृत्ति में ३, ५, ७ की पूरी ६० घड़ी नेष्ट। दूसरी आवृत्ति में विपत के आदि की २० घड़ी प्रत्यरि के मध्य का २० घड़ी, वध के अन्त का २० घड़ी छोड़ देना। तीसरी आवृत्ति में सभी शुभ है।

द्विपुष्कर योग—यदि रविवार, मङ्गलवार, शनिवार इन दिनों में यदि २, ७, १२ तिथि हो और धनिष्ठा, चित्रा, मृग का नक्षत्र हो तो द्विपुष्कर योग होता है। इनमें किसी की मृत्यु हो तो २ की मृत्यु हो। कोई वस्तु खो जाय या लाभ हो तो दो की हानि या लाभ हो।

त्रिपुष्कर योग—रविवार, मङ्गल, शनिवार इन दिनों में २, ७, १२ तिथि हो और विशाखा, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्व भाद्रपद, पुनर्वसु, कृतिका, उ०षा० ये नक्षत्र हों तो त्रिपुष्कर योग होता है। इनमें यदि किसी के घर में कोई मरे तो ३ प्राणी मरें, कोई वस्तु खो जाय तो तीन वस्तु गुमें, कोई वस्तु का लाभ हो तो ३ वस्तुओं का लाभ हो। इनके आपस में मिलने से ये योग बनता है।

पञ्चक—धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, शत० पूभा० उभा० और रेवती इन ४॥ नक्षत्रों को पञ्चक कहते हैं। अर्थात कुंभ मीन के चन्द्र में पञ्चक होता है।

इनमें मुर्दा का जलाना, दक्षिण दिशा की यात्रा, खाट बिनना, घर छाना, इन सब काम को त्यागे। तम्बू बनावे, घास, लकड़ी, काष्ट एकत्र न करे।

प्रत्येक वार के कर्म—

रविवार—राज्य अभिषेक, उत्सव कर्म, यात्रा करना, गौ पालन, अग्नि में हवन, मन्त्रोपदेश, औषधि खाना, शस्त्र बनाना, सोना, तांबा, ऊन, चर्म व काष्ठ का काम तथा युद्ध कर्म, बाजार लगाना।

सोमवार—शङ्ख, कमल, मोती, चाँदी का काम, भोजन, स्त्री-भोग, वृक्ष लगाना, कृषि कर्म; जल कर्म, भूषण आदि बनवाना, गान विद्या सीखना, यज्ञ कर्म, दूध-दही मथना, सींग मढ़ना, पुष्प कर्म, वस्त्र कर्म शुभ है।

मङ्गलवार—भेद कर्म, अन्याय कर्म, (चोरी आदि) विष कर्म, अग्नि कर्म, मद्य कर्म, घात कर्म, शाठ्य कर्म, दम्भादि कर्म, सोना निवेश व धातु मूँगा रत्न आदि कर्म शुभ है।

बुधवार—चतुरता, पुण्य, विद्या पढ़ना, कला सीखना, शिल्प विद्या सीखना, धातु कर्म, सोने का आभूषण जड़ना, मोती आदि मित्रता व विवाद ये कर्म शुभ हैं।

गुरुवार—धर्म क्रिया, पुष्टि कर्म, यज्ञ कर्म, विद्या अभ्यास करना, मांगलिक कर्म करना, सोना या वस्त्रादि कर्म, गृह बनवाना, यात्रा करना, रथ बनवाना, औषधि, यात्रा, भूषण धारण।

शुक्रवार—स्त्री-प्रसंग, गान विद्या सीखना, शैया बनाना, मणि रत्न कर्म, भेदनादि कर्म, वस्त्र कर्म, उत्साह, अलंकार व भूमि कर्म, बाजार कर्म, गौ कर्म, द्रव्य कर्म, खेती कर्म।

शनिवार—गृह प्रवेश, दीक्षा लेना, हाथी बांधना, स्थिर कर्म करना, दास कर्म, शस्त्र कर्म, झूठ बोलना, चोरी करना ये कर्म शनिवार को करना शुभ है।

वार दोष परिहार—जिस वार का जो कृत्य है वह न मिले तो उसी वार के होरा में करना शुभ है। दूसरा परिहार वार का दोष रात्रि को नहीं होता। कुछ का मत है कि रविवार, मंगल, शनिवार का दोष रात्रि को विशेष कर नहीं है।

वार का होरा जानना $\frac{\text{इष्ट} \times २}{५} \div ७ = $ शेष

१	२	३	४	५	६	७
शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र

जो वार हो उस वार से उससे शेष अंक उपरोक्त गिनने से इस काल में वार का होरा प्राप्त होगा। जैसे सोमवार को इष्ट ४० पर क्या होरा होगा जानना है। $\frac{४० \times २}{५} = ८ \times २ = १६ \div ७ = $ शेष २। सोमवार से २ गिना १ चंद्र, दूसरा शनि। इससे शनि का होरा आया। दूसरा उदाहरण इतवार को इष्ट ३० पर $\frac{३० \times २}{५} = ६ \times २ = १२ \div ७$ शेष ५ इतवार से ५ गिना इतवार, शुक्र, बुध, चंद्र, शनि। यहाँ पाँचवाँ शनि होने से शनि का होरा आया। जब ५ का भाग देने से शेष बचता है तो अंतिम शेष में १ बढ़ा देना चाहिये। जैसे सोमवार इष्ट $\frac{३८ \times २}{५} = \frac{७६}{५} = १५\frac{१}{५}$ यहाँ शेष १ बचा है इससे $१५ \div ७ = $ शेष $१ + १ = २$ चंद्रवार से दूसरा शनि आया=शनि का होरा। दूसरी रीति= $(\text{इष्ट} \times २) - (\frac{\text{इष्ट} \times २}{५}$ का शेष $) \div ७ = $ इष्ट दिन से क्रमानुसार शेष संख्या तक गिनने पर जो आवे वह होरा होगा जैसे सोमवार इष्ट $३८ \times २ = ७६$। $\frac{३८ \times २}{५} = \frac{७६}{५} = १५\frac{१}{५} = $ शेष १, $७६ - १ = ७५ \div ७ = $ शेष $५ + १ = ६$ इधर वार सोमवार है इससे क्रमानुसार गिना सोम १, मंगल २, बुध ३, गुरु ४, शुक्र ५, शनि ६.=शनि का होरा आया।

इष्ट काल (इष्ट घटी) के अनुसार होरा चक्र

इष्ट घटी				वार का काल होरा						
२॥	२०	३७॥	५५	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
५	२२॥	४०	५७॥	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु
७॥	२५	४२॥	६०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल
१०	२७॥	४५	०	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य

इष्ट घटी				वार का काल होरा						
१२ ।।	३०	४७ ।।	०	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
१५	३२ ।।	५०	०	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१७ ।।	३५	५२ ।।	०	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चंद्र

अपनी राशि के स्वामी के शत्रुग्रह की होरा में नीचे बताये हुए कार्य नहीं करना।

होरा के कार्य—जिन-जिन ग्रहों का जो वार है उसमें कहा कर्म उसके होरा में भी करे। रवि के होरा में—राज सेवा शुभ। चंद्र—सर्व कार्य शुभ। मंगल—युद्ध कार्य शुभ। बुध—ज्ञान प्राप्ति शुभ। गुरु—विवाह कार्य शुभ। शुक्र—गमन में शुभ। शनि होरा—द्रव्य संग्रह शुभ।

वार	रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वार स्वामी	शिव	दुर्गा	कार्तिकेय	विष्णु	ब्रह्मा	इंद्र	काल
क्रूर या शुभ	क्रूर	शुभ	क्रूर	शुभ	शुभ	शुभ	क्रूर
उग्र मृदु आदि	स्थिर	क्रूर	उग्र	सम	लघु	मृदु	तीक्ष्ण
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा

वार प्रवेश जानना

सूक्ष्म रीति से वार का आदि कब से समझा जाय इसके लिये वार प्रवेश का समय निकालने का गणित करना पड़ता है। रीति=मध्याह्न रेखा से अपने स्थान का अन्तर निकालकर मिनट बना लेना ६ घंटा में इसे जोड़ने से इष्ट स्थान का वार प्रवेश का समय प्रगट होगा। यदि वार प्रवेश के समय से सूर्योदय बाद को होगा तो दोनों के अन्तर का जो समय होगा उतने मिनिट पहिले वार प्रवेश होगा। यदि वार प्रवेश का समय सूर्योदय के समय से अधिक हो तो दोनों के अन्तर का समय होगा उतने मिनिट सूर्योदय बाद वार प्रवेश होगा।

जैसे नरसिंहपुर का वार प्रवृत्ति समय जानना है। इसके लिये जानना है कि मध्याह्न रेखा से नरसिंहपुर पूर्व या पश्चिम है। यहाँ उज्जैन को मध्य रेखा मान कर देशान्तर निकालेंगे।

नरसिंहपुर देशान्तर ७९–११

उज्जैन ७५–४५

अन्तर ३–२६

×४

१३–४४

=१४ मि०

नरसिंहपुर में सदा घंटा–मि०

६–०

+–१४

वारप्रवृत्ति =६–१४

सूर्योदय से वार प्रवृत्ति अधिक है तो + अन्तर। कम हो तो ऋण अन्तर

जैसे वार प्रवेश — सूर्योदय = घं० मि०

६—१४ — ५–४० = ०—३४ =सूर्योदय के बाद वार प्र० होगा।

जैसे सूर्योदय — वार प्रवेश = घं० मि०

६–३० — ६—१४ = ०—१६ =सूर्योदय के पहिले वार प्र० होगा।

दूसरा उदाहरण—देशान्तर कम अर्थात् पश्चिम का

उज्जैनं ७५–४५ घं० मि० | वार प्रवेश–सूर्यान्तर=अन्तर मिनट
पूना ७३–५२ ६—० | सूर्योदय के वाद वार प्र०
०—७–३२

१–५३ ५—५२–२८ | सूर्योदय–वार प्र०=अन्तर मिनट
×४ =५—५२ पर | सूर्योदय के पहिले वार प्र०
पश्चिम ऋण १–३२ वार प्रवृत्ति | होगा।

इस प्रकार वार प्रवेश का समय जानकर उस समय से वार के समय को जान कर २॥–२॥ घड़ी के वाद इष्ट समय पर कौन सा होरा होगा जान लेना।

मध्य रेखा—लंका से उज्जैन, कुरु क्षेत्र आदि देशों से होती हुई सुमेर पर्वत तक गई है उस रेखा के नीचे जितने देश बसते हैं। वही पृथ्वी की मध्य रेखा के देश हैं।

दिन नक्षत्र और वार के अनुसार आनन्द आदि २८ योग

क्रम	योग	फल	नक्षत्र	इ०	सो०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
				[योग का क्रम यहाँ दिया गया है]						
१	आनंद	सिद्धि	१ अश्विनी	१	२५	२१	१७	१३	९	५
२	काल दंड	मृत्यु	२ भरणी	२	२६	२२	१८	१४	१०	६
३	धूम्र	असुख	३ कृतिका	३	२७	२३	१९	१५	११	७
४	प्रजापतिधाता	सौभाग्य	४ रोहिणी	४	२८	२४	२०	१६	१२	८
५	सौभाग्य	वहुत सुख	५ मृग०	५	१	२५	२१	१७	१३	९
६	ध्वांक्ष	धन नाश	६ आर्द्रा	६	२	२६	२२	१८	१४	१०
७	ध्वज (कंतु)	सौभाग्य	७ पुनर्वसु	७	३	२७	२३	१९	१५	११
८	श्रीवत्स	सौभाग्यसौख्य	८ पुष्य	८	४	२८	२४	२०	१६	१२
९	बज्र	क्षय	९ श्ले०	९	५	१	२५	२१	१७	१३
१०	मुद्गर	लक्ष्मीवान	१० मघा	१०	६	२	२६	२२	१८	१४
११	छत्र	राज मान्य	११ पूफा०	११	७	३	२७	२३	१९	१५
१२	मैत्र (मित्र)	पुष्टि	१२ उफा	१२	८	४	२८	२४	२०	१६
१३	मानस	सौभाग्य	१३ हस्त	१३	९	५	१	२५	२१	१७
१४	पद्माख्य(पद्म)	धनागम	१४ चित्रा	१४	१०	६	२	२६	२२	१८
१५	लुम्बक (लुम्ब)	धनक्षय	१५ स्वाती	१५	११	७	३	२७	२३	१९
१६	उत्पात	प्राण नाश	१६ विशाखा	१६	१२	८	४	२८	२४	२०
१६	मृत्यु	मृत्यु	१७ अनु०	१७	१३	९	५	१	२५	२१
१८	कणाख्य(काण)	क्लेश	१८ ज्ये०	१८	१४	१०	६	२	२६	२२
१९	सिद्धि	कार्य सिद्धि	१९ मूल	१९	१५	११	७	३	२७	२३
२०	शुभ	कल्याण	२० पूषा	२०	१६	१२	८	४	२८	२४
२१	अमृत	राज सन्मान	२१ उषा	२१	१७	१३	९	५	१	२५

२२ भूसत्य	धनक्षय	२२ अभिजित	२२	१८	१४	१०	६	२	२६
२३ गदाख्य	अक्षय विद्या	२३ श्रवण	२३	१९	१५	११	७	३	२७
२४ मातंग	कुल वृद्धि	२४ धनिष्ठा	२४	२०	१६	१२	८	४	२८
२५ राक्षस (रक्ष)	महा कष्ट	२५ शत०	२५	२१	१७	१३	९	५	१
२६ चर	कार्य सिद्धि	२६ पूभा०	२६	२२	१८	१४	१०	६	२
२७ सुस्थिर(स्थिर)	गृहारंभ	२७ उभा०	२७	२३	१९	१५	११	७	३
२८ प्रवर्धमान	विवाह लग्न	२८ रेवती	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

यहाँ दिन के नीचे जो अंक दिये हैं वे आनन्द आदि योगों के क्रमांक हैं। जैसे मृग० नक्षत्र बुधवार को है तो बुध के नीचे जो २१ अङ्क दिया है। तो २१ के क्रम में अमृत योग दिया है। उस दिन अमृत योग हुआ फल राज सन्मान है।

ये योग नाम सदृश फल देते हैं। यहाँ अभिजित सहित नक्षत्र दिये हैं।

मान लो शनिवार को स्वाती है नीचे १९ अङ्क से १९ वाँ योग सिद्धि प्राप्त हुआ इसी प्रकार योग ज्ञान कर लेना।

आवश्यक कार्य में परिहार—

ध्वज, वज्र मुद्गर—प्रथम ५ घटी

पद्म, लुब्ध—	,,	४	,,
गद	,,	७	,,
धूम्र	,,	१	,,
काण	,,	२	,, इनके पश्चात् कार्य करना

रक्ष, उत्पात, मृत्यु, काल—शुभ कार्य में सम्पूर्ण वर्जित हैं।

नक्षत्र विष घटी चक्र

क्रम	नक्षत्र	ध्रुव	विष घटी			
१	अश्वि०	५०	५१	५२	५३	५४
२	भरणी	१४	२५	२६	२७	२८
३	कृतिका	३०	३१	३२	३३	३४
४	रोहिणी	४०	४१	४२	४३	४४
५	मृग०	१४	१५	१६	१७	१८
६	आर्द्रा	२१	२२	२३	२४	२५
७	पुनर	३०	३१	३२	३३	३४
८	पुष्य	२०	२१	२२	२३	२४
९	श्ले०	३२	३३	३४	३५	३६
१०	मघा	३०	३१	३२	३३	३४
११	पूफा०	२०	२१	२२	२३	२४
१२	उफा०	१८	१९	२०	२१	२२
१३	हस्त	२१	२२	२३	२४	२५

तिथि विष घटी

तिथि	ध्रुव	विष घटी			
१	१५	१६	१७	१८	१९
२	५	६	७	८	९
३	८	९	१०	११	१२
४	७	८	९	१०	११
५	७	८	९	१०	११
६	५	६	७	८	९
७	४	५	६	७	८
८	८	९	१०	११	१२
९	७	८	९	१०	११
१०	१०	११	१२	१३	१४
११	३	४	५	६	७
१२	१०	११	१२	१३	१४
१३	१२	१३	१४	१५	१६

१४ चित्रा	२०	२१	२२	२३	२४	१४	७	८	९	१०	११
१५ स्वा०	१४	१५	१६	१७	१८	१५	८	९	१०	११	१२
१६ विशा०	१४	१५	१६	१७	१८						
१७ अनु०	१०	११	१२	१३	१४						
१८ ज्ये०	१४	१५	१६	१७	१८						
१९ मूल	५६	५७	५८	५९	६०						
२० पूषा	२४	२५	२६	२७	२८						
२१ उषा	२०	२१	२२	२३	२४						
२२ श्रवण	१०	११	१२	१३	१४						
२३ धनि०	१०	११	१२	१३	१४						
२४ शत०	१८	१९	२०	२१	२२						
२५ पूभा०	१६	१७	१८	१९	२०						
२६ उभा०	२४	२५	२६	२७	२८						
२७ रेवती	३०	३१	३२	३३	३४						

वार विष घटी

वार	ध्रुव	विष घटी			
इतवार	२०	२१	२२	२३	२४
सोमवार	४	५	६	७	८
मंगल	१२	१३	१४	१५	१६
बुधवार	१०	११	१२	१३	१४
गुरुवार	७	८	९	१०	११
शुक्रवार	५	६	७	८	९
शनिवार	२५	२६	२७	२८	२९

यहाँ नक्षत्र तिथि वार की विष घटी दी है। ध्रुव प्रत्येक का दिया है उसके आगे की ४ घटियां विष घटी होती हैं जो शुभ कार्य में वर्जित हैं। जैसे मघा का ध्रुव ३० हैं तो उसके आगे की ४ घटियाँ ३१, ३२, ३३, ३४ केवल विष घटी समझना। ६० घटी का नक्षत्र माना जाय तो उपरोक्त विष घटी होगी।

यदि ६० घटी से कम ज्यादा नक्षत्र का भभोग हो तो $\frac{\text{नक्षत्र भभोग} \times \text{ध्रुव}}{६०}$ आरंभ की विष घटी प्राप्त होंगी उसमें ४ जोड़ देने से विष घटी कब तक रहेगी प्रगट होगा।

उदाहरण—अनुराधा भभोग ६२–६ है (६२–६) × ध्रुव १० ÷ ६०=६२१ ÷ ६०=१०–२१, १०–२१ + ४–०=१४–२१=१०–२१ से १४–२१ तक विष घटी।

दूसरा उदाहरण—कृतिका भभोग ५७–१६५ ध्रुव ३० ÷ ६०=१७१८ ÷ ६=२८–३८, २८–३८ + ४–०=३२–३८ तक विष धड़ी रहेगी।

मास चक्र

मास	देवता	देवी	मास शून्य तिथि कृष्ण पक्ष	मास शून्य तिथि शुक्ल पक्ष	मास शून्य नक्षत्र	शून्य राशि
चैत्र	विष्णु	रमा	८, ९,	८, ९	रो० अश्व	११
वैशाख	मधुसूदन	मोहिनी	१२	१२	चि० स्वा०	१२
ज्येष्ठ	त्रिविक्रम	पद्माक्षी	१४	१३	उषा पुष्य	२
आषाढ़	वामन	कमला	६	७	पूफा धनि०	३
श्रावण	श्रीधर	कांतिमती	२,३	२, ३	उषा श्रव०	१
भाद्रपद	हृषीकेश	अपराजिता	१,२	१, २	शत० रेव	६

आश्विन	पद्मनाभ	पद्मावती	१०, ११	१०, ११	पूमा०	८
कार्तिक	दामोदर	राधा	५	१४	कृति० मघा	७
मार्गशीर्ष	केशव	विशालाक्षी	७, ८	७, ८	चि० विशा०	९
पूष	नारायण	लक्ष्मी	४, ५	४, ५	आर्द्रा अश्वि हस्त	४
माघ	माधव	रुक्मिणी	५	६	श्रव० मूल	१०
फाल्गुन	गोविन्द	धात्री	४	३	भर० ज्ये०	५

उपरोक्त मासों में राशियां शून्य हैं। इन लग्नों में कोई शुभ कार्य नहीं करना। शून्य मास में कोई शुभ कार्य नहीं करना। इनमें कार्य करने से धन नाश होता है।

परिहार—मासों की शून्य तिथियाँ, शून्य लग्न मध्यदेश में वर्जित है अन्य देश में नहीं। पंगु, अंध और जितनी लग्नें हैं और मासों की शून्य राशियां जितनी हैं ये सब गौड देश, मालव देश इन दोनों में त्याज्य हैं। अन्य देशों में वर्जनीय नहीं है।

	दिन लग्न	रात्रि लग्न	मतान्तर
पंगु अंधादि	वहरे=४–८	९–१०	७, ८, ९ लग्न दोपहर के वाद
लग्न दोष	पंगु=११	१२	१०, ११, १२ लग्न प्रातः व
	अंध=१,२,५	१, ४, ६	सायं पंगु

फल—वहरे लग्न में विवाह=दरिद्रता। दिशा अंत में विवाह=कन्या विधवा। अंध लग्न में विवाह=लड़का मरे। पंगु में विवाह=सब धन नाश। परन्तु लग्न का स्वामी व गुरु लग्न को देखते हों तो दोष नहीं होता।

सूर्य संक्रांति दोष—विपुव=तुला, मेष और अयन=कर्क, मकर इन चारों संक्रांतियों में जिस दिन संक्रांति हो वह दिन और उसके एक दिन आगे पीछे इन तीन दिनों को विवाह आदि शुभ कार्य में त्यागे इन दिनों शुभ कार्य नहीं करना। अन्य संक्रांतियों में जिस काल में संक्रांति हो उस काल से पहिले १६ घड़ी और आगे की १६ घड़ी त्यागे। इन ३२ घड़ियों में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना।

सूर्य आदि ग्रहों की संक्रांतियों में निषिद्ध घटियां	संक्रांति	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	वर्ज घटी	३३	२	९	६	२८	९	१६०

ये विवाह आदि शुभ कार्य में त्यागना। इन सब में सूर्य की संक्रांति की ३३ घड़ियाँ अति अशुभ हैं। ग्रह के एक राशि से दूसरी राशि में जाने के समय को संक्रांति कहते हैं।

चतुर्थ घटिका राहु चक्र

दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैर्ऋत्य
दिन घटी	३॥।	७॥	११।	१५	१८॥।	२२॥	२६।	३७ घटी
रात्रि घटी	३३॥।	३७॥	४१।	४५	४८॥।	५२॥	५६।	६० घटी

राहु उपरोक्त दिशा क्रम से ३॥। घड़ी प्रत्येक दिशाओं में रहता है। पूर्व ६॥।+३॥।=७॥ वायव्य+३॥।=११ दक्षिण। उत्तर २६।+३॥।=३० दिन में। ३०+३॥।=३३॥। घटी पूर्व में इत्यादि प्रकार से रहता है। सूर्योदय से ये

घड़ियाँ पूर्व आदि उपरोक्त क्रम से गिनना। राहु विरुद्ध क्रम में २ दिशाओं को पारकर तीसरी में जाना बताया है।

यात्रा में राहु दक्षिण शुभ, चंद्र सन्मुख शुभ, योगिनी बायें और पीठ पीछे शुभ है।

मुहूर्त विचार

२ घड़ी का एक मुहूर्त होता है। दिन में १५ मुहूर्त और रात्रि में १५ मुहूर्त होती हैं। दिनमान में घट बढ़ होने से १ मुहूर्त के समय में घट बढ़ हो जाता है। दिनमान ÷ १५ = १ मुहूर्त। ३ मुहूर्त प्रातः, ३ मु० संगवः, ३ मु० मध्याह्न, ३ मु० अपराह्न, ३ मुहूर्त सायंकाल। सूर्यास्त से ३ मुहूर्त तक प्रदोष। अर्द्धरात्रि के मध्य में २ घड़ी महानिशा। ५५ घड़ी में उषः काल, ५७ घड़ी में अरुणोदय। ५८ में प्रातःकाल तदनंतर सूर्योदय कहलाता है।

१५ मुहूर्त के नाम आदि। ये मुहूर्त नक्षत्र स्वामियों के नाम हा हैं।

	मुहूर्त के नाम		मुहूर्त के नक्षत्र			
क्रम	दिन में	रात्रि में	दिन के	रात्रि में	वार	वर्जित मुहूर्त
१	शिव	१ शिव	आर्द्रा	आ०	इतवार	अर्यमा
२	सर्प	२ अजपाद	श्ले०	पूभा०		१४
३	मित्र (सूर्य)	३ अहिर्बुध्न्य	अनु०	उभा	सोम०	राक्षस, ब्रह्म
४	पितर	४ पूषा	मघा	रेव०		१२ ८
५	वसु	५ अश्विनीकुमार	धनि०	अश्व	मंगल	अग्नि पितर
६	जल	६ यमराज	पूषा	भर०		७ ४
७	विश्वे देव	७ अग्नि	उषा	कृति	बुध	अभिजित
८	अभिजित	८ ब्रह्मा	अभि०	रोह		८
९	विधाता	९ चंद्रमा	रोह	मृग	गुरु	जल राक्षस
१०	इन्द्र	१० अदिति	ज्ये०	पुन०		६ १२
११	इंद्राग्नि	११ वृहस्पति	विशा०	पुष्य	शुक्र	ब्रह्म पितर
१२	राक्षस	१२ विष्णु	मूल	श्रव		८ ४
१३	वरुण	१३ सूर्य	शत०	हस्त	शनि	शिव सर्प
१४	अर्य्यमा	१४ त्वष्ठा	उफा०	चित्र		१ २
१५	भग	१५ वायु	पूफा०	स्वा०		

यहाँ मुहूर्त के साथ नक्षत्र देने का आशय यह है कि जब किसी नक्षत्र में कोई काम करना आवश्यक है वह नक्षत्र न मिले तो उस नक्षत्र का जो मुहूर्त है उस मुहूर्त में काम कर लेना। जैसे आर्द्रा नक्षत्र में काम करना है यदि वह न हो तो उसके मुहूर्त शिव में काम कर लेना चाहिये परन्तु यदि उस दिन शनिवार है उसे त्याग देना क्योंकि शनिवार को शिव मुहूर्त वर्जित है।

प्रदोष काल—द्वादशी के दिन अर्द्धरात्रि तक त्रयोदशी हो तो प्रदोष। षष्ठी के दिन १॥ प्रहर रात्रि तक सप्तमी प्रवेश हो तो प्रदोष होता है। तृतीया के

दिन एक प्रहर रात्रि के भीतर तक चतुर्थी हो तो प्रदोष होता है। यह व्रतबंध में वर्जित है।

पर्व—कृष्ण १४–८, अमावस्या, पूर्णमासी और संक्रांति का दिन पर्व संज्ञक हैं।

अनाध्याय—आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२–१४, पूर्णमासी या अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी संक्रांति का दिन व्रतबंध में अनध्याय हैं।

गौधूलिका—जब सूर्य अस्त होने को हो, जिस समय गौओं की धूली आकाश में पूरित हो उस समय जितने मंगल कार्य हों वे सब शुभ हैं।

सदा शुभ मुहूर्त—चैत्र शुक्ल १, अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल ३) विजय दशमी (आश्विन शुक्ल १०) कार्तिक शुक्ल १, इनमें मुहूर्त देखने की जरूरत नहीं है। ये सदा शुभ हैं।

उत्तरायण में शुभ कर्म—गृह प्रवेश, विवाह, देव प्रतिष्ठा, मुंडन, जनेऊ और दीक्षा उत्तरायण में करना। अशुभ कर्म दक्षिणायन में करना। दक्षिणायन में विवाह, व्रतवंध, मुंडन जलाशय आदि खनन, देवादि प्रतिष्ठा, वृक्षारोपण नहीं करना।

अम्बुपाची काल—जिस वार में जिस समय सूर्य मिथुन राशि में जाय उस वार के उसी समय को अम्बुपाची काल कहते हैं अर्थात् उस समय से ३ दिन तक पृथ्वी रजस्वला होती है। उस दिन खेत में बीज नहीं बोना। उस समय के उत्पन्न धान को नहीं खाना इस समय दूध पीने से सर्प का भय नहीं रहता। उस समय खनन नहीं करना जल के बीच उस समय शौचादि क्रिया नहीं करना।

पुण्यकाल—१४ तिथि को आर्द्रा नक्षत्र और व्यतीपात योग हो उस समय गंगा स्नान करने से दुर्लभ फल होता है मौन धारण कर प्रातः स्नान करने से ३ कुल का उद्धार होता है।

त्रिपुष्कर योग पर विचार—वार तिथि और नक्षत्रों के योग से यह योग बनता है। यदि त्रिपुष्कर योग में किसी की मृत्यु हो जाय तो पुत्र, भाई, स्त्री आदि सम्बंधियों की ३ की मृत्यु होगी। पक्ष के मध्य में, ३ पक्ष में, ६ मास या सम्वत्सर के मध्य में अवश्य दो और सम्बंधियों की मृत्यु होगी। त्रिपुष्कर में वार दोष से धान की एवं पुत्र की हानि तिथि दोष से गौ का नाश, नक्षत्र दोष से गोत्र के सम्बंधियों की मृत्यु होती। त्रिपुष्कर दोष से वास्तुकैव वृक्ष तक का नाश हो जाता है।

त्रिपुष्कर दोष में विचार—१८ अंक + मृत्यु की तिथि + वार के अंक के योग में + १७ और मिलाकर योग में ३ का भाग दे = शेष १—दोष स्वर्ग में। २—पाताल में ३ वा ०—पृथ्वी में। पृथ्वी का दोष हानिकारक है।

इसको शांति के लिये हवन और दान आदि करना सौ, सहस्र, दश सहस्र या या शक्ति अनुसार समिधा के हवन करने से दोष शांत हो।

त्रिपुष्कर में वार मंगल, रविवार वा शनिवार में से हो तिथि २-७-१२ में से हो। नक्षत्र कृति, पुनर०, उफा०, विशा०, उषा, पूभा० में से कोई होने से यह योग होता है।

जन्म नक्षत्र पर विचार—इसमें अधिकांश मत है इसमें शुभ कार्य नहीं करना। मामला मुकदमा, यात्रा, लड़ाई, खेती, औषधि सेवन भी इसमें नहीं करना परन्तु मतान्तर है कि इसमें नवीन वस्त्र आभूषण धारण, मंत्र ग्रहण देव प्रतिष्ठा उपनयन आदि भी जन्म नक्षत्र तथा जन्म लग्न में शुभ है।

भिन्न-भिन्न योगों का परिहार

यहाँ कई योग वताये हैं उनमें वर्जनीय योग अधिक हैं जिनके कारण मुहूर्त खोजने में बहुत कठिनाई होती है। शुभ समय मिलता ही नहीं। इसके लिये ऋषियों ने बहुत परिहार बताये हैं जिसके कारण मुहूर्त खोजने में सुगमता होती है। यद्यपि कुछ परिहार पहिले वता चुके हैं। परन्तु उन सबको एक स्थान में देना उचित है जिससे परिहार खोजने में कठिनाई न हो।

(१) तिथि में सिद्ध योग पड़ जाने से रिक्ता दग्धा आदि तिथि दोष नहीं रहता।

सिद्ध योग दिन	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
तिथि	जया	भद्रा	पूर्णा	नंदा	रिक्ता

और भी लग्न पर लग्नेश तथा बुध, गुरु की दृष्टि होने से तिथि आदि का दोष नहीं रहता या शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में वलवान् तथा अपने नवांश आदि में रहने से यह दोष नहीं रहता अमृत सिद्ध योग भी तिथियों के अनेक दोषों को नाश करता है।

(२) वार—जो कार्य जिस वार में कहा है वह न मिले या निषेध हो तो उस वार के होरा में वह कार्य कर लेना। अर्थात् इच्छित वार का होरा जिस समय हो वह कार्य कर लेना शुभ है। वार का होरा निकालना बता चुके हैं।

(३) नक्षत्र—इष्ट नक्षत्र न मिले तो एक दिन के भीतर ही २७ नक्षत्र भुक्त हो जाते हैं। वह दिन रात के मुहूर्त के अनुसार विचारना। इन मुहूर्त के नाम नक्षत्र स्वामी के अनुसार ही हैं। इष्ट नक्षत्र जिस मुहूर्त में हो उस मुहूर्त में शुभ कार्य कर लेना चाहिये। दिन में १५ और रात्रि में १५ मुहूर्त होते हैं। उनका चक्र दे चुके हैं।

(४) योग—ऐसे ही सूक्ष्म योग भी हैं। इष्ट योग की भभोग घटी में २७ का भाग देना। लब्धि उतनी घटी पल एक सूक्ष्म योग की होगी। जो वर्तमान हो उससे क्रमानुसार ३७ योग गिनकर जब उस दिन का इष्ट योग प्राप्त हो तब तक वह कार्य कर लेना शुभ है।

(५) चन्द्रमा—चंद्र का वास इष्ट दिन में ही इस प्रकार होता है।

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	योग
घटी	१७	१५	२१	१६	१८	१९	१५	१४	१३५
घंटा	६–४८	६–०	८–२४	६–२४	७–१२	७–३६	६–०	५–३६	५४

विवाह आदि में अशुभ स्थान में चंद्र हो तो गोचर में अपने उच्च, स्वगृही, मित्रगृही या पूर्ण चंद्र होने पर शुभ हो जाता है। यदि चंद्र शुभ ग्रह के या मित्र ग्रह के नवांश में हो और गुरु से दृष्ट हो तो गोचर में अशुभ स्थान में हो तो भी शुभ फल देता है। चंद्र गोचर में शुक्ल पक्ष को शुभ स्थान में हो तो समस्त शुक्ल पक्ष शुभ है। चंद्र

दुष्ट फल नहीं देगा। गोचर में कृष्णपक्ष प्रतिपदा में यदि चंद्र अनिष्ट स्थान में हो तो समस्त कृष्ण पक्ष अशुभ होगा। इसके विपरीत जिस कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा में चंद्र अशुभ हो तो उन पक्षों में चंद्र का दुष्ट स्थान गत दुष्ट फल नहीं होता।

(६) तारा विपत, प्रत्यरि और वध तारा प्रथम आवृति में शुभ नहीं होते वर्जित हैं। दूसरी आवृत्ति में विपत् के आदि की २० घड़ी प्रत्यरि की मध्य की २० घड़ी, वध के अंत की २० घड़ी त्याग देना तीसरी आवृत्ति में सभी शुभ है।

(७) पंगु अंध काण लग्न, मास शून्य राशि—गौड़, मालवा देश और मध्य देश में वर्जित है अन्य देशों में इनका दोष नहीं है। केन्द्र त्रिकोण या उपचय में शुभ ग्रह या एक भी बलवान ग्रह हो तो शून्य तिथि, शून्य नक्षत्र का दोष नाश करता है। लग्नेश या गुरु लग्न को देखे तो पंगु अंध आदि दोष नहीं होता।

(८) भद्रा जिस लोक में वास करती है उस लोक वालों को दोष है अन्य में नहीं। अर्थात् मृत्युलोक में भद्रा का वास होगा तब भद्रा दोष करेगी अन्य लोक में हो तो दोष नहीं और भी भद्रा के मुख की ३ घड़ी शुभ है।

(९) यम घंट का दोष विन्ध्य से उत्तर हिमालय तक है। अन्य देशों में दोष नहीं। केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो या चंद्र हो तो यमघंट का दोष नहीं होता। और ८ घड़ी से अधिक दिन में या रात्रि में इसका दोष नहीं होता। वशिष्ठ का मत है कि मृत्यु दायक पाप योग जो कहे हैं वे दिन में फल करते हैं। रात्रि में दोष नहीं है।

(१०) सिंह मकर के गुरु और अतिचार का परिहार—

(१) गोदावरी के उत्तर और गंगा के दक्षिण देशों में विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित है। अन्य देशों में शुभ है।

(२) सिंह राशि, सिंह अंशक गुरु में भी सूर्य मेष का हो तो किसी देश में शुभ है।

(३) मघा का ४ पाद पूफा० का १ पाद तक सिंह गत गुरु सभी देशों में वर्जित है। अन्य चरण में जब गुरु रहे तब गंगा गोदावरी के स्थान को छोड़कर अन्य सभी देशों में दोष नहीं है।

(४) मेष के सूर्य में गंगा गोदावरी के मध्य के देश में सिंह के गुरु का दोष नहीं। परन्तु कलिंग, गौड़ और गुर्जर में समस्त सिंह का गुरु वर्जित है।

(५) मकर का गुरु—नर्मदा के पूर्व भाग और गंडकी के पश्चिम सोन नदी के उत्तर तथा दक्षिण में विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित नहीं है। कोकण, मगध गौड़ और सिंध देश में वर्जित है।

(११) मघा सिंह का गुरु—माघ की पूर्णिमा यदि मघा नक्षत्र युक्त हो और उन्हीं दिनों मघा के गुरु हों तो उसी वर्ष में उपरोक्त ३ परिहारों के अतिरिक्त देश तथा समय में गुरु का दोष है। माघी पूर्णिमा मघा युक्त न हो तो सिंह के गुरु का दोष नहीं है। माघी मघा युक्त हो और गुरु भी मघा पर हो तो मघा मास कहलाता है। इसमें विवाह आदि शुभ काम नहीं करे। जब मघा को छोड़कर गुरु पूफा० पर चला जावे तब शुभ है।

मकर गत गुरु के ६० दिन मात्र वर्जित करना क्योंकि इतने दिन गुरु नीच अंश में रहता है। अन्य अंशों में शुभ कार्य करना। नीच गत और वक्री गुरु मगध में वर्जित है। अन्य देश में शुभ है।

(१२) लुप्त सम्वत्सर—१, २, १२, ११ राशि में से अन्य राशियों में गुरु अतिचार करे अर्थात् वक्र होकर पुनः मुक्त राशि पर न आवे तो वह लुप्त सम्वत्सर होता है। शुभ कार्यों में नर्मदा और भागीरथी के मध्यवर्ती देशों में अति निंद्य है। अन्य देशों में इसका दोष नहीं है।

अन्य परिहार—वारम्वार आने जाने में, प्राचीन गृह के प्रवेश में, अन्न प्राशन में, वस्त्र पहिरने में, वधू प्रवेश में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं है। संकट की यात्रा में, राजपीड़ा, दुर्भिक्ष को पीड़ा, तथा स्थान छोड़कर बहुत दिन व्यापनी यात्रा में शुक्र का दोष नहीं अर्थात् शुक्र के सन्मुख दक्षिण का विचार नहीं। देव मनुष्य सम्बन्धी उत्सव में, चतुर्मास के व्रत नियमों में गुरु शुक्र का अस्त दोष नहीं है।

साधारण शुभ काम मुहूर्त—लग्न से ८-१२ स्थान कोई ग्रह से युक्त न हो, कर्ता के जन्म राशि या लग्न से ३, ६, ११, १०वां कोई लग्न होकर शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो, चंद्र लग्न से ३, ६, ११, १० में से किसी स्थान में हो तब शुभ कार्य आरंभ करना।

कार्य में वर्जित—देव प्रतिष्ठा, विवाह, चूड़ा कर्म, यज्ञोपवीत, अग्न्याधान, गृह प्रवेश, राजतिलक और भी जिनका कोई नियत काल नहीं है ये सब शुभ कर्म दक्षिणायन में नहीं करना। और गुरु शुक्र दोनों के अस्त, वाल्यावस्था, वृद्धावस्था और केतु के उदय में नहीं करना। कोई आचार्य कहते हैं जब केतु दिखे या पक्ष भर शुभ कर्म वर्जित है।

केतु—वाराह जी ने ६० प्रकार के केतु कहे हैं जिनका उदय अशुभ होता है राजाओं में संग्राम होने का संयोग होता है और भी ३३ प्रकार के केतु होते हैं जो दारुण प्रभाव उत्पन्न करते हैं वशिष्ट जी ने एक ब्रह्मपुत्र नामक केतु का वर्णन किया है उसका उदय संहार कारक होता है।

साधारण मुहूर्त

दतून (दंतधावन) निषेध—अमावस्या, षष्ठी, प्रतिपदा, रविवार आशय यह है कि वृक्षों की दतून तोड़कर दतून इन दिनों न करे। साधारण प्रकार से दांत की सफाई कर लेना।

तेल लगाना—तिथि ९ को एवं पौर्णमासी, अमावस्या, चतुर्दशी, अष्टमी के दिन तेल लगाना, स्त्री प्रसंग, मांस सेवन वर्जित है। सप्तमी तथा रविवार को भी वर्जित है। वार अनुसार तैलाभ्यंग फल—रविवार—कष्ट। सोमवार—कीर्ति। मंगल—मृत्यु, बुध—धन लाभ। गुरु—धन हानि। शुक्र—शोक। शनि—दीर्घायु। परिहार—रविवार फल युक्त तेल लगाना। मंगल—मिट्टी युक्त। गुरु—दूर्वा युक्त। शुक्र—गोवर युक्त तेल लगाने से दोष नहीं। मूंगा, दाँत, वस्त्र, चूड़ी आदि धारण करना—रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य,

पुनर्वसु इन नक्षत्रों में और रिक्ता को छोड़कर अन्य तिथियों में और सोमवार, मंगल, शनि इन दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में, मूंगा, दांत बंधाना, चूड़ी पहिरना, शंख सुवर्ण इनके आभूषण व वस्त्र धारण करना शुभ है ।

मंगल के दिन लाल वस्त्र धारण करना । तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य इन नक्षत्रों में सधवा स्त्री पूर्वोक्त मूंगा आदि न धारण करे । अन्य मत है शतभिष नक्षत्र में भी सधवा स्त्री मूंगा आदि धारण व स्नान न करे । यदि ऐसा कार्य भूल से हो जावे तो पति की पूजा करने से दोष शांत हो जाता है । नूतन वस्त्र धारण—रविवार—शीघ्र जीर्ण हो । सोम—जल से सदा गीला रहे । मंगल—शोक प्रद । बुध—धन प्राप्ति । गुरु—ज्ञान प्राप्ति । शुक्र—मित्र प्राप्ति । शनि—पहिरने से वस्त्र मलिन रहे ।

नवीन वस्त्र कहीं जल जाने आदि में शुभाशुभ विचार—कदाचित पहिरने के दिन नवीन वस्त्र कहीं जल या फट जावे या गोवर आदि लग जाय तो उसका फल विचार–

शुभ	अशुभ	शुभ
देव	राक्षस	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	राक्षस	देव

उस वस्त्र को यहाँ वताये चक्र के अनुसार ९ भाग में वाँटना । चारों कोनों में देव । मध्य में ३ भाग राक्षस के विचारना छोरों पर देव के वीच मनुष्य-कल्पना करना । देखना फटा या जलादि स्थान यहाँ बताये चक्र के अनुसार कहाँ पड़ता है । देव—शुभ योग व पुत्र प्राप्ति । राक्षस–वस्त्र शुभ नहीं है । मनुष्य—शुभ है भोग दाता है । यदि राक्षस, देव, मनुष्य इन तीनों भागों में जला है तो वह वस्त्र शुभ कारक नहीं होता ।

ऐसा विचार शैया, आसन और खड़ाऊँ में भी करना ।

आसन, शैया, पादुका आदि धारण—अनु० रेव० मृग० मर० पुन० अश्व० चित्रा० हस्त० तीनों उत्तरा, श्र० पुष्य रोह० इन नक्षत्रों में शुभ दिन में ये धारण करना शुभ है ।

निंद्य काल में भी कब वस्त्र धारण करना—किसी ब्राह्मण के स्वयं कहने से और विवाह आदि में और प्रीत पूर्वक राजा के दिये हुए वस्त्र को निंद्य भी वार या नक्षत्र ह: तो धारण करना उचित है ।

चूड़ी धारण—जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें । प्रथम ३ नक्षत्र सूर्य के अशुभ । ५ नक्षत्र मंगल के अशुभ ।

ग्रह क्रम	सूर्य	मंगल	शुक्र	बुध	राहु	शनि	गुरु	चंद्र	केतु
नक्षत्र अन्तर	३	५	३	४	७	२	१	२	१
फल	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ

इत्यादि क्रम से चक्र के अनुासर जान लेना

नीला काला वस्त्र धारण—पुन०, धनि०, अश्व०, हस्त, स्वा०, विशा० तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा और शनिवार इतवार में नीला व स्याह वस्त्र धारण करना ।

रोम वाले वस्त्र—शुभ है। नील वस्त्र के जो नक्षत्र है उनमें रोम वाले बस्त्र शुभ हैं रेवती व पुष्य नक्षत्र भी शुभ है।

पट्ट वस्त्र (रेशमी) धारण—गुरुवार रविवार, बुध, शुक्रवार एवं वस्त्रोक्त नक्षत्र व श्रवण नक्षत्र तथा शुभ ग्रह युक्त स्थिर लग्न में रेशमी वस्त्र धारण शुभ है।

वस्त्र धारण नक्षत्र फल—अश्व० = वस्त्र प्राप्त हो। भरणी = पहिने तो वित्तक्षय। कृति० = अग्नि भय हो। रो० = सर्व सम्पदा। मृग० = मूषक भय। आर्द्रा = मृत्यु। पुन०, पुष्य = धन धर्म व महोत्सव। श्ले० = शोक। मघा = मरण। पूफा = राज भय। उफा = धनागम। हस्त = कर्म सिद्ध। चित्रा = श्रेष्ठ सम्पदा। स्वा० = भोजन। विशा० = आनन्द प्राप्ति। अनु०=मित्र प्राप्ति। ज्ये०=वस्त्र चोरी हो। मूल=जल में डूबे। पूषा = महा रोग। उषा=मिष्ठान प्राप्त। श्रव०=नेत्र रोग। धनि० = धनागम। शत० = विष भय। पूभा = जल भय। उभा = धनागम। रेवती में वस्त्र धारण = रत्न प्राप्ति।

पहले पहल कपड़ा धोना धुलवाना या धोबी को देना—रिक्ता तिथि ४–९–१४ और पर्व दिन अर्थात् कृष्ण ८–१४, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य संक्रांति के दिन छटि व पित्र श्राद्ध का दिन शनिवार बुधवार इन सब को छोड़ कर अन्य तिथि वारों में, धनि० अश्व० हस्त० चित्रा, स्वा० विशा० अनु० पुन० पुष्य इन नक्षत्रों में पहले पहल कपड़ा स्वतः धोना या धोबी को धोने को देना शुभ है।

क्षार साबुन आदि से कपड़े धुलवाना—शनिवार व मंगलवार १–६–१२ तिथि में व श्राद्ध के दिन एवं उपरोक्त पर्व के दिन धोबी से कपड़े धुलाने को देना अशुभ है या साबुन क्षार आदि से पर्व के दिन कपड़े धोना वर्जित है।

स्त्री का सुवर्ण आदि वस्त्र चूड़ी आदि धारण—अश्व० धनि० रेव० चित्रा, स्वा० विशा० अनु० इन नक्षत्रों में स्त्री को सुवर्ण रत्न चूड़ी आदि एवं वस्त्र धारण करना शुभ है।

भूषण बनवाना व धारण—जिस दिन त्रिपुष्कर योग हो उस दिन और श्रवण, तीनों उत्तरा इनमें भूषण बनवाना व धारण करना चाहिये।

वृक्ष रोपण या बोना—विशा० मूल, रेव० चित्रा० अनु० मृग०, ३ उत्तरा, रोह० हस्त अश्व० पुष्य, अभिजित इन नक्षत्रों में वृक्ष लगाना या रोपण करना शुभ है। शुक्रवार, सोम० बुध या गुरुवार शुभ है। वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, कार्तिक, फाल्गुन ये मास वृक्ष लगाने में शुभ हैं।

वृक्ष चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने और क्रम से यहाँ चक्र में नक्षत्र संख्या स्थापित करे और ठीक बताये चक्र के अनुसार फल जाने।

स्थान	मूल	त्वचा	शाखा	पत्र	शीर्ष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
नक्षत्र क्रम	३	३	४	२	३	१	५	२	४
फल	रोगप्रद	धनागम	नाशप्रद	दरिद्रता	शुभप्रद	मृत्यप्रद	पुत्रनाश	धनप्रद	लाभप्रद

हल चक्र से बीज बोना—सूर्य जिस नक्षत्र को छोड़ चुका हो उस नक्षत्र से गिनना ९ अशुभ और ८ शुभ हैं। जैसे सूर्य आर्द्रा में हो तो बीज बोने के लिये मृग० आर्द्रा० पुनर नक्षत्र अशुभ है। पुष्य से स्वाती तक शुभ विशाखा से धनिष्ठा तक अशुभ। शत० से रोहिणी तक शुभ है। इसमें अभिजित की भी गिन्ती करना।

राहु के नक्षत्र से बीज बोने का फल—राहु जिस नक्षत्र पर हो उससे ८ नक्षत्र अशुभ ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ और ४ नक्षत्र अशुभ हैं। इसमें अभिजित की गिन्ती नहीं करना।

सस्य वृक्षलता आदि सींचना—सस्य रोपण के जो मुहूर्त कहे हैं उनमें खेती के वृक्ष व लता आदि सींचना शुभ हैं। परन्तु बुधवार व इतवार का दिन मघा और हल नक्षत्र वर्जित हैं।

हल चक्र सूर्य अन्य मत से—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना क्रमानुसार फल विचारना।

नक्षत्र	३	३	३	५	३	५	३	२
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

पहले पहल हल चलाना—मूल विशा० मघा० श्रव० धनि० शत० पुन० स्वा० तीनों उत्तरा रोह० चित्रा अनु० मृग० रेव० अश्व० पुष्य हस्त इन १९ नक्षत्रों में और शनिवार, रविवार को छोड़कर अन्य दिनों में पाप ग्रहों के निर्बल रहते और जल राशि के चन्द्र के रहते शुक्र के उदय रहते और लग्न में पूर्ण चन्द्र व गुरु के रहते पहले-पहल हल चलाना शुभ है। वही ५, ११, ४, १, १०, ७ लग्नों में और ४, ९, १४, ६,८ तिथियों में क्षय कारक होता है।

बीज बोना—मूल, मघा, तीनों उत्तरा, रोह०, मृग०, चित्रा, अनु०, रेव०, हस्त, अश्व०, पुष्य०, धनि०, स्वा० नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर शेष दिनों में तिथि ४-६-९, १४-३० को छोड़कर शेष तिथियों में शुभ होता है।

धान रोपना—विशा० पूभा० मू० रोहि० शत० उ० फा० नक्षत्र और रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार और तिथि ४-९-१४-३० छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ है।

बीजोप्ति वर्जित—जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करे तब से ३ दिन तक पृथ्वी रजस्वला धर्म को प्राप्त होती है उस समय बीज बोना वर्जित है।

अन्यमत से शस्य रोपण अंकुर रोपना—हस्त, चित्रा, स्वा०, तीनों उत्तरा, मूल०, धनि०, रेव०, मृग०, पुष्य, अश्व, अनु०, मघा ये नक्षत्र शुभ हैं। एवं शुभ वार में शस्य रोपण शुभ है। रिक्त तिथि शनि मंगलवार वर्जित है। इसमें एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना शुभ है।

खेत काटना—मूल०, ज्ये०, आर्द्रा०, श्ले०, पूभा०, हस्त, कृति०, धनि०, श्रव०, मृग०, स्वा०, मघा, तीनों उत्तरा, पूषा०, भर०, चित्रा, पुष्य नक्षत्र शनिवार व

मंगलवार को छोड़कर शेष वार शुभ हैं। तिथि ४, ९, १४ को छोड़कर सब शुभ हैं वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ लग्न शुभ है।

अन्यमत से धान्य छेदन—आर्द्रा, मघा, हस्त०, मृग०, पुष्य०, स्वा०, इनमें नवीन धान्य छेदन शुभ है तथा मूल श्रव०, धनि०, भी धान्य छेदन में शुभ है। गुरुवार, शुक्रवार शुभ है। रिक्ता तिथि और मंगल व शनिवार वर्जित है।

अन्न गाहना धान मर्दन—पूफा०, उफा०, श्रव०, मघा, ज्ये०, रोहि०, मूल०, अनु०, रेवती इन नक्षत्रों में कण मर्दन (खलिहान में अनाज का पीटना गाहना) शुभ है।

अनाज भरना—विशा०, कृति०, तीनों पूर्वा, भर०, मघा, आर्द्रा, श्ले०, ज्ये०, इनको छोड़कर अन्य नक्षत्र में और ४-१-७ इन राशियों को छोड़कर अन्य लग्न में, सोम, बुध, शुक्र, गुरु इन दिनों में धान्य को वखारी कंडा आदि में रखना या संचय करना शुभ हैं।

अनाज वाढ़ी पर देना—तीनों उत्तरा, रोह०, पुष्य०, विशा०, ज्ये०, अश्व०, धनि०, शत० पुनः स्वा० इन नक्षत्रों में धान्य वृद्धि के लिए अर्थात् ड्योढ़ी या सवाई पर आसामियों को देना शुभ है।

प्रत्येक वर्ष में नवान्न भक्षण—श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा०, अश्व०, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु०, मृग०, रेव० नक्षत्रों में और शुभ ग्रहों से युक्त व दृष्ट शुभ ग्रहों के लग्न में शुभ है और १-६-११ व रिक्त तिथि व विष घटी और पूष चैत्र मास व मंगल रविवार इन सबको छोड़ कर अन्य तिथि वार मास में नया अन्न भक्षण करना श्रेष्ठ है।

नवान्न चक्र—बुध के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना। क्रमानुसार फल विचारे।

नक्षत्र क्रम	५	५	५	५	४	२	१
फल	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नये वर्तन में भोजन—सोना, चाँदी, काँसा आदि के बने हुए नवीन पात्र में भोजन करने को चर, क्षिप्र, मृदु, ध्रुव नक्षत्रों में बुध, शुक्र, गुरुवार व अमृत योग में भोजन करना शुभ है।

नवीन पात्र चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर क्रमानुसार फल विचारे। रिक्ता तिथि, अमावस्या तथा षष्ठी एवं देवशयनी ११ से देव उत्थानी तक वर्जित है।

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋ०	पश्चि०	वाय०	उत्तर	ईशा०	मध्य
	२	२	२	२	२	२	२	२	११
	वंधन	सुख	हानि	लाभ	सुख	मृत्यु	पुत्रलाभ	शोक	वृद्धि

गाय, वैल, खरीदना-वेचना—अश्व०, पुष्य०, हस्त०, रेव०, विशा०, पुन०, ज्ये०, शत० धनि० इन नक्षत्र में गाय, वैल खरीदना-वेचना शुभ है।

गौ न वेचे—तिथि ३०, १४, ८, रोहिणी, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, अश्व०, भर० और चित्रा नक्षत्र, रवि, मंगल, शनिवार में भद्रा और व्यतीपात योग में गौ पालन और वेचने से शुभ फल नहीं होता।

गाय-बैल लेना—उफा० से दिन नक्षत्र तक गिनकर फल विचारे—

अंग	सिर	मुख	पद	हृदय	स्तन	भग	गुह्य
नक्षत्र	३	२	६	५	६	१	४
फल	लाभ	हानि	अर्थलाभ	सुख	महालाभ	प्रजा	भय

भैंस लेना—भैंस लेना हो तो सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर उपरोक्त अनुसार ही फल विचारे—

बैल लेना—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें फल—

सिर	मुख	पद	हृदय	स्तन	गुह्य
३	२	१६	२	२	२
लाभ	हानि	अर्थ लाभ	सुख	महा लाभ	भय

गौशाला प्रवेश—तीनों पूर्वा, धनि०, रेव०, मृग०, विशा०, श्ले०, अश्व०, इनमें गौ आदि के गृह प्रवेश की यात्रा शुभ होती है।

गौ प्रवेश वर्जित—तीनों उत्तरा, रोहि०, श्रव०, हस्त, चित्रा और ३०, १४, ८ तिथि में गौ यात्रा या प्रवेश न करावे।

पशु यात्रा वर्जित अन्य मत—रिक्ता तिथि, अष्टमी; अमावस्या और मङ्गलवार को तथा चित्रा श्रवण तीनों उत्तरा, रोहिणी, में पशु यात्रा या पशु प्रवेश वर्जित है।

पशुओं की रक्षा—जब शुभ ग्रहों की राशि लग्न में हो और लग्न के आठवें स्थान में कोई पाप ग्रह न हो और अपनी योनि का नक्षत्र हो तब पशुओं की रक्षा करना चाहिये अथवा चर स्वा०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत०, इन नक्षत्रों में पशुओं की रक्षा करना चाहिये। उपरोक्त वर्जित समय में पशुओं को घर से बाहर ले जाना या ले आना या घर में रखना शुभ नहीं है।

पशुओं का गमन क्रय विक्रय आदि—मङ्गलवार सोमवार शनिवार को तथा श्रवण चित्रा, ध्रुव, नक्षत्रों को छोड़ कर अमावस्या रिक्ता तिथि अष्टमी को छोड़ कर हस्त, पुष्य, आर्द्रा, मृग, मिश्र नक्षत्र और पुन०, धनि०, अश्वनी तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, शत०, रेवती नक्षत्र में पशुओं का गमन और क्रय विक्रय आदि शुभ है।

घोड़ा के बेचने खरींदने चढ़ने का—अश्व० पुष्य, हस्त, रेव० धनि० मृग० स्वा० शत० पुन० इन नक्षत्रों में और रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथि में और मङ्गल को छोड़ कर अन्य दिन में घोड़े का काम अर्थात् खरीदना बेचना चढ़ना आदि शुभ है।

अश्वकर्म अन्य मत—क्षिप्र नक्षत्र तथा रेव० धनि० स्वा० मृग० शत० इन नक्षत्रों में घोड़े के कार्य में सवारी आदि शुभ है। परन्तु रिक्ता तिथि और मङ्गल वार वर्जित है।

अश्व चक्र—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनना। अभिजित सहित चन्द्र नक्षत्र क्रमनुासार चक्र के अनुसार स्थापित कर फल विचारे।

अंग	स्कंध	पृष्ठ	पुच्छ	पाद	उदर	मुख
नक्षत्र क्रम	५	१०	२	४	५	२
फल	स्कंधपूत हो पालकी आदि वाहन मिले	अर्थ सिद्धि	पत्नी नाश	रण में भंग	घोड़ का नाश	अर्थ लाभ

शिविका रोहण पालको सवारी—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र तक गिन कर यहाँ वताये चक्र में क्रमानुसार स्थापित कर फल जाने

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	मध्य
नक्षत्र क्रम	५	५	५	५	७
फल	आरोग्य	कष्ट	कृशता	व्याधि नाश	शुभ आयुवृद्धि

हाथी के वेचने खरीदने चढ़ने का—चित्रा० अनु० मृग० रेव० अश्व०, पुष्य, हस्त, श्रव० धनि० शत० पुन० स्वा० इन नक्षत्रों में हाथी का कर्म अर्थात् खरीदना वेचना चढ़ना शुभ है।

गज चक्र—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र तक गिनकर क्रमानुसार नक्षत्र चक्र में स्थापित यर फल जाने।

अंग	कर्ण	मस्तक	दंत	पुच्छ	शुंड	पृष्ठ	उदर	मुख	पाद
नक्षत्र क्रम	२	२	२	२	२	४	४	४	६
फल	महा लाभ	लाभ	लाभ	हानि	शुभ	सुख संपदा	रोग	मध्यम	लाभ

हाथी का अंकुश हाँकने का—शुभ तिथि वार शुभ ग्रहों के लग्न शुभ नवांश में तथा मकर कुंभ लग्न और शनिवार में हाथी का अंकुश हाँकने का मुहूर्त शुभ है।

रथकर्म—क्षिप्र, मृदु नक्षत्र, रोह० ज्येष्ठा व चर नक्षत्रों में रथ कर्म शुभ है। तथा शुभ ग्रह की लग्न हो तथा रविवार सहित शुभवार हो।

रथचक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्रानुसार क्रम से नक्षत्र स्थापित कर चक्र अनुसार फल जाने।

अंग	श्रृंग	पहिये	मध्य दंड	रथ अग्र	जुआ	अन्त के मार्ग पर	सर्वत्र
नक्षत्र	३	६	३	२	३	६	३
फल	मृत्यु	जय	सिद्धि	धनलाभ	भंग	शुभ	सुख

खरीदने वेचने के मुहूर्त पर विचार—मोल लेने के मुहूर्त में वेचना शुभ नहीं है। और वेचने के मुहूर्त पर मोल लेना शुभ नहीं है। यद्यपि मोल लेने वाला वेचने वाले के मुहूर्त में मोल नहीं लेगा तो वेचने वाला किस के हाथ अपना माल बेचेगा। इस रीति से दोनों कार्य नहीं हो सकते। तथापि आवश्यकता के कारण किसी एक की मुहूर्त का विचार नहीं करने से दूसरे का विचार हो सकता है। परन्तु बड़ो चीजों के वेचने खरीदने के मुहूर्त विचार करना।

बाजार कार्य वेचना खरीदना—चित्रा अनु०, मृग०, रेव०, रोह०, तीनों उत्तरा अश्व०, पुष्य, हस्त, अभिजित इन तीनों नक्षत्रों में शुभ है। ४-९-१४ तिथि मङ्गलवार

कुंभ लग्न छोड़ कर अन्य तिथि दिन व लग्न में और चन्द्र व शुक्र इन दोनों के लग्न में रहते और ८-१२ घर में पाप ग्रह न हो २-१०-११ घर में शुभ ग्रह हों तब बाजार कार्य खरीदना बेचना शुभ है।

क्रय (खरीदने) का मुहूर्त—रेव०, अश्व०, शत०, स्वा०, चित्रा ये नक्षत्र वस्तु खरीदने में शुभ है।

बेचने का—तीनों पूर्वा, विशा०, कृति, श्ले०, भरणी इन नक्षत्रों में शुभ है। और कुंभ लग्न को छोड़ कर जिसके केन्द्र और त्रिकोण में शुभ ग्रह हों और ३-६-११ घर में पाप ग्रह हों ऐसे लग्न में और शुभ तिथियों में किसी वस्तु का वेचना शुभ है।

क्रय विक्रय—पुष्य, पूभा, उभा, स्वा०, श्रव०, हस्त, उत्तरा, मृग, अनु०, श्ले०, रेव०, ये नक्षत्र तथा सोमवार, शुक्रवार, गुरुवार ये खरीदने वेचने के कार्य में शुभ हैं। तथा उत्तम शकुन भी देखना।

दुकान करने का मुहूर्त—मृग०, रेव०, चित्रा, अनु०, तीनों उत्तरा रोह०, हस्त०, अश्व०, पुष्य इन शुभ नक्षत्रों में और ४, ९, १४ को छोड़कर शेष तिथियों में मंगलवार को छोड़कर शेष दिनों में, कुम्भ को छोड़कर शेष लग्न में जब शुक्र चंद्रमा लग्न में हो ८-१२ घर में पाप ग्रह न हो उस समय दुकान खोलना शुभ है।

सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर क्रमानुसार चक्र में स्थापित कर फल विचारें।

नक्षत्र क्रम	१-२	३-५	६-९	१०-१३	१४-१६	१७-२०	२१-२४	२५-२८
स्थान फल	आसन	मुख	आग्नेय	नैऋत्य	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
	सौख्य	विक्रम नाश	अर्थ नाश	सुख	महा श्रेष्ठा	चौर भय	सर्व हनन	शुभ प्रद

वाणिज्य कर्म—अनु०, तीनों उत्तरा, पुष्य, रेव०, रोह०, मृग०, हस्त, चित्रा अश्व० में वाणिज्य कर्म शुभ है।

अन्यमत से वाणिज्य कर्म—पुष्य, अश्व०, हस्त०, स्वा०, श्रव०, धनि०, शत०, अनु०, मृग०, रेवती में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभ वार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

ऋण लेना वर्जित—मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रान्ति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को भी ऋण नहीं लेना। यदि कोई ऋण ले तो उसके वंशज सदा अदा करते रहें।

ऋण देना या व्यापार में लगाना—स्वाति, पुन०, चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, विशा० पुष्य, श्रव०, धनि०, शत०, अश्व०, इन नक्षत्रों में, चर लग्न में और ९,५,८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तब द्रव्य को ऋण में देना या रोजगार में लगाना शुभ है।

अन्य मत—१,१२,६ तिथि छोड़ अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिये।

धन प्रयोग निषेध—पूभा०, भर०, कृति०, श्ले०, मघा, पूफा, ज्ये०, मूल, पूषा०, स्वा०, विशा० और आर्द्रा में ऋण न लेना और न देना इनको छोड़ अन्य नक्षत्रों में ऋण देना।

धन संग्रह धन नहीं देना—पूर्वोक्त ऋण लेना मंगल आदि में वर्जित हैं। मंगल आदि वार में धन संग्रह करना। बुध के दिन संग्रह शुभ है। परन्तु बुध के दिन धन कभी नहीं देना।

ऋण लेना शुभ—स्वा०, पुन०, मृदु संज्ञक नक्षत्र विशा०, पुष्य श्रव०, धनि०, शत०, अश्व० में ऋण लेना शुभ है, चर लग्न शुभ है।

ऋणी के नक्षत्र से धनी का नक्षत्र दूसरा हो तो ऋण कभी न लेवे।

धन न मिले—तीक्ष्ण नक्षत्र, मिश्र, ध्रुव, उग्र इन नक्षत्रों में किसी को द्रव्य देना तथा गाड़ देना या किसी को सौंप देना या खो जाय तो फिर कभी नहीं मिले। यही फल भद्रा व पात का भी जानना।

अन्य मत—मिश्र, क्रूर, तीक्ष्ण नक्षत्र वारों में तथा स्वाती नक्षत्र में दिया हुआ या जमा किया हुआ या खोया हुआ द्रव्य नहीं मिलता।

रुपया जमा करना या सूद में देना—लघु चर नक्षत्रों में तथा चर लग्न में रुपया जमा करना या सूद में देना शुभ है।

द्रव्य भूमि में गाड़ना—धनि०, उफा०, विशा०, पूषा०, रेव०, रोह० में भूमि में गाड़ना शुभ है।

व्यवहार वही खाता पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्व०, रोह०, चित्रा, अनु०, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु०, श्रव०, रेव० शुभ है ४-९-१४-३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८-१२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

भूमि लेना देना—१, ५, ६, ११, १५ तिथि गुरुवार, शुक्रवार, मृग०, पुन०, श्लै०, म०, पूफा०, विशा० अनु०, मूल, पूषा०, उभा० में शुभ।

नालिश या अर्जी दावा दायर करना—४, ९, १४ तिथि मंगल, शनिवार, कृति०, आर्द्रा०, धनि०, श्लै०, मघा, ज्ये०, मूल०, विशा०, तीनों पूर्वा हो, भद्रा हो तो उत्तम है।

मिशिनरी चालू करना—धनि०, श्लै०, हस्त०, चित्रा, अनु०, पुष्य, ज्ये०, पुन०, रेवतो नक्षत्र शुभ हैं।

नौकरानी—दासी के नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिने।

अंग	सिर	मुख	कंधा	हृदय	नाभि	भग	जानु	पद
नक्षत्र क्रम	३	३	२	५	५	१	२	६
फल	लाभ	हानि	स्वामी मरे	पुष्टि	हानि	पलाय	मान	सेवा धन क्षय

नौकर आदि का जन्म नक्षत्र से विचार—सेवक के जन्म नक्षत्र से पहले स्वामी का जन्म नक्षत्र हो तो सेवा का नाश हो जाता है और ऋण दाता महाजन के जन्म नक्षत्र से पहला ऋण लेने वाले का जन्म नक्षत्र हो तो वह दिया हुआ धन फिर नहीं मिलता। पति के नक्षत्र से स्त्री का जन्म नक्षत्र पहला हो तो पति का नाश हो। गाँव के नक्षत्र से पहला उसमें बसने वाले का जन्म नक्षत्र हो तो गाँव में बसने वाले को कभी सुख नहीं मिलता और पहले का भी जमा किया हुआ धन वहाँ सब खर्च हो जाता है।

सेवा (नौकरी)—क्षिप्र, अनु०, ध्रुव नक्षत्रों में बुध, गुरु, रवि, शुक्र, या शनिवार में शुभ है, सेवक का नक्षत्र स्वामी के नक्षत्र से द्वितीय न हो।

सेवा मुहूर्त—हस्त, चित्रा, अनु०, रेव०, अश्व०, मृग० पुष्य ये नक्षत्र इतवार, बुध, गुरु, शुक्रवार और शुभ तिथियों में सेवा कर्म शुभ है। योनि या राशीश से स्वामी सेवक से मित्रता हो।

दास दासी रखने का सेवा चक्र—नौकर के नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिने जिस अंग में पड़े फल विचारे।

अंग	सिर	मुख	हृदय	चरण	पीठ	नाभि	गुदा	दक्षिणकर	वामकर
नक्षत्र क्रम	३	३	५	६	२	४	२	१	१
फल	लाभ	नाश	धनधान्य	दरिद्रता	प्राण संदेह	शुभ	भय पीड़ा	अर्थ दाता	नाश

प्रथम नक्षत्र स्वामी का हो उससे दूसरा नक्षत्र सेवक का हो तो सेवा स्थिर न रहे प्राण और अर्थ संकट में पड़े।

नौकरी के लिये आवेदन करना—श्ले०, रोह०, मृग०, उत्तरा, चित्रा, रेवती नक्षत्र कृष्ण परिवा और दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथि में आवेदन करना शुभ है।

नौकरी करने का मुहूर्त—अश्व०, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, इन नक्षत्रों में और बुध, शुक्र, गुरु, रविवार में शुभ ग्रहों की लग्न में दशम और लाभ इन दोनों में सूर्य व मंगल के रहते सेवक को स्वामी की सेवा आरम्भ करना शुभ है। परन्तु यह भी विचारना कि स्वामी व सेवक इन दोनों के नक्षत्र स्वामी की योनियों में परस्पर मित्रता और दोनों के जन्म राशियों की परस्पर मित्रता हो।

राज अभिषेक गद्दी पर बैठना—प्रथम राजगद्दी के बैठने के काल में वैदिक मंत्रों से राजाओं का संस्कार विशेष किया जाता है वह राजअभिषेक शुभ काल में होता है।

उत्तरायण (मकर आदि ६ राशियों में सूर्य के रहते) तथा गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते, शुभ है। चैत्र मास, मल मास और ४-९-१४ तिथि, मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है। इससे इनमें वर्जित है।

लग्नशुद्धि और नक्षत्र राज्याभिषेक के—ज्येष्ठा, श्रव०, हस्त, अश्व०, पुष्य, मृग०, रेवती, चित्रा, अनु०, रोहणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८-११ राशि की लग्न

में या अभिषेक कर्ता की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और अभिषेक कालिक लग्न से ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हो या केन्द्र त्रिकोण १-३-११ स्थान मे शुभ ग्रह हो तब राज्याभिषेक शुभ है।

राज्याभिषेक में पाप ग्रह फल—लग्न में पाप ग्रह = राजा को रोग। अष्टम = मरण। पंचम = पुत्र क्लेश। २-१२ में = निर्धनता। दशम = आलस्य। ६-८-१२ = राजा का मरण।

राज्याभिषेक में शुभ योग—जिसके अभिषेक काल में गुरु लग्न में या त्रिकोण में, मंगल छठें शुक्र दशम हो वह राजा सदा राजलक्ष्मी युक्त होकर आनन्द से रहे।

अन्य विचार—शनि लग्न से तीसरे, सूर्य लाभ में, गुरु ४ या १० में हो उस राजा की पृथ्वी सदा उसके पास बनी रहती है।

छत्र धारण—तीनों उत्तरा, रोह०, आर्द्रा, पुष्य, श्रव०, धनि०, शत०, इन नक्षत्रों में शुभ है।

छत्र धारण चक्र—जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक गिन कर चक्र में धारण करे और फल जाने।

अंग	मूल	दंड	कंठ	मध्य	शिखा
नक्षत्र क्रम	३	७	५	८	४
फल	नाश	हानि	धन क्षय	राज सम्मान	छत्रपति
अन्य मत से फल—जीव नाश	हानि	धन क्षय	राज सम्मान	क्षत्रपति	कीर्ति वृद्धि

राज दर्शन—तीनों उत्तरा, श्रव०, धनि०, मृग०, पुष्य, अनु०, रोह०, रेव०, अश्व, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो राजा से मुलाकात करना शुभ है।

रत्न परीक्षा—पुन०, शत०, हस्त, श्रव०, ज्ये०, इन नक्षत्रों में, स्थिर लग्न शुभ है इतवार, गुरुवार, शनिवार शुभ है।

प्रजा से कर लेना—श्ले०, ज्ये०, मूल, पूफा, पूषा, पूभा, मघा, भर०, कृति० इनको छोड़कर और सब नक्षत्रों में, ५, ६, ७, ८, ११, ३, १२ लग्न में, रविवार और शुभ ग्रहों के वार में प्रजा से कर लेना शुभ है।

कुम्हार का काम—पुन०, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा०, रोह०, मृग०, अनु०, श्रव०, ज्येष्ठा में कुम्हार का कृत्य शुभ है और इतवार सहित शुभ दिन हो और चर लग्न हो।

दर्जी का काम—पुन०, अनु०, अश्व०, धनि०, चित्रा ये नक्षत्र व शुभ दिनों में सूची कर्म (दर्जी का काम) शुभ है।

स्वर्णकार का काम—श्रव०, धनि०, शत०, अश्व०, पुष्य, मृग०, हस्त, चित्रा, स्वा०, विशा० कृति०, पुन० इनमें सुनार का काम शुभ है। शुभ ग्रहों की लग्न हो तथा शुभ वार में शुभ है। इतवार बुधवार वर्जित है।

तप्तलोह दाह लुहारी कर्म—शत०, चित्रा, अश्व०, मूल, विशा०, कृति०, हस्त, ज्ये०, श्ले०, इनमें लोह दाह शुभ है। मङ्गल (१-८) व सूर्य (५) की लग्न शुभ है और

विषम दिन शुभ है। अर्थात् रात्रि को त्याज्य है। जन्म राशि से गोचर में शनि शुभ है।

हथियार बनाना व धारण करना—मूल, ज्ये०, आर्द्रा, श्ले०, तीनों पूर्वा भर० मघा अश्व०, मृग०, विशा०, कृति०, इन नक्षत्रों में हथियार बनाना और धारण करना शुभ है। गुरुवार इतवार मङ्गल शनिवार शुभ है।

शस्त्र बनाना अन्य मत—कृति०, विशा०, नक्षत्र व मङ्गल इतवार शनिवार में हथियार बनाना शुभ है। शुभ ग्रहों की लग्न हो तो जयदायक है।

शस्त्र धारण करना—पुन०, पुष्य, हस्त, चित्रा, रोह०, मृग०, विशा०, अनु, ज्ये०, तीनों उत्तरा रेव०, अश्व० ये नक्षत्र और रिक्ता तिथि को छोड़ कर तिथि रविवार शुक्रवार गुरुवार में तलवार भाला छुरी कटार और अग्नि शस्त्र धारण शुभ है। स्थिर लग्न में चन्द्र शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, केन्द्र में शुभ ग्रह हो ऐसे शुभ समय में शस्त्र धारण करना।

शस्त्र अभ्यास—हस्त, चित्रा, स्वा०, श्रव०, अश्व०, पुन०, पुष्य, तीनों उत्त० शुभ दिन चन्द्र, गुरु, शुक्रवार में शस्त्र सीखने का मुहूर्त शुभ है बुधवार वर्जित है।

धनुर्विद्या—अनु०, मघा, पुष्य, मृग० ये नक्षत्र और शुक्रवार तथा ८-१२ तिथि में धनुर्विद्या शुभ है।

धनुष चक्र—सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनकर रखे और फल जानें—

अंग	धनुषाग्र	बाणाग्र	मूल	प्रथम संधि	द्वितीय संधि	दण्ड
नक्षत्र क्रम	५	५	५	५	५	२
फल	हानि	लाभ	जय	शूरता	शूरता	भंग संग्राम में

मुद्रापात अर्थात् सरकारी रुपया आदि ढलवाना जमा करना—चित्रा, मृग०, रेव०, हस्त, पुष्य, अश्व०, अनु०, रोहि०, तीनों उत्तरा, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा०, नक्षत्रों में सोमवार शनिवार छोड़कर और दिनों में तथा पूर्णा और जया तिथि में रुपया, पैसा, असरफी आदि ढलवाना या खजाने में जमा करना शुभ है।

मृगया (शिकार)—ज्ये०, भर०, श्ले०, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, स्वा०, मूल, विशा०, नक्षत्र और रवि, भौम, शनिवार में शिकार खेलना शुभ है।

मल्ल क्रीड़ा—ज्ये०, आर्द्रा, भर०, तीनों पूर्वा, मूल, श्ले०, मघा, रोहि०, में मल्ल विद्या में आरम्भ शुभ है। जया और पूर्णा तिथि शुभ है। इतवार सहित शुभ दिन हो। शीर्षोदय लग्न (३-६-७, ८, ११ लग्न) हो और सूर्य सहित शुभ लग्न में हों।

शिल्प विद्या प्रारम्भ—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर संज्ञक नक्षत्रों में। लग्न दशम में बुध या गुरु हो। गुरु के षड़वर्ग में चन्द्र हो तब शिल्प विद्या अर्थात् काष्ठ पत्थर व चित्र आदि की कारीगरी सीखने का प्रारम्भ शुभ है।

ऊखरस निकालने का चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने फल जाने।

भाग	१	२	३	४	५	६	७	८
नक्षत्र	४	२	२	१	५	५	२	६
फल	लक्ष्मीप्राप्ति	हानि	सर्व लाभ	क्षय	मृत्यु	शुभ	पीड़ा	धनधान्यदायक

कोल्हू चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र गिनकर क्रमानुसार स्थापित कर फल जाने

स्थान	मूल	अधर	दक्षिण	शीर्ष	शैल	कर्तरी
नक्षत्र	३	५	५	३	३	८
फल	शुभ	धान्य प्राप्त	पीड़ा	नाश	नाश	चरचराहट

घानी चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने क्रमानुसार स्थापित कर फल जाने

भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	हानि	ऐश्वर्य	आरोग्य	नाश	द्रव्य	स्वामीघात	निर्धन	मृत्यु	सुख

मार्जनी (झाड़ू) (बुहारी)—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र में स्थापित करें।

नक्षत्र	३	३	६	३	६	६
फल	जले	धान्यप्राप्ति	व्यथा	संपदा	शत्रुवृद्धि	अर्थलाभ

मार्जनी मुहूर्त—श्रव०, हस्त, चित्रा, पुन० अनु०, पुष्य, मृग०, रोह०, अश्व० नक्षत्र में मार्जनी बंधन शुभ है। रिक्ता तिथि मंगल वार तथा ११, ८, १२ लग्न वर्जित है। लौकिक मत से इतवार भी वर्जित है। गृह पवित्रार्थ उपयोग करें।

चुल्ही (चुल्हा) चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिन कर स्थापित करें।

नक्षत्र	४	४	६	४	५	४
फल	नाश	सुख	दरिद्रता	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ

चरही मुहूर्त—स्वामी के हाथ प्रमाण से लम्बाई चौड़ाई को जोड़ ८ का भाग देना तो चरही (गाय के पानी पिलाने की) का फल जाने शेष १—पशु हानि। २—पशु नाश। ३—पशु लाभ। ४—पशु क्षय। ५—पशु रोग। ६—पशु वृद्धि। ७—पशु भेद। ८—बहुत यश।

खट्वा (खाट) मुहूर्त—रोह०, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुन०, अनु०, अश्व० ये नक्षत्र खट्वा निर्माण में शुभ हैं। शुभ योग, शुभ वार में खट्वा को धारण करे अर्थात् पलंग खाट आदि पर प्रवेश करे तथा मृत्यु सूतक या रिक्ता तिथि अमावस्या भद्रा वैधृति तथा पितृ पक्ष में या श्रावण तथा भाद्र मास व अशुभ दिन अर्थात् जिस दिन कोई उत्पात हुआ हो वर्जित करे मंगल और शनिवार खट्वा निर्माण में सदा वर्जित करे।

खट्वा चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक विचार कर फल जाने ।

अंग	मस्तक	कोण	शाखा	मध्य	पाद
नक्षत्र	४	८	८	३	६
फल	शुभ	मृत्यु भय	शुभ	शुभप्रद	हानि मृत्यु भय

सेतु (पुल) बाँधना—ध्रुव संज्ञक नक्षत्र स्वा०, मृग० ये नक्षत्र पुल बाँधने में शुभ हैं । स्थिर लग्न हो तथा शुक्ल पक्ष और गुरुवार, शनिवार, इतवार दिन शुभ है ।

मतांतर—भूमि सुप्त या पाताल चंद्र व राहु का भी विचार करे ।

भूमि सुप्त ज्ञान—सूर्य के नक्षत्र से ७, ५, ९, १२, १९ और २६ इतने नक्षत्र चंद्र नक्षत्र तक हों तो भूमि सुप्त जानना जिसमें पुल बाँधना, पृथ्वी खोदना, खेती आदि या गृह आरंभ तथा तालाब, बावली आदि खोदना शुभ नहीं है ।

सुगंध आदि धारण—श्रव०, धनि०, शत०, अश्व०, पुष्य, पूषा, अनु०, हस्त, चित्रा, स्वा०, पुन०, रेव०, मृग० ये नक्षत्र व शुभ वारों में चंदन, अगर, फूल, कस्तूरी आदि सुगंध धारण शुभ है ।

स्त्री को कज्जल सुरमा दर्पण—चित्रा, स्वा०, विशा०, अनु०, अश्व०, धनि०, रेव०, मृग ये नक्षत्र शुक्र, शनि, इतवार को स्त्रियों को अंजन, सुरमा आदि व दर्पण देखना शुभ है ।

दुंदभी मृदंग आदि वाद्य—हस्त, चित्रा, स्वा०, अनु०, रेव०, पुन०, पुष्य, अश्व, श्रव०, धनि०, शत० मृग ये नक्षत्र व इतवार सहित शुभ दिनों में नगाड़ा, नफीरी, मृदंग, वंशी आदि बाजा बजाना शुभ है पूर्णा जया तिथि शुभ है ।

नृत्यारंभ—हस्त, चित्रा, स्वा०, धनि०, अनु० ज्ये०, रेव०, शत०, तीनो उत्तरा नृत्य आरंभ में शुभ हैं तथा चंद्र बलवान हो । लग्न से चौथे स्थान में शुभ ग्रह हो लग्न में बुध शुभ ग्रहों से दृष्ट हो । ३-६ राशि का चंद्र रहे तो नाचने का आरंभ करना शुभ है ।

नट विद्या—चित्रा, आर्द्रा, रोह०, पुष्य, तीनो उत्तरा, श्रव०, धनि०, शत० तथा रविवार के सहित शुभ दिन हो तो ये नट विद्या में शुभ हैं ।

मद्यारंभ—मूल, ज्ये०, आर्द्रा, श्लेषा, तीनो पूर्वा, मघा, भर०, शत० इन नक्षत्रों में मदिरा बनाना शुभ है ।

काष्ट आदि स्थापन, बठिया—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर फल विचार, ६ नक्षत्र काष्ट के नीचे=फल रस से युक्त फल भोजन । २ नक्षत्र सिर में=मुर्दा की दाह में ईंधन लगे । मध्य में ४=सर्प निकले । पूर्व ४=मित्र मिलाप । दक्षिण ४=रोग । पश्चिम ४=काढ़ा में ईंधन लगे अर्थात् रोग हो उसकी दवा में ईंधन लगे । उत्तर ४=सुख हो । इसी में बठिया भी विचारे ।

तम्बू बनाना खड़ा करना—जो नक्षत्र पहले वस्त्र धारण में कहे हैं उनमें कनात सामियाना तम्बू बनाना शुभ है तथा उर्द्ध मुख नक्षत्र में तम्बू खड़ा करना शुभ है ।

चर्म कृत्य जूता पहिरना—चित्रा, पूर्वा, अनु०, ज्ये०, श्ले०, मघा, मृग, विशा०, कृति०, मूल०, रेव० नक्षत्र और बुध, रवि, शनिवार इनमें सब चर्म कृत्य शुभ है। इनमें जूता पहिरना शुभ है।

लोन बनाना—भर०, रोह०, श्रव० में लोन बनाना शुभ है तथा शनिवार शुभ दिन विषम शुभ है अर्थात् रात्रि को त्याज्य है और जन्म राशि से गोचरोक्त शनि बली हो।

ईंट थापना—३ उत्त०, अश्व०, श्रव०, पुष्य, ज्ये०, रेव०, रोह०, हस्त में ईंट थापना शुभ है। इतवार, गुरुवार, शनिवार शुभ है। स्थिर लग्न शुभ है।

नौका बनाना—भर०, कृति०, रोह०, विशा०, ज्ये०, श्ले०, मघा, आर्द्रा इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष में शुक्र, गुरु, रविवार में शुभ युक्त शुभ दृष्ट लग्न में नाव बनाना शुभ है।

अन्य—श्रव०, धनि०, ज्ये०, मृग०, अनु०, अश्व०, हस्त नक्षत्र शुभ वार, शुभ तिथि, शुभ चंद्र में नाव का बनाना और चलाना शुभ है।

नौका चलाना—धनि०, मृग०, पूफा०, अनु०, अश्व०, हस्त शुभ तिथि शुभ वार में नौका चलाना शुभ है।

नौका यात्रा—अश्व०, हस्त, पुष्य, मृग०, पूफा०, अनु०, धनि०, श्रव० में शुभ लग्न, शुभ तारा, शुभ योग, शुभ तिथि, शुभ वार में गोचर में चंद्र शुभ हो ऐसे शुभ मुहूर्त में नौका में चढ़कर यात्रा करना।

कथा आरंभ—गुरु के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर फल विचारना।

नक्षत्र	४	४	४	४	४	४	३
फल	अर्थ लाभ	लाभ सिद्धि	लाभ	मृत्यु	राजभय	मोक्ष	भय दायक

धर्म क्रिया आरंभ—अनु०, अश्व०, पुष्य, हस्त, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा०, तीनो उत्तरा, रोह० इन नक्षतों में रविवार, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार में बुध गुरु लग्न में या षड़वर्ग में या गुरु लग्न में हो और क्रिया कर्ता के गुरु बली रहते धर्म क्रिया आरंभ करना शुभ है।

मांगलिक व पौष्टिक कर्म—अश्व०, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, रोहि०, रेव०, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा०, अनु०, मघा इन नक्षत्रों में और रिक्ता अष्टमी पूर्णमासी अमावस्या सूर्य संक्रांति रवि, मंगल, शनिवार इनको छोड़ कर लग्न से दशम में सूर्य चौथे चंद्र और लग्न में गुरु के रहते मांगलिक कार्य गणेश आदि की पूजा तथा पौष्टिक कर्म करना अर्थात् पुष्ट कामना से कोई पुरश्चरण आदि इन दोनों के सहित शांतिक कर्म मूल शांति आदि शुभ कारक होते हैं .गुरु शुक्र अस्त आदि समय केतु उदय आदि उत्पात होने का समय छोड़ कर उक्त शुभ समय विचारे यदि ऐसा न हो सके तो अस्त आदि समय हो तो उसमें भी शांति कर्म करने से कुछ दोष नहीं है।

होमादि मुहूर्त—सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे दिन नक्षत्र तक गिनकर चक्र में ३-३ नक्षत्र प्रत्येक ग्रह के क्रम से वर्तमान में जो बाद आवे उसी ग्रह के मुख में पहले

होम आहुति पड़ती है। यदि वह आहुति खल ग्रह के मुख में पड़ती है तो वह होम शुभ नहीं है।

होम चक्र ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

होम के पहले अग्निवास विचार—शुक्ल परिवा से गिनकर रविवार आदि क्रम से गिनकर जोड़कर १ जोड़कर योग में ४ का भाग देवे शेष ० या ३ बचे—पृथ्वी में अग्नि वास = तपन से सुख। १ बचे = आकाश में = प्राण नाश। १२ = पाताल = अर्थ नाश। उदाहरण = चैत्र कृष्ण १० मंगलवार इष्ट २-३० पर जानना है तिथि १५ + १० + वार ३ + १ = योग २९ ÷ ४ = शेष १ = पाताल। फल अर्थ नाश।

ग्रहण, विवाह, गंडांत, दुर्गोत्सव में अग्नि चक्र का विचार नहीं करना, ग्रह शांति के लिए विचार करना, व्रत बंध, विवाह, नवरात्रि नित्य कर्म कुल देव पूजन में अग्नि वास का विचार नहीं करना। चूड़ा कर्म, यात्रा का होम, गोचर ग्रहों का होम, ग्रहण का होम, युगादि तिथियों का होम, बालक के जन्म प्रसूत का होम, मूलादि शांति कर्मों में अग्नि चक्र का विचार नहीं करना।

अग्न्याधान अग्नि ग्रहण करना—हवन करने के लिए अपने-अपने गृह्य सूत्रों के कहे हुए विधान से अग्नि ग्रहण का नाम अग्न्याधान है। कहा है वसन्त ऋतु में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय, शरद में वैश्य, वर्षा में शूद्र अग्न्याधान करे। कुछ आचार्य का मत है जब तीव्र इच्छा हो तब अग्न्याधान करे।

अग्न्याधान का मुहूर्त—उत्तरायण में कृति०, विशा०, रोह०, तीनों उत्तरा, रेव०, मृग०, ज्ये०, पुष्य इन नक्षत्रों में शुभ है। रिक्ता तिथि में और चंद्र मंगल गुरु शुक्र ये ग्रह नीच में या अस्त रहने या ग्रह युद्ध में हारे या शत्रु गृह में रहते अग्न्याधान नहीं करना। ४-१०-१२-११ लग्न में या इनके नवांशों में तथा लग्न में चन्द्र या शुक्र रहते अग्न्याधान नहीं करना। त्रिकोण केन्द्र ६ स्थान में सूर्य चन्द्र गुरु मंगल इन ग्रहों के रहते तथा ३-११-६-१० स्थानों में बुध शुक्र शनि राहु केतु के रहते अग्न्याधान करने वाले की जन्म राशि जन्म लग्न से आठवी छोड़कर अन्य लग्न में या जिसमें आठवें स्थान में कोई शुभाशुभ ग्रह न हो उस लग्न में शुभ है।

यज्ञ कारक इन १० योगों पर विचार करते हैं (१) धन राशि का गुरु लग्न में हो (२) या मेष का मंगल लग्न में हो या (३) (४) मंगल लग्न से ७ या १० स्थान में हो (५) (६) (७) या लग्न से ३,६ या ११ स्थान में हो। (८) (९) (१०) या सूर्य लग्न से सूर्य ३-६ या ११ स्थान में हो। इन १० बातों से किसा में रहते अग्न्याधान करने वाला यज्ञों का करने वाला होता है।

वीर संधान अभिचार—मूल, आर्द्रा, मर०, मघा०, मृग इन नक्षत्रों में और बुध युक्त शुभ लग्न में, लग्न से चौथे में शुक्र हो अष्टम में कोई ग्रह न हो तो वीर संधान

अर्थात् श्मशान में इष्ट मन्त्र की सिद्धि आदि करना या अभिचार अर्थात् किसी के मारण प्रयोग के लिए पुरश्चरण आदि सिद्ध होता है। इसमें वीर वैताल आदि (साधना) शुभ है। इसमें शुभ ग्रह की लग्न हो कुम्भ राशि का बुध हो।

यन्त्र मन्त्र आदि साधन—उफा०, हस्त०, अश्व०, श्रव०, विशा० मृग० नक्षत्र में इतवार सहित शुभ दिन में यन्त्र मन्त्र व्रतादि साधन शुभ है।

दीक्षा मुहूर्त—आर्द्रा, चित्रा, ३ उत्तरा, रेव०, मृग०, रोह०, अनु०, धनि० में दीक्षा लेना शुभ है तथा अगहन, फाल्गुन, श्रावण, कार्तिक, माघ ये महीने शुभ हैं। शनिवार मंगलवार वर्जित है।

चैत्र में दीक्षा ले तो—बहुत दुःख हो। वैशाख—रत्न लाभ। ज्येष्ठ—मरण। आषाढ़—बन्धु नाश। श्रावण—शुभ। भाद्र—पुत्र हानि। आश्विन—सर्व सुख। कार्तिक—धन वृद्धि। अगहन—शुभ। पौष—ज्ञान हानि। माघ—ज्ञान वृद्धि। फाल्गुन—सुख, सौभाग्य वृद्धि। सूर्य चन्द्र ग्रहण में या महातीर्थ में कालाकाल का विचार नहीं करना।

मोक्ष दीक्षा (संन्यास) लेना—उफा, उषा, उभा, रोह०, चित्रा, अनु०, मृग०, रेव० नक्षत्र में उत्तरायण में प्रवज्याधिप ग्रह बलवान लग्न में स्थित हो गुरु, रवि, चन्द्र गोचर में शुद्ध हो। रवि या गुरुवार में। बलवान गुरु ९ या ७ घर में हो, पाप ग्रह बलहीन हो स्थिर राशि के उदय में या इसके नवांश में संन्यास ग्रहण करें।

संधि या प्रीति—पुष्य, अनु०, पूफा० नक्षत्र और ८-१२ तिथि में सोमवार बुध गुरु शुक्रवार में, शुक्र से युक्त दृष्ट लग्न में तैतिल करण में मेल मिलाप या प्रीति करना शुभ है। अन्य मत में मघा नक्षत्र शुभ है।

सत्य की परीक्षा—शनिवार मंगलवार, ८-१४ तिथि, भद्रा और जन्म नक्षत्र जन्म मास अष्टम सूर्य या अष्टम चन्द्र और जिस नाड़ी में जन्म नक्षत्र हो उस नाड़ी के सब नक्षत्र (नाड़ी = विवाह प्रकरण में दिया है।) इन सब को वर्जित कर, हस्त, पुन०, श्रव०, ज्ये०, शत० इन नक्षत्रों में ३, ६, ९, १२, १, ४, ७, १० इन राशियों के लग्न में या इनके नवांश में चन्द्र व गुरु के गोचर में शुद्ध रहते और तारा शुद्ध रहते सत्य परीक्षा अर्थात् सत्यासत्य करने के लिये परीक्षा लेना शुभ है।

नित्य क्षौर—पुष्य, रेव०, अश्व०, मृग०, ज्ये०, हस्त, चित्रा, स्वा०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत० नक्षत्रों में क्षौर कर्म शुभ है। तथा रविवार मंगलवार शनिवार को व रिक्ता तिथि अष्टमी, छट, अमावस और रात्रि या संध्या में व भद्रा तथा गंडांत में और भोजन के बाद तथा गौशाला में क्षौर कर्म अर्थात् बाल बनवाना वर्जित है। इन में नख कटाना भी वर्जित है। यात्रा के समय, युद्ध के आरम्भ में, श्राद्ध के दिन, व्रत के दिन व वैधृति योग में भी क्षौर वर्जित है।

परिहार—यज्ञ में, विवाह में, माता पिता के मरण में, जेल से छूटने पर, ब्राह्मण या राजा की आज्ञा से सदा बाल बनवाना चाहे वार आदि निषिद्ध हो तो कुछ दोष

नहीं है। दाढ़ी के बाल राजाओं को बनवाना हितकर है। राज कर्म में लगे (सरकारी नौकर) और भांड़ नट आदि को भी मुहूर्त का विचार नहीं है।

बाल बनवाने में त्याज्य नक्षत्र—कृतिका में—६ बार। अनुराधा ३ बार। रोहिणी—८ बार। मघा—५ बार। उफा.—४ बार। इतने बार इन नक्षत्रों में बाल बनवाने से एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

पति को निषेध—जिसकी स्त्री गर्भिणी है उसे लाश ले जाना, तीर्थ यात्रा, समुद्र स्नान व क्षौर कर्म वर्जित है।

क्षौर कर्म से आयु वृद्धि हानि—सोमवार को क्षौर कर्म से—७ माह आयु वृद्धि। बुध—५ माह वृद्धि। गुरु—१० मास आयु वृद्धि। शुक्र—११ मास आयु वृद्धि। रविवार—१ माह आयु नाश। मंगल—८ मास आयु नाश। शनि—७ माह आयु नाश।

जन्म नक्षत्र कब शुभ नहीं—सब कार्यों में जन्म नक्षत्र श्रेष्ठ है। परन्तु क्षौर यात्रा औषधि सेवन तथा विवाद (बहस) में शुभ नहीं है।

मुण्डन निषेध—छोटे बच्चों का या जिसका पिता जीवित हैं मुण्डन नहीं करवाना। जहाँ मुण्डन का निषेध हो वहाँ कैंची से बाल कटवाना चाहिये। उत्तर या पूर्व मुख कर क्षौर कराना।

जिसका पिता जीवित हो या जिसकी स्त्री गर्भवती हो उसको मुण्डन, पिण्डदान तथा सब प्रकार के प्रेतकर्म नहीं करना चाहिये। यह मनाई माता-पिता के लिए नहीं हैं।

नक्षत्र के चरण के अनुसार कष्ट या बीमारी कब तक रहेगी विचार—

नक्षत्र	चरण				नक्षत्र	चरण				नक्षत्र	चरण			
	१	२	३	४		१	२	३	४		१	२	३	४
१ अश्वि.	९	११	१०	२०	१० मघा.	१५	७	१७	२०	१९ मूल.	०	९	१५	६
२ मरणी	०	८०	४०	११	११ फूफा.	०	१५	०	३०	२० पूषा.	०	१५	२४	१०
३ कृति.	९	११	१६	२८	१२ उफा.	७	१४	७	६०	२१ उषा.	३०	२४	२६	१६
४ रोहि.	७	९	१८	३०	१३ हस्त.	१५	१७	१५	०	२२ श्रव.	६०	२४	६	९
५ मृग.	९	५	७	१०	१४ चित्रा.	११	९	९	१६	२३ घनि.	१५	४	२०	२१
६ आर्द्रा.	०	१८	०	०	१५ स्वा.	६०	१७	२०	०	२४ शत.	०	४५	३	२२
७ पुन.	७	१४	२	२१	१६ विशा.	१५	०	४	१३	२५ पूमा.	०	१२	२१	१९
८ पुष्य.	७	७	२०	२१	१७ अनु.	६०	१२	३६	६०	२६ उमा.	१०	१	९	१५
९ अश्ले.	०	७	४१	०	१८ ज्ये.	६९	९	६	४	२७ रेवती.	१८	१०	१९	२०

अन्य मत से रोग पीड़ा विचार

नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन
१ अश्विनी	१०	३ कृतिका	१०	५ मृग०	४	७ पुनर्व०	१५ दिन
२ भरणी	मृत्यु	४ रोहिणी	५	६ आर्द्रा	मृत्यु	८ पुष्य	५

नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन	नक्षत्र	पीड़ा दिन
९ आश्ले.	सदा रोगी	१४ चित्रा	जीवन भर	१९ मूल	४	२४ शत.	मृत्यु
१० मघा	७	१५ स्वाती	मृत्यु	२० पूषा	मृत्यु	२५ पूभा.	मृत्यु
११ पूफा	१ रात	१६ विशा.	७	२१ उषा	५	२६ उभा.	मृत्यु
१२ उफा	७	१७ अनु.	१०	२२ श्रवण	५	२७ रेवती	५
१३ हस्त	५	१८ ज्ये.	मृत्यु	२३ धनिष्ठा	मृत्यु		

रोगोत्पत्ति मृत्यु योग—यदि आर्द्रा, ज्येष्ठा, उषा०, भरणी, तीनों पूर्वा० विशा०, धनि०, कृति०, इन नक्षत्रों में रिक्ता द्वादशी षष्ठी तिथि के दिन रोग उत्पन्न हो तो शीघ्र मृत्यु हो ।

अन्य मत—आर्द्रा, ज्ये०, तीनों पूर्वा०, विशा०, धनि०, कृति०, श्ले० शत०, नक्षत्र में रवि, मंगल, शनिवार सहित ४-९-१४-१२-६ इन तिथियों में रोग हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु हो ।

अन्य मत—स्वाती, आर्द्रा, श्ले०, ३ पूर्वा, ज्ये० ये नक्षत्र और इतवार मंगल शनिवार को और रिक्ता तिथि (४-९-१४) या भद्रा तिथि (१-६-११) हो नक्षत्र वार तिथि तीनों के योग में रोग हो तो रोगी की मृत्यु हो ।

अन्य मत से रोग समय—हस्त = १५ दिन । धनि०, विशा०, मूल, अश्व०, कृति० ९ दिन । भर०, चित्रा०, श्रव०, शत० = २१ दिन । उषा०, पुष्य, उफा०, रोहि०, पुन०, = ७ दिन में रोग आराम होकर रोगी जिये ।

ज्वर नक्षत्र से अन्य मत से समय विचार—स्वा०, ज्ये०, ३ पूर्वा, आर्द्रा, श्ले० इनमें ज्वर हो तो मृत्यु । अनु०, रोग कई दिन रहे । भर०, श्रव०, शत०, चित्रा = १२ दिन ज्वर रहे । विशा०, हस्त०, धनि० = १५ दिन । मूल०, कृति०, अश्व० = ९ दिन । मघा = २० दिन । उभा०, उफा०, पुष्य०, पुन०, रोहि० = ७ दिन । मृग०, उषा० = एक महीना तक ज्वर रहे ।

रोग मुक्ति स्नान—ध्रुव, पुन०, मघा, स्वा०, श्ले० नक्षत्र और सोमवार शुक्रवार छोड़कर रिक्ता तिथि और चर लग्न में चन्द्र जब हीन हो पाप ग्रह लग्न में हो केन्द्र कोण में हो तब रोग रहित मनुष्य को स्नान उचित है ।

अन्य मत—पुनर्वसु को छोड़ कर चर गण में (स्वा०, श्रव०, धनि०, शत०) या ज्ये० नक्षत्र में या हस्त०, पुष्य०, तीनों पूर्वा०, मघा०, मृग०, भर० में क्रूरवार (रवि, मंगल, शनि) में व्यतीपात योग में विष्टि करण (भद्रा) में गोचर में अशुद्ध चन्द्र रहते रिक्ता तिथि में आरोग्य होकर स्नान करना चाहिए । किन्तु रोहि०, श्ले० में और शुभ ग्रह के वार में आरोग्य होने के बाद स्नान न करें । ७, ९, १, १३, ३ तिथि में आरोग्य होकर स्नान न करें ।

दोष शांति के लिए स्नान की औषधियाँ—जटामांसी, वच, कूट, शैलेज, हल्दी, दारु हल्दी, चम्पक, नागर मोथा ।

सर्पदंश—कृति०, मूल, मघा, विशा०, श्ले०, भर०, आर्द्रा में सर्प काटे तो गरुड़ भी रक्षा करे तब भी मृत्यु हो। यदि चन्द्र बली हो तो कदाचित मृत्यु न भी हो।

फस्द खुलवाना—चित्रा, स्वा०, अनु०, ज्ये०, रोहि०, मृग०, शत०, अश्व०, पुष्य, हस्त, अभिजित, श्रव०, नक्षत्र और मंगल, रवि, गुरुवार में शिरा मोचन (फस्द खुलवाना) शुभ है और शुभ तिथि हो।

वमन विरेचन की दवा लेना—बुध, शनिवार को छोड़ कर अन्य दिनों में पूर्वोक्त फस्द के नक्षत्रों में वमन विरेचन अर्थात् पेट की सफाई के लिए औषधि खाना—जुलाब लेना शुभ है।

रस सेवन—हस्त, चित्रा, स्वा०, अश्व०, पुष्य, अनु०, रेव०, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, मृग० नक्षत्र में तथा इत०, मंगल, गुरुवार में रस खाना शुभ है।

औषधि सेवन—अश्व०, पुष्य, हस्त, चित्रा, मृग०, अनु०, रेव०, श्रव०, धनि०, शत०, स्वा०, पुन० मूल नक्षत्र, रविवार, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार में, द्वि स्वभाव लग्न में, लग्न में शुभ ग्रह रहते, शुभ है। लग्न से ७, ८, १२ स्थान में कोई पाप ग्रह न हों। रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य शुभ तिथि में औषधि सेवन शुभ है। परन्तु जन्म नक्षत्र में शुभ नहीं है। अन्य मत से मघा और ज्येष्ठा भी शुभ है।

औषधि बनाना—द्विस्वभाव लग्न में शुभ ग्रह हो शुभ ग्रह के वार में रविवार सहित, शुभ चन्द्र, शुभ तिथि, शुभ योग में शुभ है। तीनों पूर्वा, मघा, भर०, श्ले०, विशा० और आर्द्रा को छोड़कर और नक्षत्रों में शुभ है जन्म नक्षत्र और विष्टिकरण छोड़कर अन्य समय में औषधि बनाना शुभ है।

गर्म पानी से स्नान—रविवार, संक्रांति, ग्रहण, अमावस्या, व्रत, षष्ठी तिथि इतने दिन गर्म पानी से स्नान नहीं करना।

प्रेत की दाह—अश्व०, पुष्य०, हस्त०, श्ले०, मूल०, ज्ये०, श्रव०, आर्द्रा, स्वा०, इनमें मरे हुए की दाह, श्राद्ध आदि क्रिया करना उचित है कुम्भ मीन के चन्द्रमा (पंचक) में प्रेत का दाह त्याज्य है। पंचक में दक्षिण दिशा की यात्रा, खाट, तम्बू या मकान छाना, ऋण आदि क्रिया वर्जित है।

गड़ा धन खोदने का मुहूर्त—मघा, मूल, तीनों पूर्वा, स्वा० विशा०, भर०, श्ले० इन नक्षत्र में रविवार मंगलवार ९,१५ तिथि और ५,९,११ लग्न में खोदना शुभ है। भूमि सुप्त हो तो उस समय नहीं खोदना (भूमि कब सुप्त है पहले बता चुके हैं) चंद्रमा पाताल में तो नहीं है इसको भी विचारना (चन्द्रलोक वास पहले बता चुके हैं)। राहु का भी विचार करना।

दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त—हस्त०, चित्रा, स्वा०, विशा०, अनु०, अश्व०, धनि०, पुष्य ये नक्षत्र, इतवार, मंगल, गुरु, शुक्रवार पुत्र को गोद लेने में शुभ है रिक्ता तिथि व ११-८ लग्न वर्जित है। शुभ लग्न ५-२ है।

खेती आरम्भ करने का मुहूर्त—श्रवण, पुष्य, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, मृग, हस्त नक्षत्र शुभ दिन में (रविवार, शनिवार मंगलवार को छोड़कर स्थिर व द्विस्वभाव लग्नों में खेती आरम्भ करना)।

बाग लगाना—शनिवार, मंगलवार और रिक्ता तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में विशाखा मूल मृदु ध्रुव क्षिप्र, शततारा नक्षत्रों में स्थिर द्विस्वभाव लग्नों में लग्न आदि शुद्ध देखकर बगीचा लगाना।

केला लगाना—शुभ वार में भाद्र पद एवं पंचक को छोड़कर वृक्ष रोपण के विहित नक्षत्रों में द्वितीया, तृतीया और षष्ठी इन ३ तिथियों में शुभ लग्न देखकर कदली रोपण करना।

संस्कार

रजोदर्शन—माघ, अगहन, वैशाख, फाल्गुन, ज्येष्ठ, श्रावण इन महीनों में शुक्ल पक्ष में शुभ ग्रहों के दिन में शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट शुभ ग्रह की लग्न में, दिन के समय पहले पहल रजोदर्शन शुभ है। अन्यत्र अशुभ है।

शुभनक्षत्र—श्रव०, धनि०, शत०, चित्रा, अनु०, रेव०, अश्व०, पुष्य, हस्त, रोह०, ३ उत्त०, स्वा० इन नक्षत्र में पहला रजोदर्शन शुभ है।

मध्यम—मूल, पुन०, मघा, विशा०, कृति० ये मध्यम हैं।

अशुभ—भर०, ज्ये०, आर्द्रा, श्ले०, तीनों पूर्वा अशुभ है।

वस्त्र—उजले वस्त्र पहिने हुए प्रथम रजोदर्शन हो तो शुभ है।

निन्दित समय—भद्रा में व सोये हुए, व संक्रांति काल में अमावस्या में, रिक्तातिथि या ६-१२ तिथि में, अष्टमी में चंद्र सूर्य के ग्रहण काल में वैधृति व व्यतीपात योग में संध्या समय तथा स्त्री रोगणी हो तो अशुभ है।

रजोदर्शन शुभाशुभ फल—तिथि	नक्षत्र	वार	मास	वस्त्र
१ गुणा	४ गुणा	६ गुणा	८ गुणा	१०० गुणा

अच्छा दिन आदि का अच्छा गुण दुष्ट हो तो बुरा फल जानो अधिक प्रभाव वाले का सबसे अधिक गुण विचारना।

रजोदर्शन मास फल—		
चैत्र = विधवा	श्रावण = लक्ष्मी	मार्ग० = बहु प्रजा
बैशाख=धन वृद्धि	भाद्र० = दरिद्र	पौष=व्यभिचारिणी
ज्येष्ठ = रोग युक्त	आश्विन = धनधान्य	माघ = पुत्रवती
आषाढ़ = मृत्यु	कार्तिक = निर्धन	फाल्गुन = पुत्र सम्पन्न

तिथि फल—		
१ = शुचि	७ = उत्तम संतति	१३ = शुभ
२ = दु:खिनी	८ = राक्षसी	१४ = व्यभिचारिणी
३ = पुत्रवती	९ = विधवा	१५ = शुभ
४ = विधवा	१० = सुखी	३० = अशुभ
५ = सौभाग्यवती	११ = शुचि	
६ = कार्य नाशिनो	१२ = मरण	

वार फल—रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
विधवा	मृतप्रजा	आत्म घातिनी	कन्या: संतति	पुत्र वती	कन्याऔर पुत्र हो	व्यभि-चारिणी

संक्रांति व ग्रहण फल—संक्रांति में प्रथम ऋतुमती बैरिणी ग्रहण में विधवा।

प्रथम रजोदर्शन का नक्षत्र फल

१ अश्व० = अशुभ	१० मघा = धनवती	१९ मूल = पतिव्रता
२ भरणी = विधवा	११ पूफा = अर्थवती	२० पूषा = सौभाग्यवती
३ कृति० = वंध्या	१२ उफा० = पतिव्रता	२१ उषा = अर्थवती
४ रोह० = प्रियभाषणी	१३ हस्त = पुत्रवती	२२ श्रव० = भाग्य संपदा
५ मृग० = दरिद्रा	१४ चित्रा = दासी	२३ धनि० = शुभ
६ आर्द्रा = क्रोधनी	१५ स्वा० = अन्य गर्भवती	२४ शत० = शुभ
७ पुन० = पुत्रवती	१६ विशा० = निष्ठुर	२५ पूभा = उतम योगवती
८ पुष्य = पुत्र धन युक्त	१७ अनु० = दुर्भागिनी	२६ उभा = लक्ष्मी वती
९ श्ले० = बाँझ	१८ ज्ये० = विधवा	२७ रेव० = पति रहित

प्रथम रजोदर्शन का योग फल

१ विष कुंभ = विधवा	१० गंड = दु:खाश्रिता	१९ परिघ = अल्प जीविनी
२ प्रीति = पति से स्नेह	११ वृद्धि = पुत्र युक्ता	२० शिवि = पुत्रवती
३ आयुष्मान = धन प्राप्त	१२ ध्रुव = शुभ	२१ सिद्धि = शीघ्र फल युक्ता
४ सौभाग्य = पुत्रवती	१३ व्याघात = पति घातिनी	२२ साध्य = अधैर्यं परा
५ शोभन = मंगलदायक	१४ हर्षण = हर्ष युक्ता	२३ शुभ = शुभ गुण युक्ता
६ अतिगंड = विधवा	१५ वज्र = वंध्या	२४ शुक्ल = शुभ कर्म परा
७ सुकर्मा = शुभ	१६ सिद्धि = पुत्र युक्ता	२५ ब्रह्म = निज पतिरता
८ धृति = संपत्ति युक्त	१७ व्यतीपात = पति रहिता	२६ ऐन्द्र = देवर रता
९ शूल = रोगिणी	१८ वरीयान = मृत पुत्रा	२७ वैधृति = विधवा

करण फल

१ वव = वंध्या	४ तैतिल=प्रियभाषणी	७ विष्टि=मृत वत्सा	१० नाग=पुत्रवती
२ वालव=पुत्रप्राप्ति	५ गर = गुण सम्पन्ना	८ शकुनि=कामातुरा	११ किंस्तुघ्न = व्यभिचारिणी
३ कौलव = वेश्या	६ वणिज = पुत्रिणी	९ चतुष्पद = शुभ	

राशि फल

१ मेष = व्यभिचारिणी	५ सिंह = पुत्रवती	९ धन = पतिव्रता
२ वृष = सुख भोगिनी	६ कन्या = अभिमानी	१० मकर = कृशा
६ मिथुन = धन युक्ता	७ तुला = कुचाली	११ कुंभ = धनवती
४ कर्क = दु:खी	८ वृश्चिक = जारिणी	१२ मीन = चपला

प्रथम रजोदर्शन का होरा फल

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि होरा
योगिनी	पतिव्रता	दुर्भगा	पुत्रिणी	सर्व सिद्धि	सौभाग्य	सर्व नाशिनी

लग्न फल—प्रथम संक्रांति चलती हो उसे ही प्रथम लग्न जानो।

१ मेष = दरिद्रता	५ सिंह = पुत्रप्रसूता	९ धन = धन ऐश्वर्य
२ वृष = धन युक्ता	६ कन्या = पतिव्रता	१० मकर = कर्कशा
३ मिथुन = कामिनी	७ तुला = अंधता दायक	११ कुंभ = उभय वंश नाशिनी
४ कर्क = पति नाशिनी	८ वृश्चिक = दुःखिनी	१२ मीन = गुण युक्ता

ग्रहफल—जिस लग्न में रजस्वला हो उसमें राहु शनि रवि चंद्र ये ४ ग्रह हों तो विधवा हो।

समय फल—प्रातः—सुभगा। मध्याह्न—निर्धना। तीसरे प्रहर—शुभ। संध्या—सर्व भोगिनी। दोनों संधि—वेश्या। अर्द्ध रात्रि—विधवा। पूर्व रात्रि—बांझ। सब संधि में—दुर्भगा।

रक्त फल—प्रथम रजोदर्शन के समय रक्त विन्दु मात्र और अल्प—व्यभिचारिणी। रक्त वर्ण रुधिर—पुत्रवती। काला—मृत प्रजा। गाढ़ा—बांझ। पांडु वर्ण—वंध्या पति दुराचारिणी। गुंजासदृश—सुभागिनी। सिंदूर वर्ण—कन्या प्रसूता।

रजस्वला वस्त्र फल—पांडुर वस्त्र पहिने हो—शुभ। लाल—रोगिणी। नीला—विधवा। पीत—योगिनी। मिश्र वर्ण—पतिव्रता। सूक्ष्म वस्त्र—कृशा। मोटे वस्त्र—पतिव्रता। जीर्ण वस्त्र—दुर्भागिनी। मध्य वस्त्र—सुभगा। धुले वस्त्र—सुभगा। मलिन वस्त्र—मलिन।

प्रथम रजस्वला स्नान—हस्त, स्वा०, अश्व०, मृग०, अनु०, धनि०, रोहि०, तीनों उत्तरा, ज्ये० इन नक्षत्रों में १२,९,८,६,४,१४,३० तिथि को छोड़ कर अन्य तिथियों में शुभवार में पहले पहल रजस्वला स्नान शुभ है। यदि मृग० रेव०, स्वा०, हस्त, अश्व०, रोहि०, नक्षत्रों में स्नान करे तो शीघ्र ही गर्भ लाभ करती है।

गर्भाधान नवीन स्त्री भोग—तीनों उत्तरा, मृग, हस्त, अनु०, रोहि०, स्वा०, श्रव०, धनि०, शत०, इन नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है। चित्रा, पुन०, पुष्य, अश्व०, ये नक्षत्र मध्यम हैं। अर्थात् शुभ नहीं है। शेष नक्षत्र अधम हैं।

लग्न वल—केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों। ३-६-११ में पाप ग्रह हो। लग्न में सूर्य मंगल गुरु की दृष्टि हो। विषम राशि या विषम नवांश में चन्द्रमा हो ऐसे लग्न में रजोदर्शन के बाद ४, ६, ८, १०, १२, १६ वीं रात्रि में गर्भाधान शुभ है।

वर्जित—तीन प्रकार के गंडान्त और जन्म नक्षत्र से सातवां नक्षत्र, जन्म नक्षत्र और मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती ये नक्षत्र और ग्रहण का दिन, व्यतीपात, वैधृति योग माता पिता के श्राद्ध का दिन, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, जन्म नक्षत्र और जन्म लग्न से आठवां लग्न और पाप युक्त नक्षत्र या लग्न और दिन में भोग त्यागे अर्थात् इनमें पहले पहल अपनी स्त्री से संभोग न करें। और भद्रा छटि पर्व अर्थात् १४, ८-३०-१५ तिथि सूर्य संक्रांति रिक्ता तिथि सायंकाल मंगलवार रविवार शनिवार और रजोदर्शन से लेकर ४ दिन रात इन सब को त्यागे।

गर्भाधान विचार—स्त्री धर्म सम्बन्धी १६ रात्रि होती हैं। इनमें प्रथम ३ रात्रि चंडालिनी होती है। ४-११-१३ ये वर्जनीय हैं। शेष १० शुभ हैं। चौथी रात्रि–पुत्र अल्पायु धन हीन उत्पन्न हो। ५–पुत्रवती। ६ रात्रि–मध्यम पुत्र। ७–पुत्र न हों। ८–ईश्वर भक्त। ९–सौभाग्य वृद्धि। १०–गुणवान पुत्र। ११–अधर्मी पुत्र। १२–उत्तम पुत्र। १३–पाप कर्मिणी कन्या। १४–धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करने वाला पुत्र हो। १५–पतिव्रता। १६ वी रात्रि–सब जीवों को आश्रय देने वाला पुत्र हो। लग्न में विषम स्थानी नवांश क में उच्च का गुरु या सूर्य चन्द्र हो तो पुत्र। सम राशि का हो तो कन्या हो।

गर्भाधान से प्रसव तक मास स्वामी ग्रह

मास	प्रथम	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	लग्नेश	चंद्र	सूर्य

यदि मासेश्वर अस्त या निर्बल या किसी अन्य ग्रह से पीड़ित हो तो गर्भपात हो जाता है। इसको प्रथम ही जानकर उसका उपाय करना।

स्त्रियों का चंद्र बल—विवाह में और गर्भ सम्बन्धी जितने संस्कार हों उनमें अपने ही जन्म राशि से और स्वामी मर गया हो तब भी स्त्री अपनी ही जन्म राशि से और अन्य कार्यों में स्वामी के जन्म नक्षत्र से स्त्री का चंद्र बल विचारना।

गर्भ की रक्षा को विष्णु की पूजा—श्रव०, रोह०, पुष्य इनमें और शुभ ग्रहों के दिन में, गर्भाधान के दिन से आठवें मास और शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट और शुभ ग्रह सम्बन्धी लग्न में लग्न से आठवें स्थान में कोई ग्रह न हो दोपहर के पूर्व विष्णु पूजा करनी चाहिये।

पुंसवन–गर्भाधान के दूसरे या तीसरे महीने में यह संस्कार मूल, पुन०, मृग०, पुष्य, श्रव०, हस्त नक्षत्रों में पुरुष वार रवि, मंगल, गुरुवार को ११, ३, ५, ९, १२ लग्न में नंदा भद्रा तिथियों में शुक्ल पक्ष में चंद्रमा की शुद्धि में जब केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तब पुंस न करने से वृद्धि और सुख प्राप्त होता है। यदि एक गर्भ में भी स्त्रो के पुंसवन आदि संस्कार हो जावें तो सब गर्भों के संस्कार किये समान हो जाता है।

वर्जित—व्याघात, परिघ, वज्र, व्यतीपात, वैधृति, गंड, अतिगंड, शूल, विषकुम्भ ये ९ योग पुंसवन, कर्णवेध, व्रतबंध और विवाह में वर्जित हैं।

अन्य मत—मूल, हस्त, श्रव०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, रेव०, अश्व०, भर०, कृति०, रोह०, मृग०, पूषा, उषा, पूभा, उभा नक्षत्र ६,९,१२ और स्थिर लग्न में पुंसवन शुभ है।

पुंसवन—गर्भ का पुरुष आकार होने के लिये बहुधा तीसरे मास में यह संस्कार होता है।

पुंसवन में	रवि, भौम, गुरुवार	शनि	सोम	बुध	शुक्र
वार फल	पुत्र प्राप्ति	मृत्यु	शरीर नाश	संतान नाश	काक वंध्या

सीमंतोन्नयन संस्कार—यह संस्कार गर्भाधान से ६ या ८वें मास में होता है मृग०, मूल, पुष्य, श्रव०, पुन०, हस्त में गुरु, रवि, मंगलवार को ४,९,१४ ३०,१२,६, ८ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में जब मासेश्वर (उस मास का स्वामी ग्रह) बलवान हो, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो ३-६-११ घर में पाप ग्रह हो पुरुष संज्ञक ग्रह के लग्न या नवांश में सीमंत संस्कार शुभ है।

मतान्तर—तीनों उत्तरा, रोह०, रेवती इन नक्षत्रों में शुभ वार में शुक्ल पक्ष में दोपहर के पूर्व संस्कार करना इसमें गुरु शुक्र अस्त का विचार नहीं है। यदि सीमंत लग्न में १२, ५. ८ स्थानों में एक भी क्रूर ग्रह हो तो सीमन्तिनी स्त्री या गर्भ का नाश होता है।

अन्य मत—अनु०, मूल, मृग०, हस्त, मघा, स्वा०, रेव०, श्रव०, पूफा, उफा, उभा, पूषा,पूभा, पुष्य, अश्व०, पुन०, आर्द्रा में गुरु, मंगल, रविवार ये १,११,६,२,१०,७ तिथि में ६, ५, १२, ८ लग्न में चंद्र तारा शुद्ध हो तब करना।

प्रसूता को हरीरा (गुड़ खोपरा) बच्चे को दूध पिलाना—शुभ नक्षत्र के अभाव में चौघड़िया से शुभ चौघड़िया मुहूर्त देखकर प्रसूता को हरीरा देना या बच्चे को दूध पिलाना।

प्रसूता को क्वाथ या बालक को क्वाथ—जो नक्षत्र भैषज्य (दवा खाने) में कहे हैं उनमें सूतिका स्त्री को काढ़ा देना शुभ है दुर्योग वर्जित है तथा इसी मुहूर्त में बालक को आरोग्य के लिए काढ़ा आदि देना। ह०, अश्व०, पुष्य, अभि०, मृग० नक्षत्र रिक्त तिथि छोड़कर शुभ तिथि वार में।

अन्य मत—अन्न प्राशन में जो नक्षत्र कहे हैं उनमें सूतिका स्त्री को पथ्य देना। इतवार सहित शुभ दिन हो। दुष्ट योग रिक्ता तिथि वर्जित है सूतिका का पहला स्नान मुहूर्त के अभाव में चौघड़िया से शुभ चौघड़िया देखकर करना।

प्रसूता स्नान—रेव०, ३ उत्तरा, रोह०, मृग०, हस्त, स्वा०, अश्व०, अनु० में और रविवार, मंगल, गुरुवार में प्रसूती का स्नान करना शुभ है।

निषेध—आर्द्रा, पुन०, पुष्य, श्रव०, मघा, भर०, विशा०, कृति०, मूल, चित्रा इनमें और बुधवार, शनिवार, और ८-६-१२,४, ९, १४ तिथि में प्रसूता स्नान न करें। इनमें स्नान से संतान नहीं होती।

सूतिका स्थान प्रवेश—रोह०, मृग०, रेव०, स्वा०, शत०, पुन०, पुष्य, हस्त, धनि०, ३ उत्तरा० अनु०, चित्रा, अश्व० ये नक्षत्र प्रसूतिका के भवन प्रवेश में शुभ कहे हैं। प्रसूत समय में इन नक्षत्रों में तत्काल प्रवेश करा दे।

सूतिका जल पूजा—श्रव०, पुष्य, पुन०, मृग०, हस्त, मूल, अनु०, इन नक्षत्रों में जन्म से पहले महीने की समाप्ति में जल की पूजा करें गुरु, शुक्र इन दोनों के अस्त में और चैत्र, पौष इन मास में महीना पूर्ण होते ही जल की पूजा न करे। बुधवार, सोमवार गुरुवार में पूजन करे, रिक्ता तिथि छोड़कर अन्य तिथि में पूजन करें।

अन्य मत—मूल, पुन०, श्रव०, मृग०, हस्त में जल पूजा शुभ है। शुक्र, शनि, मंगल-वार वर्जित हैं। बालक के जन्म से पूरे मास में जल पूजा शुभ है बुध, सोम, गुरुवार शुभ हैं। गुरु, शुक्र का अस्त चैत्र और पूष तथा मलमास में वर्जित है।

मूल विचार

गंडान्त नक्षत्र—ज्ये०, रेव०, श्ले० के अन्त के २ दंड } गंडान्त काल ये ६
मूल, अश्व०, मघा के आदि के २ दंड } नक्षत्र मूल के हैं।

बड़े मूल—ज्येष्ठा, मूल, आश्लेषा, छोटे मूल—अश्वनी, रेवती, मघा।

लग्न गंडान्त—कर्क वृश्चिक मीन अंत का आधा दंड
सिंह धन मेष आदि का आधा दंड

तिथि गंडान्त—पंचमी, दशमी, पूर्णिमा या अमावस्या अंत का १ दंड=पूर्णा ति०
छठी, एकादशी, परिवा आदि का १ दंड =नंदा ति०

गंडान्त मूल—तिथि गंडान्त, लग्न गंडान्त, नक्षत्र गंडान्त में बालक पैदा हो तो जीवे नहीं यदि जीवे तो धनी हो। गंडान्त अशुभ काल कहा जाता है। अशुभ फल देने वाला है। गंडान्त काल में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना यदि अज्ञानता से करे तो स्त्री शोक करने वाली वांझ या मृतवत्सा हो। अभिजित संज्ञक मुहूर्त में शुभ कार्य करे तो गंडान्त दोष नहीं होता।

मूल शांति—बड़े मूल और अभुक्त मूल की शांति २७ दिन में उसी नक्षत्र में करना। छोटे मूल की शांति १२ दिन में या शुभ दिन विचार कर करना।

अभुक्त मूल—ज्येष्ठा और मूल में होता है इनके घड़ियों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत है।

ज्येष्ठा के अंत की ४ घड़ी मूल के आदि की ४ घड़ी—नारद मत
,, ,, १ ,, ,, २ ,, —वशिष्ठ
,, ,, आधी ,, ,, आधी ,,—वृहस्पति
,, , ८ घड़ी ,, ,, ५ घड़ी ,,—अन्य मत

अभुक्त मूल में पिता ८ वर्ष तक बालक का मुख न देखे या उसे त्याग करे। इसमें नारद का मत ठीक है। परन्तु कहीं नारद मत से दोनों की केवल २—२ घड़ी ही बताई है।

मूल वास—स्वर्ग में—आषाढ़ भाद्रपद आश्विन माघ मास में
पृथ्वी में—श्रावण कार्तिक चैत्र पौष ,,
पाताल में—फाल्गुन ज्येष्ठ मार्गशीर्ष वैशाख ,,

जहाँ मूल का वास होता है वहाँ ही उसका अशुभ फल होता है जब पृथ्वी में वास हो तब यहाँ दोष कारक है अन्यथा नहीं।

मूल का स्थान	शीर्ष	मुख	स्कंध	वाहु	हस्त	हृदय	नाभि	गुह्य	जानु	पाद
पुरुष चक्र घटी	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फल	राजा	पिता मृत्यु	वली	वली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मति मान	मति मान

अन्य मत—वृक्ष का मूल = ४ घड़ी फल नाश। स्तम्भ = ७ घड़ी = धननाश। त्वचा = १० = भाई को बुरा। शाखा = ८ = माता को बुरा। पत्र ९ = कुटुम्ब को बुरा। पुष्प ५ = राजमंत्री। फल ६ = राज्य प्राप्ति। शिखा ११ = अल्पायु।

मूल	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा चरण	शांति करने से
चरण फल	पिता नाश	माता नाश	धन नाश	शुभदायक	चारों चरण शुभ
आश्लेषा	चौथा	तीसरा	दूसरा	पहला चरण	हो जाते हैं।
चरण फल	पिता नाश	माता नाश	धन नाश	शुभ	

ज्येष्ठा	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा चरण
चरण फल	वड़ा भाई नाश	छोटा भई नाश	माता नाश	बालक स्वत: नाश

आश्लेषा स्थान	सिर	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कंध	हस्त	हृदय	नाभि	गुदा	पाद
चक्र घटी	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फल	पुत्र	पितृक्षय	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	वली	आत्महा	श्रम	तपस्वी	धन हर

मूल फल प्रकारांतर—१ वर्ष में = पितृ नाश। ३ वर्ष = माता नाश। २ वर्ष = धन नाश। ९ वर्ष = ससुर। ५ वर्ष = भाई। ८ वर्ष = साला या मामा। ७ वर्ष = इतर वांधव नाश। इससे इसकी शांति कराना।

मूल आदि में उत्पन्न कन्या—आश्लेषा में उत्पन्न वर व कन्या = सास का नाश। मूल में वर कन्या = ससुर का नाश। ज्येष्ठा में उत्पन्न कन्या = पति के बड़े भाई का नाश। विशाखा = पति के छोटे भाई का नाश। विशाखा के पहले ३ चरण में = पति के छोटे भाई को सुख देने वाली होती है। मूल के चौथे चरण में वर कन्या = ससुर को सुख। आश्लेषा के पहले चरण में वर कन्या = सास को सुख दे।

गंडान्त आदि में जन्में का अरिष्ट और परिहार—गंडान्त ज्येष्ठा मूल, शूल योग और पात अर्थात गणित से सिद्ध होने वाला व्यतीपात परिघ, व्याघात, गंड योग और अवम अर्थात् क्षय तिथि, संक्रांति, व्यतीपात और वैधृति योग और सिनीवाली (चतुर्दशी युक्त अमावस), कुहू (परिवा युक्त अमावस) और दर्श अर्थात् सूर्य और चंद्रमा इन दोनों का समागम जिसमें हो वह तिथि और वज्र योग और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी और यमघंट व दग्ध योग, मृत्यु योग व भद्रा व भाई बहन का जन्म नक्षत्र, माता पिता का जन्म नक्षत्र इनमें और सूर्य चंद्रमा के ग्रहण काल में यदि किसी का जन्म हो तो और ३ कन्याओं के बाद पुत्र का जन्म या ३ पुत्र के बाद कन्या जन्म हो तो अशुभ होता है। उसकी शांति कराने से शुभ होता है।

गंड दिन आदि के—दिवागंड = मूल ज्ये० । रात्रिगंड = मघा श्ले० । संध्यागंड = रेव०, अश्व०, दिवागंड दिन का जन्मा । रात्रिगंड=रात्रि जन्मा । संध्यागंड = संध्या को जन्मा क्रमशः पिता, माता और बालक की मृत्यु हो । परन्तु दिनगंड में रात्रि को जन्मा रात्रिगंड में दिन को जन्मा हो तो गंड दोष नहीं होता ।

गंड दोष नहीं—दिन में उत्पन्न कन्या रात्रि में उत्पन्न पुत्र को गंडदोष नहीं होता ।

लग्न के अनुसार	लोक	स्वर्ग	पाताल	मृत्यु लोक
मूल वास	लग्न	२,५,८,११	३,६,७,१२	१,४,९,१०
	फल	राज्य प्राप्ति	धन प्राप्ति	कुटुम्ब नाश

स्तन पान मुहूर्त—जात कर्म में जो नक्षत्र कहे हैं उन्हीं में तथा श्रवण पुनर्वसु में बालक को प्रथम माता का दुग्ध पान कराना शुभ है शुभ दिन हो । स्वाती नक्षत्र वर्जित है ।

दोलारोहण मुहूर्त—जन्म से लेकर १०, १२, १६, १८ या ३२ वें दिन सोम, बुध, गुरु शुक्रवार में, मृग, रेव०, चित्रा, अनु०, हस्त०, अश्व०, पुष्य० अभिजित तीनों उत्तरा, रोह० नक्षत्रों में पहले-पहल बालक को झूला में चढ़ाना शुभ है ।

दोलारोहण चक्र—सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर फल विचारे ।

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	मध्य
नक्षत्र	५	५	५	५	७
फल	निरोग	कष्ट	कृशता	व्याधि	सौख्य आयु वृद्धि

जात कर्म—इसके करने से बालक के आयु की वृद्धि होती है । जन्म के उपरान्त ही यथाविधि जातकर्म करना चाहिये । यदि दैववशात उस समय न हो सके तो जनन अशौच जब व्यतीत हो जावे तब करना । मृदु ध्रुव चर क्षिप्र नक्षत्रों में जब गुरु या शुक्र केन्द्र में हो तब जात कर्म करना ।

जात कर्म नाम कर्म—जन्म से ११ या १२वें दिन में मृग०, रेव०, चित्रा, अनु०, ३ उत्तरा, रोह०, हस्त, अश्व०, पुष्य, अभिजित, स्वा०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत० नक्षत्रों में जात-कर्म किया जाता है जो कि जन्म काल से किसी कारणवश नहीं किया गया है । इसी मुहूर्त में नाम कर्म भी करना । इसमें पर्व अर्थात् ८-१४-३०-१५ तिथि ४-९ तिथि व्यतीपात आदि दोष को वर्जित करना । शुभ वार में करना ।

नाम कर्म—यदि ११-१२ दिन में किसी कारण से नाम कर्म न हो सके तो १८, १९ या १०० दिन बीतने पर या ६ महीना या वर्ष भर में करना ।

जात कर्म—बालक के नाल काटने के पूर्व जात कर्म करक मंत्र पूर्वक सुवर्ण युक्त घृत बालक के मुँह में लगाने का नाम जात कर्म है । देव योग से बालक का नरा कट जाय तो सूतक हो जाता है । अतएव कालान्तर में सूतक निवृत्त होने पर जात कर्म होता है ।

होड़ा चक्र

राशि	नक्षत्र	चरण १ २ ३ ४	राशि	नक्षत्र	चरण १ २ ३ ४	इनमें ये बराबर हैं।
१ मेष	१ अश्वि.	चू चे चो ला	७ तुला	१४ चित्रा	रा री	अ=आ
	२ भरणी	ली लू ले लो		१५ स्वा.	रु रे रो ता	इ=ई
						उ=ऊ
	३ कृति.	आ ० ० ०		१६ विशा.	ती तु ते ०	ए=ऐ
२ वृष	३ कृति.	० ई उ ए	८ वृश्चि	१६ विशा.	० ० ० तो	ओ=औ
						अ=अं
	४ रोहिणी	ओ बा बी वू		१७ अनु.	ना नी नू ने	स=श
	५ मृग	वे वो ० ०		१८ ज्ये.	नो या यी यू	ब=व
						ष=ख
३ मिथुन	५ मृग	० ० का की	९ धन	१९ मूल	ये यो भा भी	क्ष=छ
						त्र=त
	६ आर्द्रा	कु घ ङ छ		२० पूषा	भू धा फ ढ	ज्ञ=ग
	७ पुनर्व.	के को हा ०		२१ उषा	भे ० ० ०	इन अक्षरों
						से नाम
४ कर्क	७ पुन.	० ० ० ही	१० मकर	२१ उषा	० भो जा जी	नहीं बनते
	८ पुष्य	हू हे हो डा		२२ श्रव.	खी खू खे खो	ङ ञ ण
						इस लिये
	९ श्ले.	डी डू डे डो		२३ धनि.	गा गी० ०	ङ आर्द्रा ३
						चरण के
५ सिंह	१० मघा	मा मी मू मे	११ कुंभ	२३ धनि.	० ० गू गे	बदले २
						चरण का
	११ पूफा.	मो टा टी टू		२४ शत.	गो सा सी सू	घ लेना
						ञ० उमा ४
	१२ उफा.	टे ० ० ०		२५ पूमा	से सो दा ०	चरण के बदले ३
						का झा लेना
६ कन्या	१२ उफा	० टो पा पी	१२ मीन	२५ पूमा	० ० ० दी	ण हस्त ३ के
	१३ हस्त	पू ष ण ठ		२६ उमा	दु था झ ञ	बदले ४ का
						ठ लेना
	१४ चित्रा	पे पो ० ०		२७ रेवती	दे दो चा ची	जिससे राशि
						नहीं बदलती।

आर्द्रा के २ चरण घ में—घी घू घे घो को भी लेना।

हस्त के ४ चरण के ठ—ठी ठू ठे ठो को भी लेना।

आर्द्रा के ४ चरण के छ में—छी छू छे छो को भी लेना।

पूषा के २ चरण ध में—धी धू धे धो को भी लेना।

पूषा के ३ चरण फ में—फी फू फे फो को भी लेना।

पूषा के ४ चरण ढ में—ढी ढू ढे ढो को भी लेना।

उभा के २ चरण थ में—थी थू थे थो को भी लेना।

उभा के ३ चरण झ में—झी झू झे झो को भी लेना।

अभिजित—यद्यपि अभिजित नक्षत्र में नाम करण का कोई विचार नहीं होता परन्तु किसी मत से अभिजित के ४ चरण बना कर उनके अक्षर जू जे जो बनाये हैं। उत्तराषाढ़ा चौथा चरण ९°-६′-४०″ के बाद श्रवण के पहिले चरण ९-१३-२० तक इस के भीतर के २ चरण का अर्थात् ६°-४०′-०″ का अभिजित नक्षत्र होता है। ६°-४०′ के ४ चरण बनाये जांय तो १ चरण १°-४०′ का पड़ता है। इतना बारीक कोई विचार नहीं करता।

नामकरण—यदि मुख्य समय में नामकरण किया जाय तो शुभ तिथि नक्षत्र चंद्रमा की शुद्धि आदि गुणों का विचार न करें। यह मुख्य काल व्यतीत हो जाय तो तिथि आदि की शुद्धि की आवश्यकता है। इसमें भी मुख्य काल में अमावस्या ग्रहण संक्रांति वैधृति व्यतीपात आ जाय तो उस दिन नामकरण न करें। इसमें मलमास शुक्र आदि दोषों का विचार नहीं करना। अपराह्न या रात्रि में नामकर्म नहीं करना। जिस नक्षत्र के जिस चरण में वालक का जन्म हो उस अक्षर पर से नाम रखना।

नामकरण मुहूर्त—चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, रोह०, अश्व०, ३ उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुन०, श्रव०, धनि०, शत० नक्षत्र और रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्रवार में बालक का नाम रखना।

शिशु निष्क्रमण (घर से बाहर निकालना)—जन्म से चौथे मास में और यात्रा में कहे हुए तिथि वार नक्षत्र लग्न में पहिले पहिल बालक को घर से बाहर निकालना शुभ है या जन्म से १२ वें दिन यात्रा के समय में शुभ होता है। अनु०, ज्ये०, मूल, श्रव०, धनि०, रोह०, मृग०, पुन०, पुष्य, स्वा०, हस्त, उषा, ३ पूर्वा, उफा०, अश्व० नक्षत्रों में बालक का बाहर निकलना शुभ है। ५, ६, ७, ११ लग्न शुभ है। जन्म से तीसरे या चौथे महीना में यात्रा की तिथि २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ में और कृष्ण परिवा भी शुभ है। शनि मंगल वर्जित हैं। यात्रा के मुहूर्त में बारवाँ दिन या चौथा महीना शुभ है।

बालक को पहिले-पहिल भूमि में बैठाना—मंगल के बली रहते जन्म से पाँचवें महीने में रिक्ता तिथि को छोड़ कर अन्य तिथियों में और तीनों उत्तरा, रो०, मृग०,

ज्ये०, अनु०, हस्त, अश्व०, पुष्य में पृथ्वी और बारह देवताओं की पूजा कर बालक को कमर में कटि सूत्र (करधना) बाँध कर भूमि में बैठाले-लिटावे ।

बालक का प्रथम अन्नप्राशन—पुत्र का छठे महीने में सम मास में या ६, ८, १० वें आदि मास में कन्या का पाँचवें महीने में विषम मास ५, ७, ९ वें आदि मास में अन्नप्राशन (पहिले-पहिल अन्न खिलाना) शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रो०, मृग, रेव०, चित्रा, अनु०, हस्त०, अश्व०, पुष्य, अभिजित, स्वा०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत०, इन नक्षत्रों में शुभ है। रिक्ता, नंदा, अष्टमी, द्वादशी तिथि और रवि, मंगल शनिवार व जन्म लग्न से अष्टम लग्न व १२-१-८ लग्न वर्जित है। त्रिकोण केन्द्र सहज स्थानों में शुभ ग्रह हो। दशम शुद्ध (ग्रह रहित) हों। ३, ६, ११ स्थान में पाप ग्रह हो। और १, ६, ८, स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ है। शुक्ल पक्ष में दोपहर के पूर्व शुभ होता है।

किसी आचार्य ने अनुराधा व शतभिष नक्षत्र और जन्म नक्षत्र में अन्नप्राशन अशुभ कहा है। कोई स्वाती को भी अशुभ कहते हैं।

स्थान वश ग्रह फल—जिस लग्न में अन्नप्राशन इष्ट हो उससे ९, ५, १४, ७, १२, ८ स्थानों में यदि क्षीण चंद्र हो—बालक भिक्षुक होता है। पूर्ण चंद्र—यज्ञ करने वाला। गुरु—दीर्घायु। बुध—ज्ञानी। मंगल—पित्त रोगी। सूर्य—कोढ़ी। शनि राहु केतु—विना अन्न के क्लेश होता है। उस क्लेश से युक्त व वातव्याधि संयुक्त। शुक्र—रोगी हो।

बालक का प्रथम वार मुंह देखना—जन्म से तीसरे मास अश्व०, पुन०, पुष्य, मृग०, अनु०, हस्त, श्रव०, धनि०, नक्षत्र में ४, ९ १४, ६, ७, १२, ३० तिथि को छोड़ कर शुभ दिन सोम०, बु०, गु०, शुक्रवार को।

बालक को ताम्बूल भक्षण—तीनों उत्तरा, रोह० मृग, वि०, चित्रा, अनु०, हस्त, अश्व०, पुष्य, श्रव०, मूल, पुन०, ज्ये०, स्वा०, धनि०, में जन्म से २॥ महीने पर या अन्नप्राशन मुहूर्त में बालक को पहिले-पहिल पान खवाना शुभ है। मंगल व शनिवार को छोड़ कर अन्य दिनों में ३, ६, ११, २, १०, १२ लग्नों में केन्द्र कोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११ में पाप ग्रह हो ऐसे मुहूर्त में शुभ है।

बालक की जीविका परीक्षा—जिस मुहूर्त में भूमि में बैठाना कहा है उसी समय बालक के आगे पुस्तक, कलम, हथियार, कपड़ा सुवर्ण चाँदी आदि वस्तुओं को रखे। बालक जिस वस्तु को पहिले उठावे उसी वस्तु के द्वारा उस की जीविका जानो।

बालक के दाँत उगने का फल—जन्म से लेकर पहिले मास में ही दाँत जमे—बालक मरे। दूसरे में—अपने छोटे भाई को मारता है। तीसरे में—बहिन को मारे। चौथे में—माता को। पाँचवें—जेठे भाई को। छठे—उत्तम भोग। ७—पिता का सुख। ८—देह पुष्ट। ९—लक्ष्मी। १०—सौख्य। ११—अति सौख्य। १२—धन सम्पत्ति प्राप्त। गर्भ में

ही जमे हुए दाँत उत्पन्न हो या ऊपर की पंक्ति में पहिले दाँत जमे तो वह बालक अपने माता पिता भाई आदि को मारने वाला होता है।

कर्ण बेध—जन्म से १२ या १६ वें दिन में या तीसरे या पाँचवें वर्ष में करना युग्म वर्ष (जन्म से २-४-६ वर्ष) वर्जित है। विषम वर्ष (१, ३, ५ आदि) श्रेष्ठ हैं। या जन्म से ६, ७, ८ वें मास भी शुभ हैं। श्रव०, धनि०, पुन०, मृग०, रेव०, चित्रा, अनु०, हस्त, अश्व०, पुष्य, नक्षत्र सोम बुध गुरु शुक्रवार में कान छेदना शुभ है। चैत्र, पौष, अवम तिथि (हानि तिथि) हरि शयन, जन्म मास, रिक्ता तिथि, जन्म तारा ये सब वर्जित हैं। लग्न से अष्टम में कोई ग्रह न हों केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११ में पाप ग्रह हो २, ७, ९; १२, लग्न हो। लग्न में गुरु हो तब कान छिदाना शुभ है।

चूड़ा कर्म (मुंडन)—जन्म से २ वर्ष के बाद ३, ५, ७ आदि विषम वर्ष में यदि माता का ५ महीने से अधिक का गर्भ है तो बालक का मुंडन शुभ नहीं होता। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक दिनों का हो गया हो तो माता के गर्भवती रहने पर भी मुंडन शुभ है। जब माता रजस्वला हो या माता के लड़की हुई महीने से कम हो और अन्य लड़का हुए २४ दिन से कम हुए हों तो लड़के का मुंडन आदि संस्कार न करें। जेठे लड़के या लड़की का जेठ मास में मुंडन नहीं करना। अन्य मत है कि अगहन में भी जेठे लड़के लड़की का मुंडन नहीं करना।

अनु० को छोड़ कर ज्येष्ट सहित मृदु चर लघु नक्षत्रों में चैत्र को छोड़ कर उत्तराथण में सोम बुध गुरु शुक्रवार को शुभ है ८, १२, ४, ९, १४, १, ६, ३०, १५ तिथि संक्रांति को छोड़ कर अन्य तिथियों में शुभ है। बालक के जन्म लग्न व जन्म राशि से आठवें स्थान में शुक्र को छोड़ कर अन्य ग्रह न हों ३, ६, ११ स्थान में पाप ग्रह हों तब मुंडन करना शुभ है। मुंडन के समय यदि दुष्ट तारा भी हो अर्थात् १, ३, ५, ७ वां हो और चन्द्रमा नवाँ पंचम या उच्च का हो या बुध गुरु शुक्र इन ग्रहों के षड़वर्ग में या अपने ही षड़वर्ग में हो या मित्र ग्रह के षड़वर्ग में हो तो दुष्ट तारा शुभ हो जाता है। चन्द्रमा गोचर से शुभ अर्थात् जन्म राशि से ४, ६, ८, १२ स्थान को छोड़ कर अन्य स्थानों में हो तो दुष्ट तारा भी शुभ हो जाता है केन्द्र में शुभ ग्रह हो तो दुष्ट तारा भी शुभ है।

यदि क्षीण चन्द्र हो और सोमवार को मुंडन हो—बालक की मृत्यु। मंगल—हथियार से मृत्यु। शनिवार—पंगु। रविवार—ज्वर हो।

अक्षर आरम्भ पाटी पूजन या विद्या आरम्भ—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणेश जी सरस्वती विष्णु और लक्ष्मी का पूजन कर उत्तरायण में शुभ दिन को मृग०, आर्द्रा, पुन०, हस्त, चित्रा, स्वा०, श्रव०, धनि०, शत०, अश्व० मूल तीनों पूर्वा, पुष्य, श्ले०, नक्षत्र में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि में १, ४, ७, १० चर लग्न को छोड़ कर शुभ लग्न में त्रिकोण केन्द्र में शुभ ग्रह हो तब बालक को पहिले-पहिल अक्षर

लिखना या विद्या आरम्भ करना शुभ है। अन्य मत से ध्रुव एवं रेव०, अनु० नक्षत्र भी शुभ है।

विद्या आरम्भ दिन फल—गुरु, शुक्र, बुधवार में आरम्भ—शीघ्र उत्तम विद्या प्राप्त हो चिरंजीवी हो। रविवार—मध्यम। सोमवार—जड़ बुद्धि। मंगल, शनिवार—मृत्यु या कष्ट।

व्याकरण आरंभ—रोह०, हस्त, चित्रा, स्वा०, विशा०, अनु०, पुन०, मृग०, अश्व०, पुष्य नक्षत्र में गुरु, शुक्र, बुधवार में व्याकरण पढ़ाना शुभ है।

गणित आरंभ—शत०, पूभा०, अनु०, आर्द्रा, रोह०, रेव०, हस्त०, पुष्य, नक्षत्र में गुरुवार, बुधवार को गणित आरंभ शुभ है।

न्याय शास्त्र आरंभ—तीनों उत्तरा, रोह०, पुष्य०, पुन०, श्रव०, हस्त०, अश्व०, शत०, स्वा० नक्षत्र में न्याय शास्त्र आदि पढ़ना शुभ है।

धर्म शास्त्र पुराण आदि—हस्त०, चित्रा, स्वा०, विशा०, अनु०, पुष्य, रेव०, अश्व०, मृग०, धनि०, शत०, में धर्मशास्त्र पुराण आदि आरंभ शुभ है।

वैद्य विद्या या गारुड़ी विद्या—हस्त०, चित्रा, स्वा०, अनु०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत०, मूल०, रेव०, अश्व०, पुष्य, ज्ये०, श्ले० आर्द्रा, मृग में वैद्य विद्या आरंभ शुभ है सोमवार, मंगल, इतवार दिन शुभ है। ज्येष्ठा को छोड़कर शेष नक्षत्रों में गारुड़ी या सर्प विद्या शुभ है।

जैन विद्या—श्रव०, धनि०, शत०, मघा, पूर्वा०, अनु०, रेव०, अश्व०, भर०, पुन०, स्वा० ये नक्षत्र और रविवार, शुक्रवार दिन जैन विद्या पढ़ना शुभ है।

फारसी विद्या—ज्ये०, श्ले०, तीनों पूर्वा, रेव०, भर०, कृति०, विशा०, आर्द्रा, उषा०, शत० ये नक्षत्र व रविवार, मंगल, शनिवार में फारसी या अरबी विद्या पढ़ना शुभ है।

लेखन आरंभ—शुभ तिथि, शुभ वार में रेव०, अश्व०, श्रव०, अनु०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा० नक्षत्र में लिखना आरंभ शुभ है।

लिंग या अंडकोष छेदन—मुसलमानी मत से बच्चे का खतना होता है इसके लिये फारसी तीसरी या आठवीं, तेरहीं, अठारवीं और तेइसवीं या अट्ठाइसवीं तारीख निषिद्ध है।

इतवार, मंगल व गुरुवार को रेव०, पुष्य, हस्त, स्वा०, मृग०, श्रव०, धनि०, नक्षत्र में शुभ है।

केशान्त संस्कार—जन्म से १६वें वर्ष में मुंडन में कटे हुए मुहूर्त में ब्रह्मचर्य व्रत करते समय या व्रतवंध के उपरांत पहली हजामत या रखे हुए बालों को बनवाने को केशान्त संस्कार कहते हैं यह ब्राह्मणों में ही करना चाहिए। क्षत्रियों का २२ वर्ष में वैश्यों का २४ वर्ष में केशान्त कर्म कहा है।

समावर्तन—जब ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम से विधि के अनुकूल वेद आदि शास्त्रों को पढ़कर गृहस्थ आश्रम को ग्रहण करने के लिये गुरु आश्रम को त्यागकर घर को जाता है। समावर्तन करने के बाद स्नातक कहा जाता है। जो दिन आदि व्रतवंध में कहे हैं उन्हीं में समावर्तन शुभ है।

यज्ञोपवीत उपनयन या व्रतवंध—यज्ञोपवीत जन्म से ५ या ८ वर्ष में ब्राह्मणों का, ६ या ११ वर्ष में क्षत्रियों का, ८-१२ वर्ष में वैश्य का यज्ञोपवीत श्रेष्ठ है। इससे दुगने काल में अर्थात् १६ वर्ष में ब्राह्मण, २२ वर्ष में क्षत्रिय, २४ वर्ष में वैश्य का मध्यम कहा है। इसके बाद यह संस्कार नहीं करना।

यद्यपि संस्कार के महीने नहीं कहे हैं परन्तु किसी ग्रन्थकार ने वसंत में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय, शरद में वैश्यों का श्रेष्ठ कहा है।

शुभ समय—हस्त, अश्व०, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोह०, श्ले०, स्वा०, पुन०, श्रव०, धनि०, शत०, मूल०, मृग०, रेव०, चित्रा, अनु०, तीनों पूर्वा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में शुक्ल पक्ष में पंचमी तक, कृष्ण पक्ष में भी दोपहर के पूर्व यज्ञोपवीत शुभ है लग्न से ६, ८, १२ स्थानों को छोड़कर अन्य स्थानों में शुभ ग्रह हों। ३, ६, ११ में पाप ग्रह हों तो शुभ है। वृष कर्क राशि में पूर्ण चंद्र यदि लग्न में हो तो और भी शुभ है।

वर्णेश—ईश ब्राह्मणों का—गुरु शुक्र। क्षत्रिय—सूर्य मंगल। वैश्य—चंद्र। शूद्र—बुध। अंत्यज (वर्ण संकर चांडाल आदि) का—शनि ईश है।

शाखेश—ऋग्वेद का—गुरु शाखेश। यजुर्वेद—शुक्र। सामवेद—मंगल। अथर्वण वेद—बुध।

प्रयोजन—यदि शाखेश का दिन हो और शाखेश की ही लग्न हो और शाखेश बली हो तो यज्ञोपवीत अति शुभ है। अथवा शाखेश व वर्णेश व सूर्य चंद्र गुरु ये बली हों तो भी यज्ञोपवीत शुभ है। यदि गुरु व शुक्र शत्रुग्रही हों या युद्ध में पराजित हों या नीच के हों तो ऐसे समय में यज्ञोपवीत करने से बालक वेद व शास्त्र व इनमें कही हुई क्रिया इन सबसे रहित होता है।

जन्म नक्षत्र आदि का अपवाद—जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्म लग्न, जन्म तिथि इनमें ब्राह्मणों के पहले लड़के का, वैश्यों में पहले को छोड़कर अन्य लड़के का यज्ञोपवीत होता है तो वह अधिक विद्या वाला होता है।

गुरु सूर्य चंद्र की शुद्धि—जब गुरु, सूर्य और चंद्र अष्टक वर्ग में शुद्ध हो तब व्रतवंध या विवाह करना चाहिये। तारा का बल भी देखना चाहिये।

		शुद्ध	पूज्य	वर्जित	
गुरु सूर्य	गुरु	२-५-७-९-११	१-३-६-१०	४-८-१२	गोचर से इन स्थानों
शुद्धि	सूर्य	३-६-१०-११	१,२,५,७,९	४-८-१२	को विचारना

शुभ गुरु—वटु के जन्म राशि से त्रिकोण, लाभ, द्वितीय या सप्तम स्थान का गुरु श्रेष्ठ है १, ३, ६, १० स्थानों का गुरु पूजा करने से शुभ हो जाता है शेष स्थानों में निंदित है।

गुरु अपने उच्च का या स्वराशि का, मित्र गृही, स्वनवांश या वर्गोत्तम का हो तो ४-८-१२ स्थानों में भी शुभ है। परन्तु नीच का या शत्रु गृही हो तो शुभ स्थानों में भी अशुभ है। यदि अतिकाल हो गया हो तो द्विगुण पूजा करने से ४-८-१२ स्थान में शुभ हो जाता है इससे यथाशक्ति पूजा करके व्रतबंध करना।

वर्जित—पंचमी के बाद कृष्ण पक्ष में और जिस दिन सायंकाल में प्रदोष हो, अनध्याय में, शनिवार में, रात्रि में, दोपहर के बाद, जिस दिन मेघ गर्जें और गलग्रह तिथि में यज्ञोपवीत शुभ नहीं।

गलग्रह तिथि—४, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १, ३० गलग्रह संज्ञक तिथि हैं।

अनध्याय तिथि—आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल ५, पौष शुक्ल १३, माघ शुक्ल १२, चतुर्थी, पौर्णमासी, अमावस्या, परिवा, अष्टमी व सूर्य संक्रांति ये सब अनध्याय संज्ञक हैं इनमें व्रतबंध नहीं करना।

प्रदोष—द्वादशी तिथि में आधी रात्रि के पूर्व ही यदि त्रयोदशी का योग हो त प्रदोष है। यदि षष्ठी तिथि में १॥ प्रहर रात बीतने के पूर्व ही सप्तमी का योग हो तो वह प्रदोष है और जिस तिथि के प्रहर भर रात बीतने के पूर्व ही चौथ का योग हो तो वह प्रदोष है। व्रतबंध में वर्जित है। वेदों के भेद से यज्ञोपवीत के नक्षत्र जिनमें यज्ञोपवीत शुभ है—

ऋग्वेद—मृग०, आर्द्रा, श्ले०, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, तीनों पूर्वा।

यजुर्वेद—रेव०, हस्त०, अनु०, मृग०, पुन०, पुष्य, रोह०, तीनों उत्तरा।

सामवेद—अश्व०, धनि०, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण।

अथर्वण वेद—मृग०, रेव०, पुष्य, अश्व०, हस्त, अनु०, धनि०, पुन०।

ब्रह्मोदन कर्म दक्षिण देश का—विधि पूर्वक यज्ञोपवीत होने के पश्चात् और सायंकाल में होने वाले ब्रह्मोदन कर्म के पूर्व इस मध्य में यदि अकस्मात कोई उत्पात विशेष का अनध्याय हो तो वह लड़के के पढ़ने में विघ्न कारक होता है इसलिए उसकी शान्ति तक ब्रह्मोदन कर्म होता है और यज्ञोपवीत के पहले अकस्मात उत्पात हो तो यज्ञोपवीत नहीं होता।

केन्द्र में शुभ ग्रह फल—यज्ञोपवीत काल में केन्द्र में सूर्य हो—राजा का सेवक। चंद्र—वनिया या रोजगार करने वाला। मंगल—हथियारों से जीविका करने वाला। वुध—पढ़ाने वाला। गुरु–पंडित। शुक्र–धनवान। शनि—म्लेच्छों का सेवक होता है।

संयुक्त ग्रह फल—गुरु, शुक्र, चंद्र इनमें से कोई सूर्य युक्त हो—वालक निर्गुणी। मंगल से—निर्दय। शनि से युक्त—निर्लज्ज हो।

चंद्र वश से शुभाशुभ—शुक्र के नवांश में चंद्र हो और लग्न से त्रिकोण में शुक्र हो लग्न में गुरु हो तो बालक चारों वेदों का ज्ञाता हो यदि शनि के नवांश में चं द्रोह

और लग्न में गुरु हो, लग्न से त्रिकोण में शुक्र हो तो बालक निर्लज्ज व निर्दयी होता है।

ग्रह नवांश से यज्ञोपवीत फल—यज्ञोपवीत के लग्न में सूर्य के नवांश का उदय हो तो वह बालक क्रूर निर्दय होता है। चंद्र नवांश से—जड़ (विचार रहित)। मंगल नवांश—पापी। बुध नवांश—पटु चतुर। गुरु नवांश—यज्ञ करने कराने, दान लेना देना, पढ़ना पढ़ाना ये ६ कर्म करने वाला, यज्ञ करने वाला धनी होता है। शनि नवांश—मूर्ख। इस कारण लग्न में शुभ ग्रहों के नवांश रहते यज्ञोपवीत करना उत्तम है।

चंद्र नवांश का विशेष फल—यज्ञोपवीत काल में यदि चंद्र शुभ राशि का हो—सदा विद्या में रुचि रखने वाला। पाप ग्रह के नवांश में—अति दरिद्री। स्वनवांश में दुःख-युक्त। यदि यज्ञोपवीत काल में चंद्र स्वनवांश में हो और श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र हो तो वह व्रती बालक धनवान हो।

रजस्वला होने पर शांति—यदि नांदी श्राद्ध करने के उपरांत माता रजस्वला हो जावे तो लड़के का मुंडन, यज्ञोपवीत या विवाह विचारे हुए मुहूर्त को छोड़कर उसी मुहूर्त के समीप हो दूसरे मुहूर्त में करना चाहिये। यदि दैवयोग से पहले विचारे हुए मुहूर्त के समीप में कोई शुभ मुहूर्त न मिले तो शास्त्र में कही हुई विधि से लक्ष्मी पूजा कर इसकी शांति करा लेनी चाहिये।

योग वर्जित—कर्णवेध, व्रतवंध, पुंसवन या विवाह में ये ९ योग वर्जित हैं। व्याघात, परिघ, वज्र, व्यतीपात, वैधृति, गंड, अतिगंड, शूल, विष्कंभ।

वेध वर्जित—अन्नप्राशन तथा चूड़ाकर्म में विद्ध नक्षत्र छोड़ देना विवाह को छोड़ कर अन्य सब शुभ कर्मों में सप्त सलाका चक्र से वेध का विचार करना।

चैत्र में शुभ—अष्टम वर्ष के प्रवेश होने पर जिस वटु का गोचर आदि शुद्ध न हो उसका व्रतवंध चैत्र के महीने में जब मीन का सूर्य हो शुभ हो जाता है। गुरु व शुक्र अस्त हो जाय, चंद्र सूर्य बलहीन क्यों न हो तदापि चैत्र में मीन के सूर्य में व्रतवंध करना। गोचर तथा अष्टक वर्ग के अनुसार गुरु की शुद्धि भी न मिले तो चैत्र में मीन के सूर्य में व्रतवंध करना चाहिये।

दुवारा संस्कार—यदि शुभ वर्ष हो चंद्र नक्षत्र अनुकूल हो तब भी पुनर्वसु के दिन जिसका व्रतवंध किया जाये उसका फिर संस्कार करना चाहिये गुरु शुक्र के अस्त में पुनर्वसु नक्षत्र में गलग्रह में अनध्याय में व्रतवंध हो जाय तो फिर संस्कार करना चाहिये इसी प्रकार, यदि रात्रि में, प्रदोष में शनिवार को कृष्ण पक्ष में व्रतवंध हो जाय तो फिर करना पड़ता है परन्तु पूर्वोक्त दोषों के रहते चैत्र में मीन के सूर्य में किया जाय तो फिर दुवारा संस्कार की आवश्यकता नहीं रहती।

छुरिका वंधन—यज्ञोपवीत के मास तिथि आदि हों चैत्र मास और मंगलवार को छोड़कर गुरु शुक्र के अस्तकाल को छोड़कर यज्ञोपवीत में कहे हुए मास तिथि नक्षत्र या लग्न आदि में विवाह के पहले क्षत्रियों को कमर में छुरी का बाँधना श्रेष्ठ है।

सप्तशलाका वेध—जन्म नक्षत्र से व्रतवंध आदि नक्षत्र का वेध देखना जिस नक्षत्र से वेध हो तो उस नक्षत्र को अशुभ समझना।

यहाँ नक्षत्रों में पंचांग से देखकर उनमें ग्रह स्थापित करना फिर देखना जन्म नक्षत्र के सामने कौन नक्षत्र है जिससे वेध होता है। जैसे नक्षत्र मृग है। उसका वेध उषा से है यदि उषा में कार्य करना है तो वह विद्ध नक्षत्र हुआ। उसे त्याग देना। यदि वेध वाले नक्षत्र में पाप ग्रह है तो और भी बुरा है।

युति दोष—जिस नक्षत्र में ग्रह स्थित हो उसे युति कहते हैं। जन्म राशि में विशेष कर जन्म नक्षत्र में जिस वर्ष या जिस मास में पाप ग्रह हो उसे युति दोष कहते हैं। इस युति दोष में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं किये जाते। आवश्यकता में पादवेध वर्जित है। युति कूर्माचल में विशेष प्रसिद्ध है कहा है जव जन्म राशि में सूर्य मंगल शनि राहु स्थित हों तो यदि कन्या का विवाह किया जाय तो वह विधवा हो जाती है।

वर्षमास शुद्धि—जव गुरु ४-८-१२ स्थान में हो तो वह वर्ष की अशुद्धि कूर्याचल में वर्ष अपैट कहलाती है। यदि सूर्य ४-८-१२ स्थान में हो तो मास अशुद्धि कूर्माचल में मासअपैट कहलाती है।

अग्नि होत्र मुहूर्त—रोह०, रेव०, विशा०, पुष्य, ज्ये०, अश्व०, मृग०, कृति०, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में ब्राह्मणों को अग्नि होत्र शुभ है।

अन्य विचार—उत्तरायण सूर्य में अग्निहोत्र शुभ है। रोह०, रेव०, विशा०, पुष्य, ज्ये०, मृग०, कृति०, तीनों उत्तरा नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है। रिक्ता तिथि न हो ४, १०, ११, १२ लग्न वर्जित है। सूर्य, चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र नीच अस्त या शत्रु गृही न हों। चंद्रमा लग्न में न हो। चंद्रमा ३-६-११ में हो। सूर्य की दृष्टि चंद्र पर हो मंगल दूसरा हो। गुरु लग्न में या धन राशि का हो या सातवें दशवें हों। अष्टम घर में कोई ग्रह न हो।

होम में अग्नि वास का विचार—दुर्गा का होम, विवाह आदि मंगल कार्य, वास्तु व विष्णु प्रतिष्ठा, वैश्वदेव व नैमित्तिक कार्य के हवन में आहुति व अग्निवास का विचार आवश्यक नहीं होता।

व्रतादि में सूतक विचार—व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, पूजन और जप आदि के प्रारंभ हो जाने पर यदि सूतक की प्राप्ति हो तो वह सूतक व्रत आदि के समाप्त होने तक नहीं लगता। इन कामों को पूरा कर लेना चाहिये। प्रारंभ का नियम यह है कि—

यज्ञादि कार्य में वरण हो जाना, व्रत पूजन व जप आदि में संकल्प हो जाना, विवाह आदि कार्य में नांदी मुख श्राद्ध हो जाना तथा श्राद्ध में श्राद्ध निमित्त रसोई प्रारंभ हो जाना ही प्रारंभ समझा जाता है ।

विवाह

विवाह में वर कन्या का चुनाव

नीचे बताये योगों में विवाह शुभ है—

(१) वर के चंद्र लग्न से सप्तम स्थान में जो राशि हो वही राशि यदि कन्या का जन्म लग्न हो तो विवाह बहुत शुभ है ।

(२) वर की सप्तम राशि यदि कन्या की राशि हो तो विवाह शुभ है ।

(३) वर के सप्तमेश का नीच स्थान यदि कन्या की राशि हो तो भी ठीक है ।

(४) यदि कन्या की राशि वर के सप्तमेश का उच्च स्थान हो तो अच्छा है ।

(५) वर का सप्तमेश जिस राशि में हो यदि वही कन्या की राशि भी हो तो उत्तम है ।

(६) वर का लग्नेश जिस राशि में हो वही राशि कन्या की भी हो तो शुभ है ।

(७) वर का शुक्र जिस राशि में हो वही राशि कन्या की हो तो अच्छा है ।

(८) वर की चंद्र राशि से सप्तम स्थान पर जिन-जिन ग्रहों की दृष्टि हो वे ग्रह जिन-जिन राशियों में हों उन राशियों में से किसी राशि में यदि कन्या का जन्म हो तो भी विवाह शुभ है ।

उपरोक्त नियमों का विचार कन्या की कुण्डली से भी करना ।

उपरोक्त नियम में एक भी लागू हो तो शुभ है । एक से अधिक लागू हो तो और भी उत्तम है ।

(९) वर का स्पष्ट सप्तमेश + लग्नेश = योग से जो राशि और नवांश का बोध हो यदि कन्या का जन्म उसी राशि का हो तो विवाह शुभ है परस्पर प्रीत हो ।

कलत्र राशि

(१) वर का सप्तमेश जिस नवांश में हो उसके स्वामी की राशियाँ कलत्र राशि हैं ।

(२) सप्तमेश जिस राशि में उच्च होता है वह भी कलत्र राशि होती है ।

(३) सप्तम भाव का नवांश भी कलत्र राशि होती है ।

स्त्री की जन्म राशि वर के उपरोक्त कई कलत्र राशियों में से किसी एक में होना या उनकी त्रिकल की जो राशि हो उनमें से स्त्री की जन्म राशि होना । यदि ऐसा न हो तो संतान होने में बाधा पड़ती है । सप्तमेश जिस राशि में हो या उसके त्रिकोण राशियों में से किसी में स्त्री की जन्म राशि हो तो शुभ है ।

विवाह का कारण

ब्रह्मचर्य अवस्था के उपरांत गृहस्थ धर्म में प्रवेश के निमित्त विवाह होता है। गृहस्थ धर्म के बाद वानप्रस्थ आश्रम और पश्चात् संन्यास है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश से धर्म अर्थ काम की प्राप्ति होती है। पुत्र द्वारा पितृ ऋण से छूटकर उत्तम लोक की प्राप्ति होती है। उत्तम स्वभाव, आचरण वाली और धर्मशील कन्या से विवाह होने से धर्म अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। इसलिये शास्त्रोक्त रीति से शुभ समय विचार कर शुभ मुहूर्त में विवाह करना चाहिये। जैसा शुभाशुभ विवाह काल होता है वैसे ही शुभाशुभ स्वभाव आचार धर्म और संतान होती है। इसलिये विवाह का कुंडली से ठीक मिलान कर शुभ शुहूर्त में विवाह करना चाहिये और कुंडली की अच्छे प्रकार से जाँच कर लेनी चाहिये।

प्रश्न लग्न से विवाह योग—प्रश्न कालिक लग्न से १०, ११, ३, ५, ७ स्थान में कहीं चंद्र गुरु से दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह हो।

(२) या २, ७, ४ राशियों में से कोई प्रश्न कालिक लग्न हो और शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो विवाह शुभ कारक होता है।

(३) प्रश्न लग्न में यदि विषम राशि में या विषम राशि के नवांश में चंद्रमा व शुक्र ये दोनों बली होकर लग्न को देखते हों तो कन्या को वर का लाभ हो।

(४) यदि सम राशियों में या सम राशि के नवांश में स्थित शुक्र या चद्र बली होकर लग्न को देखते हों तो वर को स्त्री का लाभ हो।

प्रश्नकाल में शकुन—प्रश्नकाल में अचानक शंख आदि वाजे का शब्द सुन पड़े तो वर कन्या का मंगल होता है। यदि कुत्ता, गदहा, कौआ, या स्यार का शब्द सुन पड़े तो अमंगल होता है।

प्रश्न से कुलटा योग—प्रश्न कालिक लग्न से पंचम स्थान में पाप ग्रह हो और शत्रु से दृष्ट हो और नीच स्थान में स्थित हो तो कन्या कुलटा या मृत वत्सा हो।

वैधव्य योग (प्रश्न से)—प्रश्न कालिक लग्न से ६-८ घर में यदि चंद्र हो तो कन्या ८ वर्ष में विधवा हो।

(२) प्रश्न लग्न में क्रूर ग्रह हों और सप्तम में मंगल हो तो उपरोक्त फल हो।

(३) प्रश्न लग्न में चंद्र हो सप्तम में मंगल हो तो उपरोक्त फल हो।

कुल्टा—प्रश्न कालिक लग्न से पंचम में पाप ग्रह हो और नीच का हो और अपने शत्रु से दृष्ट हो तो कन्या कुल्टा या मृतवत्सा हो।

वैधव्य योग—लग्न या चंद्र से ७ या ८ स्थान में पाप ग्रह हो तो विधवा हो।

जब मंगल के घर में या ७, ८, १२ स्थान में राहु हो हो तो विधवा हो।

सप्तम में प्रवल पाप ग्रह हो तो विवाह के बाद ७ वर्ष में विधवा हो।

६-८ घर में चंद्र हो तो ८ वर्ष में विधवा हो।

अष्टमेश सप्तम में सप्तमेश अष्टम में हो पाप ग्रह से दृष्ट हो या लग्न या चंद्र से ७-८ घर में पाप ग्रह हो तो विवाह बाद शीघ्र विधवा हो।

षष्ठेश और अष्टमेश ६ या १२ घर में पाप युक्त हों तो उपरोक्त फल हो।

सप्तमेश और अष्टमेश ६ या १२ घर में पाप युक्त हों तो वही फल हो।

जन्म लग्न से अष्टम में पाप ग्रह नीच शत्रु क्षेत्री या पाप राशि में हो तो पति की मृत्यु का कष्ट हो।

पति के जन्म नक्षत्र से पहले स्त्री का जन्म नक्षत्र हो तो पति का नाश हो।

अष्टम में क्रूर ग्रह हो तो कन्या विधवा हो।

६, ७, ८ या १२ घर के स्वामी पाप पीड़ित हों तो विधवा हो।

अष्टमेश शप्तम में पाप नवांश में हो और पाप दृष्टि हो तो नवोढ़ा अवस्था में विधवा हो।

अष्टम में मंगल कुल्टा बनाता है। अष्टम शनि पति को रोगी बनाता है।

अष्टम में गुरु शुक्र हो तो गर्भ नष्ट या मृतवत्सा हो।

सप्तम में राहु हो तो दुःखित हो कुल दूषित करे।

विधवा दोष की शांति—कन्या के बाल विधवा योग की शांति के लिए सावित्री व्रत या पीपल वृक्ष का व्रत कराना। अच्छे लग्न में विष्णु प्रतिमा से या पीपल वृक्ष से या घट के साथ कन्या का विवाह करा देने से उस कन्या का किसी चिरञ्जीवी वर के साथ विवाह करा देवे। इसमें पुनर्भूदोष नहीं होता।

स्त्रीनाश योग—जन्म लग्न कन्या में सूर्य हो सप्तम में मीन का शनि हो तो स्त्री का नाश करता है।

शुक्र से ४-८ घर में क्रूर ग्रह हो तो उसकी स्त्री जल कर मरे।

यदि शुक्र पाप ग्रहों के बीच हो तो स्त्री गिर कर मरे।

शुक्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो या शुभ ग्रह युक्त न हो तो स्त्री फाँसी लगा कर मरे या उसकी स्त्री को इस प्रकार का कष्ट हो।

षष्ठ में मंगल सप्तम राहु अष्टम शनि हो तो स्त्री की मृत्यु हो।

सप्तम में राहु २ पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो उसका विवाह ही नहीं होगा विवाह हुआ तो स्त्री मर जायगी।

२-७ स्थानों में पाप ग्रह तो तो स्त्री वियोग का दुःख हो यदि यह योग स्त्री को भी हो तो उसका पति पुत्र धन से युक्त होगा पर स्त्री मरेगी।

सप्तम शुक्र हो या शुक्र पाप ग्रहों के बीच हो या शुक्र से १२, ७, ८ घर में मंगल आदि पाप ग्रह हो तो स्त्री की मृत्यु हो।

वर कन्या विनाश योग—वर कन्या दोनों के १-१२-४-१० घर में पाप ग्रह हो तो स्त्री पति का, पति स्त्री का नाश करता है।

चन्द से सप्तम में कोई पाप ग्रह नहीं हो लग्न से सप्तम में कोई ग्रह नहीं होना यदि विवाह लग्न में एक भी पाप ग्रह हो तो दोनों में से एक का नाश हो।

शुक्र २ पाप ग्रहों के बीच या पाप युक्त हो या शुक्र से ४, ७, ८ घर में पाप ग्रह हो तो स्त्री का नाश हो।

विष कन्या योग—(१) रविवार २ तिथि शत० नक्षत्र। मंगलवार ७ तिथि श्ले० नक्षत्र। शनि ७ तिथि श्ले० कृति० नक्षत्र या रविवार २ ति० श्लेषा, मंगलवार १२ ति० शत०, शनि ७ ति० कृति० इन तिथि वार नक्षत्रों के संयोग में जो कन्या उत्पन्न हो वह विष कन्या होती है। या रविवार १२ ति० विशा०, मंगल ७ शत०, शनिवार २ ति० श्ले० हो तो भी विष कन्या हो।

(२) जन्म समय २-७-१२ स्थानों में शनि, मंगल रविवार और शत० कृति० श्ले० नक्षत्र हो तो विष कन्या होती है।

(३) दो शुभ ग्रह लग्न में हों वे अपने शत्रु के घर में हों और वहां एक पाप ग्रह हो तो विष कन्या होती है।

(४) जन्म लग्न में शनि, पंचम सूर्य, नवम मंगल हो तो विष कन्या हो।

(५) दो शुभ ग्रह लग्न में, एक पाप ग्रह दशम, २ पाप ग्रह छठें हों।

इन योगों में उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है। जिससे वह निःसंतान या बाल विधवा होती है। ऐसी कन्या को सावित्री व्रत करना चाहिये। पीपल आदि से विवाह कराके दीर्घायु वर के साथ विवाह करें।

परिहार—लग्न या चन्द्र से सप्तमेश शुभ ग्रह हो तो विषकन्या योग का भय नहीं रहता और वैधव्य या अनपत्यता का कोई भय नहीं रहेगा।

विवाह के पहिले—सूर्य—पति। चन्द्र—स्त्री। मंगल—धन। बुध—पुत्र। गुरु—सुख। शुक्र—धर्म। शनि—घर। इनका विचार करना चाहिये। अष्टम स्थान से—वैधव्य। जन्म लग्न से—शरीर। सप्तम—पति का सौभाग्य। पंचम घर से—संतान का विचार करना चाहिये।

जातक में स्त्री पुरुष दोनों का फल समान है। परन्तु स्त्री की कुंडली में सप्तम—सौभाग्य। चन्द्र—शरीर। लग्न से—आकृति का विचार करना। शुक्र—सास। चंद्र—मन।

पूर्वोक्त ग्रहों के विचार से उन स्थानों से दुःख सुख आदि जानना चाहिये। यदि ग्रह अपने उच्चादि में हो तो सुख। नीच अस्त आदि में—दुःख। यदि पूर्वोक्त स्थानों पर भावेश या शुभ ग्रह बैठा हो या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शुभ फल होता है। अन्यथा अशुभ फल होता है।

सास ससुर का ज्ञान—शुक्र—सास। सूर्य—ससुर। लग्न—देह। सप्तमेश—पति। चंद्र—मन। विवाह काल में इन सब ग्रहों के फल विचारना। विवाह काल में शुक्र बली—कन्या को सास का सुख। सूर्य बली—ससुर से सुख। लग्न बली—कन्या को शरीर सुख। सप्तमेश बली—पति का सुख। चंद्र बली—कन्या के मन को सुख हो।

कन्या दोष—जिस कन्या का माथा बहुत चौड़ा हो, जो कुवड़ी हो, रोगी, लज्जा हीन, झूठ बोलने वाली, अंगहीन, बहुत मोटी, झगड़ालू अंधी बहरी हो ऐसे १० दोष वाली कन्या को वर्जित करें।

कन्या गुण—शरीर का वर्ण निर्मल हो, बोलने में जिसका स्वर सुखद हो, शहत के समान पीले नेत्र हों, कोई अंग टेढ़ा न हो, नाम सुनने में अच्छा हो, बाल कड़े न हों, दाँत बड़े न हों, अंग कोमल हो, रूपवती हो, शरीर में कोई व्यंग न हो ऐसी कन्या वरण योग्य है।

वर दोष—जो वर अंधा, लूला, रोगी, कर्महीन, नपुंसक, कोढ़ी, पतित, दूर देश रहने वाला, मूर्ख, दरिद्री, आजीविका रहित, जो योग मार्ग में लगा हो उसे कन्या नहीं देना। अवस्था से तिगुने वर्ष की अवस्था वाले को और सनकी या पागल को कन्या नहीं देना।

वर गुण—कुल शील, शरीर, विद्या, उचित अवस्था, धन वाला, अच्छा आचरण, अहिंसक, विद्या में प्रीति ऐसे गुणवान को कन्या देना।

मंगली विचार

१-४-७, ८, १२ स्थानों में मंगल हो तो मंगली योग होता है। जिसके लग्न में व १२, ४, ७, ८ स्थान में मंगल हो तो पति नाश, पति के हो तो स्त्री नाश करें। इस प्रकार मंगल हो तो विवाह न करें या गुण बहुत मिलें तब करें या उसी तरह दोनों के हों तो करे वर का मंगल हो तो वधू का और कन्या का हो तो वर का नाश करता है। यह लग्न से या चंद्र से भी विचारना। दो या अधिक पाप ग्रह युक्त मंगल सप्तम या अष्टम हो तो कन्या बाल विधवा हो। तात्पर्य यह है कि ७, ८ स्थान में पाप ग्रह नहीं होना। इसी प्रकार २, ५, ४ घर में भी पाप ग्रह नहीं होना।

मंगल १२ वां पड़ा तो सप्तम को (पति या स्त्री के घर को) देखता है। यदि लग्न में हो तो ७, ८ घर दोनों को देखता है। ४ घर में हो तो सप्तम को देखता है। सप्तम हो तो १ और २ घर को देखता है। ८ में हो तो (उस स्थान से पति की मृत्यु का विचार होता है।) वहाँ से दूसरे घर को देखता है। इत्यादि कारणों से उक्त स्थानों में बैठे ग्रह का पूरा विचार करना। अष्टम घर में पाप ग्रह नहीं होना और न वहाँ पाप ग्रह की दृष्टि हो।

परन्तु सप्तम में उच्च का मंगल हो या उच्च का गुरु हो तो कन्या रूपवती होगी। मंगल गुरु उच्च के या बलवान होकर स्वगृही हों तो वह स्त्री सब प्रकार से सम्पन्न होती है। बलवान शुभ ग्रह चतुर्थ में हो तो सुखी करते हैं।

जिस स्थान में मंगल के पड़ने से मांगलिक होती है वहां मंगल पूर्ण बली हो या पाप ग्रहों के साथ पड़ा हो या पाप दृष्ट हो या पाप राशि में या क्रूर नवांश में हो तो उस कुंडली का या दूसरी कुंडली में जबाब बराबर का होना चाहिये अन्यथा जिस समय शुभ ग्रह से योग करेगा अशुभ फल कर देगा।

यदि मंगल अस्तंगत, शुद्ध या शुभ ग्रहों से पूर्ण दृष्ट हो और लग्नेश सप्तमेश एवं चंद्र पूर्ण बली हो तथा उक्त अपवाद प्राप्त होंगे तो विवाह करने में कोई हानि नहीं।

जिस प्रकार मंगल का विचार किया जाता है। ठीक उसी प्रकार शनि राहु आदि पाप ग्रहों का भी विचार करना। वर को कुंडली में शुक्र पाप ग्रह के साथ हो तो कन्या अशुभ है।

मंगल का दोष परिहार

जिसके जन्म लग्न से १, ५, ७, ८, १२ स्थान में शनि हो तो मंगल दोष नहीं मानना।

१२, १, ४, ७, ८ स्थानों में शनि मंगल राहु केतु सूर्य इनमें से कोई परस्पर एक दूसरे की कुंडली में पड़े तो मंगली का दोष नहीं मानना।

कुंडली में १२, १ ४, ७ स्थानों में शनि हो तो मंगली दोष कमजोर पड़ जाता है। इसी प्रकार लग्न में मेष का मंगल, धनु का व्यय में, वृश्चिक का चौथे, मकर का सप्तम, या कर्क का मंगल अष्टम हो तो विशेष दोष नहीं होता।

बलवान गुरु शुक्र लग्न से सप्तम में या वक्री मंगल नीच का, शत्रु क्षेत्री या अस्त हो तो दोष नहीं।

राशि में मैत्री हो दोनों का एक गण हो, गुण अधिक मिलते हों तो मंगल का दोष नहीं होता।

इसी तरह मंगल चन्द्रमा के साथ हो या केन्द्र में हो तब भी मंगल का दोष नहीं होता।

अन्य मत से मंगल यदि पाप ग्रहों के कारण कन्या के ग्रह कड़े हों तो वर को दीर्घायु होना। कन्या की जन्म कुंडली में सप्तम में विशेष कर अष्टम में पाप ग्रह नहीं होना या द्वितीय में शुभ ग्रह होना।

एक को मंगल हो तो दूसरे को शनि या राहु अवश्य होना। यदि कन्या की कुंडली में ३ ग्रह पूज्य है तो वर की कुंडली में भी ३ ही चाहिये। फिर चाहे वर के ४ ही ग्रह हों पर वधू के कम न हों और वर का योग प्रबल चाहिये। कन्या का मंगल प्रबल पड़ा हो तो वर के शनि राहु से काम नहीं चलेगा। प्रबल मंगल ही होना।

१, ४, ७, ८, १२ घर में यदि कन्या को पूर्ण बलवान मंगल पड़ा हो तो वर को बुरा फल उत्पन्न करेगा। वर को पड़ा हो तो कन्या के लिये खराब है।

मंगल बलवान हो या क्रूर नक्षत्र पर हो या पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल अवश्य करेगा।

यदि २७ गुणों से अधिक मिलें और दोनों का एक सा मंगल हो तो कोई चिन्ता नहीं।

यदि एक को प्रबल मंगल है और दूसरे को भी वैसा ही हो तो बराबर मिलान हुआ समझना अन्यथा उचित मिलान नहीं हुआ समझना।

अन्य मत है कि एक को मंगली योग हो तो दूसरे को प्रबल शनि योग कारक हो तो काम चल जायगा।

अन्य मत है कि सप्तमेश जहाँ हो वहाँ से १, ४, ७, ८, १२वें स्थान का मंगल हो तो अनिष्ट कारक होने का भय है।

अन्य मत है कि गुण अधिक मिल जाय तो मंगल का भय नहीं।

मंगल नीच का, शत्रु क्षेत्री, अस्तगत एवं वक्री हो और बलवान शुभ ग्रह की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगल का कोई विशेष भय नहीं।

लग्न से, चंद्र से, सप्तमेश से मंगल का विचार करते हैं। आशय यह है कि जितने भी पाप ग्रह हों उनकी स्थिति पर विचार का बलाबल तौल कर देखना और यह भी देखना कि मंगल या उसके जोड़ी का दूसरा पाप ग्रह किस स्थान में है। वैसा ही जब दूसरे की कुंडली में मिले तो बराबर मिली कहना।

गुण मिलान

विवाह में गुण मिलान के लिए विशेष विचार—जिसकी जन्म राशि न ज्ञात हो उसके चालू नाम से विचारना। वर कन्या में यदि एक की जन्म राशि ज्ञात हो दूसरे की न ज्ञात हो तो दोनों के चालू नाम से विचारना चाहिये यदि दोनों का जन्म नाम ज्ञात हो तो उससे ही गुण मिलान करना श्रेष्ठ है अन्यथा दम्पति को हानि कारक होगा।

गुण—(१) वर्ण का गुण १, (२) वश्य का २, (३) तारा के ३, (४) योनि के ४, (५) मैत्री के ५, (६) गण मैत्री के ६, (७) भकूट के ७, (८) नाड़ी के ८ गुण होते हैं। सब मिलाकर ३६ गुण होते हैं।

गुण मिलान—१६ गुण मिले तो निंदनीय, २० गुण मध्यम, ३६ गुण श्रेष्ठ है। प्रायः १८ गुणों से अधिक गुण शुभ माने जाते हैं। यह नियम भकूट मिलान पर है यदि भकूट (षड़ाष्टक) न मिलता हो तो २० गुण तक अधम, २५ गुण तक मध्यम, पश्चात् ३६ गुण तक श्रेष्ठ है।

वर्ण का 1 गुण

		वर			
	वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्या	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

वश्य के २ गुण

वर

कन्या

वश्य	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट
चतु०	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

अन्य मत

वर

कन्या

	चतु	नर	जल	वन	कीट
चतु	२	॥	१	०	२
नर	॥	२	०	०	१
जल	१	०	२	२	२
वन	०	०	२	२	०
कीट	१	०	१	०	२

तारा के ३ गुण

वर

कन्या

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	तारा
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	

योनि के ४ गुण

वर

कन्या

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	२	२	२	२	१	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	३	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	२	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	२
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के ५ गुण

वर

कन्या

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चंद्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के ६ गुण

वर

कन्या

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	७
राक्षस	०	०	६

भकूट के गुण ७

वर

कन्या

राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ी के ८ गुण

वार

कन्या

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

(१) वर्ण ज्ञान—वर कन्या का एक वर्ण हो तथा वर का वर्ण उत्तम हो तो १ गुण होता है।

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	४–८–१२	१–५–९	२–६–१०	३–७–११

वर से उच्च वर्ण वाली कन्या श्रेष्ठ नहीं है। समान वर्ण में या जब वर उत्तम वर्ण हो तो १ गुण मिलता है। जब वर हीन वर्ण हो तो शून्य गुण मिलता है। चारो वर्ण में पहले से दूसरा दूसरे से तीसरा, तीसरे से चौथा हीन वर्ण के हैं। वर की जन्म राशि से कन्या का वर्ण श्रेष्ठ हो तो वह कन्या अच्छी नहीं होती जैसे कन्या ब्राह्मण वर्ण हो वर क्षत्रिय वर्ण हो तो विवाह योग्य नहीं, कन्या ब्राह्मण वर्ण हो वर हीन वर्ण ही तो मृत्यु हो, यदि वर शूद्र वर्ण हो तो कन्या शीघ्र विधवा हो।

परिहार—राशि से जिसका वर्ण हीन हो और राशि स्वामी का वर्ण उत्तम हो तो विवाह शुभ है। राशि की चिन्ता न करें स्वामी को ग्रहण करे। और वर्ण न मिलता हो यदि राशि स्वामो की मित्रता हो तो हानि नहीं। विवाह शुभ समझना।

(२) वश्य कूट—चतुष्पद—मेष, वृष, सिंह, धन उत्तरार्द्ध मकर, पूर्वार्द्ध।
नर—मिथुन, कन्या, तुला, धन पूर्वार्द्ध, कुम्भ।
जलचर—कर्क, मकर उत्तरार्द्ध, कुम्भ, मीन।
वनचर—सिह, कोट ४, सरीसृप ८।

सिंह राशि को छोड़कर अन्य सब राशियां मनुष्य राशि के वश में हैं। जल राशियाँ मनुष्य राशियों के भक्ष हैं। वृश्चिक राशि को छोड़कर अन्य सब राशियाँ सिंह के वश में हैं चतुष्पद या जलचर राशियों का परस्पर वश्यावश्य मनुष्यों के व्यवहार में जानना। नर (द्विपद या मनुष्य) को सर्प से भय है।

गुण—वश्य जो भक्ष हो आधा गुण। शत्रु वश्य हो तो एक गुण। मित्र वश्य हो सम वश्य हो तो २ गुण। दोनों का एक वश्य २ गुण मनुष्य + चतुष्पद। चतुष्पद + जलचर। चतुष्पद + कीट। नर + कीट। नर + जलचर। वनचर + जलचर। कीट + जलचर = सबका १ गुण। चतुष्पद + वनचर। नर + वनचर। कीट + वनचर इनके ० गुण।

अन्य मत—एक जाति—२ गुण। वश्य वैर—१ गुण। वश्य भक्ष्य—॥। शत्रु भक्ष—० गुण।

(३) तारागुण—तारा नाम (१) जन्म, (२) सम्पत, (३) विपत, (४) क्षेम, (५) प्रत्यरि, (६) साधक, (७) वध, (८) मैत्र (९) अतिमित्र कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गिनकर और वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिन कर जो संख्या हो उनमें पृथक पृथक ९ का भाग देना यदि शेष ३, ५, ७ रहे तो वर कन्या को अशुभ कारक होते हैं।

दोनों का शुभ तारा—३ गुण। शुभ + अशुभ = १॥ गुण। अशुभ + अशुभ = ० गुण

(४) योनि कूट = अश्व०, शत० = घोड़ा योनि। स्वा० हस्त = भैंसा = दोनों की वैर योनि।

धनि० पूभा = सिंह । भर० रेवती = हाथी = वैर योनि दोनों की है ।

पुष्य, कृति = मेढ़ा । श्रव० पूषा = वानर ,, ,,

उषा० अभि = न्योला । मृग० रोह = सर्प ,, ,,

अनु० ज्ये० = हरिण । मूल आर्द्रा = कुत्ता ,, ,,

पुन० श्ले० = विलाव । मघा पूफा = मूसा ,, ,,

चित्रा विशा = व्याघ्र । उफा० उभा = गौ ,, ,,

इस प्रकार महा वैर योनि = घोड़ा भैंसा । सिंह हाथी । मेष वानर । न्योला साँप । हरिण कुत्ता । विलाव मूसा । व्याघ्र गौ की है गुण ० है ।

अति मैत्री गुण—एक योनि ४ गुण, मैत्री ३ गुण, एक स्वभाव २ गुण, वैर १ गुण महावैर योनि ० गुण ।

वर कन्या के विवाह में मैत्री, अति मैत्री ग्रहण करना, परस्पर महावैर वर्जित करना ।

(५) ग्रह मैत्री—राशि स्वामी एक=५ गुण । मित्र=५ गुण । मित्र + सम=४ गुण शत्रु + मित्र=१ गुण । सम + सम=३ गुण । शत्रु + शत्रु=० गुण सम + वैर=गुण ।

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	मं०गु०चं०	सू० बु०	चं० गु० सू०	सू० शु०	सू०मं०चं०	बु० श०	बु० शु०
शत्रु	शु० श०	०	बु०	चं०	बु० शु०	चं० सू०	चं०सू०मं०
सम	बु०	मं०गु०शु०श०	शु० श०	गु०श०मं०	श०	मं० गु०	गु०

प्रयोजन यह है कि वर के जन्म राशि का स्वामी और कन्या के जन्म राशि का स्वामी दोनों परस्पर मित्र हों तो विवाह शुभ, शत्रु हो तो अशुभ । सम हों तो शुभ अशुभ कुछ नहीं । सम + मित्र = मध्यम । सम + सम = अधम शत्रु + शत्रु = मृत्युदायक । शत्रु + मित्र = कलह । सम + शत्रु = मृत्यु । परस्पर मित्र = अति शुभ ।

(६) गण मैत्री—एक सा गण = परम प्रीत = ६ गुण । देव = मनुष्य = मध्यम = ५ गुण । मनुष्य + राक्षस = ० गुण ।

पुरुष देव + स्त्री मनुष्य = ६ गुण, इसके विपरीत ५ गुण । समता = ६ गुण ।

पुरुष राक्षस + स्त्री देव = १ गुण अन्यथा ० गुण । मनुष्य + राक्षस = ० गुण । राक्षस + मनुष्य = मृत्यु । राक्षस + देव = वैर ।

देवगण—अनु०, मृग०, अश्व०, पुन०, पुष्य०, स्वा०, हस्त०, रेवती ।

मनुष्य गण—३ पूर्वा० रोह० ३ उत्तरा, आर्द्रा, भरणी ।

राक्षस गण—श्ले०, शत०, मूल, विशा०, कृति०, मघा, चित्रा, ज्ये०, धनिष्ठा ।

(७) मकूट राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
षड़ाष्टक षष्ठ	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
मैत्री	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
अष्टम	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
मैत्री	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु

वर कन्या की जन्म राशि से दूसरा ६-८ पड़े तो षड़ाष्टक होता है ।

फल = मृत्यु । ५-९ पंचम नवम = सन्तान हीन । १-२ द्विर्द्वादश = निर्धनता । इन स्थानों को छोड़कर अन्य शुभ है । एक राशि = बड़ी प्रीति । ४-१० = सुख । ३-११ = धन प्राप्ति । सम सप्तम = अच्छी सन्तान । इसमें विशेषत: षड़ाष्टक ही वर्जित है । इसमें मित्र षड़ाष्टक ग्रहण करने योग्य है । शत्रु षड़ाष्टक वर्जित है ।

जैसे मकर का स्वामी शनि और मिथुन का स्वामी बुध मित्र है यह मित्र षड़ाष्टक हुआ परन्तु ५ का स्वामी सूर्य ये शनि का शत्रु है इस कारण १०-५ शत्रु षड़ाष्टक हुआ । अच्छे कूट में ७ गुण मिलते हैं । एक चरण होने पर ० गुण ।

मृत्यु षड़ाष्टक—६–१।२–९।३–८।११–४।१०–५।७–१२ = परस्पर मृत्यु षड़ाष्टक

वृद्धि षड़ाष्टक—१–८।१०–३।६–११।७–२।५–१२।९–४ = „ वृद्धि „

नवम पंचम—जब एक की राशि से दूसरा ९ और दूसरे से पहला पंचम हो ।

द्विर्द्वादश—एक की राशि से दूसरा १२वाँ और दूसरे से पहला दूसरा हो ।

परिहार—पूर्वोक्त षड़ाष्टक आदि दुष्ट भकूट रहते भी कन्या और वर का जन्म राशीश एक हो तो विवाह शुभ है । या दोनों की मित्रता हो तब भी शुभ है । यदि वर कन्या की नाड़ी शुद्ध हो अर्थात् नाड़ी में भिन्नता हो या वर कन्या के जन्म राशियों के नवांश स्वामी परस्पर मित्र या बली हों तो विवाह शुभ है । या पूर्वोक्त दोषों के रहते नाड़ी शुद्ध हो और तारा शुद्ध हो तो भी विवाह शुभ है ।

तारा शुद्धि—कन्या की जन्म राशि को लेकर वर के जन्म नक्षत्र तक गिनने में जो संख्या हो इसी प्रकार वर के जन्म नक्षत्र से लेकर कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनने से संख्या में पृथक पृथक ९ का याग देने पर २, ४, ६, ८, ० ये शेष रहें तो तारा शुद्ध है ।

या पूर्वोक्त सब दोषों के रहते तारा दोष के भी रहते यदि नाड़ी शुद्ध हो और वश्य कूट में कही हुई रीति से कन्या के जन्म राशि के वश में वर राशि न हो तो विवाह शुद्ध होता है परन्तु नाड़ी के शुद्ध नहीं रहते विवाह शुभ नहीं अर्थात् कन्या जन्म राशि से वर की जन्म राशि व वर जन्म राशि से कन्या जन्म राशि ११, ३, १०, ४, ७वाँ हो तो कन्या जन्म राशीश व वर जन्म राशीश इन दोनों में शत्रुता का नाश कर देते हैं । और कन्या राशीश व वर राशीश दोनों में मित्रता होने से पूर्वोक्त षड़ाष्टक आदि दुष्ट भकूट नाश हो जाता है । यदि दोनों की जन्म राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न हो या जन्म नक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ी दोष गण दोष तारा दोष नहीं होता ।

(८) नाड़ी—नाड़ी पृथक होने से ८ गुण । एक नाड़ी = ० गुण । ८ भकूट में सबसे प्रधान नाड़ी है ।

आदि	१	६	७	१२	१३	१८	१९	२४	२५
नाड़ी	अश्व०	आर्द्रा	पुन०	उफा०	हस्त	ज्ये०	मूल०	शत०	पूभा०
मध्य	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६
नाड़ी	भर०	मृग०	पुष्य	पूफा०	चित्रा	अनु०	पूषा०	धनि०	उभा०
अन्त	३	४	९	१०	१५	१६	२१	२२	२७
नाड़ी	कृति०	रोह०	श्ले०	मघा	स्वा०	विशा०	उषा०	श्रव०	रेवती

नाड़ी दोष विचार—ब्राह्मणों को नाड़ी दोष, क्षत्रियों को वर्ण दोष, वैश्य को गण दोष, शूद्र को योनि दोष वर्जित है

आदि नाड़ी पति को मारती है। मध्य—कन्या को। अन्य मत से दोनों को अशुभ मृत्यु प्रद है। अन्त—दोनों को मारती है। इससे नाड़ी वेध वर्जित है। दोनों की एक नाड़ी होने से विवाह वर्जित है। यदि दोनों की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न हो या दोनों का एक नक्षत्र हो पर राशि भिन्न हो। या दोनों का एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हो तो नाड़ी दोष नहीं रहता विवाह शुभ होता है। आदि अंत की नाड़ी गोदावरी के दक्षिण तथा क्षत्रियों और वैश्य को अशुभ नहीं है।

अन्य मत से नाड़ी दोष विचार

२८ नक्षत्र में से जन्म नक्षत्र के अनुसार ३ श्रेणियों में विभक्त किये गये हैं।

द्विपाद के नक्षत्र—मृग०, चित्रा, धनिष्ठा।

त्रिपाद ,, —कृति०, पुन०, उफा०, विशा०, उषा०, अभिजित, पूभा०।

चतुष्पाद—अश्व०, भर०, रोह०, आर्द्रा, पुष्य, श्ले०, मघा, पूफा०, हस्त०, स्वा० अनु०, ज्ये०, मूल०, पूषा०, श्रव०, उभा०, रेवती।

कन्या का नक्षत्र चतुष्पाद हो तो अश्वनी से आदि, मध्य, अंत के हिसाब से गणना करे। यदि कन्या का नक्षत्र द्विपाद हो तो ५ अंगुलियों और त्रिपाद हो तो ४ अंगुलियों से कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी तक क्रम से फिर उत्क्रम से गिनती करना अभिजित सहित ४ अंगुलियों पर गिनना। यदि दोनों का एक ही अंगुली पर आवे तो नाड़ी दोष लगेगा अन्यथा नहीं।

यदि द्विपाद जन्म नक्षत्र हो तो मृग० से कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी एवं अंगुष्ठ तक ५ अंगुलियों पर गणना करे। यदि एक ही अंगुली पर दोनों के आवे तो दोष लगेगा। जैसा आगे चित्र देकर समझाया है।

अन्य मत है कि—यदि अनेक परिहार लग जावे और रोह०, आर्द्रा, मृग०, ज्ये०, पुष्य, श्रव०, रेव० और उभा० में नाड़ी दोष नहीं है नाड़ी मिली समझना।

त्रिपाद चतुः पर्व गणना

कनिष्ठा	अनामिका	मध्या	तर्जनी
कृत०	रोह०	मृग०	आर्द्रा ↓
मघा	श्ले०	पुष्य	पुन०
↓ पूफा०	उफा०	हस्त	चित्रा ↓
ज्ये०	अनु०	विशा०	स्वा०
↓ मूल०	पूषा०	उषा०	अभि० ↓
पूभा०	शत०	धनि०	श्रव०
↓ उभा०	रेव०	अश्व०	भर०।

द्विपाद पंच पर्व गणना

कनि०	अना०	मध्या	तर्ज०	अंगुष्ठ
मृग०	आर्द्रा	पुन०	पुष्य	श्ले० ↓
हस्त०	उफा०	पूफा०	मघा	०
चित्रा	स्वा०	विशा०	अनु०	ज्ये० ↓
श्रव०	उषा०	पूषा०	मूल०	०
धनि०	शत०	पूभा०	उभा०	रेव० ↓
रोह०	कृत०	भर०	अश्व०	०

चतुष्पाद—अहिल्या देश में चतुर्नाड़ी, पंचाल में पंच नाड़ी और सर्वत्र त्रिनाड़ी वर्जित करना।

कनिष्ठा	अश्व०	आर्द्रा	पुन०	उफा०	हस्त०	ज्ये०	मूल०	शत०	पूभा०
अनामिका	भर०	मृग०	पुष्य	पूफा०	चित्रा	अनु०	पूषा०	धनि०	उभा०
मध्या	कृति०	रोह०	श्ले०	मघा०	स्वा०	विशा०	उषा०	श्रव०	रेवती

अन्य मत—कृति०, रोह०, पुन०, आर्द्रा. हस्त०, उफा०, स्वा०, विशा०, शत०, उषा०, श्रव०, इन नक्षत्रों में यदि एक हो राशि हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता। भिन्न राशि होने में दोष है।

अन्य मत—गुरु शु॰ में से कोई एक, दोनों राशियों का स्वामी हो तो नाड़ी दोष नहीं होता।

नृदूर विचार—यह नारदोक्त है, ब्राह्मण में इसका भी विचार होता है। कन्या की राशि से वर राशि दूर होना शुभ है। उल्टा नृदूर अशुभ फल देता है। कन्या की जन्म राशि से १२, ११, १०, ९, ८ वीं वर राशि कन्या दूर शुभ अन्यथा वर दूर अशुभ। कन्या राशि से प्रथम ९ नवक नक्षत्र तक स्त्री दूर, अति निंदित, दूसरा नवक १० से १८ तक मध्यम, तीसरा नवक १९ से २७ तक उत्तम फल होता है।

कन्या के जन्म नक्षत्र से पति का नक्षत्र दूसरा हो तो पति नाशक है।

परिहार—(१) नक्षत्र भिन्न होकर राशि एक ही हो या नक्षत्र के चरण में भेद हो (२) ग्रह मैत्री और योनि मैत्री हो तो नृदूर का दोष नहीं होता। (३) दक्षिण में यह विचारणीय है अन्य देशों में नहीं।

कन्या के जन्म नक्षत्र से दूसरा शुभ नहीं होता परन्तु शत०, हस्त, स्वा०, अश्व०, कृति०, पूषा०, मृग०, और मघा हो तो दोष नहीं है।

अन्य प्रकार से वर्ग कूट

	वर्ग	स्वामी	वैर
अ वर्ग	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ	गरुड़	सांप
	लृ ॡ ए ऐ ओ औ	,,	,,
क वर्ग	क ख ग घ ङ	विलार	मूसा
च वर्ग	च छ ज झ ञ	सिंह	हरिण
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण	कुत्ता	भेड़
त वर्ग	त थ द ध न	सांप	गरुड़
प वर्ग	प फ ब भ म	मूसा	विलार
य वर्ग	य र ल व	हरिण	सिंह
श वर्ग	श ष स ह	भेड़	कुत्ता

अपने वर्ग से पाँचवां शत्रु चतुर्थ मित्र और तीसरा उदासीन (न शत्रु, न मित्र) होता है जिसमें अल्प प्रीत होती है। कन्या के नाम का पहला अक्षर जिस वर्ग में हो उससे वर के नाम का पहला अक्षर जिस वर्ग में हो वह देखना। पाँचवाँ न हो तो विवाह शुभ होता है। यदि पाँचवाँ हो तो विवाह अशुभ होगा। कन्या के नाम के अक्षर एक ही वर्ग में हो तो विवाह होने पर परस्पर प्रीति होती है।

स्वामी भृत्य के विषय में या नगर ग्राम वास में भी वर्ग मिलता है।

द्विर्द्वादश—वर से कन्या की राशि दूसरी हो = धन नाश। वारहवीं कन्या हो तो कन्या धनवती हो। स्त्री के जन्म नक्षत्र से पति का जन्म नक्षत्र दूसरा हो तो पति नाश स्वामी का पहला और सेवक का दूसरा नक्षत्र हो तो सेवा नाश ऋण दाता का पहला ऋणी का दूसरा नक्षत्र हो तो धन नाश नगर का पहला और नगर वासी का दूसरा नक्षत्र हो तो ग्राम सुख नाश।

नवम पंचम—वर से कन्या पाँचवीं = संतान हानि। कन्या नवमी = धनवती कन्या।

सम सप्तक—१०–४। ११–५। ८–२ राशियों के सम सप्तक में वैर होता है। विषम सप्तक अशुभ नहीं होता जैसे—१–७। ३–९। ५–११।

दशम चतुर्थ—इसी प्रकार २–५। १–४। ३–१२। ८–११ राशियों में दशम चतुर्थ अशुभ है।

परिहार—इन सब का परिहार भकूट षड़ाष्टक में वर्णन है। वर्ण भकूट, वश्य, तारा, योनि का परिहार ग्रह मैत्री से होता है अर्थात् ग्रह मैत्री हो तो उपरोक्त दोष कट जाते हैं। ग्रह मैत्री हो या राशि के नवांश स्वामियों में मित्रता हो तो गणदोष भी नहीं रहता। द्विर्द्वादश नव पंचम भी ग्रह मैत्री होने से विवाह शुभ हो जाता है।

नवांश विचार

	अंश	३-२०	६-४०	१०-०	१३-२०	१६-४०	२०-०	२३-२०	२६-४०	३०-०
राशियाँ	१-५-९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	२-६-१०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
	३-७-११	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
	४-८-१२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

उदाहरण—सिंह राशि $१३^\circ–२०'$ = $४^\circ–१३^\circ–२०'$ सिंह के $१३^\circ–२०'$ अंश के नीचे ४ है। ४ का स्वामी चंद्र है। नवांश स्वामी चंद्र हुआ।

शतपद चक्र गुण मिलान को

राशि	नक्षत्र	अक्षर चरण १, २, ३, ४	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	राशि स्वामी
मेष	अश्व०	चू चे चो ला	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	देव	आदि	मङ्गल
	भरणी	ली लू ले लो	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुधप	मध्य	मङ्गल
	कृति०	आ ० ० ०	क्षत्रिय	चतुष्पद	मेष	राक्षस	अंत	मङ्गल

राशि	नक्षत्र	अक्षर चरण	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	राशि
वृष	कृति०	० ई उ ए	वैश्य	चतुष्पद	मेष	राक्षस	अंत	शुक्र
	रोह०	ओ वा वी वू	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अंत	शुक्र
	मृग०	वे वो ० ०	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	देव	मध्य	शुक्र
मिथुन	मृग०	० ० का की	शूद्र	मानव	सर्प	देव	मध्य	बुध
	आर्द्रा	कु घ ङ छ	शूद्र	मानव	श्वान	मनुष्य	आदि	बुध
	पुन०	के को ह ०	शूद्र	मानव	मार्जार	देव	आदि	बुध
कर्क	पुन०	० ० ० ही	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	देव	आदि	चंद्र
	पुष्य	हू हे हो डा	ब्राह्मण	जलचर	मेष	देव	मध्य	चंद्र
	श्ले०	डी डू डे डो	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अंत	चंद्र
सिंह	मघा	मा मी मू मे	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	राक्षस	अंत	सूर्य
	पूफा०	मो टा टी टू	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मनुष्य	मध्य	सूर्य
	उफा०	टे ० ० ०	क्षत्रिय	वनचर	गौ	मनुष्य	आदि	सूर्य
कन्या	उफा०	० टो पा पी	वैश्य	मानव	गौ	मनुष्य	आदि	बुध
	हस्त	पू ष ण ठ	वैश्य	मानव	महिष	देव	आदि	बुध
	चित्रा	पे पो ० ०	वैश्य	मानव	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	बुध
तुला	चित्रा	० ० रा री	शूद्र	मानव	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	शुक्र
	स्वा०	रु रे रो ता	शूद्र	मानव	महिष	देव	अंत	शुक्र
	विशा०	ती तू ते ०	शूद्र	मानव	व्याघ्र	राक्षस	अंत	शुक्र
वृश्चिक	विशा०	० ० ० तो	ब्राह्मण	कीट	व्याघ्र	राक्षस	अंत	मङ्गल
	अनु०	ना नी नू ने	ब्राह्मण	कीट	मृग	देव	मध्य	मङ्गल
	ज्ये०	नो य यी यू	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि	मङ्गल
धन	मूल	ये यो भा भी	क्षत्रिय	मानव	श्वान	राक्षस	आदि	गुरु
	पूषा	भू धा फा ढ	क्षत्रिय	१ मानव ३ चतुष्पद	वानर	मनुष्य	मध्य	गुरु
	उषा	भे ० ० ०	क्षत्रिय	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अंत	शनि
मकर	उषा	० भो जा जी	वैश्य	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अंत	शनि
	श्रव०	खी खू खे खो	वैश्य	१॥ चतुष्पद २॥ जलचर	वानर	देव	अंत	शनि
	धनि०	गा गी ० ०	वैश्य	२ जलचर	सिंह	राक्षस	मध्य	शनि
कुंभ	धनि०	० ० गू गे	शूद्र	२ मानव	सिंह	राक्षस	मध्य	शनि
	शत०	गो सा सी सू	शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	मध्य	शनि
	पूभा०	से सो दा ०	शूद्र	मानव	सिंह	मनुष्य	आदि	शनि
मीन	पूभा०	० ० ० दी	ब्राह्मण	जलचर	सिंह	मनुष्य	आदि	गुरु
	उभा०	दु थ झ ञ	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य	गुरु
	रेवती	दे दो चा ची	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अंत	गुरु

वर कन्या के गुण मिलान की सारिणी

कन्या	वर	अश्व.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पूफा.	उफा.	उफा.	ह.	चि.
		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	कन्या	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
मेष	अश्व.	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१९	२३॥	३१॥	२८	२१॥	२६	१५॥	११	९	१३
	४	३	०		४	४	४		३	३	३			५+	५+	३५	३६	२३६	६
	भर.	३४	२८	२९	१९	२२॥	१४॥	१८	२६	२७	३०॥	२३॥	२५॥	२०॥	१८॥	२६॥	२१॥	२०	५
	४		३	०१	०४१	४	३४	३				३	१	१५	३५	५+	६	६	१३६
	कृ.	२७॥	२९	२८	२०	१०	१८॥	२२	२०	२३	२५॥	२७॥	२३॥	१६	१९॥	२०॥	१५॥	१६॥	१८
	१		१	३	३४	१३४	४		१				३	३५	१५	१५	१६	६	६
वृष	कृ.	१८॥	२०	१९	२८	२१	२६॥	१७॥	१७॥	१८॥	२२	२४	२०	१८	२१॥	२२॥	२१	२१	२३॥
	३	४	१४	१८	३	१३		४+	१४	४+			३	३	१	१	१५	५+	५+
	रो.	२३॥	२३॥	११	२०	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२७	१३	१२	२६	२७॥	२५	२६	२०
	४	−४	४	३४१	३१	३	०	०४	४+	४+			३१	३१			५+	५+	−१५
	मृ.	२३॥	१४॥	१८॥	२७॥	३४	२८	१९	२४	२३	२७	२०	२२	२०	१६	२५	२३॥	२६	१३
	२	−४	३४	−४			३	३४	०४	४+		३			३		५+	५+	३५
मिथुन	मृ.	२७	१८	२२	२९॥	२७	२०	२८	३३	३१॥	१९॥	१२॥	१५॥	२३॥	१९॥	२७॥	३०॥	३४	२१
	२		३		+४	४+	३४	३	०		−४	३४	४		३				३
	आ.	१९	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७
	४	३		१	१४+	४+	४+		३	३०	०३४	४−	१४	१		३	३	३	६
	पुन.	२०	२६	२३	२०॥	२२॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१७॥	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥
	३	३			४+	४+	४+		३	३	−३४	५०	−४	+२	२+	३	३	३	

कन्या

		वर																	
		मेष				वृष		मिथुन				कर्क		सिंह			कन्या		
	वर	अश्व.	भर.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पूफा.	उफा.	उफा.	ह.	चि.
	कन्या	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
कर्क	पुन.	२२॥	२९॥	२४॥	२३	२५	२६	१९	११	१४॥	२८	३५	२८॥	१६॥	२०॥	१४॥	१७॥	१८॥	२०॥
	१	३						४	३४	३४	३	०		+२४	२४	३४	३	३	
	पु.	३०॥	२१॥	२६॥	२४	२५	१८	११॥	१८॥	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६॥	२७॥	१२॥
	४		३				३	३४	४	४		३	०	४+	३४	४+			३
	श्लें.	२६	२३॥	२२॥	२०	१२	२१	१४॥	१२॥	१६	२८॥	३०	२८	१५	१५॥	१७॥	१९॥	२०॥	२५॥
	४		१	३	३	३१		४	१४	४			३	०२४२	१४२	१६	१		
सिंह	म.	२१	२०	१७॥	१७॥	११॥	१८॥	२२॥	२१॥	२१॥	१७॥	१८॥	१७	२८	३०	२६॥	१५॥	१६॥	२१॥
	४	+५	१५	३५	३	३१			१	−२	+२४	४+	३४२	३	०१	१	१४	४+	४
	पूफा.	२६	१९	२०	२१	२३॥	१५॥	१९॥	२७॥	२६॥	२३॥	१८॥	१७॥	३०	२८	३४	२३	२१॥	७॥
	४	५+	३५	−१५	१		३	३		−२	+२४	३४	१२४	−१	३	०	०४	४+	१३४
	उफा.	१६॥	२६	२०	२१	२५	२३॥	२७॥	२०॥	२०॥	१७॥	२६॥	१९॥	२६॥	३४	२८	१७	१६	१३॥
	१	३५	५+	−१५	१				३	३	३४	+४	१४	−१		३	३४	०३४	१४२
कन्या	उफा.	१३	२२॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१९॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१९	२८	२७	२४॥
	३	३६	६	१६	+१५	५+	५+		३	३	३		१	१४	४+	३४	३	३०	१२+
	ह.	११	२०	१७॥	२२	२५	२६	३३	२२॥	२३	१९॥	२८॥	२२॥	१७	२१॥	१६	२६	२८	२८
	४	२३६	६	६	५+	५+	५+		३	३	३			+४	४+	३४	३	३	०
	च.	१४	६	१९	२३॥	२०	१३	२०	२६	२५॥	२१॥	१३॥	२६॥	२२॥	८॥	१४॥	२४॥	२८	२८
	२	६	१३६	६	५+	१५	३५	३	१			३		+४	१३४	१२६	१२		३

कन्या

वर

	वर	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा.	उषा.	उषा.	श्र.	ध.	ध.	श.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रे.
		तुला			वृश्चिक				धन		मकर			कुंभ			मीन		
	कन्या	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
मेष	अश्व.	२२॥	२६॥	२२॥	१९॥	२५॥	१५	१३	२६	२४॥	२६	२६	२०	२०	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
	४		−२		−६	६−	३६	३५	+५	+५					३	३	३४	४+	४+
	मर.	१४॥	२९॥	२२॥	१९॥	१७॥	१९॥	२०	१९	२७	२८॥	२७	१०	१०	२०	२४	२२॥	१७॥	२८
	४	१३		१−	−१६	३६	−१६	−१५	३५	५+			१३२	१३२	−१	−२	२४+	३४	४+
	कृ.	२७॥	१६॥	१९॥	१५॥	२१॥	२६॥	२४॥	१८	१४	१५॥	१२॥	२५	२५	२७	१९	१७॥	१९॥	१२॥
	१		३	३	३६	६−	६−	५+	१२५	३१५	१३	२३				१	१४	१४	३४
वृष	कृ.	२२॥	११॥	१४॥	२१॥	२६॥	३१॥	२०	१३॥	९॥	१४	११	२३॥	२९॥	३१॥	२३॥	२०	२२	१३॥
	३	−६	३६	३६	३			६	१२६	१३६	१३५	३५२	+५			१	१	१	३
	रो.	१९	१५॥	९॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	२०	१२॥	१७	१८	२०	२६	२४॥	३०॥	२७	२६	१९
	४	−१६	३६	३१६	३१		१	१६	३	३६२	३५२	३५	−१५	−१	−१				३
	मृ.	११	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	११	१८	२२॥	२६	१३	१९	२७	२९॥	२६	१७	२७
	२	३६	−६	६−		३		६	३६	२६	२५+	५+	३५·	३				३	
मिथुन	मृ.	१४	२७	२०॥	१५	१२	१५	२३	१९	२५	२०॥	२६	१२	१३	२२	२४॥	२६	१७	२७
	२	३५	+५	५+	६	३६	६		३	२+	−२६	−६	३६	३५	५+	५+		३	
	आर्द्रा	२०	२७	२०	१३॥	१८	४	१६	२८	२८	२३॥	२३॥	१८	१९	१२	१७	१९॥	२७	२७
	४	−१५	५+	+१५	१६	२६	१३६२	१३			−६	−६	−१६	१५+	१३५	३५	३		
	पुन.	१९॥	२७	२१	१४॥	२२॥	७	१४	२७	२७	२२॥	२३॥	१८॥	१९॥	१४	१७	१९॥	२७॥	२७
	३	५+	५+	५+	६	६	३६	३			−६	−६	−६	+५	३५	३५	३		

कन्या

		वर																	
		तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुंभ			मीन		
	वर	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा.	उषा.	उषा.	श्र.	ध.	ध.	श.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रे.
	कन्या	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
कर्क	पुन.	१९॥	२७	२१॥	२०	२६	११॥	८॥	२१	२१॥	२५	२७	२२	१२॥	८॥	११॥	१७	२५	२४॥
	१				५+	५+	३५	३६	−६	−६				६	३६	३६	३५	५+	५+
	पु.	११॥	२६॥	२१॥	२०	१९	२२	१७॥	११	२२॥	२६	२५	१३	४॥	१४॥	१८॥	२४	१८	२७
	४	३			−५	३५	−५	६	२३६	६		−२	३	३६	६	६	५+	३५	५+
	श्लो.	२५	१२	१६॥	१४॥	२०	२५	२३	१५॥	८॥	१२	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१३
	४		३	३	३५	−५	−५	६	१६	३१६	१३	३		६	६	१६	१५	१५	३४
सिंह	म.	२४॥	११॥	१६॥	२२॥	२५॥	३२	२४	१९	९॥	५॥	६॥	१८॥	२३॥	२५॥	१७॥	१८॥	१९॥	१३
	४		३	३	३			+५	१५	१३५	३१६	३६	६			१	−१६	१६	३६
	पूफा.	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	१८	१७	२५	२१	१९॥	४॥	९॥	१९॥	२३॥	२३॥	१७॥	२५॥
	४	१३		१	−१	३	−१	१५+	३५	५+	६	६	१३६	१३	१		−६	३६	६−
	उफा.	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३१॥	१७॥	९॥	२५	२६	२२	२१	१२॥	१८॥	११॥	१५॥	१६॥	२७॥	२५
	१	१२		१२	−१२		१३	१३५	५+	५+	६	६	१६	१	१३	३	३६	−६	−६॥
कन्या	उफा.	१६॥	२५॥	१६॥	१९	२८	१४	१४	२९॥	३०॥	२६	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८॥	२९	२७
	३	−१२४	४+	−१२४	१२		१३	१३			+५	५+	+१५	−१६	३१६	३६	३		
	ह.	२०	२६॥	१८॥	२१	२७	१४	१५	२७	२८॥	२४	२५	२१	२१	८॥	१५॥	१९	२७	२८
	२	०४	४+	४+			३	३			५+	५+	५+	−६	३६२	३६	३		
	चि.	२०	२०	२६॥	२९	१२	२६	२७	१३	२१	१७॥	१९	१७	१७	२४	१७॥	२१	११	२२
	४	३४	०४	४+		३			१३	१	१५	५+	३५	३६	−६	१६	१	१३२	

कन्या

	वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	वर	अ.	म.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्लो.	म.	पूफा	उफा.	उफा.	ह.	चि.
	कन्या	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
तुला	चि.	२३॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१३	१४	२०	१९॥	२१	१३	२६॥	२५॥	११॥	१७॥	१७॥	२१	२३
	२		१३		६+	१६	३६	३५	१५	५+		३			१३	१२	१२४	४+	३४
	स्वा.	२८॥	२९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२६	२७	२६	२७	२८॥	२८	१४	१२॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१
	४	२+		३	३६	३६	−६	५+	५+	५+			३	३			४+	४+	४+
	वि.	२३॥	२३॥	२०॥	१५॥	१०॥	१९॥	२०॥	२०	२१	२२॥	२२॥	१८	१७॥	१९॥	१७॥	१७॥	१९॥	२७॥
	३		१	३	३६	१३६	−६	५+	१५	५+			३	३	१	१२	१४२	४+	४+
वृश्चिक	वि.	१७॥	१७॥	१४॥	१९॥	१४॥	२३॥	१३	१३॥	१३॥	१९	१९	१४॥	२१॥	२३॥	२१॥	१८	१९	३८
	१	६+	१६	३६	३	१३		६	१६	६	−५	५−	५−	३	१	१२	१२		
	अनु.	२४॥	१५॥	१९॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२०॥	२५	१८	२०	२४॥	२०॥	२९॥	२६	२६	१२
	४	−६	३६	−६			३	३६	२६	६	−५	३५	−५						३
	ज्ये.	१२	१७॥	२४॥	२९॥	२१॥	२३॥	१३	३	५	१०॥	२१	२५	३१	२३॥	१८॥	१३	१२	२५
	४	३६	१६	−६		१		६	३१६२	६३	५३	५+	५−		१	१३	१३	३	
धन	मू.	१२	२०	२४॥	१९	१३	१४	२२	१५	१३	९॥	१८॥	२४	२४	१८	९॥	१३	१४	२६
	४	३५	१५	५+	६	१६	६		१३	३	३६	६	६	५+	१५	१५३	३१	३	
	पूषा.	२६	१९	१८	१२॥	२०	१२	१९	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	१९	१७	२५	२८॥	२७	१२
	४	+५	३५	−१२४	१६२	६	३६	३			६	२३६	१६	−१५	३५	५+			१३
	उषा.	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२५	२७	२७	२३॥	२४॥	९॥	९॥	२५	२६	२९॥	२८॥	२१
	१	५+	५+	१३५	१३६	२३६	२६	२+			६	६	१६३	१५३	५+	५+			१

कन्या

वर

		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	वर	अ.	म.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पूफा.	उफा.	उफा.	ह.	चि.
	कन्या	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
मकर	उषा.	२८	२९॥	१६॥	१४	१७	२३॥	२०॥	२२॥	२२॥	२८	२९	१४	५॥	२१	२२	२५॥	२४॥	१७॥
	३			१३	१३५	२३५	२१+	२६+	−६	−६			१३	१३६	६	६	५+	११	१५
	श्रव.	२८	२७	१४॥	१२	१७	२७	२४	२१॥	२२॥	२८	२६	१५	७॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥
	४			३२	३५२	३५	५+	−६	−६	−६		२+	३	३६	६	६	५+	५+	५
	ध.	२१	११	२६	२३॥	२०	१३	१०	१७	१७	२३	१३	२८	१९॥	४॥	१२॥	१६॥	२०॥	१६॥
	२		१३२		+५	१५	३५	३६	१६	−६		२		६	१३६	१६	१५	५+	३५
कुंभ	ध.	२१	११	२६	३०॥	२७	२०	१३	१९	१९॥	१५	५	२०	२४॥	१०॥	१९॥	१७॥	२२	१८
	२		१३२			१	३	३५	१५	५+	६	३६	६		१३	१	१६	६+	३६
	श.	१६	२१	२८	३२॥	२५॥	२७	२१	१२	१३	८॥	१६	२१	२६॥	१९॥	१२॥	११॥	१०॥	२५
	४	३	१			१		५+	१३५	३५	३६	६	६		१	१३	१३६	२३६	६
	पूभा.	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१८	१३॥	२१॥	१४	१८॥	२४॥	१६०	१५॥	१७॥	१८॥
	३	३	२+	−१	−१			५+	३५	३५	३६	६	१६	१		३	३६	३६+	१६
मीन	पूभा.	१४॥	२१॥	१६॥	१९	२६	२६	२६	१८	१९	१८	२६	१८॥	१६॥	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१९॥
	१	३४	४२+	−१४	१				३	३	३५	५	१५	−१६	६+	३६	३	३	१+
	उभा.	२५॥	१५॥	१८॥	२१	२५	१७	१७॥	२५॥	२७	२६	१९	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६॥	९॥
	४	४+	३४	−१४	१		३	३			५	३५	१५	−१६	३६	६+			१३२
	रे.	२६	२४॥	११॥	१४	१७	२६	२५॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७	१४	१३	२३॥	२३॥	२५॥	२६॥	२०॥
	४	४+	४+	३४	३	४					५	५	३५	३६	६+	६+			

कन्या

		वर																	
		तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुंभ			मीन		
	वर	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा.	उषा	उषा	श्र.	ध.	ध.	श.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रे.
	कन्या	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
तुला	चि.	२८	२८	३४॥	२३॥	७॥	२१॥	२७	१३	२२	२५॥	२७	२५	१९	२६	१९॥	१४	४	१५
	२	३	०		४	३४	४		१३	१	०१		३	३५	५+	१५	१६		१३६२६
	स्वा.	२८	२८	२०	१०	२१॥	१६॥	२३	२७	१९	२२॥	२३॥	२९	२३	२१	२७	२१॥	२०	१३
	४		३	६०	३४०	४	४			३	३	३		१+	५२+	५+	६	६	३६
	वि.	३४॥	२०	२८	१८	१७	२०॥	२७	२१	१४	१७॥	१७॥	३१॥	२५॥	२६	२१॥	१५॥	१३॥	६
	३		३	३	३४	०४	४		१	१३	१३	३		५+	५+	१५	१६	१६२	३६
वृश्चिक	वि.	२३॥	८	१७	२८	२८	३१॥	२२॥	१५॥	९॥	१२	१२	२६	२५	२५॥	२१॥	२०	१८	११॥
	१	३	३४	३४	३	०		४+	४१	१३४	१३	३				१	१५	१५	३२५
	अनु.	७॥	२१॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१३॥	२१॥	२५	२६	१३	१३	२१	२६॥	२५	१८	२७
	४	३	४	४		३	०	२४+	३४	४+			३	३			५+	३५	५+
	ज्ये.	१९॥	१५॥	१९॥	३१॥	३१	२८	१५	१६	१६॥	२०	२१	२६	२६	१८	१२	१०॥	२१	२१
	४	४	४	४			३	०२३४	१४	१४	१				३	१३	१३५	१५	५+
धन	मू.	२६	२२	२६	२३॥	१६॥	१६	२८	२८	२६॥	१५॥	१६॥	२०	२८॥	२१॥	१४॥	१६॥	२५॥	२८
	४				४+	+२४	३४२	३	०१	१	१४	४	४		३	१३	१३	१	
	पूषा.	१२	२७	२०	१६॥	१६॥	१८॥	२८	२८	३४	२३	२४॥	८॥	१६॥	२३॥	३०॥	३२॥	३२॥	३२॥
	४	१३		३	−१४	३४	−१४	१+	३	०	०४	४	१३४	१३				३	
	उषा.	२१	१९	१३	१०॥	२४॥	१८॥	२५॥	३४	२८	१७	१५	१५॥	२३॥	२३॥	२९॥	३१॥	३२॥	२३॥
	१	१	३	१३	१३४	४+	−१४	−१		३	३४	३४०	१४	१	१				३

		वर																	
		तुला				वृश्चिक		धन			मकर			कुंभ			मीन		
	वर	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा.	उषा	उषा	श्र.	ध.	ध.	श.	पूभा.	पूभा.	उभा.	रे.
कन्या	कन्या	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
मकर	उषा.	२४॥	२२॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२५॥	१९॥	२८	२६	२६॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३१॥	२२॥
	३	−१	३	१३	३१		१	१४	४	३४	३	३०	१+	१४+	१४+	४+			३
	श्र.	२५॥	२२॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३	१४॥	२५	२८	३०	२०॥	१८॥	२३॥	३०॥	२९॥	२२॥
	४		३	३	३			४	४	३४	३	३	०	०४	४+	४+			३
	ध.	२३॥	२७॥	३०॥	२८	१५	२८	३१॥	९	१६॥	२६॥	३०	२८	१८॥	२३॥	१९॥	२६॥	१५॥	२३॥
	२	३				३		४	३४१	४१	१		३	३४	४०	१४	१	१३	२+
कुंभ	ध.	१९	२३	२५॥	२७	१३	२७	२९॥	१७॥	२४॥	१८॥	२२	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१५॥
	२	३५	−५	−५		३			१३	१	१४	४+	३४	३	०	१	१४	१३४	४२
	श.	२६	२१	२६	२७॥	२२	१९	२२॥	२४॥	२४॥	१८॥	१९॥	२५	३३	२८	१९	९	१७॥	१७॥
	४	५+	५+	५+			३	३	१	६	१४	४+	४+		३	१३०	१३४	१४	४
	पूभा.	१९॥	२८	२१	२२॥	२७॥	१३	१५॥	३१॥	३०॥	२४॥	२५॥	२०॥	२८॥	१९	२८	१८	२३	२०॥
	३	−१५	५+	−१५	१		१३	१३			+४	४+	−१४	−१	१३	३	३४	०४	४२
मीन	पूभा.	१२॥	२१॥	१४	२१	१७	११॥	१५॥	३१	३०॥	२९॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
	१	१६	६	१६	−१५	५+	१३५	१३					१	१४	१३४	३४	३	०	२+
	उभा.	२॥	१९	१२॥	१९	२०	२२	२४॥	२२	३१	३०॥	२९॥	१४॥	६	१६॥	२१॥	३३	२८	३४
	४	१३६२	६	१६२	१५२	३५	−१५	−३	३				१३	१३४	१४	४		३	०
	रे.	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२६॥	३०	२१॥	२०॥	२२॥	२२॥	१४	१६॥	१८॥	२९॥	३४	२८
	४	६	३६	३६	३५	५+	५+			३	३	३	−२	४२	४	४२	२+		३

गुण मिलान सारणी का स्पष्टीकरण

गुण मिलान चक्र में जो अंक दिये हैं। वे गुण के अंक हैं अर्थात् इतने गुण मिलते हैं। उनके नीचे जो अङ्क दिये हैं वे दोष के अङ्क है। १—गण दोष। २—वैर योनि। ३—नाड़ी दोष। ४—द्विर्द्वादश। ५—नवम पंचम। ६—षड़ाष्टक। ७—पूरा दोष। ८—थोड़ा दोष। ० पर के नक्षत्र के पूर्व का वधू का नक्षत्र।

गुण के अङ्कों में भिन्न मत से अल्प अङ्कों का अन्तर पड़ सकता है। जहाँ शङ्का हो भिन्न दिये चक्रों के आधार पर उनके अङ्कों का योग कर स्पष्ठ गुण जान सकते हो क्योंकि कभी छापे की भूल आदि से अङ्कों में शङ्का हो जाती है।

गुण मिलान का उदाहरण—वर उफा० के तीसरे चरण का जन्म है। कन्या कृतिका के चौथे चरण का जन्म है। दोनों के सीध में २१ दिया है। अर्थात् २१ गुण मिलते हैं। नीचे १५ दिया है। १—गण दोष ५ नवम पंचम दोष है। इस प्रकार विचार लेना।

गुण मिलान में आधा से लेकर दो गुण तक अन्तर भिन्न २ पंचांगों में मिलनै का कारण वश्य के गुण हैं। क्योंकि वश्य के २ गुण होते हैं। इसमें कुछ वश्य की गणना में मतांतर है। दूसरे पूर्वाषाढ़ा और श्रवण के चरणों के विभाग होने से गणना में अन्तर पड़ सकता है।

पूर्वाषाढ़ा में वश्य	श्रवण में वश्य
मनुष्य १ चरण—३°-२०'	चतुष्पद १॥ चरण—५°-०'
चतुष्पद ३ चरण—१०-०	जलचर २॥ चरण—८-३०

ज्येष्ठ मास विचार—विवाह में ज्येष्ठ महीना, ज्येष्ठ वर या ज्येष्ठ महीना ज्येष्ठ कन्या ये दोनों ज्येष्ठ मध्यम हैं। अर्थात् शुभ या अशुभ भी नहीं है। परन्तु ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ महीना ये तीनों ज्येष्ठ किसी तरह शुभ नहीं है। अर्थात् वर्जित है। कोई आचार्य का मत है। कृतिका नक्षत्र में जब सूर्य हो तो ज्येष्ठ वर कन्या का ज्येष्ठ मास में भी विवाह शुभ होता है।

सन्तान भेद से विचार—जन्म मास व जन्म नक्षत्र व जन्म तिथि व जन्म लग्न इन में पहिले-पहल उत्पन्न पुत्र व कन्या इन दोनों को उपरोक्त काल में विवाह निषिद्ध है। और दूसरी वार आदि में उत्पन्न पुत्र या कन्या इन दोनों का विवाह पुत्र का दान देने वाला शुभ है।

६ महीने तक क्या नहीं करना—एक कुल में किसी लड़के के विवाह के वाद ६ महीने के भीतर किसी लड़की का विवाह नहीं करना और उसी तरह किसी लड़के लड़की के विवाह के वाद ६ महीने के भीतर ही किसी का मुंडन नहीं कराना। अर्थात् लड़को के विवाह के वाद लड़के का विवाह और मुंडन के वाद विवाह करना चाहिये। और सगे दो भाइयों का, सगी २ वहनों का विवाह और ६ महीने के भीतर ही नहीं कराना। सौतेले भाइयों व सौतेली वहनों का विवाह ६ महीने के भीतर हो सकता है।

पितृ श्राद्ध आदि अशुभ क्रियाओं का अनुष्ठान मङ्गल कार्य में न पड़े। इससे विवाह का लग्न ठीक करना। यदि संवत्सर बदल जाय तो ६ महोने के भीतर ही किया हुआ मुंडन आदि शुभ है। जैसे माघ में किसी का विवाह हुआ हो तो वैशाख में उसी कुल में मुंडन आदि शुभ है।

विपत्ति में विवाह विचार—यदि किसी के विवाह की निश्चित होने पर तब यदि वर या कन्या के ३ पुरुष के मध्य में कोई मर जाय तो उसके मरने के १ महीना बाद गणेश पूजन आदि शान्ति करके विवाह करे तो शुभ है। यदि आवश्यक हो तो अपने वर्ण के अनुसार अशौच व्यतीत हो जाने पर शान्ति करके विवाह करे तो शुभ होता है।

आपत्ति में विचार—नारद का वाक्य है जब राजा का संकट आ पड़े या युद्ध में कन्या हरण आदि की शङ्का हो तथा माता पिता के प्राणों का संकट आ पड़े उस समय और कन्या की बड़ी अवस्था होने में ग्रहों के अनुकूल होने का विचार नहीं करना बिना विचारे कन्या दे देना जन्म पत्री मिलान मुहूर्त आदि का विशेष विचार की आवश्यकता नहीं है।

कन्या वरण मुहूर्त—उषा०, स्वा०, श्रव० ३ पूर्वा, अनु०, घनि०, कृत० इन नक्षत्रों में विवाह के नक्षत्र आदि में वस्त्र, भूषण, खाने की मीठी वस्तु और फल फूल आदि कन्या को देकर फिर उसका वरण करें।

वर वरण फलदान—रोह० ३ उत्तरा, कृति०, ३ पूर्वा इन नक्षत्रों में शुभ दिन तिथि लग्न आदि में गीत बाजा आदि युक्त होकर ब्राह्मण या कन्या का भाई बस्त्र यज्ञोपवीत द्रव्य फल आदि से वर का वरण करे।

विवाह मुहूर्त—मूल, अनु०, मृग०, रेव०, हस्त ३ उत्तरा, स्वा०, मघा, रो०, ये नक्षत्र ज्येष्ठ माघ, फाल्गुन, वैशाख, अगहन, अषाढ़ इन महीनों में विवाह शुभ है।

विवाह में वर कन्या को सूर्य गुरु चंद्र का विचार

	वर का सूर्य	कन्या का गुरु	दोनों का चंद्र
शुभ स्थान	३, ६, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११	१,२,३,५,६,७,९,१०,११
पूज्य ,,	१, २, ५, ७, ९	१, ३, ६, १०	०
अपूज्य ,,	४, ८, १२	४, ८, १२	४, ८, १२

विवाह में वर के सूर्य, कन्या के गुरु शुभ स्थान में हो और दोनों के चन्द्र शुभ स्थान में हो तो विवाह शुभ।

विवाह महीना—मिथुन, कुंभ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष इनके सूर्य में विवाह शुभ है। परन्तु मिथुन के सूर्य में अषाढ़ शुक्ल १ से दशमी तक वृश्चिक के सूर्य में, कार्तिक में मकर के सूर्य में, पौष में मेष के सूर्य में चैत्र में भी विवाह हो सकता है। जब मीन का सूर्य हो चैत्र मास हो तो विवाह वर्जित है। हरि शयन में भी वर्जित है।

गुरु सूर्य दोष पर परिहार—गुरु ४, ९, १२ राशि के हों या मित्र गृही, वर्गोत्तम हो या स्व नवांश या मित्र नवांश हो तो ४, ८, १२ स्थान में रहते शुभ समझना। नीच मकर का व शत्रु गृही ३, ६, २, ७ राशि का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ है। उपरोक्त सूर्य के सम्बन्ध में भी विचारना।

कन्या की १० वर्ष की अवस्था होने तक सूर्य गुरु चन्द्र का विचार करे। वाद कन्या रजोवती कहलाती हैं। इसके लिये सूर्य आदि की शुद्धि का विचार न करे। जव कन्या १० वर्ष से अधिक अवस्था की हो जावे तो गुरु आदि की शुद्धि का विचार न करे। तारा, चन्द्रमा तक लग्न की शुद्धि में उसका विवाह कर दे। १२ वर्ष की अवस्था के बाद गुरु सब स्थानों में शुभ हैं। शुभ गोचर का विचार केवल पांचवें या छटवें वर्ष में ह ता है। १० वर्ष की आयु के मध्य में कन्या का विवाह होने से ग्रहों की गोचर शुद्धि, अब्द शुद्धि (युग्मायुग्म का विचार) मास शुद्धि अयन शुद्धि ऋतु शुद्धि वार शुद्धि आदि देखना।

यह मत ज्योतिष तत्व सुधार्णव ज्योतिष तत्व विवेक निबन्ध एवं सुगम ज्योतिष का भी है और नारदोक्त है।

विवाह के नक्षत्र—सूर्यादि ग्रहों के विद्ध नक्षत्रों को छोड़कर मृग०, हस्त, मूल, अनु०, मघा, रोह०, रेव०, उत्तरा, स्वा०, इन नक्षत्रों में और ४, ९, १४, ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य सब तिथियों में, शुभ दिन सोमवार वुध, गुरु, शुक्रवार में विवाह शुभ होता है। वेध आगे वताया है।

६ नक्षत्र वर्जन—(१) नन्म नक्षत्र, (२) जन्म नक्षत्र से दशवां कर्म नक्षत्र, (३) सोलहवाँ—संघात, (४) अठारहवाँ—समुदाय, (५) तेइसवाँ—विनाश, (६) पच्चीसवाँ—मानस नक्षत्र कहलाते हैं। शुभ कर्मों में ये नक्षत्र वर्जित हैं। विनाश नक्षत्र विशेष कर वर्जित है। कोई वाइसवाँ नक्षत्र को विनाश कहते हैं। इन ६ नक्षत्रों में यदि पाप ग्रह हो तो अशुभता के निमित शान्ति के लिये दान जप होम आदि करना।

लग्न या चन्द्र से अष्टम विचार—जन्म लग्न या जन्म राशि से अष्टम लग्न में विवाह करना शुभ नहीं है। या कोई पाप ग्रह लग्न में हो तो शुभ नहीं है। या जन्म लग्न या जन्म राशि से आठवें राशि का नवांश या आठवें राशि का स्वामी लग्न में हो तो विवाह शुभ कारक नहीं होता। इसी प्रकार बारहवाँ राशि या १२ वें राशि का नवांश या वारहवां राशि का स्वामी लग्न में हो तो विवाह होने के बाद स्त्री पुरुष दोनों में झगड़ा हो।

परिहार—यदि जन्म लग्नेश व जन्म राशिश इन दोनों में से कोई जन्म लग्न या जन्म राशि से आठवें राशि का स्वामी हो या इस अष्टमेश का मित्र हो तो उक्त दोष नहीं होता।

स्त्री व पुरुष के जन्म लग्न या जन्म राशि से आठवीं राशि १२, २, ४, ८, १०, ६ में से कोई लग्न में हो तो आठवे लग्न का दोष नहीं होता। क्योंकि जन्म

लग्न व जन्म राशि का स्वामी और इनमें से किसी से आठवीं राशि का स्वामी ये दोनों परस्पर मित्र या एक ही हैं और उक्त स्वामियों की परस्पर मित्रता व एक ही होने से दोष नहीं होता।

जैसे किसी का जन्म लग्न या जन्म राशि ९ है इससे आठवां ४ राशि हुई ९ का स्वामी गुरु और ४ का चन्द्र है जो गुरु का मित्र है मेष राशि से आठवां वृश्चिक हुआ दोनों का स्वामी एक है इस कारण अष्टमेश का दोष नहीं होता।

क्रूर ग्रहों से विद्ध आदि नक्षत्रों का दोष विचार—जो ग्रह क्रूर ग्रहों से पंचसलाका या सप्तसलाका चक्र से वेधे गये हों और विद्ध नक्षत्रों को क्रूर ग्रह ने भोग कर शीघ्र ही छोड़ दिया हो और जिन नक्षत्रों में क्रूर ग्रह हो और जिन नक्षत्रों में क्रूर ग्रह जाने वाला हो और जिन नक्षत्रों में, भौम, देव, अंतरिक्ष इन ३ प्रकार के उत्पात में से कोई हुआ हो। ये सब नक्षत्र शुभ नहीं होते। इनको विवाह आदि शुभ कार्य में नहीं लेना।

परिहार—इन्हीं नक्षत्रों को चन्द्रमा एक बार भोगकर छोड़ दिया हो तो शुभ हो जाते हैं। अर्थात् एक महीने के बाद वे सब नक्षत्र शुभ कार्य के लिये शुभ हो जाते हैं।

सप्त सलाका वेध

एक रेखा के दोनों छोर पर जो नक्षत्र हैं उनका परस्पर वेध होता है जैसे मृग और, उषा का अश्व और पूफा० का इत्यादि साम्हने वाले नक्षत्रों का परस्पर वेध विचारना। यहाँ भी ग्रह का किया हुआ वेध होता है। आम्हने साम्हने दो नक्षत्रों में से किसी एक में कोई ग्रह हो तो वह उसी रेखा पर दूसरे नक्षत्र को वेध करता है। जैसे मूल में कोई ग्रह हो तो पुनर्वसु को वेध करता है या पुनर्वसु में कोई ग्रह हो तो मूल को वेध करता है। इसी प्रकार सप्त सलाका चक्र में क्रूर ग्रह से वेध हुआ नक्षत्र और शुभ ग्रह से वेध हुआ नक्षत्र का एक पाद विवाह आदि शुभ कार्यों में त्यागना। दीपिका नामक ग्रंथ में कहा है जिस स्त्री के विवाह काल में सप्त सलाका चक्र में पाप ग्रहों से या शुभ ग्रहों से चंद्रमा विद्ध हो वह स्त्री विवाह काल ही के वस्त्र पहिने रोती श्मशान भूमि को जाती है।

पंच सलाका वेध

यहां एक रेखा के दोनों छोर पर जो नक्षत्र रहते हैं उन दोनों का परस्पर वेध होता है जैसे पुष्य का ज्येष्ठा से हस्त का उभा० से श्ले० का धनि० से आदि। परन्तु यह वेध ग्रह कृत होता है अर्थात् एक रेखा में स्थित दो नक्षत्रों में से किसी एक में जो ग्रह हो वह दूसरे को वेधता है। जैसे आर्द्रा में कोई ग्रह हो तो पूषा को वेध करता है। पूषा में कोई ग्रह हो तो आर्द्रा को वेध करता है। ऐसे ही सब नक्षत्रों का वेध विचारना।

पाद वेध—इसी चक्र में पाद वेध का विचार होता है। उसकी रीति यह है तीसरे पाद में हो तो दूसरे पाद को वेधता है। दूसरे पाद में हो तो तीसरे पाद को वेधता है। ऐसे ही यदि एक रेखा में स्थित किसी नक्षत्र के पहले पाद में कोई ग्रह हो-तो वह उसी रेखा में स्थित दूसरे नक्षत्र के चौथे पाद को वेधता है। जैसे रोहिणी के पहले चरण में स्थित ग्रह अभिजित् के चौथे चरण को वेधता है। दूसरे चरण में स्थित ग्रह अभिजित् के तीसरे चरण को वेधता है। तीसरे चरण में स्थित ग्रह अभिजित् के दूसरे चरण को वेधता है। चौथे चरण में स्थित ग्रह अभिजित् के पहले चरण को वेधता है। इसी प्रकार अन्यत्र भी पादभेद विचारना।

वधू-प्रवेश, दान व यज्ञादि में ब्राह्मण-वरण व विवाह इन सब शुभ कार्यों में पंच-सलाका वेध का विचार करना। अर्थात् चक्र में क्रूर ग्रह से वेधे हुए नक्षत्र में और शुभ ग्रह से वेधे हुए नक्षत्र से वेधे हुए नक्षत्र पाद में उक्त वधू-प्रवेश आदि कार्यं नहीं करना।

पंचसलाका वेध में विवाह—सूर्यादि ग्रह जब एक रेखा में हो तब पंचसलाका चक्र में वेध होता है। इस वेध में विवाह करे तो कन्या एक महीना भी जीवित नहीं रहती। शुभ ग्रह का वेध हो तो नक्षत्र चरण त्यागना चाहिये। पाप ग्रह का वेध हो तो सम्पूर्ण नक्षत्र वर्जित करना। वधू प्रवेश, कन्यादान, वरण व विवाह में पंचसलाका चक्र से विचार करना। अन्यत्र सप्तशलाका चक्र से विचार होता है।

वेध फल—सूर्य का वेध = कन्या विधवा। मंगल = कुलक्षय। बुध = कन्या बाँझ। गुरु = कन्या प्रवज्या (वैराग्य) ग्रहण करे। शुक्र = संतान न हो। शनि व चंद्र वेध = दुःख। राहु = कन्या व्यभिचार करे। केतु = कन्या स्वच्छंद-चारिणी होती है।

सप्तम स्थान की शुद्धि—विवाह लग्न में स्थित नवांश से सप्तमेश यदि लग्न से सातवें भाव में स्थित नवांश को या सातवें भाव को देखता हो या उसी में स्थित हो तो स्त्री को अति शुभदायक है।

उदाहरण—लग्नस्थ मिथुन नवांश से सातवें धन नवांश का स्वामी गुरु कर्क में स्थित अपने नवांश को नहीं देखता है और लग्न से तुला सहम भाव को देखता है या उसी में स्थित है। और यहाँ कही हुई रीति से विपरीत हो तो अशुभ जानना। अर्थात् पूर्वोक्त नवांशों के स्वामी पूर्वोक्त नवांशों को या भावों को न देखता हो और न उसमें स्थित हो तो वर कन्या की मृत्यु होती है।

अन्य प्रकारांतर—लग्न में स्थित नवांश से सातवें नवांश का स्वामी लग्न से सातवें भाव को देखता हो या दोनों परस्पर देखते हों अर्थात् उक्त नवांश का स्वामी उक्त भाव को और उक्त भाव का स्वामी उक्त नवांश को देखता हो तो कन्या को शुभ होता है।

लग्न-नवांश स्वामी—विवाह कालिक लग्न में स्थित नवांश का स्वामी लग्न में स्थित नवांश को देखता हो या नवांश या लग्न में स्थित हो तो वह वर को अति शुभ दायक होता है।

जैसे मेष लग्न में स्थित मिथुन नवांश का स्वामी बुध है। तुला में स्थित मिथुन नवांश को देखता है या उसी में स्थित है।

लग्न का उदाहरण—मेष लग्न में स्थित मिथुन नवांश का स्वामी बुध मकर राशि में स्थित मिथुन नवांश को नहीं देखता है और मेष लग्न को देखता है या उसी में स्थित है।

अन्य प्रकार—लग्न में स्थित नवांश के स्वामी का मित्र होकर शुभ ग्रह यदि लग्नस्थ नवांश को या लग्न को देखता हो तो वर को शुभ होता है और लग्न में स्थित नवांश के सातवें नवांश स्वामी का मित्र हो शुभ ग्रह यदि लग्न से सातवें भाव में स्थित नवांश को या सातवें भाव को देखता हो तो स्त्री को शुभ होता है।

लग्नस्थ शुभ नवांश फल—लग्न में ९, ७, ६, ३, १२ इनके नवांश में यदि विवाह हो तो विवाह के बाद कन्या पतिव्रता होती है।

निंदित नवांश निषेध—वर्गोत्तम नवांश को छोड़कर लग्न के अंत्य नवांश में कोई कन्या का विवाह नहीं करना। जैसे मेष लग्न में धन नवांश और वृष लग्न में कन्या नवांश आदि और तुला व मकर राशि में चंद्र के रहते चर लग्न में चर नवांश का योग न करे अर्थात् १, ४, ७, १० इन लग्नों में स्थित इन्हीं के नवांश में विवाह न करे। क्योंकि ऐसे योग में ब्याही स्त्री अति कामी होकर पूर्व पति को छोड़ कर दूसरे को ग्रहण करती है।

लग्न भंग योग—विवाह कालिक लग्न से बारहवें स्थान में शनि और दशम में मंगल, तीसरे में शुक्र, लग्न में चंद्र या पाप ग्रह शुभ नहीं होते और आठवें स्थान में चंद्रमा, लग्नेश तथा शुभ ग्रह, मंगल ये शुभ नहीं होते। और सातवें स्थान में सम्पूर्ण शुभ ग्रह शुभ नहीं होते। लग्नेश शुक्र तथा चंद्र छठे स्थान में भी शुभ नहीं होते।

शुभ लग्न—लग्न से ३, ११, ८, ६ स्थानों में सूर्य, शनि, राहु, केतु शुभ हैं। ३, ६, ११ घर में मंगल शुभ २, ३, ११ स्थान में चंद्र शुभ, ७, १२, ८ घर छोड़कर अन्य स्थानों में बुध गुरु शुभ, ८, ३, ७, ६ स्थान छोड़कर अन्य स्थान में शुक्र शुभ है।

विवाह लग्न में या लग्न से त्रिकोण या ४, १० में गुरु या शुक्र हो तो लग्न आदि में जो दोष हों वे नष्ट हो जाते हैं। लग्न में या लग्न से त्रिकोण या ४-१० में बुध गुरु या शुक्र हो तो सुख होता है २ या ११ में उक्त ग्रह धन देते हैं।

लग्न का विंशोपिका बल—अपने शुभ स्थानों में (जैसा नैसर्गिक मैत्री में बताया है) स्थित रहते ग्रहों का विश्वावल बुध २, शुक्र २, चंद्र ५, सूर्य ३, गुरु ३, शनि १॥ राहु १॥, केतु १॥ है और उक्त स्थानों से अन्यत्र हों तो ० बल होता है। विवाह काल में सब बल मिलकर शुभ १५-२०, मध्यम १०-१५, अशुभ ५-१०। ५ से कम बल हो तो लग्न वर्जित है। १० विश्वा से अधिक शुभ है।

कर्तरी दोष—यदि पाप ग्रह मार्गी होकर लग्न से १२वें हों और दूसरा पाप ग्रह वक्री होकर दूसरे घर में हो तो कर्तरी दोष होता है। विवाह आदि शुभ कार्यों में कर्तरी दोष मृत्यु या दरिद्र या शोकप्रद होता है। ऐसे ही कोई पाप ग्रह मार्गी होकर चंद्र के स्थान से १२वें हो और दूसरा पाप ग्रह वक्री होकर चंद्र के स्थान से दूसरे स्थान में हो वह भी कर्तरी हुआ। इस रीति से सब भावों में कर्तरी होती है वह भी उपरोक्त अशुभ फल दायक है।

कर्तरी परिहार—यदि कर्तरी कारक दोनों ग्रह क्रूर हों या शत्रु गृही, नीच के या अस्त हों तो कर्तरी दोष नहीं होता। यदि शुक्र शत्रु गृही या नीच का होकर लग्न से छठे हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि मंगल शत्रु गृही, नीच या अस्त होकर लग्न से ८वें हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि चंद्र नोच का या नीच नवांश में होकर ६, ८, १२वें हो तो उसका दोष नहीं होता।

बुध, गुरु, शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वर्ष, अयन, ऋतु, मास, नक्षत्र, पक्ष, दग्ध तिथि, अंध, काण, वधिर आदि लग्न दोष नाश हो जाता है तथा पाप ग्रह युक्त चंद्र का या पापयुक्त नवांश का दोष भी नाश हो जाता है। केन्द्र (सप्तम को छोड़कर) या त्रिकोण में गुरु हो या लाभ में सूर्य हो या वर्गोत्तम चंद्र लग्न में हो या लग्न से चंद्र ३, ६, १०, ११ में हो तो सब दोषों का नाश करता है। दुष्ट मुहूर्त, निषिद्ध नवांशों का भी दोष नष्ट हो जाता है।

यदि सप्तम स्थान को छोड़कर केन्द्र या त्रिकोण में बुध हो तो १०० दोषों का नाश करता है। शुक्र २०० दोषों का। गुरु लाख दोषों को शांत करता है। लग्नेश या लग्न नवांशेश ११-१-४-१० स्थानों में हो तो दोषों के समूहों का नाश करता है।

सग्रह दोष—चंद्र के साथ एक राशि में अन्य ग्रह रहने का नाम संग्रह है। विवाह काल में यदि चंद्र सूर्य से युक्त = दोनों दरिद्री, मंगल = दोनों का मरण। बुध = शुभ। गुरु = सुख। शुक्र = स्त्री की सौत आती है अर्थात् पुरुष को दूसरा विवाह करना पड़े। शनि = दोनों में परस्पर वैराग्य अर्थात् प्रीत नहीं होती। यदि चंद्र २-३ पाप ग्रहों से

युक्त = दोनों का मरण। नारद जी के मत से बुध के योग से संतान हानि। गुरु = भाग्य हानि। शनि = संन्यास। राहु = दोनों में झगड़ा। केतु = सदा कष्ट दरिद्रता।

तात्पर्य यह है कि चंद्र यदि उच्च में, मित्र-गृही या स्वगृही होकर शुभ ग्रह से युक्त हो तो शुभ फल है। इसके विपरीत हो तो पूर्वोक्त अशुभ फल हो।

जामित्र दोष—लग्न या चंद्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो विवाह नहीं हो सकता।

विवाह में पुष्य वर्जनीय—यद्यपि मुनियों ने पुष्य की प्रशंसा की है यह नक्षत्र सब कार्यों में सिद्धिदायक है। तथापि विवाह में पुष्य नक्षत्र वर्जित है। गुरुवार को पुष्य हो तो विवाह नहीं करना।

विवाह में और भी विचार—संक्रांति दोष, तारा दोष, सिंहस्थ गुरु दोष आदि का भी विचार करना। इनका वर्णन एवं परिहार पहले दे चुके हैं।

विवाह आदि शुभ कार्यों में त्यागने योग्य दोष—दिग्दाह, प्रसिद्ध मकान या वृक्ष आदि का गिरना, उल्कापात, बड़ी आँधी का आना, चंद्र सूर्य का मंडल होना, स्यार का फिकरना और भी ग्राम सम्बन्धी उत्पात हों।

तथा क्रांति साम्य, दग्ध तिथि, व्यतीपात, वैधृति आदि दुष्ट योग और चंद्र शुक्र गुरु इनका अस्त, दक्षिणायन तथा तिथि की हानि वृद्धि, तथा नक्षत्र, तिथि लग्न इनके गंडांत, भद्रा, संक्रांति दिन और लग्नेश व लग्नस्थ नवांश का स्वामी, इन दोनों का अस्त, तथा लग्न से ६, ८वें स्थान में स्थित लग्न का स्वामी व लग्नस्थ नवांश का स्वामी और लग्न में पाप ग्रहों के गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश और चंद्र व क्रूर ग्रह इन दोनों से संयुक्त लग्न व लग्नस्थ नवांश और लग्न शुद्धि, सप्तम स्थान की शुद्धि तथा चण्डायुध अर्थात् इसी प्रकरण में आगे बताया हुआ पात, खार्जूर दोष तथा १० योगों सहित जामित्र तथा लत्ता दोष, वेध दोष, बाधा दोष, उपग्रह दोष पाप कर्तरी दोष तथा तिथि नक्षत्र से या तिथि वार से या नक्षत्र वार से व तिथि नक्षत्र वार से उत्पन्न दुष्ट योग, अर्द्धयाम, कुलिक आदि वार दोष और क्रूर ग्रह युक्त नक्षत्र, क्रूर ग्रह का योग किया हुआ नक्षत्र और जिसमें क्रूर ग्रह आने वाला हो या सूर्य ग्रहण हुआ हो वह नक्षत्र और जिसमें पूर्वोक्त उत्पात हुए हों या केतु का उदय हुआ हो वह नक्षत्र और सूर्य के अस्त काल में प्रारंभ होने वाला अर्थात् सूर्य के नक्षत्र से १४ वाँ नक्षत्र और ऐसे ही जिसमें ग्रह का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र और लग्न के दोष इन सब को विवाह आदि शुभ कार्यों में त्यागे।

टिप्पणी—इन सब दोषों पर विचार करते रहने से लग्न की शुद्धि में बहुत कठिनाई होगी। इस कारण इन सबके वर्णन करते समय उनका परिहार भी दिया है और कई योग हैं जिनसे इन सबके दुष्ट फल का नाश हो जाता है। सम्पूर्ण परिहारों का अध्ययन कर ध्यान में रखने से लग्न की शुद्धि प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होगी। तारा और चंद्र शुभ होने पर सब ग्रह शुभ फल देते हैं। चन्द्रबल हो तो तारा का बल भी नहीं देखना। चंद्र सब दोषों को नाश कर देगा।

सूर्य चंद्र मंगल गुरु फल—गुरु = जीवन प्रदान करने वाला है । चंद्र = जन्म प्रदान करने वाला है । सूर्य तेज प्रदान करता है । मंगल = भूमि प्रदान करता है ।

जिस कन्या का गुरु हीनवल हो वह नहीं जीती । वर का सूर्य हीनवल हो तो वह नहीं जीता । चंद्र हीनवल = लक्ष्मी हीन । मंगल बलहीन = स्थानहीन ।

स्त्री के जन्म गुरु फल—लग्न में गुरु = संतान नाश । दूसरे = धनवती । तीसरे = विधवा । ४ = कुत्सित स्वभाव । ५ = पुत्र युक्त । ६ = पति हीन । ७ = सौभाग्यवती । ८=पुत्र हीन । ९=पति प्रिया । १०=पति पुत्र से रहित । ११=धनाढ्य । १२=वाँझ ।

अन्य दोषों का परिहार—५, ९, १, ४, १० स्थान में गुरु रहने या लग्न से ११ स्थान में सूर्य हो तथा लग्न के वर्गोत्तम में या अपने वर्गोत्तम में चंद्र रहते सब दोष नाश हो जाते हैं । लग्न से ११ स्थान में चंद्र रहते दुष्ट मुहूर्त दोष तथा पाप ग्रह नवांश दोष ये सब नष्ट हो जाते हैं ।

चंद्र शुद्धि—जन्म चन्द्र से ६, ७, ११ स्थान में सदा शुभ । शुक्ल पक्ष में २, ५, ९ स्थान में शुभ । ३, ६, १०, ११ में भी शुभ । जन्म नक्षत्र न होने से जन्म चन्द्र भी शुभ ।

सूर्य शुद्धि—जन्म राशि से ३, ६, १०, ११ घर में सदा शुभ । २, ५, ९ घर में १३ दिन बाद शुभ । ८ घर = स्त्री विधवा । १, २, ४, ५, ७, ९, १२ घर में रोना, दुःख शोक । १, ७, ८, १२ घर में = अशुभ फल । ४, ८, १२ में कन्या विधवा हो ।

यदि गोचर में सूर्य अशुभ स्थान में हो तो संक्रांति के १३ दिन छोड़कर विवाह आदि कार्यों में अशुभ फल नहीं देता ।

सन्मुख शुक्र दोष विचार—यदि शुक्र सामने या दाहिने (दक्षिण) तर्फ पड़ते हों तो उस काल में चाहिये कि बालक युक्त, गर्भवती, या नवीन विवाही स्त्रियाँ दूसरी बार अपने पति के घर न जायँ । क्योंकि शुक्र के सामने या दाहिने रहते स्वामी के घर जाने वाली स्त्री, बालक युक्त स्त्री का बालक मर जाता है । गर्भवती का गर्भ नष्ट हो जाता है, नवीन ब्याही स्त्री बाँझ हो जाती है ।

परिहार—किसी भारी शहर में जाने में और देश में किसी दुर्भिक्ष आदि में, या राजा आदि के किये हुए उपद्रव में और विवाह में, देव यात्रा में, तीर्थ यात्रा में, राजदंड तथा वधू प्रवेश में सन्मुख शुक्र दोष कारक नहीं होता । और पिता ही के घर में जिसके पूरे स्तन तथा रजोदर्शन हुआ हो अर्थात् युवा हो गई हो उन स्त्रियों को सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता । और ऐसा ही भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज इन ऋषियों के कुल में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता ।

शुक्र अंधा—चन्द्र नक्षत्र रेवती से पहले मृग तक शुक्र अंधा रहता है तब सन्मुख दक्षिण शुभदायक है । चन्द्र नक्षत्र रेवती से कृत्तिका के पहले चरण तक शुक्र अंधा रहता है तब यात्रा में सन्मुख रहने का दोष नहीं रहता । जब चन्द्र रेवती से लेकर कृत्तिका के प्रथम चरण के बीच रहता है तब शुक्र अंधा हो जाता है इसमें सन्मुख या दक्षिण का दोष नहीं है ।

विवाह के १० महादोषों का विचार

विवाह लग्न रेखा—(१) लत्ता, (२) पात, (३) युति, (४) वेध, (५) जामित्र, (६) वाण, (७) एकार्गल, (८) उपग्रह, (९) क्रान्ति साम्य, (१०) दग्धा तिथि ये १० दोष वलवान हैं। इनको छोड़कर विवाह का लग्न ठहराना। इनमें भी प्रथम ५ अवश्य वर्जनीय हैं। दूसरे ५ आवश्यकता में ग्रहण करते हैं। इसी क्रम से रेखा में १० दोषों को शुभ या अशुभ सूचित किया जाता है।

(१) लत्ता—जिस नक्षत्र में बुध हो उससे पिछले सातवें नक्षत्र पर लत्ता दोष करता है। राहु पिछले नवें नक्षत्र पर। सूर्य चंद्र पिछले २२ वें नक्षत्र पर। शुक्र पिछले पाँचवें नक्षत्र पर लत्ता दोष करता है। अर्थात् लात मारता है। सूर्य आगे के १२ वें नक्षत्र पर। शनि आगे के आठवें नक्षत्र पर। गुरु आगे के छटवें नक्षत्र पर। मङ्गल आगे के तीसरे नक्षत्र पर लत्ता दोष करते हैं। सूर्य लत्ता-धन नाश। राहु—नाश—नित्य दुःख। चन्द्र—नाश। मङ्गल—मृत्यु कारक। गुरु—वंधु नाश। शनि—कुलक्षय। बुध—नाश।

मालव देश में लत्ता का, कौशल देश में पात का, काश्मीर में एकार्गल का, सब देशों में वेध वर्जित। इनका विचार करना चाहिये।

लत्ता	सूर्य	शनि	गुरु	मङ्गल	चंद्रपूर्ण	राहु	बुध	शुक्र
	अगले	अगले	अगले	अगले	पिछले	पिछले	पिछले	पिछले
	१२ वें	८ वें	६ वें	३ रे	२२ वें	९ वें	७ वें	५ वें
	नक्षत्र पर	न० पर	पर	पर	पर	पर	पर	
फल	धन नाश	कुल क्षय	बंधु नाश	वर कन्या नाश	कन्या नाश	कन्या नाश	कन्या नाश	कार्य दुःख

परन्तु राहु की विशेष वात यह है कि वह सदा वक्री है। उसका अगला ही पिछला गिना जाता है। जैसे अश्विनी में राहु हो तो पिछला नवाँ नक्षत्र श्लेषा होता है। प्रयोजन यह है कि इन नक्षत्रों में इन ग्रहों की लात होने से इनमें विवाह नहीं करना।

(२) पात दोष—हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गंड, शूल इन योगों में समाप्त काल में जो नक्षत्र हो वह पात दोष से दूषित होता है। जैसे किसी दिन कृत्तिका २४—१० घड़ी है और हर्षण २०—१५ घड़ी है। यहाँ हर्षण योग कृत्तिका नक्षत्र में ही समाप्त है। इस कारण कृत्तिका नक्षत्र पात से दूषित हुआ। ऐसे नक्षत्र विवाह आदि शुभ कार्यों में त्याज्य हैं।

इसी पात दोष को नारद व वशिष्ठ जी ने अन्य प्रकार से कहा है। सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से लेकर श्लेषा, मघा, रेवती, चित्रा, अनु०, श्रवण इन नक्षत्रों तक गिनने से जितनी संख्या हो अश्विनी से लेकर उतनी ही संख्या वाला दिन नक्षत्र पात दोष से दूषित होता है। जैसे ज्येष्ठा में सूर्य है। उससे लेकर श्रवण तक गिनने में ५

संख्या हुई। अब अश्विनी से ५ मृगशिरा हुआ। यही पात दूषित हुआ। ऐसे ही और नक्षत्रों का जानना। इस पात को चंद्रांश या चंद्रायुध भी कहते हैं।

टिप्पणी—पात उपग्रह लत्ता में भी चरण वेध दूषित है। जैसे पात का उपग्रह जिस चरण पर हो वह चरण दूषित नक्षत्र का वर्जित है। तथा जिस ग्रह की लत्ता है वह जिस चरण पर अपने नक्षत्र के स्थित है, उतनी संख्या दिन नक्षत्र के चरण पर दोष होता है। और पर नहीं। अर्थात् सम्पूर्ण नक्षत्र दोषी नहीं होता। यह पात बंग व कलंग देश में वर्जित है।

क्रान्ति साम्य योग—मेष सिंह इन राशियों में किसी एक में चंद्र और दूसरे में सूर्य हो तो क्रान्तिसाम्य योग होता है। ऐसे ही, वृष मकर में। तुला कुंभ में। कन्या मीन में। कर्क वृश्चिक में। धनु मिथुन में क्रम से या विपरीत सूर्य चंद्र स्थित हो तो अर्थात् विवाह आदि की लग्न ऐसे विचारना चाहिये जिसमें यह दोष न हो।

इस क्रांतिसाम्य चक्र से समझ लेना इनमें सूर्य या चन्द्र परस्पर वेध हो तो मङ्गल कार्यों में शुभ नहीं है। जैसे मिथुन में सूर्य हो और धन में चंद्र हो तो क्रान्तिसाम्य हो जाता है। कहा है शस्त्र से मारा हुआ, सर्प से डसा हुआ जी सकता है। परन्तु क्रान्तिसाम्य में विवाह किया हुआ नहीं जीता। चंद्र सूर्य के क्रान्तिसाम्य में वैधृति व्यतीपात योग होते हैं। उनमें शुभ कर्म का आरम्भ करने से दुःख या मृत्यु होती है।

एकार्गल खार्जूर दोष—जिस दिन व्याघात, गंड, व्यतीपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड योगों में से कोई योग हो और जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र से लेकर विषम नक्षत्र में चंद्र हो उस दिन एकार्गल दोष होता है। परन्तु विशेष यह है कि सम विषम गणना में अभिजित् को भी ग्रहण करना। यह योग विवाह आदि शुभ कार्यों में निंदित है जैसे रविवार को द्वादशी और मूल नक्षत्र है और व्याघात योग है। सूर्य ऊषा में है। इससे ऊषा से अभिजित सहित मूल नक्षत्र तक २७ हुए। यहाँ सूर्य से चन्द्रमा विषम नक्षत्र पर है इससे एकार्गल दोष हुआ। इस दिन विवाह आदि करना अच्छा नहीं है। इस दोष को खार्जूर कहते हैं। यदि चन्द्रमा सम नक्षत्र पर हो तो यह दोष नहीं होता विवाह प्रथम और सीमन्त, कर्णवेध, व्रतबन्ध, अन्नप्रासन में खार्जूर वर्जित है।

उपग्रह दोष—जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से ५, ८, १०, १४, ७, १९, १५, १८, २१, २२, २३, २४, २५ वाँ चंद्रमा हो तो ये १३ नक्षत्र उपग्रह दोष से दूषित होते हैं। कुरु तथा वाल्हीक देशों में शुभ कार्य में अशुभ माने जाते हैं अर्थात सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र ५, ८, १०, १४, ७, १९, १५, १८, २१, २२, २३, २४, २५ वाँ हो तो उपग्रह दोष होता है। वह कुरु तथा वाल्हीक देश में वर्जित है।

जामित्र—विवाह के लग्न से १४ वें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है। विवाह काल में लग्न से १४ वाँ नक्षत्र जामित्र है वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो लिया जाता है पाप ग्रह युक्त वर्जित है।

जामित्र दोष—विवाह आदि काल के लग्न वा चन्द्र इन दोनों से सातवें स्थान में यदि कोई ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है। इस दोष में विवाह वर्जित है। अथवा लग्न व चन्द्र जिस नवांश में हो उससे लेकर ५५ वें नवांश में यदि कोई ग्रह हो तो और कोई ग्रह जिस नवांश में हो उस नवांश से लेकर ५५ वें नवांश में यदि लग्न व चन्द्र हो तो भी जामित्र दोष होता है। जामित्र दोष विवाह आदि शुभ कार्यों में अति अशुभ कारक है। इसमें विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना।

अर्द्धयाम दोष = दिन	रविवार	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
अशुभ अर्द्धयाम	४	७	२	५	८	३	६

दिनमान ÷ ८ = अर्द्धयाम घटी पल। एक दिन में = ८ अर्द्धयाम। उसमें १ अशुभ होता है उसके जानने की रीति—

रविवार से इष्ट दिन तक गिनने से जितनी संख्या हो × ३ ÷ ८ = शेष + १ योग।

उतनी संख्या वाला अर्द्धयाम अशुभ होता है। जैसे रविवार से बुध तक ४ दिन ४ × ३ = १२ ÷ ८ = शेष ४ + १ = ५। इससे बुध का पाँचवाँ अर्द्धयाम अशुभ होता है। इसे शुभ कार्य में त्यागना।

युति दोष—जिस घर में चन्द्र हो उसी घर में और कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। अन्य मत है शुभ ग्रह का दोष नहीं होता।

जिस नक्षत्र पर कोई ग्रह हो उसे युति कहते हैं उसमें विवाह करने से कन्या व्यभिचारिणी होती है।

चन्द्रमा सूर्य युक्त—हानि। मंगल युक्त—मृत्यु। राहु, केतु, शनि युक्त—फल नाश करे।

परिहार—यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम, उच्च या मित्रगृही हो तो युति दोष नहीं होता। दम्पत्ति सुखी रहेंगे।

युति दोष—युति कूर्माञ्चल में विशेष प्रसिद्ध है। बालवोध में लिखा है कि जब शनि, राहु, मंगल, सूर्य जन्म राशि में स्थित हों तो यदि कन्या का विवाह किया जाये तो कन्या विधवा हो।

जिस नक्षत्र में ग्रह स्थित हो उसे युति कहते हैं इत्यादि आशय से जन्मराशि में विशेषतः जन्म-नक्षत्र में जिस वर्ष या जिस मास में पाप ग्रह स्थित हो उसे युति दोष कहते हैं। इस दोष में विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना। आवश्यकता में पाद वेध वर्जित करते हैं।

कुलिक दोष वार	रविवार.	सोम.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनिवार
दिन में	१४	१२	१०	८	६	४	२
रात में	१३	११	९	७	५	३	१–१५

दिनमान ÷ १५ = मुहूर्त घटी पल। १ दिन में १६ मुहूर्त होते हैं। यही सब मुहूर्त १ कमकर उन्हीं दिनों की रात्रि में कुलिक होते हैं। जैसे रविवार को १४वाँ मुहूर्त दिन में १ कम अर्थात् पहला और २५वाँ मुहूर्त रात्रि में कुलिक है ये विवाह आदि शुभ कार्यों में अशुभ हैं, इनमें विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना।

वार	रविवार	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

इन दिनों और तिथियों में कुलिक योग होता है। विवाह आदि में शुभ नहीं है।

दग्धा तिथि	संक्रांति	धन	वृष	कर्क	कन्या	सिंह	मकर
	दग्धा	मीन	कुंभ	मेष	मिथुन	वृश्चिक	तुला
	तिथि	२	४	६	८	१०	११

जब इन राशियों में सूर्य हो तो ये तिथियाँ दग्ध होती हैं। इनमें विवाह आदि शुभ कार्य नहीं करना।

पंचक दोष—सूर्य के गतांश और १५, १२, १०, ८, ४ इनको अलग-अलग रख के जोड़ना और योग में ९ का भाग देना। शेष ५ बचे तो क्रम से ५ स्थान में ५ पंचक होते हैं। १ रोग, २ अग्नि, ३ राज, ४ चोर और ५ मृत्यु पंचक। ये विवाह में वर्जित हैं। अर्थात् उपरोक्त ५ अंकों में सूर्य गतांश पृथक-पृथक जोड़कर ९ का भाग देने पर इन अंकों के शेष में क्रमानुसार उक्त पंचक होते हैं। यदि शेष ५ न हो तो उक्त पंचक नहीं होंगे।

परिहार—रात्रि में चोर और रोग पंचक वर्जित है। दिन में राज (नृप) पंचक वर्जित है। अग्नि पंचक सदा वर्जित है। दोनों संध्या में मृत्यु पंचक वर्जित है।

वार अनुसार	वार	रविवार	शनि	बुध	मंगल
परिहार	वर्जित पंचक	रोग पंचक	राज पंचक	नृप पंचक	अग्नि चोर

जनेऊ में रोग पंचक, मकान बनाने में अग्नि पंचक, राजसेवा में नृप पंचक, यात्रा में चोर पंचक, विवाह में मृत्यु पंचक वर्जित है।

वाण दोष दक्षिण में प्रसिद्ध—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से लेकर जितनी तिथि बीत गई हों उनमें लग्न की राशि संख्या को जोड़कर ९ का भाग देना। शेष ८—रोग वाण। २—अग्नि वाण। ४—राज वाण। ६—चोर वाण। १—मृत्यु वाण। इस रीति से कहा हुआ वाण दक्षिण देश में प्रसिद्ध है। ये विवाह आदि शुभ कार्यों में अशुभ होते हैं।

पूर्व पश्चिम उत्तर देश में प्रसिद्ध बाण दोष—निरयन सूर्य की स्पष्ट संक्रांति के भोगे हुए अंशों की संख्या को ५ स्थानों में रखे फिर क्रम से ६, ३, १, ८, ४ को जोड़-कर ९ का भाग दो। पहिले स्थान में ५ बचे—रोग बाण। दूसरे में शेष ५—अग्नि वाण। तीसरे में—राज वाण। चौथे में—चोर वाण। पांचवें में शेष ५ रहें तो—मृत्यु बाण जानो।

जैसे सूर्य की स्पष्ट संक्रांति का ५ अंश वीत गया है। इसे ५ जगह रखो।

५	५	५	५	५
+६	+३	+१	+८	+४
११	८	६	१३	९
शेष २	८	६	४	०

यहाँ किसी में ५ नहीं बचा तो कोई वाण नहीं। यदि किसी में ५ वचता तो जिस क्रम का वचता उसी क्रम का वाण होता। दूसरे रीति से कहे हुए वाण में काष्ठ का भी फर रहता है इसलिये अतिअशुभ कारक नहीं होता।

लोहे के फर वाले वाण—कहे हुए ५ स्थानों के शेष में जोड़ में ९ का भाग देने पर यदि ५ शेष रहें तो वह लोहे के फर वाला वाण हुआ जैसे—२+८+६+४+०=योग २०÷९=शेष २=इसलिये यह अति अशुभ कारक नहीं हुआ।

समय और वार भेद से वाण दोष परिहार—चोर व रोग ये दो वाण रात्रि में, अग्नि वाण–सब काल में, मृत्यु वाण—प्रातः व संध्या काल की संध्या में शुभ नहीं होते।

दिन	शनिवार	बुध	मंगल	रविवार	ये वाण इन दिनों
वर्जित वाण	राज वाण	मृत्यु	अग्नि व चोर	रोग वाण	वर्जनीय हैं

यज्ञोपवीत, घर का छवाना, राजा की सेवा (नौकरी) आदि, सवारी करना, विवाह इन ५ कार्यों में क्रम से रोग अग्नि, राज, चोर और मृत्यु वाण त्यागना। अर्थात् यज्ञोपवीत में रोग वाण, घर छवाने में अग्नि वाण, राज सेवा में राज वाण, सवारी में चोर वाण, विवाह में मृत्यु वाण वर्जित करना।

सूर्य चाहे जिस नक्षत्र पर हो यदि उसके गतांश निम्न हो तो वाण दोष अवश्य त्यागना।

सूर्य गतांश	८-१६-२६	३-११-२०-२९	४-१३-२२	६-१५-२३	१-१०-१९-२८
वर्जित	रोग वाण	अग्नि वाण	नृप	चोर	मृत्यु वाण

ऐकार्गल आदि दोष परिहार—यदि विवाह लग्न सूर्य चंद्र के स्वोच्च स्थान स्थित रूप बल से युक्त हो अर्थात् जब सूर्य और चंद्र के बल से युक्त लग्न हो तो ऐकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र, कर्तरी, उदयास्त दोष, ये सब नष्ट हो जाते हैं।

देश भेद से उपरोक्त दोष परिहार—कुरु और वाल्हीक इन पश्चिम के देशों में उपग्रह दोष युक्त नक्षत्र का और कलिंग वंग इन पूर्व के देशों में पात दोष का और सौराष्ट्र व शाल्व इन पश्चिम के देशों में लत्ता दोष युक्त नक्षत्र का और सब देशों में पंच सलाका आदि चक्र द्वारा क्रूर शुभ ग्रहों के वेध हुए नक्षत्र का त्याग करना।

१० योग का दोष—अश्विनी से लेकर सूर्य के नक्षत्र तक और चंद्र के नक्षत्र तक भी अलग-अलग गिने फिर उन दोनों संख्याओं को जोड़कर २७ का भाग दे। यदि ०, १, ४, ६, १०, ११, १५, १८, १९, २० ये अंक शेष बचें तो दोष होगा। अर्थात् इनमें से कोई एक अंक बाकी बचे तो उस नक्षत्र में विवाह नहीं करना। जैसे उषा में चंद्र और अनुराधा में सूर्य है तो अश्विनी से चन्द्र नक्षत्र तक २१ हुए और सूर्य के

नक्षत्र तक १७ हुए। २१+१७=३८÷२७=शेष ११ तो उक्त रीति से यह अंक दोषी है। इसलिये उषा नक्षत्र में विवाह शुभ नहीं है। ये १० अंक गिनाये गये हैं इसलिये इनको १० योग नाम पड़ गया है।

उक्त दोषों का फल—ऊपर रीति से शेष ०=विवाह काल में बहुत वायु चले। १=वादल बहुत हों। ४=आग लगे। ६=राजदंड हो। १०=चोरी हो। ११=मरण। १५=रोग। १८=बिजली गिरे। १९=झगड़ा हो। २०=हानि हो।

१० दोषों का परिहार—पूर्व कहे हुए १० अंकों में से यदि सम अंक वाला योग आ पड़े तो उसके २ भाग करके १ भाग में १४ और मिलाना। यदि विषम अंक वाला योग आ पड़े तो उसमें १ और मिलाकर सम करे। बाद उसके दो भाग कर एक में १४ और मिलाना। तब जितनी संख्या हो अश्विनी से लेकर उतनी संख्या वाले नक्षत्र को आड़ी १४ लकीरों से बने हुए चक्र को आदि लिखकर फिर उसके क्रम से अभिजित् सहित २८ नक्षत्र रेखाओं के छोरों पर लिखे और उन नक्षत्रों में जो ग्रह हो उनको भी वहाँ लिख दें। यदि चक्र में किसी ग्रह व चन्द्र का परस्पर वेध हो तो वह शुभ नहीं होता।

					श०								
					के० चंद्र								
मूल	ज्ये०	अनु०	वि०	स्वा०	चि०	ह०	उफा०	पूफा०	म०	श्ले०	पु०	पुन०	आर्द्रा
|	|	|	|	|	|	|	|	|	|	|	|	|	|
पूषा०	उषा०	अभि०	श्र०	ध०	श०	पूभा०	उभा०	रेवती	अश्व०	भर०	कृ०	रो०	मृग
		शु०		सू०				गु०	मं०				
				बु०					रा०				

अर्थात् इस चक्र में किसी एक ही रेखा के एक छोर पर चन्द्र हो और दूसरे छोर पर शुभ या अन्य कोई पाप ग्रह हो तो पूर्वोक्त १० योगों में से वह योग अति अशुभ कारक होता है। यदि दूसरे छोर पर कोई ग्रह न हो तो अति अशुभ कारक नहीं होता।

जैसे इन योगों में ११ अंक वाला अंक आया। १०÷२=५+१४=१९ अश्व० से लेकर १९ मूल होता है। मान लो ११ संख्या का अंक आया ११+१=१२÷२=६+१४=२० वाँ उभा० आया। मान लो १० अंक से प्राप्त १९ वाँ मूल आया तो मूल को आदि लेकर १४ लकीरों के चक्र में लिखा जैसा ऊपर वताया है। क्रमानुसार सव नक्षत्र और उन पर जो ग्रह हो लिख दिया। यहां छठवीं रेखा पर चित्रा पर चन्द्र है दूसरे छोर पर शत० है। उसमें कोई ग्रह नहीं है। इस कारण चन्द्र का किसी ग्रह से परस्पर वेध नहीं होता। यदि इस चित्रा में विवाह हो तो पूर्वोक्त १० योग दोष अशुभ कारक नहीं हो सकते। इस १० योग का साधक योग व्यास जी ने कहा है। यदि विवाह लग्न शुक्र या गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो १० योग दोष नष्ट हो जाते हैं।

मर्म, कंटक, शल्य, छिद्र वेध विचार—

(१) लग्न में पाप ग्रह = मर्म वेध फल मृत्यु ।

(२) ९, ५ में पाप ग्रह = कंटक वेध = कुल क्षय ।

(३) ४, १० में पाप ग्रह = शल्य वेध = राजभीति ।

(४) सप्तम में पाप ग्रह = छिद्र वेध = पुत्र नाश ।

ग्रहण उत्पात—जिस नक्षत्र में महा उत्पात या ग्रहण हुआ हो उस नक्षत्र में ६ महीने तक सब शुभ काम वर्जित है ।

विवाह भंग योग—कृष्ण पक्ष में यदि चन्द्रमा वृष, कर्क आदि सम राशियों में होकर प्रथ लग्न से ६ या ८ स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो विवाह का भंग करता है ।

विवाह सम विषम वर्ष विचार—सम वर्ष में कन्या का विवाह और विषम वर्ष में पुत्र का विवाह शुभ फल दायक है विपरीत वर्षों में करने से दुःख या रोग होता है ।

विवाह पश्चात्—विवाह के पश्चात् चतुर्थी कर्म के भीतर श्राद्ध का दिन या अमावस्या नहीं होनी चाहिये । यदि हो तो कन्या विधवा या संतान-हीन होती है ।

विवाह में रिक्ता फल—यदि शनिवार तथा रिक्ता तिथि के दिन कन्या का विवाह किया जावे तो पति की सम्पत्ति की वृद्धि होती है ।

विवाह में वर्जित नक्षत्र—मघा के प्रथम चरण में, मूल के प्रथम चरण में, रेवती के चौथे चरण में विवाह करना प्राणों का नाश करता है ।

विवाह ८ प्रकार के हैं—(१) ब्राह्म विवाह—वर को बुलाकर उसकी कुछ हानि न करके जो कन्या यथाशक्ति अलंकार युक्त दी जावे उसकी संतान २१ पुरुषों का उद्धार करती है ।

(२) दैव—यज्ञ कराके दक्षिणा में कन्या दी जाय उसकी संतान पूर्व के १४ और बाद के ६ पुरुषों को पवित्र करे ।

(३) प्राजापत्य—जो वर के माँगने पर धर्म सहार्थ दी जावे ।

(४) आर्ष—एक गौ एक वृष या दो गौ यज्ञ के लिए या कन्या के लिए वर से लेकर कन्या दी जाय परन्तु मूल्य बुद्धि से न हो यह भी देव तुल्य है ।

(५) आसुर—कन्या के मित्र आदि को धन देकर या कन्या को धनादि से संतुष्ट करके जो विवाह हो ।

(६) गांधर्व—प्रथम ही कन्या वर के प्रेम आलिंगन आदि हुए में उनके इच्छानुसार विवाह ।

(७) राक्षस—संग्राम में जीतकर व बलात्कार से कन्या हरण कर ।

(८) पैशाच—सोते में या नशा आदि से बेहोशी में बलात्कार कन्या का घर्षण करे ।

देव पितृ ऋण गृहस्थ मनुष्य पर होता है। उसके उद्धार के निमित्त संतान होती है। संतान शुभ लक्षण वाली स्त्री के आधीन है उसके शुभ गुण बली होने के लिए विवाह के शुभ मुहूर्त आवश्यक है।

वर्णसंकर के विवाह का मुहूर्त—कृष्ण पक्ष में और शनिवार, मंगल, रविवार में और जो नक्षत्र विवाह में वर्जित हैं उनमें वर्णसंकर का विवाह हो तो पुत्र, आयुष्य, बल, प्रीति, धन, लाभ इन सबकी प्राप्ति होती है।

गांधर्व विवाह—गांधर्व विवाह आदि में, सूर्य नक्षत्र से ४ नक्षत्र अशुभ बाद २ नक्षत्र शुभ, बाद ३ अशुभ, बाद १ शुभ, बाद १ अशुभ, बाद ४ शुभ तदनंतर ६ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ होते हैं।

गांधर्व विवाह का त्रिपदी चक्र—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर गांधर्व विवाह में विचारे पुनर्विवाह या गांधर्व विवाह का मुहूर्त इसमें विचारे।

नक्षत्र	४	२	३	१	१	४	६	३	१	३	=२८
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	नक्षत्र
अन्य नक्षत्र	४	२	३	१	१	४	५	१	३	३	=२७
मत फल	अशुभ	शुभअ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	नक्षत्र

गौधूलिकी प्रशंसा—मुनियों ने सम्पूर्ण कार्यों में गौधूलि ऐसी शुभ कही है कि इनमें नक्षत्र, तिथि करण वार नवांश विधान, योग, अष्टम स्थान की शुद्धि, जामित्र दोष ये सब विशेष नहीं विचारे जाते और लग्न का भी विचार नहीं किया जाता और मुहूर्त का भी विचार नहीं अर्थात् बहुत से सुयोगों के रहते कोई एक कुयोग भी हो तो विवाह गौधूलिका में करना शुभ हो जाता है। अथवा पूर्व देशों में तथा कलिंग देश में गौधूलिका मुख्य होती है। अथवा गांधर्व विवाह तथा वैश्य आदिकों के विवाह में गौधूलिका शुभ है। अथवा कोई शुभ लग्न न हो और कन्या युवती हो गई हो तो विधवा आदि भारी दोषों को छोड़कर गौधूलिका में विवाह श्रेष्ठ है।

गौधूलिका काल—हेमंत ऋतु। अगहन आदि ४ महीनों में—कुहिरा से ढककर सायंकाल में सूर्य भात के गोले के समान (स्वच्छ) तेज रहित दीख पड़े तब। तापस (चैत्र आदि ४ महीनों में)—सूर्य के आधे अस्त हो जाने पर गौधूलिका होती है। वर्षा काल (श्रावण आदि ४ महीनों में)—सूर्य के सम्पूर्ण अस्त हो जाने पर गौधूलिका होती है। यह ३ प्रकार की गौधूलिका सम्पूर्ण शुभ कार्यों में काम लाने योग्य है।

गौधूलिका—सायंकाल में इकट्ठा होकर गौएँ वन से घरों को वापिस आते हुए गौओं के खुरों से उठी हुई पृथ्वी की धूल से आकाश भर जाता है वह काल गौधूलिका है।

गौधूलिका में त्याज्य दोष—सूर्यास्त होने के पूर्व गौधूलिका शुभ होती है परन्तु गुरुवार सूर्यास्त के पूर्व अर्द्धयाम दोष रहता है और शनिवार को सूर्यास्त के बाद कुलिक दोष रहता है। इन दोनों कालों में गौधूलिका निषिद्ध है और लग्न से ६ या ८ या

लग्न में चन्द्रमा रहते कन्या का नाश तथा ७ या ८ स्थान या लग्न में मंगल के रहते वर का नाश फल कहा है। इसलिए गौधूलिका काल में ऐसे लग्न भी निषिद्ध हैं। और लग्न से ११, २ या ३ स्थान में चन्द्र रहते वर कन्या दोनों को सौख्य है। इस कारण गौधूलिका काल में ऐसे लग्न श्रेष्ठ होते हैं।

अपवाद—अगहन और माघ में गौधूलिका में विवाह से कन्या विधवा होती है। फागुन में धन पुत्रादि की वृद्धि। वैशाख—सुख संतान धन युक्त। ज्येष्ठ—पति की मान दात्री। आषाढ़—धन धान्य बहु पुत्र प्राप्त। इसलिए उत्तम वर्ण का विवाह विशुद्ध लग्न में करना। हीन वर्ण का गौधूलिका में प्रशस्त है। जिस समय विशुद्ध लग्न न मिले तब गौधूलिका की व्यवस्था करे।

लग्नपत्रिका का उदाहरण—

श्री गणेशाय नमः

सजयति सिंधुर वदनो देवो, यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ॥ १ ॥
जननी जन्मसौख्यानां वर्द्धिनी कुलसम्पदाम्।
पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते लग्नपत्रिका ॥ २ ॥

अथ श्री शुभ संवत्सरे श्रीमन् नृपतिवीरविक्रमादित्यराज्योदयात् गताब्दाः मानेन—(सं०) २०३२। श्री शालिवाहनशकाब्दाः १८९७। तत्र चैत्रादौ गुरुविमव नामसंवत्सरे। श्री सूर्य उत्तरायणे। शिशिर ऋतौ। श्रीमन् महामांगल्यप्रदे मासोत्तमे पौषमासे। शुभशुक्लपक्षे। १५ पूर्णिमा तिथौ शनिवासरे मण्डपाच्छन्न तेलहरिद्रादि-बन्दनं शुभम्। पुनः माघमासे शुभे कृष्णपक्षे १ प्रतिपत् तिथौ रविवासरे मातृकापूजनं शुभम्। पुनः माघमासे शुभे कृष्णपक्षे २ तिथौ चंद्रवासरे वर (बरात) आगमनं कलश-गौरी-वन्दनं द्वारोत्सवश्च शुभम्। पुनः माघमासे शुभे कृष्णपक्षे २ द्वितीयां तिथौ चंद्रवासरे लत्तादिदोषरहिते उभयोः चंद्रशुद्धौ पाणिग्रहणपरिक्रमादिकार्यं शुभम् ॥ वरवध्वौ चिरंजीविनौ भूयास्ताम् ॥

पुनः पौषमासे शुभे शुक्ल पक्षे १२ द्वादशी तिथौ बुधवासरे गीतमांगल्यमृदाहरणं मागरमाटी मरदारं च शुभम् ॥

श्री शुभ विवाह लग्न कुंडली

वर
चिरंजीव
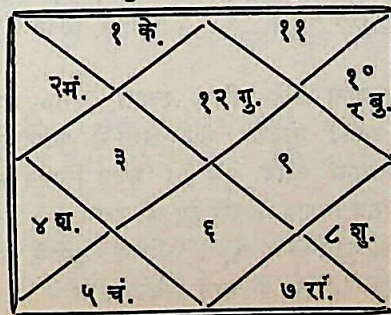
कन्या
सौभाग्य कांक्षी

लग्न पत्रिकायाः साहाय्यं श्री राधाकृष्णौ कुरुतः नाम शुभम्भवेत्

लग्न पत्रिका लिखने का मुहूर्त—विवाहोक्त शुभ वार तिथि में पंडित द्वारा लग्न पत्रिका लिखकर वर पक्ष को भेजी जाती है। यह २ पक्ष की शुभ है अर्थात् कृष्ण में लिखी जाय तो विवाह शुक्ल पक्ष में होगा। शुक्ल पक्ष में लिखी जाय तो अगले कृष्ण पक्ष में विवाह होगा।

समय के अभाव में आवश्यकता पड़ने पर एक ही पक्ष में विवाह कर लिया जाता है।

लग्न पत्रिका का नमूना ऊपर दिया है। इसके छपे हुए फार्म मिलते हैं।

मागरमाटी

विवाह का उत्सव आरंभ होने के पहिले किसी खदनियां का पूजन कर उसकी मृत्तिका घर में लाते हैं। उससे स्त्रियाँ चूल्हें आदि बनाती हैं।

मागरमाटी का मुहूर्त

जिस दिन पृथ्वी सोती न हो इसका विचार कर कार्य करना। पृथ्वी सुप्त हो तो भूमि खोदना मना है।

मरदार

विवाह का मंडप बनाने के निमित्त जो लकड़ी लाई जाती है। उसे मरदार कहते हैं। विवाहोक्त किसी शुभ नक्षत्र में इसे लाना चाहिए। या चौघड़िया मुहूर्त से शुभ समय देखकर लाना।

बहुधा लोग पूछते हैं किसके नाम से मरदार निकलती है अर्थात् लकड़ी लाने को जंगल आदि से पहिले कौन वृक्ष को काटेगा या कटी हुई लकड़ी को पहिले कौन-कौन उठायेगा?

इसके लिये उपरोक्त विवाहोक्त शुभ नक्षत्र के चरण के अक्षरों पर से जो नाम निकलते हों उस व्यक्ति का नाम वता देना।

विवाह के पूर्व होने वाले कार्यों का मुहूर्त—आटा पीसना, दाल दरना, चावल खूटना, कलश स्थापना, घर आंगन की सफाई, गहने की सफाई, वेदी बनाना, मड़वा छाना आदि कार्य।

विवाह आदि करने के लिए जो मुहूर्त कहे गये हैं उन नक्षत्रों में वर कन्यादि के चन्द्रवल विचार कर विवाह दिन से ३, ६, ९ वें दिन छोड़कर पूर्व ही अन्य दिनों में कार्य करे।

विवाह का मंडप आदि छाना आदि—चित्रा, स्वाती, शत०, अश्व०, ज्ये०, मर०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, श्ले० इनको छोड़कर शेष नक्षत्रों में फलदान तेल पूजन, वेदी वनाना, अन्न कूटना मंडप छाना आदि शुभ है। मंडप सिराने का मुहूर्त व और जो विवाह सम्बन्धी कार्य हैं वे सब विवाह में कहे हुए जो नक्षत्र हैं। उनमें करना चाहिए।

मंडप के खंभे गाड़ने का मुहूर्त—६, ५, ७ राशि के सूर्य में विवाह वाले घर के ईशान कोण में और ८-९-१० राशियों में रहते वायव्य कोण में ११, १२, १ राशियों में रहते नैऋत्य कोण में, २, ३, ४ में आग्नेय कोण में मंडप का खंभ गाड़ना चाहिए।

खंभ दिशा	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय
सूर्यराशि	५, ६, ७	८, ९, १०	११, १२, १	२, ३, ४

वेदी लक्षण व मंडप सिराने का मुहूर्त—घर के बांये भाग में लड़को के हाथ से हाथ भर ऊँची, हाथ भर लम्बी (चारों तर्फ ४ हाथ की) वेदी बनानी चाहिए और विवाह के दिन से छटे दिन को छोड़कर सम दिन में तथा विषम दिनों में से पाँचवें या सातवें दिन मंडप का सिरवाना शुभ है।

कन्या के तेल आदि लगाने की संख्या—मेषादि में उत्पन्न कन्या वर के और वटु जिसका यज्ञोपवीत होने वाला है, उसके तेल उबटन आदि लगाने में निम्न संख्या कही है।

राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
कितने वार	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अर्थात् मेष या मीन राशि वाले को ७ वार विवाह या यज्ञोपवीत से पूर्व तेल अथवा उबटन आदि लगाना चाहिये।

स्त्री का पहिला समागम—पूर्वार्द्ध भोगी–रेव०, अश्व०, भर०, कृत०, रोह०, मृग०। मध्य–आर्द्रा, पुन०, पुष्य, श्ले०, मघा, पूफा०, उफा०, हस्त, चित्रा, स्वा०, विशा०, अनु०।

ऊपर—ज्ये०, मूल, पूषा०, उषा०, श्रव०, धनि०, शत०, पूभा०, उभा० पहिले स्त्री पुरुष का समागम पूर्वार्द्ध भोगी नक्षत्रों में हो तो स्त्री स्वामी को प्रिय हो। मध्य भोगि–दोनों में परस्पर प्रीति हो। ऊपर भाग भोगी–स्वामी को स्त्री प्यारी होती है।

वधू प्रवेश—विवाह के बाद पिता के घर से स्वामी के घर में पहिले पहिल स्त्री के जाने का नाम वधू प्रवेश है। यह विहित शुभ काल में ही होने से घर वालों का तथा वधू वर को शुभदायक होता है।

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर सम अर्थात् २, ४, ६, ८, १०, १२, १६ वें दिन तथा ५, ७, ९ वें दिन में और १६ दिन के बाद १, ३, ५ वर्ष में और १, ३, ५, ७, ९, ११ वें मास में और ५ वर्ष के बाद अपनी इच्छानुसार सम विषम वर्ष मास दिन का विना विचार किये अथवा जहां तक हो सके वहाँ तक वर के जन्म राशि से सूर्य चन्द्र गुरु के गोचर में वली रहते हुए भद्रा आदि दोष रहित काल में किया हुआ वधू प्रवेश शुभ होता है।

वधू प्रवेश मुहूर्त—रोह० ३ उत्तरा अश्व०, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु०, मृग०, रेवती इनमें वधू प्रवेश शुभ है। ४-९-१४ तिथि रविवार मङ्गल में अन्य मत से बुधवार में भी अशुभ है।

विवाह बाद प्रथम वर्ष स्त्री के रहने का फल—विवाह होने के बाद पहिले ज्येष्ठ में यदि स्वामी के घर स्त्री रहे तो स्वामी के ज्येष्ठ भाई, पहिले मलमास में स्वामी को, पहिले अषाढ़ में सास को, पौष में ससुर को और पहिले क्षय मास में अपनी देह को

नष्ट करती है। और पिता के घर में पहिले चैत्र में स्त्री रहे तो पिता को नष्ट करती है। अर्थात् विवाह के बाद पहिले ज्येष्ठ, मलमास, अषाढ़, पूष, क्षय मास इनमें स्त्री को पिता के घर में और पहिले चैत्र में पति के घर में रहना चाहिए। और जिन महीनों में जहाँ रहने से जिन लोगों को दोष कहा है। उसी स्त्री के यदि वे लोग नहीं हैं तो उन महीनों वहाँ रहने का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन मुहूर्त—वधू प्रवेश के बाद स्वामी के घर से पिता के घर में जाकर वहाँ से फिर स्वामी के घर आने का नाम द्विरागमन है। वह भी शुभ काल में किया हुआ शुभ फलदायक होता है।

स्वामी के घर से पिता के घर में जाने के दिन से १, ३, ५ वें आदि वर्षों में तथा ११, ८, १ राशि के सूर्य में और पूर्वोक्त सूर्य व गुरु की शुद्धि रहते सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार में और ३, १२, ६, ७, ३ लग्नों में तथा अश्व०, पुष्य०, हस्त०, रोह०, तीनों उत्त०, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा०, मूल, चित्रा, अनु०, मृग०, रेवती० नक्षत्रों में स्त्री अपने पति के घर में दूसरी बार जाय तो शुभ है।

द्विरागमन का और समय—जब गुरु या शुक्र अस्त हो गये हों या सिंहस्थ गुरु हों कन्या का रजोदर्शन पिता के घर में होने लगा हो, अच्छा मुहूर्त न मिले तो दीवाली के दिन कन्या पति के घर आवे। गुरु उपचय में हो शुक्र केन्द्र में हो लग्न शुभ हो तथा शुभ ग्रहों से युक्त हो तब स्त्री पति के घर जावे।

यदि पिता के घर में स्त्री के स्तन विकसित हो जाय तो फल शुद्धि न होने पर भी शुक्रादि दोष न विचार कर शुभ दिन में उसका स्वामी स्वयं नव वधू को अपने घर ले जाय। वैशाख, फाल्गुन वं अगहन मास न होने का भी कोई दोष नहीं होगा।

त्रिरागमन—पुन०, हस्त०, रेव०, मृग०, अश्व०, अनु०, धनि०, स्वा०, मघा इन नक्षत्रों में वधू का त्रिरागमन मुहूर्त शुभ है तथा योगिनी, दिशा शूल व राहु शुद्ध हो घर में वधू-प्रवेश तीसरी बार हो तो चक्र के अनुसार राहु सन्मुख दाहिने वर्जित करना।

मासिक राहु वास त्रिरागमन में	राहुवास दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
	सूर्य की राशि	१-५-९	२-६-१०	३-७-११	४-८-१२

इनका विचार त्रिरागमन में होता है।

त्रिमासिक राहु—	त्रिमासिक राहु	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
	सूर्य राशि	८-९-१०	११-१२-१	२-३-३	५-६-७

राहु फल—सन्मुख—वैधव्य करे। दक्षिण—दुःख दे। पीछे—स्त्री पुत्रवती हो। बाँये—सौभाग्यशालिनी।

नूतन वधू द्वारा पाकारंभ—कृत्तिका, रोहणी, मृग०, पुष्य, तीनों उत्तरा, विशाखा, ज्येष्ठ, श्रवण, धनिष्ठा, शत०, रेवती नक्षत्र और शुभ तिथि वार में स्थिर लग्न में नई वधू द्वारा पाकारंभ शुभ होता है।

गृह मुहूर्त

वास्तु प्रकरण—वास्तु नाम घर का है। पराये घर में गृहस्थों की सम्पूर्ण धर्म क्रिया निष्फल हो जाती है। इस कारण अपना घर बनाना सबको आवश्यक है। इसके लिये विचारना कौन गाँव में घर बनायें और कौन गाँव शुभ या अशुभ होगा।

गाँव राशि विचार—बसने वाले की नाम राशि से गाँव की राशि २, ९, ५, ११ या १०वीं हो वह गाँव बसने वाले को शुभदायक है।

ऋणी गाँव—बसने वाले के नाम का पहिला अक्षर अ१ क२ च३ ट४ त५ प६ य७ श८ वर्ग इन आठों में जिस वर्ग का हो उस वर्ग की संख्या को दुगुना करके उसमें बसने वाले के वर्ग की संख्या को जोड़कर उसको अलग स्थापित दोनों संख्याओं में ८ का भाग देने से जिसमें शेष अधिक हो वह ऋणी होता है और जिसकी कमी हो वह धनी होता है। इन दोनों में यदि गाँव ऋणी हो तो शुभ होता है अन्यथा अशुभ है।

उदाहरण—नागपुर में बेनी प्रसाद रहना चाहता है। नागपुर त वर्ग में है। (त थ द ध न्) और बेनी प वर्ग में है (प फ ब् भ म)।

ग्राम त वर्ग ५×२=१०+६ प का अङ्क=१६÷८=शेष०=कम धनी
वासी प वर्ग ६×२=१२+५ त का अङ्क=१७÷८=शेष१=अधिक धनी

यहाँ बेनी प्रसाद को नागपुर लाभ दायक नहीं होगा। वह ऋणी है। यदि गाँव ऋणी होता तो शुभ था। ऐसा ही स्वामी सेवक स्त्री पुरुष आदि में भी विचार करना।

ग्राम राशि विचार—अपनी नाम राशि से ग्राम की राशि एक हो या सातवीं हो तो शून्यता रहे ३-६ वाँ=घर की हानि। ४-८-१२=रोग। शेष स्थान सुखकारक हैं।

ग्रामवास फल—ग्राम के नक्षत्र से अपना नक्षत्र गिनकर ७-७ नक्षत्र इस प्रकार रखकर फल विचारे। देखो नक्षत्र कहाँ पड़ा है उसका अङ्ग के अनुसार फल विचारे।

अङ्ग	मस्तक	पीठ	हृदय या उदर	चरण
नक्षत्र	७	७	७	७
फल	धनी	हानि	सुख संपदा	घुमावे

ग्राम निवास विचार

वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
स्वामी	गरुड़	विलाव	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष
वर्ग अंक	१	२	३	४	५	६	७	८
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान

पूर्व आदि आठों दिशा बली हैं। जिस वर्ग की जो दिशा है वही श्रेष्ठ है अपने से पाँचवीं दिशा मृत्यु कारक है। अर्थात् अपने नाम के वर्ग अनुसार निवास की दिशा शुभ है।

ग्राम में वर्जित वास—जो सुख चाहे तो अपनी राशि के अनुसार वास त्याग दे।

राशि	२, ३, ५, १०	६-१२	४	९	१, ७, ११
नगर का स्थान	मध्य में	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर

ग्राम में कहाँ	दिशा	पूर्व	आ०	दक्षिण	नै०	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	बीच
न वसे	राशि	८	१२	६	४	९	७	१	११	२,३,५

गृह खात या नींव शिलान्यास—अग्नि कोण में ही घर बनाने के विचार से शिला स्थापन करना। बाकी प्रदक्षिण क्रम से स्थापन करना। शिलान्यास में अश्व०, मृग०, रेव०, हस्त, रोह०, पुष्य, अनु०, ३ उत्तरा बहुत अच्छे हैं।

स्तंभ स्थापन—स्तंभ स्थापन भी अग्नि कोण में ही करना। पंचकों में स्थापन वर्जित है। सूर्य नक्षत्र के प्रारंभ के ६ और अंत के २ खराब हैं।

गृह आरंभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, रोह०, मृग०, चित्रा, अनु०, रेव०, शत०, स्वा० धनि०, हस्त, पुष्य इनमें गृह आरंभ शुभ है।

सूतिका गृह—पुन० में बनाना आरंभ करे अभिजित में प्रवेश करे तो शुभ है।

शुभ मास दिन—श्रावण, अगहन, वैशाख, पौष, फाल्गुन के महीने शुभ हैं शनिवार के सहित शुभ दिन हो।

सूर्य राशि और मास—मेष सूर्य—चैत्र। वृष सूर्य—ज्येष्ठ। कर्क सूर्य—अषाढ़। सिंह सूर्य—भाद्र पद। तुला सूर्य—आश्विन। वृश्चिक—कार्तिक। मकर—पौष। मकर या कुंभ—माघ। इन महीनों में बनाया घर शुभ है।

कन्या के सूर्य—कार्तिक। धन के सूर्य—माघ में घर बनाना अशुभ है। परन्तु मासों की गणना कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक है। शुक्ल आदि क्रम से उक्त संक्रांतियों में उक्त मासों का होना दुर्घट है।

गृह आरंभ	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आपाढ़	श्रावण	भादों	क्वार	कातिक	अगहन
मास फल	शोक	धान्य	मृत्यु	पशु हरण	द्रव्य वृद्धि	विनाश	युद्ध	मृत्यु	धन हानि

पौष	माघ	फाल्गुन
श्री	अग्नि भय	स्त्रीप्राप्ति

सूर्य की एकता—मीन सूर्य—चैत्र। मिथुन-ज्येष्ठ, आषाढ़। कन्या-भादों, क्वार। धन—माघ इनमें सूर्य के रहते अशुभ अन्यथा शुभ।

नारद मत—पौष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण, कुआर, कार्तिक ये महीने घर बनवाने में शुभ हैं। और मिथुन, कन्या, धन, मीन, ये सूर्य संक्रांतियाँ अशुभ हैं।

गृह आरंभ में पंचांग शुद्धि—रविवार, मंगलवार इनको छोड़कर अन्य वार में ४, ९-१४, ३०, १ इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथि में। धनि०, शत०, पूभा०, उभा० रेव० इनको छोड़ कर अन्य राशियों के लग्न में तथा ८-१२ स्थान छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभ ग्रह के रहते ३, ६, ११ स्थान में पाप ग्रह रहते घर बनाने का आरंभ करे।

देवालय आदि स्थान भेद से राहु का मुख—देव मंदिर आदि में मीन से लेकर ३-३ राशियों में सूर्य के रहते और गृहस्थ के मकान में सिंह राशि से लेकर ३-३ राशियों में सूर्य के रहते और जलाशय में मकर से लेकर ३-३ राशियों में सूर्य के रहते। ईशान आदि कोणों में उल्टे क्रम से राहु का मुख होता है। उसके मुख के पिछले कोण में नींव देने में शुभ होता है। राहु का मुख और पीठ कहाँ रहती है चक्र में बताया है राहु की पीठ नींव में होनी चाहिये।

राहु चक्र

राहु मुख दिशा	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय	मुख दिशा
देवालय आरंभ में	१२,१,२	३,४,५	६,७,८	९,१०,११	राशि में सूर्य रहते
गृह आरंभ में	५,६,७	८,९,१०	११,१२,१	२,३,४	राशि में सूर्य रहते
ज़लाशय आरंभ में	१०,११,१२	१,२,३	४,५,६	७,८,९	राशि में सूर्य रहते
राहु पीठ दिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	पीठ दिशा

जिस राशि में राहु का मुख हो उसकी पहली दिशा में खात (नींव) होता है उस दिशा में खोदना शुभ होता है जैसे ईशान में राहु का मुख हो तो उसका पृष्ठ आग्नेय में होगा। वायव्य में मुख हो तो ईशान में पृष्ठ होगा। नैऋत्य में मुख हो तो वायव्य में पृष्ठ। आग्नेय मुख हो तो नैऋत्य पृष्ठ समझना।

खात विचार में भूमि सुप्त का भी विचार करना।

गृह आरंभ—जब गुरु शुक्र सूर्य तथा चंद्र अपने उच्चादि स्थान में बलवान हों गुरु सूर्य तथा चन्द्र का बल देख कर गृह आरंभ करना। जामित्र के बिना शेष विवाहोक्त महादोषों को तथा रिक्ता तिथि रविवार, मंगलवार, चर लग्न व चर लग्न का नवांश या सूर्य तथा मंगल के नवांश इन सब को छोड़कर गृह आरंभ करे। घर बनाने के नक्षत्र से गृह आरंभ के नक्षत्र तक गिनकर गिनने से तीसरा नक्षत्र दुःख देता है। पाँचवाँ—यश नाश। सातवाँ आयु क्षय करता है।

जब सूर्य मेष का हो तो घर स्थापन शुभ है। वृष—जन वृद्धि। मिथुन—मृत्यु। कर्क—शुभ। सिंह—भृत्यों की वृद्धि। कन्या—रोग। तुला—सुख। वृश्चिक—धन वृद्धि। धन—बहुत हानि। मकर—धन प्राप्ति। कुंभ—पुत्र लाभ। मीन—भय।

गृह आरंभ में शुभ काल—पुष्य, ३ उत्तरा, रोह०, मृग०, श्रव०, श्ले०, पूषा० इन नक्षत्रों में गुरु हो और गुरुवार के दिन बनाया हुआ घर पुत्र और राज्य का देने वाला है।

(२) विशाखा, अश्व, चित्रा, धनि०, शत०, आर्द्रा, इन नक्षत्रों में शुक्र हो और शुक्रवार के दिन बनाया घर धन धान्य देने वाला है।

(३) हस्त, पुष्य, रेव०, मघा, पूषा०, मूल इनमें मंगल ग्रह हो और मंगलवार के दिन बनाया घर अग्नि भय व पुत्रों को क्लेश दायक होता है।

(४) रोह०, अश्व०, पूफा०, चित्रा, हस्त में बुध हो और बुधवार के दिन बनाया घर सुख तथा पुत्रों को देने वाला है।

(५) पूभा०, उभा०, ज्ये०, अनु०, स्वा०, भर० में शनि ग्रह हो और शनिवार को बनाया घर राक्षस व मृत युक्त रहता है।

इष्टर्क्ष ज्ञान—नक्षत्र	अश्व०	भर०	कृत०	रोह०	मृग०	आर्द्रा	पुन०	पुष्य	श्ले०
इष्टर्क्ष	पुष्य	अश्व०	शत०	उभा०	अनु०	पूफा०	उफा०	हस्त	चि०
संख्या	८	१	२४	२६	१७	११	१२	१५	१४
नक्षत्र	मघा	पूफा०	उफा०	हस्त	चि०	स्वा०	विशा०	अनु०	ज्ये०
इष्टर्क्ष	ज्ये०	उफा०	अनु०	मृग०	मूल०	श्रव०	धनि०	पूफा०	मघा
संख्या	१८	१२	१७	५	१८	२२	२३	११	१०
नक्षत्र	मूल०	पूषा०	उषा०	श्रव०	धनि०	शत०	पूभा०	उभा०	रेवती
इष्टर्क्ष	श्ले०	रेव०	पूभा०	रेव०	शत०	मूल०	मृग०	रेव०	उफा०
संख्या	९	२७	२५	२७	२४	१९	५	२७	२६

यहाँ ऊपर दिये हुए नक्षत्र का इष्टर्क्ष नीचे दिया है और उसकी संख्या दी है जैसे मृग का इष्टर्क्ष अनु० संख्या १७ है।

कोई कृत्य करना हो जैसे घर बनाना घर में दरवाजा लगाना आदि समय का या जहाँ बसना हो वहाँ के गाँव का नक्षत्र या किसी कार्य करने के नक्षत्र का इष्टर्क्ष संख्या में १ घटा कर १५२ का गुणा करना और करता के नक्षत्र की इष्टर्क्ष संख्या में १ घटाकर ८१ का गुणा करना। दोनों के गुणनफल को जोड़कर ८ का भाग देना शेष आय होगी उससे आय जानना जो नीचे दिया है। जैसे कृत्य या गाँव का नक्षत्र मृग० है उसका इष्टर्क्ष अनु० १७–१=१६×१५२=२४३२। कर्ता का नक्षत्र शत० का इष्टर्क्ष मूल १९–१=१८×८१=१४५८। दोनों का योग=३८९०÷८=शेष= २ धूम=फल मरण।

	१	२	३	४	५	६	७	८	क्रम
ध्वज		धूम	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	आय नाम
फल कृतार्थ प्रसन्नता		मरण	जप	कोप	राज्य	दुःख	मुख	मृत्यु	फल

आय का इतर ज्ञान

आय वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
आय नाम	ध्वज	धूम	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष (काग)
आय क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
आय स्वामी	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	गुरु	चन्द्र	राहु	बुध
आय दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान

इष्ट आय और नक्षत्र के विचार से घर का स्थान

कोई व्यक्ति किसी ग्राम में बसना चाहता है तो उस स्थान के प्रसिद्ध नाम की राशि और अपने नाम की राशि और नक्षत्र में जैसा विवाह में मिलाया जाता है। राशि कूट आदि ठीक मिल जाने पर वहाँ घर बनाने विचार करना चाहिये।

(ग्राम नक्षत्र संख्या—१)=शेष × १५२=गुणनफल ।

फिर घर जिस दिशा में बनाना हो या घर में जिस दिशा में द्वार लगाना हो उस का इष्ट आय लेना ।

इष्ट आय की ध्वज आदि क्रम से जो संख्या हो वह लेना (इष्ट आय संख्या–१)= शेष × ८१=गुणनफल । (नक्षत्र गुणनफल + आय गुणनफल)= + १७ = योग ÷ २१६= मकान के क्षेत्रफल का पिंड ।

उदाहरण—नामदेव विक्रमपुर में घर बनाना चाहता है । नामदेव की वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र है । विक्रमपुर वृष राशि रोहिणी नक्षत्र है । दोनों का राशि कूट आदि मिल जाता है । अब घर वहाँ दक्षिण दिशा में बनाना चाहता है ।

रोहिणी नक्षत्र संख्या ४–१ = ३ × १५२ = ४५६ गुणनफल ।

ध्वज आदि क्रम दक्षिण का सिंह तीसरा आय है । आय संख्या ३–१ = शेष २ × ८१ = १६२ गुणनफल । (४५६ + १६२) = ६१८ दोनों गुणनफल का योग ६१८ + १७ = ६३५ । ६३५ ÷ २१६ = २ २०३/२१६ = २०३ पिंड हुआ । पिंड २०३ ÷ ८ = शेष ३ सिंह आय ।

यदि पूर्वोक्त रीति से ध्वज आय आता हो तो चारों दिशाओं में से जिस ओर इच्छा हो दरवाजा लगा सकते हो । सिंह आय–पूर्व दक्षिण पश्चिम में कहीं भी । वृष– पूर्व । गज–पूर्व दक्षिण में से जहाँ इच्छा हो दरवाजा लगावे ।

मकान बनाने को ध्वज आय में ब्राह्मण को पश्चिम दरवाजा शुभ, सिंह आय में क्षत्रिय को उत्तर दरवाजा शुभ । वैश्य को वृष आय में पूर्व दरवाजा शुभ । शूद्र को गज आय में दक्षिण दरवाजा शुभ ।

घर का आय व्यय विचार

स्थान का इष्ट नक्षत्र संख्या ÷ ८ शेष व्यय ।

स्थान का नक्षत्र रोहिणी संख्या ४ ÷ ८ = शेष ४ व्यय ।

पिंड २०३ ÷ ८ शेष ३ आय । यहाँ आय से व्यय अधिक है शुभ नहीं । और भी विचार = (व्यय + ध्रुवादि के नामाक्षर + पिंड) ÷ ३ = शेष १ = इन्द्र । २ = यम । ३ = राज अंश । घर में यम का अंश शुभ नहीं होता । शेष अंश शुभ हैं । ध्रुवादि के नामाक्षर नीचे दिये हैं—

ध्रुवादि के नामाक्षर—	१	२	३	४	५	६	७	८
	ध्रुव	धान्य	जय	नंद	खर	कांत	मनोरथ	सुमुख
	२	२	२	२	२	२	४	३

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
दुर्मुख	उग्र	रिपुद	विदत्त	नाश	आक्रन्द	विपुल	विजय
३	२	३	३	२	३	३	३

पिंड अर्थात् घर का क्षेत्रफल (लम्बाई × चौड़ाई) पर से अन्य आचार्य के मत से घर सम्बन्धी आय वार आदि साधन ।

पिंड × ९ ÷ ८ शेष आय = २०३ × ९ = १८२७ ÷ ८ = शेष ३ = आय सिंह
पिंड × ९ ÷ ७ „ वार = २०३ × ९ = १८२७ ÷ ७ = „ ३ = वार शनि
पिंड × ६ ÷ ९ „ अंश = २०३ × ६ = १२१८ ÷ ९ = „ ३ = तीसरा
पिंड × ८ ÷ १२ „ धन = २०३ × ८ = १६२४ ÷ १२ = „ ४ = धन चार
पिंड × ३ ÷ ८– „ ऋण = २०३ × ३ = ६०९ ÷ ८ = „ १ = ऋण एक
पिंड × ८ ÷ २७-„ नक्षत्र = २०३ × ८ = १६२४ ÷ २७ = „ ४ = ४ रोहिणी
पिंड × ८ ÷ १५-„ तिथि = २०३ × ८ = १६२४ ÷ १५ = „ ४ = तिथि चौथ
पिंड × ४ ÷ २७ „ योग = २०३ × ४ = ८१२ ÷ २७ = „ २ = प्रीति योग २
पिंड × ८ ÷ १२० „ आयु = २०३ × ८ = १६२४ ÷ १२० = „ ६४ = ६४ आयु

प्रयोजन—नक्षत्र से गृह आरम्भ के नक्षत्र तक तथा स्वामी के नक्षत्र तक गिनना जितनी संख्या हो ÷ ९ = शेष विषम १, ३, ५, ७, आदि = घर अशुभ। शेष सम २, ४, ६ आदि हों तो घर शुभ।

तिथि आदि उपरोक्त का प्रयोजन—४, ९, १४, ३० इन में से कोई तिथि मकान की उक्त गणना से आवे तो शुभ है। इसी प्रकार विषकुंभ आदि योग त्यागना। शुभ योग वाला घर शुभ। अधिक वर्ष तक टिकने वाला घर शुभ।

घर और स्वामी के नक्षत्र का विचार

घर का और घर के स्वामी का नक्षत्र एक हो तो मरण। परन्तु एक ही राशि हो तो दोष नहीं। भिन्न राशियों में भी दोष नहीं। इसमें यहाँ नाड़ी वेध का दोष नहीं होता।

इसका और उदाहरण

मान लो किसी घर की लम्बाई ३० × चौड़ाई २० = ६०० क्षेत्रफल हुआ।

(१) ६०० × ९ = ५४०० ÷ ८ = शेष ८ = ० = आय
(२) ६०० × ९ = ५४०० ÷ ७ = शेष ३ = वार मंगलवार
(३) ६०० × ६ = ३६०० ÷ ९ = ० = ९ अंश
(४) ६०० × ८ = ४८०० ÷ १२ = ० = १२ धन (बारा)
(५) ६०० × ३ = १८०० ÷ ८ = ० = ८ ऋण (आठ)
(६) ६०० × ८ = ४८०० ÷ २७ = २१ नक्षत्र (उत्तराषाढ़ा)
(७) ६०० × ८ = ४८०० ÷ १५ = ० = १५ तिथि (पूर्णिमा)
(८) ६०० × ४ = २४०० ÷ २७ = १४ योग (शुक्ल)
(९) ६०० × ८ = ४८०० ÷ १२० = शेष ० = १२० आयु १२०

विषम आय शुभ होती है। सम आय अशुभ है। यहाँ ८ सम आय अशुभ है। मंगलवार अशुभ है। घर में आग लगने का भय है। यहाँ अंश को नवांश या कोई तारा मानते हैं। तारा ३ बचे तो धन नाश, ५ यश हानि, ७ गृह कर्ता का मरण, यहाँ ९ तारा शुभ है।

घर की राशि अपनी राशि गिनने पर २–१२ = धन हानि। ९–५ पुत्र हानि। ६–८ अशुभ। अन्य शुभ हैं।

वर्ग क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
स्वामी	गरुड़	मर्जार	सिंह	स्वान	सर्प	मूषक	गज	शशक
दिशा	पूर्व	अग्निकोण	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान

यहाँ विचार है रामसिंह नागपुर में वसना चाहता है। रामसिंह वर्ग ७ य वर्ग और नागपुर वर्ग ५ त वर्ग रामसिंह ७ नागपुर ५ = ७५ ÷ ८ शेष ८ धन लाभ। नागपुर ५ रामसिंह ७ = ५७ ÷ ८ = शेष ३ ऋण। इसे वसना लाभ जनक है।

नया घर बनाना मना—जब सूर्य ९, १२, ३ या ६ राशि का हो नया घर नहीं बनाना। जव सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र वलहीन हो, अस्तंगत या नीच के हों तब घर बनाने से घर स्वामी की स्त्री, सुख तथा धन नाश हो।

गृह आरंभ—३ उत्तरा, रोह०, पुष्य , अनु०, हस्त०, चित्रा०, धनि०, शत०, रोह० में गृह आरम्भ शुभ है द्विस्वभाव या स्थिर लग्न हो जिसमें शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो।

पृथ्वी शोधन प्रकार—प्रश्न कर्ता के मुख से जो आदि अक्षर निकले उसी से नवीन मकान के लिए पृथ्वी शोधन का विचार करे अ वर्ग आदि ८ वर्ग हैं उनकी दिशाओं में शल्य क्रम से जानो ह य प इन अक्षरों का उच्चारण प्रश्न में हो तो सबका विचार नीचे दिया है।

अ वर्ग—पूर्व दिशा में १॥ हाथ गहरा खोदने पर मनुष्य की हड्डी मिले—मृत्यु कारक
क वर्ग—आग्नेय में २ २ ,, ,, गधा की हड्डी मिले—राजदंड, भय, अशांति
च वर्ग—दक्षिण में कमर बराबर खोदने पर नर की हड्डी मिले-चिरकाल के रोग से मरण
ट वर्ग—नैऋत्य में १॥ हाथ गहरा खोदने पर कुत्ते की हड्डी मिले—बालकों को मृत्यु कारक
त वर्ग—पश्चिम में १॥ हाथ गहरा खोदने पर बालक की हड्डी मिले—गृहस्वामी गृह में तिष्ठे
प वर्ग—वायव्य में ४ हाथ गहरा खोदने पर जली भूसी का कोयला मिले—मित्र नाश दुःस्वप्न हो
य वर्ग—उत्तर में १ हाथ गहरा खोदने पर ब्राह्मण की हड्डी मिले—निर्धन हो कुबेर सम हो
श वर्ग—ईशान में १॥ हाथ गहरा खोदने पर गौ का हाड़ मिले—गौ धन नाश

ह य प अक्षर का आदि में प्रश्न कर्ता का हो तो गृह के बीच छाती बराबर गहरे में मनुष्य की खोपड़ी व भस्म व लोहा निकले। फल—कुल नाश। खनन प्रकार—जहाँ तक पत्थर मिले वहाँ तक खोदना या एक पुरुष तक गहरा खोदना। जगह शुद्ध करना। खोदने में पत्थर निकले तो धन, आयु की वृद्धि हो। ईंट—ध्यान प्राप्त। कपाल, कोयला केश मिले तो रोग से पीड़ित हो।

ईशान देवता	सर्व वस्तु	पूर्व स्नान	मंथन	आग्नेय रसोई घर
औषधि				घृत संग्रह
उत्तर भण्डार				दक्षिण शयन
मैथुन				मल त्याग
वायव्य धान्य संग्रह	रोदन	पश्चिम भोजन	विद्या अध्यन	नैऋत्य हथियार

कौन घर कहाँ हो—पूर्व—स्नान घर। आग्नेय—रसोई घर। दक्षिण—शयन गृह। नैऋत्य—हथियारों का। पश्चिम—भोजन का। वायव्य—धान्य

संग्रह । उत्तर—मंडार । ईशान—देव घर । सूर्य आग्नेय के मध्य—दही मथने का । आग्नेय दक्षिण के मध्य—मल त्यागने का । नैॠत्य पश्चिम के मध्य—विद्याभ्यास का । पश्चिम वायव्य के मध्य—रोदन करने का । उत्तर वायव्य के मध्य—मैथुन का । उत्तर ईशान मध्य—औषधि का । ईशान पूर्व के मध्य—सब वस्तुओं के संग्रह का घर बनाना चाहिये ।

पर हस्त गामी गृह—जिसके प्रारम्भ काल में शत्रु के नवांश में कोई एक ग्रह भी लग्न से ७–१० स्थान में हो तो वह घर एक वर्ष के भीतर ही अन्य के हाथ चला जाता है । परन्तु यह योग तभी होता है जब कि घर बनाने वाले के ब्राह्मण आदि वर्ण के स्वामी ग्रह निर्बल हों यदि ये ग्रह बली हों तो शुभ है । गुरु शुक्र–ब्राह्मण के । मंगल सूर्य–क्षत्रिय के । चन्द्र–वैश्य का । बुध–शूद्र का स्वामी ग्रह है ।

१६ प्रकार के गृह नाम		१	२	३	४	५	६	७	८
घरों के नाम		ध्रुव	धान्य	जय	नंद	खर	कान्त	मनोरम	सुमुख
और फल	फल	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अ०	शुभ	शुभ	शुभ
		९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	गृह नाम	दुर्मुख	उग्र	निपुद	धनद	क्षय	आक्रन्द	विपुल	विजय
	फल	अशुभ	अ०	अ०	शुभ	अ०	अ०	शुभ	शुभ

दिशा अंक	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
	१	२	४	८

दिशा भेद से जितने दरवाजे घर में बनाने हों उनके दिशाओं के अंक जो ऊपर दिये हैं सबको जोड़कर उसमें एक और मिलाना जितनी संख्या हो उस क्रम से ऊपर बताये गृहों के नाम होंगे जिनका शुभाशुभ फल ऊपर दिया है । इनमें १,२,३,४,५,६,१०,१३ क्रम के घर के नाम में २ अक्षर हैं । क्रम ७ के नाम में ४ अक्षर हैं । ८,९,११,१२,१४,१५,१६ घर के नाम में ३ अक्षर हैं । इनका जैसा नाम है वैसा फल है ।

१ ध्रुव—घर के चारों दिशाओं में दरवाजा न हो केवल ऊपर ही खुला हो अर्थात् कोठी के सदृश हो । २ धान्य—पूर्व की ओर दरवाजा हो । ३ जय—दक्षिण का द्वार । ४ नंद—पूर्व दक्षिण । ५ खर—पश्चिम । ६ कांत—पूर्व पश्चिम । ७ मनोरम—दक्षिण पश्चिम । ८ सुमुख—पूर्व दक्षिण पश्चिम । ९ दुर्मुख—उत्तर । १० उग्र—पूर्व उत्तर । ११ निपुद—दक्षिण उत्तर । १२ धनद—पूर्व उत्तर दक्षिण । १३ क्षय—पश्चिम उत्तर । १४ आक्रन्द—पूर्व पश्चिम उत्तर । १५ विपुल—दक्षिण पश्चिम उत्तर । १६ विजय—पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर द्वार ।

देवालय मठ आरम्भ—गृह आरम्भ में जो नक्षत्र कहे हैं वे ही मठ, ठाकुरद्वारा शिवालय आदि के आरम्भ में शुभ हैं । तथा अश्व०, पुन०, श्रवण इन नक्षत्रों के सहित भी देवालय शुभ है ।

द्वार—वर्ग	अ वर्ग	क वर्ग	च वर्ग	ट वर्ग	त वर्ग	प वर्ग	य वर्ग	श वर्ग
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
शत्रु दिशा	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य

पूर्वोक्त वर्ग वाले पूर्व आदि दिशाओं में बली होते हैं। इनसे पाँचवाँ शत्रु होता है। जैसे पूर्व में अ वर्ग बली है इसका पाँचवाँ त वर्ग शत्रु है जिसकी दिशा पश्चिम है। इस कारण अ वर्ग वाले को पश्चिम दिशा में वास करना और पश्चिम में दरवाजा लगाना वर्जित है।

वर्ण क्रम से दरवाजे की दिशा कौन राशि का क्या वर्ण है उस के अनुसार द्वारदिशा

४–८–१२ राशि	(ब्राह्मण)	वर्ण को पूर्व में घर का द्वार हितकर है।		
३–६–१० ,,	(वैश्य)	,, दक्षिण	,, ,,	,,
३–७–११ ,,	(शूद्र)	,, पश्चिम	,, ,,	,,
१–५–९ ,,	(क्षत्रिय)	,, उत्तर	,, ,,	,,

महीनों में दरवाजे की दिशा—कुम्भ के सूर्य में फाल्गुन में–४–५ राशि के सूर्य में–श्रावण में, मकर के सूर्य में–पौष में घर बनाये तो पूर्व या पश्चिम द्वार शुभ है। १, २ राशि के सूर्य में–वैशाख में, ७, ८ राशि के सूर्य में–अगहन में घर बनावें तो उत्तर या दक्षिण शुभ है।

तिथि अनुसार द्वार दिशा—पूर्णिमा से कृष्ण ८ तक–पूर्व दिशा में। कृष्ण ८ से १४ तक–उत्तर। अमावस से शुक्ल ८ तक–पश्चिम। शुक्ल ९ से १४ तक–दक्षिण इन दिशा में बनाया घर का द्वार शुभ नहीं होता। २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ इन तिथियों में बनाया द्वार शुभ होता है। शुक्ल पक्ष में सौख्य और कृष्ण पक्ष में चोरी होती है। वाराह जी ने कहा है कि मार्ग, वृक्ष, किसी मकान का कोण, कूप, नाबदान इन सबके सामने का द्वार शुभ नहीं होता। परन्तु जितनी ऊँची मकान की दीवाल हो उसकी दूनी भूमि छोड़कर यदि कोई वेध कारक मार्ग आदि उक्त वस्तु हो तो दोष नहीं होता। द्वार के प्रसंग में विश्वकर्मा ने कहा है कि देव स्थान, विहार, जलशाला मंडप यज्ञशाला इनमें तो मध्य में और अन्य स्थानों के मध्य स्थान छोड़कर द्वार लगाना चाहिए क्योंकि मकान के मध्य में वास्तु पुरुष का वास रहता है।

द्वार चक्र—अंग	सिर	कोण	बाजू	देहली	मध्य
नक्षत्र	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मी	उजड़ जाय	सौख्य	स्वामी मरण	सौख्य

जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे लेकर वर्तमान नक्षत्र तक गिनकर ४ नक्षत्र सिर अर्थात उत्तरांग में रखे इसमें घर का द्वार लगाया जाय तो घर में लक्ष्मी वास करे। बाद ८ नक्षत्र चारों कोनों में रखे तो घर उजाड़ हो। बाद ८ नक्षत्र शाखा अर्थात बाजुओं में रखे तो रहने वाले को सुख हो। बाद ३ नक्षत्र देहली (चौखट) में रखे तो घर स्वामी का मरण हो। बाद ४ नक्षत्र दरवाजे के मध्य में रखे तो रहने वाले को सुख हो। इस चक्र के अनुसार दरवाजा लगाना शुभ होता है।

अन्य प्रकार	नक्षत्र	४	२	४	२	३	१	४	२	४
कपाट चक्र	फल	धनागम	विनाश	सुख	बंधन	मृत्यु	घाव	शुभ	मंगल	शुभ

सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर फल विचारना।

सूर्य राशि में	सूर्य ४, ५, १०, ११	पूर्व पश्चिम में द्वार बनाना शुभ
द्वार मुख—	,, १, २, ७, ८	उत्तर दक्षिण ,, ,,
	३, ६, ९, १२	इनमें गृह न बनावे। बनावे तो दुःख हो।

द्वार लगाने का मुहूर्त—अश्व०, ३ उत्तरा, हस्त, पुष्य, श्रव०, मृग०, स्वा०, रेव०, रोह० इन नक्षत्रों में द्वार लगाना श्रेष्ठ है

प्लव (पनारा) विचार—दिशा	पूर्व	उत्तर	दक्षिण	पश्चिम	ईशान में
फल	वृद्धि	धन देवे	मृत्यु कारक	धन हानि	शुभ,

पूर्व उत्तर अति वृद्धि कारक है। अन्य दिशा में पनारा निकाले तो अशुभ हानि कारक है।

गृह प्रवेश—४ प्रकार का है (१) नव वधू प्रवेश (२) सुपूर्व प्रवेश (३) अपूर्व प्रवेश (४) द्वन्द्वाभय प्रवेश। (१) नव वधू प्रवेश विवाह प्रकरण में दे चुके हैं (२) विदेश से लौटकर आने का नाम सुपूर्व प्रवेश (३) अपने बनाये नये घर में पहिले-पहल जाने का नाम अपूर्व प्रवेश है (४) शीतोष्ण आदि द्वन्द्व अर्थात जल अग्नि राजादि कृत उपद्रव से भय न होने के लिए अपने या पराये घर में जाने का नाम द्वन्द्वाभय प्रवेश है।

सुपूर्व, अपूर्व प्रवेश मुहूर्त—उत्तरायण तथा ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख इन महीनों में तथा पूर्व द्वार—कृत०, रोह०, मृग०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, श्ले०। दक्षिण द्वार—मघा, पूफा०, उफा०, हस्त, चित्रा, स्वा०, विशा०। पश्चिम द्वार—अनु०, ज्ये०, मूल, पूषा०, उषा० अभि०, श्रव०। उत्तर द्वार—धनि० शत०, पूभा०, उभा०, रेव०, अश्व०, भरणी। इस प्रकार कृतिका आदि लेकर ७-७ नक्षत्र चारों दिशाओं में कल्पित करने पर जो नक्षत्र दरवाजे के सामने पड़ते हैं तथा चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, तीनों उत्तरा में तथा शुक्ल पक्ष में और दशमी तिथि तक, कृष्ण पक्ष में भी, तथा जन्म राशि, जन्म लग्न इन दोनों से ३, ६, १०, ११वीं राशि के लग्न में रहते विदेश से लौट कर पुराने या नये घर में राजा का प्रवेश करना शुभ कहा है यहाँ राजा प्रधान होने से कहा है परन्तु सब मनुष्यों को उक्त मुहूर्त में गृह प्रवेश करना चाहिये।

गृह प्रवेश—उत्तरायण में प्रवेश के दिन वास्तु पूजा और भूत बलि कर गृह प्रवेश करे। चित्रा, अनु०, रेव०, पुष्य, स्वा०, धनि०, श्रव०, मूल० ये नक्षत्र शुभ हैं। रविवार, मंगलवार रिक्ता तिथि वर्जित है। मंगलवार को अश्वनी हो तो गृह प्रवेश वर्जित है। स्थिर लग्न में, जन्म राशि या जन्म लग्न से उपपद (३, ६, १०, ११) लग्न हो, धन, कोण, केन्द्र, पराक्रम तथा लाभ स्थान में शुभ ग्रह हो। ३, ६, ११ घर में पाप ग्रह हो। ४-८ स्थान शुद्ध हो (कोई ग्रह वहाँ न हो) तब गृह प्रवेश शुभ है। जब क्रूर ग्रह से नक्षत्र विद्ध हो तो तीनों प्रकार के गृह (नया, पुराना तथा मरम्मत किया हुआ) वर्जित है। शुक्र पृष्ठ में हो तथा सूर्य बायाँ हो तो पल्लव युक्त कलश व ब्राह्मणों को आगे कर घर में प्रवेश करे।

वाम सूर्य पूर्व द्वार = लग्न से ८,९,१०,११,१२ स्थान में सूर्य होने पर इस प्रकार वाम
विचार दक्षिण ,, = ,, ५,६,७,८,९ ,, ,, ,, सूर्य होता है।
पश्चिम ,, = ,, २,३,४,५,६ ,, ,, ,, इसमें प्रवेश
उत्तर ,, = ,, ११,१२,१,२,३ ,, ,, ,, शुभ है।

अर्थात् पूर्व द्वार वाले को ८, ९ आदि राशि का सूर्य हो तब वह वाम भाग में पड़ता है। इस प्रकार पूर्व द्वार वाले गृह में प्रवेश करने वाले को सूर्य वाम पड़ जाने से अति शुभ फल होता है।

गृह प्रवेश तिथि—पूर्व द्वार वाले धर में = ५, १०, १५ तिथि में प्रवेश शुभ है।
दक्षिण ,, ,, = १, ६, ११ ,, ,,
पश्चिम ,, ,, = २, ७, १२ ,, ,,
उत्तर ,, ,, = ३, ८, १२ ,, ,,

जीर्ण आदि गृह प्रवेश—कार्तिक, अगहन, श्रावण और पूर्वोक्त माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ इन महीनों में और शत०, पुष्य, स्वा०, धनि०, और पूर्वोक्त चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, तीनों उत्तरा, रोह० इनमें तथा पूर्वोक्त लग्न में किसी अन्य के बनाये हुए या पुराने घर में या अग्नि जल राजा इत्यादि के उपद्रव से नष्ट हो जाने पर फिर से मरम्मत किये हुए या बनवाये हुए नये मकान में प्रवेश करना शुभ होता है।

परन्तु यहाँ पूर्वोक्त गृह प्रवेश से विशेष यह है कि शुक्र गुरु का अस्त व बाल वृद्ध अवस्था व सिंह मकर राशि में स्थित गुरु व लुप्त सम्वत्सर आदि काल के दोषों का विचार आवश्यक नहीं है। किन्तु किसी प्रकार की पंचांग शुद्धि देख कर विहित तिथि वार नक्षत्र आदि में वास्तु पूजा करके गृह प्रवेश करना शुभ है जैसा वशिष्ठ जी ने कहा है कि पहले गृह प्रवेश में काल शुद्धि विचारनी चाहिए द्वन्द और सौपूर्त्रिक गृह प्रवेश में नहीं।

गृह प्रवेश में अंग—	१	२	३	४	५	६	७	८
	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	पेंदा	कंठ
	१	४	४	४	४	४	३	३
कुंभ चक्र	नक्षत्र अग्निदाह	घर उजड़	लाभ	लक्ष्मी	कलह	नाश	स्थिरता	स्थिरता
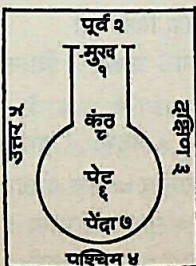
जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे दिन नक्षत्र तक गिने। फिर जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उसे मुख में रखकर क्रमानुसार दिन नक्षत्र जहां पड़े उसका फल १ मुख (पहिला सूर्य नक्षत्र) = अग्नि में जले। २ पूर्व–४ नक्षत्र–घर उजड़ जाय। ३ दक्षिण–४ नक्षत्र–लाभ हो। ४ पश्चिम–४ नक्षत्र–लक्ष्मी प्राप्त। ५ उत्तर–नक्षत्र–झगड़ा हो। ६ मध्य (पेट) में–४ नक्षत्र–विनाश। ७ पेंदा–३ नक्षत्र–धरती की स्थिरता। ८ कंठ–३ नक्षत्र–स्थिरता रहे।

गृह प्रवेश के पश्चात् कर्तव्य—राजा को चाहिये कि विचारे हुए शुभ मुहूर्त में वस्त्र, मंडप, वंदनवार, फूलों की माला वेद ध्वनि इत्यादि शुभ वस्तु संयुक्त अपने घर में प्रवेश करके शिल्पज्ञ, ज्योतिषी पुरोहित को यथा योग्य भेंट देकर सन्मानित करें और पुरवासियों को भी वस्तु देवें।

कुँआ आदि बनवाना

कूप चक्र

(१)

अशुभ ३ ईशान	अशुभ ३ पूर्व	शुभ ३ आग्नेय
उत्तर ३ शुभ	मध्य ३ शुभ	दक्षिण ३अशुभ
वाक्य ३ अशुभ	पश्चिम ३ अशुभ	नैऋत्य ३ शुभ

(१) सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर कूप चक्र बना कर फल विचारना। मध्य—३ नक्षत्र—फल स्वादिष्ट जल। पूर्व—३ नक्षत्र—खंडित जल। आग्नेय—३ स्वाद जल। दणिण ३—जल क्षय। नैऋत्य—३ स्वाद जल। पश्चिम ३—क्षार जल। वाक्य—३ शिला निकले। उत्तर—३ मीठा जल। ईशान—३ क्षार जल।

(२)

ईशान ३अशुभ	पूर्व ३ अशुभ	आग्नेय ३ शुभ
उत्तर ३शुभ	मध्य ३ नक्षत्र शुभ	दक्षिण ३अशुभ
वायव्य ३अशुभ	पश्चिम ३ शुभ	नैऋत्य ३ शुभ

(२) रोहिणी आदि लेकर दिन नक्षत्र तक गिनकर कूप चक्र का फल विचारना। मध्य—३ नक्षत्र—शीघ्र जल स्वादिष्ट हो। पूर्व—३ नक्षत्र—भूमि खंडित करे अर्थात कोई विचार (दरार) पड़े। आग्नेय—३ सुन्दर जल। दक्षिण—३ निर्जल। नैऋत्य—३ अमृत जल। पश्चिम—३ शोभन जल। वायव्य—३ जल को हनै। उत्तर—३ स्वाद जल। ईशान—कड़ुवा या खारा जल और अल्प जल निकले।

(३) मंगल के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर कूप चक्र विचारना

नक्षत्र	१	५	४	३	३	४	३	४
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	रोग	अशुभ	यश	अर्थसिद्धि	जल भंग

(४) चौथा प्रकार राहु नक्षत्र से दिन नक्षक्ष तक गिनकर कूप चक्र विचारना

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

इनके पश्चात् ४ नक्षत्र मध्य में देना पूर्व राहु = शोक करे। आग्नेय = जल संपदा हो। दक्षिण = स्वामी का मरण। नैऋत्य = दुःख प्राप्त हो। पश्चिम = सुन्दर सौभाग्य। वायव्य = जल की वृद्धि। उत्तर = निर्जल। ईशान = जल सिद्धि। मध्य = जल निकले। अपने ही रूप से राहु सदा फल देता है।

कूप मुहूर्त—हस्त, चित्रा, स्वा०, शत०, अनु०, मघा, तीनों उत्तरा, रोह०, इन नक्षत्रों में कुंआ खोदना शुभ है।

कुंआ आदि खुदवाना—अनु०, हस्त०, तीनों उत्तरा, रोह०, धनि०, शत०, मघा, पूषा०, रेव०, पुष्य, मृग० नक्षत्र में पाप ग्रहों के निर्बल रहते और लग्न में गुरु, शुक्र, बुध के रहते लग्न से दशम में शुक्र और जल राशि में चन्द्र हो तब वापी कूप तड़ाग आदि जलाशय का खनन शुभ है। भूमि सुप्त और राहु का भी विचार करे।

जलाशय में	दिशा	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
राहु मुख—	सूर्य राशि	१०,११,१२	१-२-३	४-५-६	७-८-९

घर में कूप खनन

ईशान पुष्टि	पूर्व ऐश्वर्य प्राप्ति	आग्नेय पुत्र नाश
उत्तर सौख्य	मध्य धन नाश	दक्षिण स्त्री नाश
वायव्य शत्रु से पीड़ा	पश्चिम सम्पत्ति	नैऋत्य घर स्वामी मरण

इनमें केवल ४ शुभ स्थान उत्तर, ईशान, पूर्व और पश्चिम है।

तड़ाग चक्र (तालाब)—

स्थान	पूर्व	आग्नेय	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	वारिवाह
नक्षत्र	२	२	२	२	२	२	२	५	५
फल	बहु जल	बहु जल	अमृत जल	स्वाद जल	जल शोष	जल स्थित	धारा जल	छिद्र जल	पूर्ण जल

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर उपरोक्त स्थानों में उपरोक्त क्रमानुसार नक्षत्र रखे। मध्य में छिद्र अर्थात् खण्डित जल। जलस्थ में—पूर्ण जल।

निर्वार (नवार) चक्र—

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	४
फल	जल का सुख	भय	दुःख	दुःख	भय	भय	धन वृद्धि	भय	जल का सुख

राहु के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर उपरोक्त फल विचारें।

जलाशय वगीचा आदि में देव स्थापन—जलाशय एवं वगीचा के प्रतिष्ठा में शुभ लग्नमात्र विचारना ग्रह योग के विचारों की विशेषता नहीं है।

देवस्थापन—उत्तरायण और गुरु, शुक्र, चन्द्र इन तीनों के उदय रहते मृदु, क्षिप्र, चर ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में शुक्ल पक्ष में जिस देवता आदि की प्रतिष्ठा करनी हो उसी के नक्षत्र व तिथि व मुहूर्त में रिक्त तिथि व मंगलवार छोड़कर अन्य दिनों में तड़ाग आदि जलाशय का उत्सर्ग व वगीचा आदि का उत्सर्ग व देवस्थान शुभ है।

अपने तिथि नक्षत्र आदि का अभिप्राय यह है जैसे श्रवण नक्षत्र का स्वामी विष्णु, आर्द्रा का स्वामी शिव आदि है इन नक्षत्रों में इन देवों की स्थापना करना। चन्द्र आदि ग्रहों की पुष्य नक्षत्र में, हस्त में सूर्य की, रेवती में गणेश की। शिव, ब्रह्मा, की पुष्य, श्रवण, आर्द्रा अभिजित में। श्रवण में विष्णु। अनुराधा में कुबेर स्कंद। मूल में दुर्गा। सप्त ऋषि जिन नक्षत्रों में देखे जाते हैं उसमें सप्त ऋषि व्यास आदि की। या पुष्य में सप्त ऋषि आदि की। यक्ष, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गन्धर्व किन्नर, पिशाच गुह्यक सिद्ध आदि रेवती में। जिन श्रवण में, इंद्र कुबेर वर्जित लोकपाल धनिष्ठा में, शेष देव तीनों उत्तरा में रोहिणी में प्रतिष्ठा करना।

देव स्थान की लग्न—सूर्य प्रतिष्ठा सिंह लग्न में, ब्रह्मा—कुंभ। विष्णु—कन्या। शिव—मिथुन। देवी मिथुन, धन, मीन लग्न में। चर लग्न में योगिनी आदि देवियों की स्थिर लग्न में शेष देवता इंद्र आदि की।

पुष्करणी (नदी) बनवाना—पुष्य, अनु०, हस्त, तीनों उत्तरा, धनि०, शत०, रोह० पूषा०, मघा, मृग० नक्षत्र में गोचर में सूर्य शुद्ध हो, शुभ योग, शुभ वार तिथि में क्रूर ग्रह बलहीन हों पूर्ण चन्द्र जलज राशियों में हों, लग्न से दशम में शुक्र हो ९, १२, ४, २, ७ लग्न में, शुभ नवांशों में नदी खुदवाना शुभ है।

वर्षा विचार

नक्षत्र	लिंग	सूर्य या चंद्र नक्षत्र	नक्षत्र	लिंग	सूर्य या चंद्र नक्षत्र	नक्षत्र	लिंग	सूर्य या चंद्र नक्षत्र
१ अश्व०	पुरुष	चंद्र	१० मघा	स्त्री	चंद्र	१९ मूल	पुरुष	सूर्य
२ भर०	,,	,,	११ पूफा०	,,	सूर्य	२० पूषा०	,,	चन्द्र
३ कृति०	,,	,,	१२ उफा०	,,	,,	२१ उषा०	,,	,,
४ रोह०	,,	सूर्य	१३ हस्त०	,,	,,	२२ श्रव०	,,	,,
५ मृग०	,,	,,	१४ चित्रा	,,	,,	२३ धनि०	,,	,,
६ आर्द्रा०	स्त्री	चन्द्र	१५ स्वा०	,,	,,	२४ शत०	,,	सूर्य
७ पुन०	,,	,,	१६ विशा.	नपुंषक	,,	२५ पूभा०	,,	चंद्र
८ पुष्य	,,	,,	१७ अनु०	,,	,,	२६ उभा०	,,	सूर्य
९ श्ले०	,,	,,	१८ ज्ये०	,,	,,	२७ रेवती	,,	चंद्र

नपुंसक नक्षत्र में स्त्री नक्षत्र आवे वायु चले। कहीं-कहीं वृष्टि संभव।

दोनों स्त्री नक्षत्र = मेघ दर्शन। स्त्री + पुरुष नक्षत्र=वर्षा हो।

दिन नक्षत्र और महा नक्षत्र दोनों सूर्य के=वायु चले। दोनों चंद्र के=मेघ नहीं वर्षे।

चन्द्र + सूर्य नक्षत्र=अच्छी वरसा हो। पुरुष + पुरुष=वर्षा न हो।

मेघ नक्षत्र = अश्व०, मृग०, पुष्य, रेव०, श्रव०, मघा, स्वा० इनमें सूर्य प्रवेश करें तो वर्षा अधिक हो।

जल लग्न—२, ४, ७, ८, ११, १२ ये ७ लग्न हैं इनमें सूर्य नक्षत्र मिले तो वर्षा हो।

अन्य मत—दोनों चन्द्र नक्षत्र—वर्षा हो । दोनों सूर्य—हवा चले । चन्द्र + सूर्य = या सूर्य + चन्द्र=सुन्दर वृष्टि हो ।

वर्षा—चैत्र शुक्ल १ से ९ तक यदि मेघ का गर्जन रहे तो आर्द्रा से चित्रा तक रहने से वर्षा होगी । अर्थात् परमा को—आर्द्रा में गर्म रहे । द्वितीया को पुनर्वसु । तृतीया को पुष्य में इत्यादि में वर्षा होगी ।

वृष्टि वाहन—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर ७ का भाग दे—शेष वाहन १ अश्व, २ शशा, ३ वाराह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ दादुर, ७ महिष नाम के अनुसार फल ।

वर्षा—पूष महीने में मूल से भरणी तक, चन्द्र नक्षत्र में बादल न हो तो आर्द्रा से विशाखा तक सूर्य नक्षत्र न वर्षे ।

ग्रह से वृष्टि विचार—शुक्र बुध के उदय अस्त समय—वर्षा हो । जल राशि का चंद्र (कुम्भ मीन का) हो तो—वर्षा हो । पक्ष के अन्त में व संक्रान्ति में—वर्षा हो । बुध शुक्र समीप हो—वहुत वर्षा हो । इन दोनों के बीच में सूर्य हो तो समुद्र पर्यन्त सूख जाय । मंगल जब राशि से चले तो—वर्षा हो । शनि के चलने में—त्रिधा वृष्टि हो । शुक्र पीछे को चले—तो पृथ्वी वर्षा से मुदित हो । सूर्य के आगे मंगल हो तो—जल सूखे । सूर्य के पीछे मंगल हो—पृथ्वी भर में वर्षा हो ।

यात्रा विचार

यात्रा—२ प्रकार की है (१) मनुष्य द्रव्य आदि कमाने तीर्थयात्रा आदि के निमित्त यात्रा करता है यह यात्रा किसी कार्य की सिद्धि के लिए होती है यह साधारण पंचांग आदि की शुद्धि रहने से होती है ।

(२) समर यात्रा को जाना—इसमें राजा की कुण्डली राजयोग आदि विचार कर शुभ लग्न आदि विचार कर होती है । राजा से प्रधान मनुष्य भी गिने जाते हैं ।

यात्रा मुहूर्त पर विचार—यात्रा के विना किसी प्राणी का व्यौहार नहीं चल सकता अच्छे ग्रह की दशा में तथा शुभ मुहूर्त या शकुन में यात्रा करने से विना अधिक परिश्रम किये कार्य की सिद्धि होती है अशुभ मुहूर्त में अशुभ ग्रह की दशा में यात्रा करने से हानि होती है ।

यात्रा के नक्षत्र—हस्त०, मृग०, अनु०, श्रव०, अश्व०, पुष्य, रेव०, धनि०, पुन० ये नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं परन्तु ३, ५, १, ७ तारा यात्रा में वर्जित है ।

यात्रा के मध्यम नक्षत्र—रोह०, उत्तरा, चित्रा, मूल, आर्द्रा, पूषा०, उभा, उषा ।

निंदित नक्षत्र—तीनों पूर्वा	मघा	भरणी	कृत०	चित्रा	स्वा०	विशा	ज्ये०	जन्म नक्षत्र
घड़ी १६	११	७	२१	१४	१४	१४	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण

आर्द्रा	श्ले०	ये नक्षत्र यात्रा में वर्जित हैं परन्तु इनकी आदि की उपरोक्त बतायी हुई घड़ी त्याज्य हैं । चित्रा की अन्त की १४ घड़ी त्याज्य हैं ।
१४	१४	

आवश्यक कार्य में ऊपर बताई घड़ी त्याग कर यात्रा करना ।

दिन के त्रिभाग अनुसार त्याज्य नक्षत्र—दिन के और रात्रि के ३ भाग कर उसके अनुसार वर्जित करना ।

दिन के त्रिभाग	रात्रि के त्रिभाग
१–भाग–तीनों उत्तरा, रोह॰, त्रिशा॰, कृत॰	१–रेव॰, चित्रा, अनु॰
२–भाग–मूल, ज्ये॰, आर्द्रा, श्ले॰	२–तीनों पूर्वा, भर॰, मघा
३–भाग–अश्व॰, अभि॰	३–स्वा॰, पुन॰ धनि॰, शत॰

सर्वकाल में शुभ नक्षत्र—श्रव॰, हस्त॰ पुष्य॰, मृग॰इनमें यात्रा करना सब काल में शुभ है। पुष्य सर्व सिद्धि दायक है जैसे विद्या आरम्भ में गुरु। अनुराधा, हस्त॰, पुष्य अश्वनी दिग्द्वारिक नक्षत्र कहलाते हैं इनमें सब दिशाओं की यात्रा शुभ है इनमें विना चन्द्र दिशा के विचार किये यात्रा करना।

वर्ज नक्षत्र—रोह॰, तीनों उत्तरा, ज्ये॰, शत॰, मूल, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में यात्रा वर्जित है इनमें यात्रा करे तो मनुष्य कभी लौट कर नहीं आता ये मध्यम नक्षत्र हैं शनिवार को रोहणी में यात्रा कभी नहीं करना।

वार अनुसार गमन फल—इतवार में गमन करे—मार्ग में क्लेश हो। सोमवार—वंधु और प्रिय दर्शन। मंगल—अग्नि चोर भय, ज्वर। बुध—द्रव्य और सुख। गुरु—आरोग्य सुख। शुक्र—लाभ और शुभ फल। शनि—वंधन रोग मरण।

वार दोष परिहार—रात्रि में—सूर्य, गुरु, शुक्र वार दोष नहीं लगता।
दिन में—चन्द्र, मंगल, शनिवार का दोष नहीं लगता।
दिन रात में—बुधवार का दोष लगता है वर्जित हैं।

दिशा अनुसार	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
वार दोष	सोमवार	सोम	गुरुवार	सूर्य	सूर्य	मंगल	मंगल	मंगल
दिशा शूल	शनि	गुरु		शुक्र	शुक्र		बुध	शनि

इन दिशाओं में इन दिनों यात्रा न करे।

यात्रा में वार अनुसार वस्त्र—

रविवार	बुध	शनि	गुरु शुक्र	मंगल	सोमवार	गमन में
नीला	पीत	काला	श्वेत	रक्त	चित्र	धारण करें

तिथि अनुसार त्याज्य लग्न—तिथि नन्दा-लग्न ५,७,८, १०। भद्रा-९-१२-जया-३, ६। रिक्त-१, ४। पूर्णा-२-११ लग्न। इन तिथियों में यात्रा की ये लग्न त्याज्य हैं। इनमें यात्रा नहीं करना और जन्म लग्न, जन्म चन्द्र की राशि में भी यात्रा नहीं करना।

यात्रा में वर्जित तिथि—६, १२, ८, शुक्ल १, १५, ३०, ४, ८, १४ ये तिथियाँ यात्रा में शुभ नहीं हैं। इनको छोड़कर अन्य तिथि में यात्रा करें।

तिथि नक्षक्ष	दिशा	तिथि	वार	नक्षत्र	समय(काल शूल)
आदि वर्जित	पूर्व	१– ९	शनि सोम	श्रव॰, ज्ये॰	सूर्योदय (प्रातः)
	दक्षिण	५–१३	गुरुवार	धनि॰ से ५ नक्षत्र	मध्यान
	पश्चिम	६–१४	रवि शुक्र	रोह॰	सायंकाल
	उत्तर	२–१०	मंगल बुध	उफा॰, हस्त॰	मध्य रात्रि

यनमें यात्रा करना वर्जित है। नक्षत्र और दिन भी हो तो खराब है।

अन्य मत—

दिशा	नक्षत्र	वार	
पूर्व	ज्येष्ठा	सोम, शनि	जो मनुष्य अपना विजय तथा जीवन चाहता है तो इनमें यात्रा न करे। यदि दोनों वार और नक्षत्र हो तो बहुत हानिकर होते हैं।
दक्षिण	पूभा०	गुरुवार	
पश्चिम	रोह०	रवि, शुक्र	
उत्तर	भर०	मंगल, बुध	

यात्रा में	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण	काल शूल या
वर्जित काल	ऊषाकाल	गौधूलि	अर्द्ध रात्रि	अभिजित समय	कालवेला।

इन दिशाओं में ये समय छोड़कर दूसरे समय में यात्रा करना अर्थात् प्रातःकाल पूर्व दिशा छोड़ कर अन्य दिशा में यात्रा करना। गौधूलि वेला में पश्चिम नहीं जाना अन्य दिशा में जा सकते हो। आधी रात को उत्तर छोड़ कर अन्य दिशा में जाना। अभिजित मुहूर्त में दक्षिण छोड़ कर अन्य दिशा में जा सकते हो।

अष्टम मुहूर्त जिसे अभिजित या कुतप कहते हैं उसमें यात्रा करने से शुभ होता है परन्तु उसमें दक्षिण दिशा को जाना वर्जित है। जब मध्याह्न के समय सूर्य अभिजित मुहूर्त में होता है तब भद्रा व्यतीपात तथा दुष्ट ग्रहों के दोष को शांत कर शुभ फल देता है। जब किंचित संध्या काल हो जावे तथा कोई-कोई तारे दिखाई देने लगें तो विजय नाम मुहूर्त होता है। इसमें सब काम सिद्ध होते हैं। जब नवम लग्न आदि का बल न दिखे तो उषाकाल अभिजित तथा गौधूलि सदा शुभ होते हैं। परन्तु उषाकाल में पूर्व, गौधूलि में पश्चिम, अभिजित में दक्षिण की यात्रा वर्जित है। जब इससे भी अधिक आवश्यकता हो तो काल होरा वारवेला से देखना चाहिये।

विजय दशमी प्रशंसा—आश्विन मास की शुक्ल १० तिथि विजया संज्ञक है। यह यात्रा करने वालों के सम्पूर्ण काम सिद्ध करने वाली है। यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो अति श्रेष्ठ है। ऐसी प्रथा है कि उस दिन यात्रा करने के लिए मुहूर्त आदि का विचार नहीं करते। इस दिन राजा की यात्रा विजय या संधि कराने वाली है।

यात्रा में	लग्न	९, १, ७	१०, ११, ८	५, ४, २	६, १२, ३
लग्न विचार		कार्य में विलंब	मृत्यु कारक	कार्य सिद्ध	शुभ अन्न धन प्रद

चर या द्विस्वभाव लग्न में यात्रा करना। स्थिर लग्न में कभी यात्रा नहीं करना इसमें यात्रा से कुशल नहीं है। यात्रा में कुंभ लग्न या कुंभ का नवांश सदा वर्जित करना। मीन लग्न में यात्रा करने से दुःख होता है मीन के नवांश या मीन लग्न में यात्री भटक जाता है।

जन्म लग्न या जन्म राशि इन दोनों के स्वामी शुभ ग्रह जिस लग्न में हो उनमें की हुई यात्रा शुभ होती है। जन्म लग्न या जन्म राशि से आठवीं राशि के लग्न में रहने या अपने शत्रु की राशि जन्म लग्न या जन्म राशि से छठवीं राशि के लग्न में रहते या इन राशियों के स्वामी लग्न में हों तो यात्रा करने वाले राजा की यात्रा मृत्यु देने वाली होती है।

मीन कुंभ को छोड़ कर अन्य लग्न का चन्द्र वर्गोत्तम नवांश में हो तो यात्रा वांछित फल देने वाली होती है।

यात्रा सिद्धि—राजाओं को ब्राह्मण चोरों की शेष मनुष्यों की यात्रा सिद्ध
योग से नक्षत्र से शकुन से मुहूर्त से होती है

सह गमन वर्जित—पिता पुत्र एक साथ यात्रा न करें। दो सहोदर भाई एक साथ यात्रा न करें। ९ स्त्रियाँ या ३ ब्राह्मण एक साथ यात्रा न करें।

यात्रा का शुभाशुभ समय जानना—जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें। शेष १ गर्दभ—अर्थ नाश। २ घोड़ा—धन लाभ। ३ हस्ती—लक्ष्मी। ४ मेढ़ा—मरण। ५ जंबुक—स्वल्प लाभ। ६ सिंह—सब कार्य सिद्ध। ७ काग—निष्फल। ८ मोर—सुख प्राप्ति। ९—हंस—सर्व सिद्धि।

अंक मुहूर्त—गमन तिथि × १५ ÷ ७ = शेष० = पीड़ा यदि तीनों में अंक बचे
वार × ३ ÷ ८ = शेष० = बहुत भय तो विजय हो।
नक्षत्र × ४ ÷ ९ = शेष० + मरण

अन्य प्रकार—जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन शुक्ल पक्ष की परिवा से लेकर जो तिथि हो, अश्वनी से लेकर जो नक्षत्र हो रविवार से गिनकर जो वार संख्या हो। इन तीनों संख्या का योग कर ३ स्थान में रखे पहिले स्थान में ७ का दूसरे में ८ का तीसरे में ३ का भाग दें। इन तीनों स्थानों में से प्रथम स्थान में शून्य रहे तो यात्री को बहुत दुःख हो। दूसरे स्थान में शून्य रहे तो धन हानि हो। तीसरे स्थान में शेष शून्य रहे तो यात्री की मृत्यु हो। तीनों स्थानों में अंक बचे तो सुख प्राप्त हो।

दक्षिण में प्रसिद्ध अडल भ्रमर दोष—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनकर ७ का भाग दें। शेष २–७ महाडल दोष। शेष ३–६ भ्रमण दोष होता है। ये दोनों दोष यात्रा में वर्जित हैं। महाडल = ताड़ना। शेष १, ४, ५ में आडल नहीं होता गमन में शुभ है।

हिंवराख्य (हिंवर)—सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक गिनकर वर्तमान तिथि जोड़ कर ९ का भाग दें। शेष ७ बचे तो हिंवराख्य योग होता है इसमें यात्रा करना शुभ है। अन्य मत से शेष ३ रहे वह फावड़ मुहूर्त भी यात्रा में शुभ है।

अन्य मत—सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या + पक्ष + तिथि + वार इनका योग÷९=शेष ७ हिम्वर योग यात्रा में शुभ है।

यात्रा का शुभ समय—गर्ग मत—रात्रि की पिछली ५ घड़ी उषाकाल में गमन शुभ। वृहस्पति—शकुन। अंगिरा मत से—मन का उत्साह शुभ। जनार्दन के मत से—ब्रह्म वाक्य शुभ है।

यात्रा में त्रिनवमी दोष विचार—घर में प्रवेश तिथि, वार, नक्षत्र से नवम तिथि वार नक्षत्र में और यात्रा की तिथि वार नक्षत्र से नवम तिथि वार नक्षत्र में गृह प्रवेश न करें। प्रवेश के दिन से नवम दिन प्रमाण नवमी है और यात्रा के दिन से नवम दिन प्रवेश नवमी कही जाती है। ये तीनों यात्रा में निषिद्ध हैं अर्थात् प्रवेश के उपरांत नवें दिन नवें वार नवें नक्षत्र में यात्रा कभी नहीं करना।

यात्रा वर्जित—यज्ञोपवीत, देव प्रतिष्ठा, विवाह, होलिका उत्सव, और जनन-मरण-आशौच इन सबके समाप्त हुए बिना यात्रा न करे। ऐसे ही अकाल (कुसमय) में, पूष आदि ४ मास में विजली चमकने पर मेघों के गर्जन पर, वर्षा होने पर कुहरा पड़ने पर ७ दिन तक यात्रा न करे।

यात्रा में निषिद्ध—अयन शूल, नक्षत्र शूल, मास शूल, योगिनी, समतिथि शूल, काल शूल, सन्मुख, बुध, शुक्र, शुक्र की वृद्धता क्षीणता आदि और ललाट आदि योग, परिघ दंड दोष आदि योग यात्रा में वर्जित हैं।

अयन शुद्धि—जव सूर्य चंद्र दोनों उत्तरायण में हों तो उत्तर पूर्व की यात्रा करे ये दक्षिणायन में हों तो पश्चिम दक्षिण की यात्रा करे। यदि सूर्य चंद्र का अयन भिन्न हो अर्थात् एक उत्तरायण दूसरा दक्षिणायन हो तो कहे हुए क्रम से सूर्य के अयन की दिशा की यात्रा दिन में करे। चंद्र के अयन में यात्रा रात्रि में करे। इससे अन्यथा करने वालों को हानि होती है।

मास भेद से यात्रा—सूर्य राशि १, ५, ९ में यात्रा उत्तम, २, ३, ६, ७, १०, ११ के सूर्य में मध्यम और ४-८-१२ के सूर्य में अशुभ। यात्री बहुत दिन में लौटे। यह अपनी राशि से सूर्य का विचारना।

तारा—जन्म नक्षत्र से यात्रा के दिन तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें ९ का भाग देना शेष १, ३, ५, ७ की तारा यात्रा में निषिद्ध है।

दिशा अनुसार	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	इन पर चढ़ कर दिशा अनुसार
वाहन यात्रा	हाथी	रथ	घोड़ा	पालकी	यात्रा करे।

चन्द्र वास—दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राशि अनुसार इन दिशाओं में
राशि	१-५-९	२-६-१०	३-७-११	४-८,१२	चंद्र का वास रहता है।

सन्मुख चंद्र = अर्थ लाभ। दहिने = सुख सम्पदा। पीछ = शोक सन्ताप। बाँये = धन क्षय। मान लो आज मेष का चंद्र है यदि पूर्व दिशा की यात्रा की जाय तो सम्मुख होगा। पश्चिम यात्रा की जाय तो पीठ में होगा। उत्तर यात्रा में चन्द्र दक्षिण होगा। दक्षिण यात्रा में चन्द्र वाँये होगा। सन्मुख चन्द्र शुभ है। पीठ या वाम अशुभ है। अति आवश्यक होने पर वाम चन्द्र भी ले सकते हो। परन्तु पृष्ठ का चन्द्र सदैव वर्जित करना।

सन्मुख चन्द्र का माहात्म्य—करण वार संक्रांति, तिथि, कुलिक, याम, यामार्द्ध शनि, राहु, केतु, बुध, गुरु इत्यादि के सम्पूर्ण दोषों को सम्मुख चन्द्र नाश करता है।

लग्न की वास दिशा—यह चन्द्र सदृश है जैसे पूर्व में १, ५, ९ राशि आदि। जिस दिशा की यात्रा की जाय उस दिशा में सन्मुख लग्न = विजय, दाहिने बाँयें मध्यम, पीछे = हानि कारक।

वार दोष
दिशा शूल
चक्र
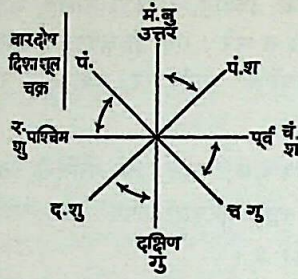
पूर्व = चंद्र शनिवार। दक्षिण = गुरुवार। पश्चिम=सूर्य शुक्र। उत्तर= बुध मङ्गलवार। ईशान = मङ्गल शनि। आग्नेय=सोम, गुरु। नैऋत्य= रवि शुक्र। वायव्य = मङ्गल शनि उस दिन इन दिशाओं में यात्रा न करे।

रात्रि की यात्रा में गुरु शुक्र रवि का वार दोष नहीं होता। दिन को यात्रा में चन्द्र शनि मङ्गल का वार दोष नहीं होता। परन्तु दिन रात दोनों में बुध का नवांश वर्जित करना। दिशा शूल दिन और रात्रि में वर्जित करना परन्तु उपरोक्त परिहार आवश्यक होने पर बताया है।

नक्षत्र शूल—	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	ये यात्रा में वर्जित हैं।
	ज्येष्ठा	अश्व	रोहिणी	उफा०	
अन्य मत	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	ये नक्षत्र महाशूल हैं।
	श्रवण	पूभा	पुष्य	हस्त	
	ज्येष्ठा	अश्व	रोहिणी	उफा०	यात्रा में त्याज्य हैं।

योगिनी—दिशा	पूर्व	उत्तर	आग्नेय	नैऋत्य	दक्षिण	पश्चिम	वायव्य	ईशान
तिथि	१,९	२,१०	३,११	४,१२	५,१३	६,१४	७,१५	८,३०

यात्रा में वहस में जुआ खेलने में संग्राम में सन्मुख योगनी वर्जित है। योगिनी बांये = सुख मिले। पीठ = अभीष्ट कार्य सिद्ध। दक्षिण = धन नाश। सन्मुख = मृत्यु।

काल राहु—वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
काल पाश कालदिशा	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व
पाशदिशा	दक्षिण	आग्नेय	पूर्व	ईशान	उत्तर	आग्नेय	दक्षिण

रात में विपरीत काल के साम्हने पाश होता है। रात्रि में काल के स्थान में पाश और पाश के स्थान में काल (काल राहु) समझना। काल के सन्मुख पाश रहता है। जैसे दिन का दिशा काल रवि को उत्तर में, रात्रि को दक्षिण में होगा। रवि का पाश दिन में दक्षिण में है तो रात को उत्तर में होगा। यात्रा और युद्ध में सन्मुख काल और पाश वर्जित हैं। काल दक्षिण शुभ। पाश बाईं ओर शुभ।

काल वेला—उत्तर—दिन के पहले पहर में। पूर्व—दूसरे पहर मध्याह्न। दक्षिण—तीसरे पहर। पश्चिम—अर्द्ध रात्रि में गमन करे।

ललाट योग दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वाय०	उत्तर	ईशान
स्थान	लग्न	११-१२	१०	८-९	सप्तम	५-६	चौथा	२,३ घर
स्वामी	सूर्य	शुक्र	मङ्गल	राहु	शनि	चन्द्र	बुध	में गुरु

इन योग में इन दिशाओं में यात्रा नहीं करना ये ललाट कहे जाते हैं।

ललाट में	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
फल	अग्नि भय	व्याधि	खजाना नाश	शत्रु से पराजय	सेवा का नाश	इन सब फलों को देता है।	मृत्यु

दिशा का स्वामी ललाट में हो या दिग्शूल युक्त हो तो यात्री का वध या बन्धन हो। केन्द्र में हो तो धन और जय देता है।

ललाट योग
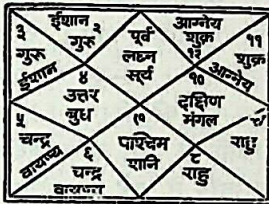
दिग्वल

लग्न—पूर्व—बुध, गुरु

सप्तम—पश्चिम शनि

दशम—दक्षिण—सूर्य, मङ्गल

चतुर्थ—उत्तर—शुक्र, चन्द्र

जिस दिशा का स्वामी ललाट में हो या दिग्वल से युक्त हो तो यात्री का वध या बन्धन हो।

परिध दण्ड दोष
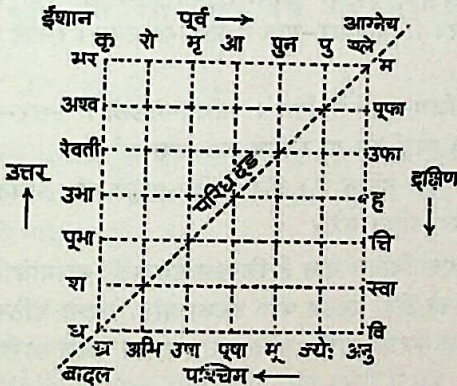
उत्तर, पूर्व दिशा के नक्षत्रों में दक्षिण पश्चिम की यात्रा नहीं करना और दक्षिण-पश्चिम के नक्षत्रों में उत्तर-पूर्व की यात्रा नहीं करना। यात्रा में इस प्रकार परिघ दण्ड का उल्लंघन नहीं करना। वायव्य और अग्नि कोण में परिघ दण्ड होता है।

पूर्व में आग्नेय शामिल हैं। दक्षिण में—नैऋत्य। पश्चिम में—वायव्य। उत्तर में—ईशान शामिल है।

परिघ दण्ड का अपवाद—राजा को चाहिये कि पूर्व कही रीति से पूर्व दिशा के नक्षत्रों में अग्नि कोण की यात्रा करे ऐसे ही और मानना अर्थात् दक्षिण में नैऋत्य कोण की यात्रा करे। पश्चिम में—वायव्य कोण। उत्तर—ईशान। पूर्व में आग्नेय कोण का यात्रा करे। अत्यन्त आवश्यक हो तो दिशाशूल छोड़कर परिघ दण्ड का उल्लंघन करके यात्रा करे। यदि दिग्वल शुद्ध हो अर्थात् मेषादि ४-४ राशियाँ पूर्वादि चारों दिशाओं की स्वामिनी हैं। इस क्रम से यदि लग्न सम्मुख पड़ती हो और लग्न से अष्टम आदि स्थानों में कोई अनिष्ट ग्रह न हो। मघा श्रवण नक्षत्र में पूर्व यात्रा आवश्यक हो तो मेष सिंह या धन लग्न में यात्रा करे।

परिघ का अन्य अपवाद—अनु०, हस्त०, पुष्य०, अश्व० इन नक्षत्रों में सब दिशाओं की यात्रा शुभ है। केन्द्र में स्थित वक्री ग्रह और लग्न में स्थित वक्री ग्रह का षडवर्ग और वक्री ग्रह का दिन ये सब यात्रा में निषिद्ध है।

दोहद—यात्रा में अनिवार्य कार्य से बाहर जाना हो, उस समय दिशा, वार, तिथि का दोष हो तो उस दोष के परिहार के लिए कुछ पदार्थों के भोजन से दोष निवृत्ति हो जाती है इसी को दोहद कहते हैं।

तिथि दोहद—१ तिथि–आक का पत्ता। २–चावल की धोवन। ३–घृत। ४–हलुआ या लपसी या इमली या जव का मांड। ५–हविष्य अन्न। ६–सुवर्ण का धोया जल। ७–पुआ। ८–खट्टा निम्बू या अनार का फल। ९–जल या कमल का जल। १०–गौमूत्र। ११–यव या यव का भात। १२–दूध की खीर। १३–गुड़। १४–रक्त का स्मरण या स्पर्श। १५-३०–मूंग। यदि किसी को कोई खाद्य पदार्थ न मिले तो उसका स्मरण या दर्शन शुभ होता है। उस तिथि में कहे हुए दोहद का भक्षण या स्मरण या स्पर्श या दान कर यात्रा करे तो कार्य सिद्ध हो।

वार दोहद—रविवार–दही में शक्कर और मेवा या घी मिलाकर, या घी या शक्कर। सोम–दूध या खीर। मङ्गल–गुड़ या कांजी। बुध–तिल या पका दूध। गुरु–दही। शुक्र–कच्चा दूध या जव। शनिवार–भात में तिल या उड़द। इनको भक्षण कर यात्रा करे तो कार्य सिद्ध हो।

दिशा दोहद—पूर्व–घी। दक्षिण–भात में तिल। पश्चिम–मछली। उत्तर–दूध। जिसका खाद्य मछली नहीं है। वह स्पर्श कर या स्मरण कर यात्रा करे।

पूर्व की यात्रा में ३ दिन तक दूध वर्जित है। और ५ दिन पहिले क्षौर वर्जित है। तथा शहद तेल यात्रा के दिन अवश्य वर्जित करे।

नक्षत्र दोहद—इस दोहद में एक विचित्र बात है कि कुछ पशु पक्षी का मांस भक्षण बताया है। जो मांसाहारी हैं उनको ठीक अवसर पर इसका मांस मिलना कठिन है। इस कारण इन पशु पक्षी का स्मरण कर लेना ही उचित है। इनका केवल स्मरण कर यात्रा करना चाहिये।

(१) अश्व = पके हुये खड़े उड़द। (२) भरणी = तिल मिले चावल। (३) कृत = उड़द। (४) रोह = गौ का दही। (५) मृग = गौ का घी। (६) आर्द्रा = गौ का दूध। (७) पुन० = हरिण का मांस। (८) पुष्य = हरिण का रक्त। (९) श्लै० = खीर। (१०) मघा = चाष (नील कंठ) पक्षी का मांस। (११) पूफा० = मृग का मांस। (१२) उफा० = शशा का मांस। (१३) हस्त = साठी चावल का भात। (१४) चित्रा = कुमकुम (अनाज)। (१५) स्वा = पुआ। (१६) विशा० = अनेक प्रकार के पक्षियों का मांस। (१७) अनु = सुन्दर फल। (१८) ज्ये० = कछुआ का मांस। (१९) मूल = सारिका का मांस। (२०) पूषा = मोर का मांस। (२१) उषा = सेही का मांस। (२२) अभि = मूंग आदि हविष्यान्न। (२३) श्रव० = खिचड़ी। (२४) धनि० = मूंग भात। (२५) शत० = यव का पिशान। (२६) पूभा = मछली का भात। (२७) उभा =

अनेक प्रकार का पका अन्न (त्रितान्त)। (२८) रेवती = दही भात। आवश्यक कार्य में भक्षाभक्ष का विचार कर जिस नक्षत्र में जो दोहद कहा है। उसका भक्षण करे, देखे, या उनका स्मरण करने के बाद यात्रा करे।

घात विचार

राशि	मेष १	वृष २	मिथुन ३	कर्क ४	सिंह ५	कन्या ६	तुला ७	वृश्चिक ८	धन ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात तिथि	नंदा १,६ ११	पूर्णा ५,१० १५,३०	भद्रा २,७ १२	भद्रा २,७ १२	जया ३,८ १३	पूर्णा ५,१० १५,३०	रिक्ता ४,९ १४	नंदा १-६ ११	जया ३-८ १३	रिक्ता ४-९ १४	जया ३-८ १३	पूर्णा ५,१० १५,३०
घातचंद्र स्थान	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु.	मूल	श्रव.	शत.	रेवती	भर.	रोह.	आर्द्रा	श्ले०
,,काल चंद्र	४	८	३	१०	१२	९	६	१२	११	७	५	४

अन्य मत—तुला की घात लग्न ९ और नक्षत्र उषा।

घात चन्द्र पर विचार—यात्रा, युद्ध, मृगया आदि में वर्जित है। अन्यत्र विवाह आदि में वर्जित नहीं है।

तीर्थ यात्रा, विवाह अन्नप्राशन, उपनयन आदि मङ्गल कार्य में घात चन्द्र का विचार नहीं करना। मेष राशि वाले को पहिला तुला राशि वाले को तीसरा इत्यादि प्रकार से जैसा ऊपर बताया है। चन्द्र देखकर विचारना। घात तिथि, घात वार, घात नक्षत्र का निषेध केवल यात्रा में हैं। शेष कार्यों में शुभ है।

क्षुधित राहु दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैऋत्य
किस यामार्द्ध में	प्रथम	२	३	४	५	६	७	८

परन्तु दक्षिण भाग में स्थित सूर्य विचार कर गमन करे तो तिथि नक्षत्र आदि का दोष जाता रहता है।

याम राहु विचार	दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैऋत्य
	दिन प्रहरार्द्ध	॥	१	१॥	२	३	३	३॥	४
	रात्रि प्रहरार्द्ध	४॥	५	५॥	६	६॥	७	७॥	८

आधे २ प्रहर के पूर्वादि चौथी-चौथी दिशा में राहु उल्टा चलता है। वह युद्ध यात्रा में दाहिने राहु जीत कराता है। तथा पीछे सामान्य है। परन्तु सन्मुख और बांये मृत्यु दायक है।

—→ —→ —→

पंथा राहु धर्म मार्ग १ अश्व. ८ पुष्य ९ श्ले. १६ विशा. १७ अनु. २४ धनि. २५ शत.
विचार अर्थ मार्ग २ भर. ७ पुन. १०मघा १५ स्वा. १८ ज्ये. २३ श्रव. २५ पूभा.
काम मार्ग ३ कृत. ६ आर्द्रा ११पूफा.१४ चित्रा १९ मूल. २२ अभि. २७उभा.
मोक्ष मार्ग ४ रोह. ५ मृग. १२उफा.१३ हस्त. २० पूषा. २१ उषा. २८ रेव.

—→ —→ —→

फल—धर्म मार्गी में सूर्य रहते यदि चन्द्र अर्थ मार्गी या मोक्ष मार्गी हो तो शुभ है
अर्थ ,, ,, ,, धर्म ,, ,, ,, ,,
काम ,, ,, ,, अर्थ या धर्म ,, ,, ,,
मोक्ष ,, ,, ,, अर्थ या धर्म मार्गी हो तो शुभ है।

इनके विपरीत अशुभ है।

पंथा राहु विचार—यात्रा में गमन करने का फल।

(१) धर्म मार्गी सूर्य और अर्थ मार्गी चंद्र =मार्ग में शत्रु भय
,, ,, ,, धर्म ,, ,, =संहार भय हानि
,, ,, ,, काम ,, ,, =विग्रह दारुण और चोर भय
,, ,, ,, मोक्ष ,, ,, =गृह लाभ और मार्ग सुख
(२) अर्थ मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चन्द्र =लाभ सदा सुखी लक्ष्मी प्राप्त
,, ,, ,, अर्थ ,, ,, =कार्य पहिले सिद्ध पीछे भंग हो
,, ,, ,, काम ,, ,, =सब काम सिद्ध
,, ,, ,, मोक्ष ,, ,, =भूमि लाभ हर्ष युक्त सुख मार्ग में स्थिरता
(३) काम मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चन्द्र =राजसम्मान हाथी घोड़ा भूमिलाभ
,, ,, ,, अर्थ ,, ,, =कार्य सिद्ध विघ्न नाश
,, ,, ,, काम ,, ,, =कार्य नाश भारी विग्रह
,, ,, ,, मोक्ष ,, ,, =राजा से लाभ सुवर्ण लाभ
(४) मोक्ष मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चन्द्र =सर्व सिद्ध हेम लाभ
,, ,, ,, अर्थ ,, ,, =कार्यनिष्फल राजा चोर शत्रु का भय
,, ,, ,, काम ,, ,, =जय हो सब काम सिद्ध हो।
,, ,, ,, मोक्ष ,, ,, =दारुण विग्रह और विघ्न।

यात्रा में युद्ध में विवाह में नगर आदि प्रवेश और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तु के लेन देन में राहु मार्ग में सुखदायक होता है।

काल विचार—काल ८ हैं। उनमें गमन की जो तिथि हो उसको और काल के अंक को मिलाकर उस में ८ का भाग दें जो अंक बचे उस दिशा में वह काल का नाम जानना। प्रत्येक काल के नीचे अंक दिये हैं वह काल किस दिशा में हो उसमें तिथि जोड़ कर ८ का भाग देने से जो अंक बचे उस दिशा में वह काल होगा पूर्व दिशा को

आदि लेकर ८ दिशा हैं उनमें किस दिशा में काल होगा प्रगट हो जायगा । ८ का भाग देने से जो शेष बचे उससे यहां दिये क्रम से काल का नाम जानना ।

काल नाम	१	२	३	४	५	६	७	८
	काल	पल	पातक	लोहपात	वड़वानल	खंग	कवच	क्रांति
	३०	२५	६	१०	१	८	४	
कहाँ शुभ	पृष्ठ भाग में	सन्मुख भाग	पृष्ठ भाग	पृष्ठ भाग	पृष्ठ भाग	अग्र भाग में	वाम भाग	दक्षिण भाग

इस प्रकार दिशा विचार कर उस दिशा में गमन करे तो शुभ होगा ।

गोरख पद्धति से तिथि चक्र

पूष	माघ	फा०	चैत्र	वैं०	जेठ	अ०	सा०	भादो	क्वार	का०	अ०	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भय	धन लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य फल	निर्धन	निर्धन	मिश्र निधन धनी
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्य क्लेश	दु:ख	इष्ट लाभ	धन
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सुख	मंगल	धन लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्रव्य लाभ	धन	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मरण	धन लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्य लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश लाभ	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सुख	लाभ	कार्य सिद्ध	कष्ट
१०	११	१२.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्ट से सिद्धि	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	भरण	लाभ	द्रव्य लाभ	शून्य फल
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य फल	सुख	मरण	अति कष्ट

यहाँ ३=१३ । ४=१४ । ५=१५ तिथि जानना ।

इससे मास तिथि और दिशा के विचार से यात्रा में शुभाशुभ विचारना ।

मुछंदर गोरखनाथ कृत चौपहरा मुहूर्त

पूष	माघ	फागुन	चैत्र	वैशाख	जेठ	अषाढ़	सावन	भादों	क्वार	कार्तिक	अगहन	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	तिथि	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अर्थ लाभ	सौख्य	अति सुख	राज पद	१	सुख	क्लेश	शुभ	गमनार्थं
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भला न हो	क्लेश	विघ्न	अति सुख	२	दुःख	निष्ट	विघ्न	मध्यम
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थ प्राप्ति	राज पद	अति सुख	विघ्न	३	द्रव्य क्लेश	दुःख	अर्थ प्राप्ति	धन प्राप्त
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश	अशुभ	कार्य सिद्ध	अति भय	४	लाभ	सुख	मंडल	धन लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अर्थ लाभ	मित्र लाभ	शत्रु क्षय	कार्य सिद्ध	५	लाभ	धन लाभ	धना-गम	सुख ले
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	संकट	क्लेश	सर्व सुख	कर्ज देना	६	शून्य	लाभ	मित्र लाभ	अर्थ गवन
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	विलय	अर्थ प्राप्ति	यम-घंट	सर्व सुख	७	लाभ	कष्ट	द्रव्य लाभ	सुख प्राप्त
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यमघंट	अशुभ	सर्वसुख	यमघंट	८	कष्ट	सुख	क्लेश	सौख्य
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थ लाभ	अशुभ	सुख से आ	सर्व सुख	९	सुख	लाभ	कार्य सिद्ध	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	चिंता	चिंता	कार्य सिद्ध	सुख सेआ	१०	क्लेश	दुःख	अर्थ गमन	धन प्राप्त
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विग्रह	विघ्न	सुख	सुख	११	मृत्यु	लाभ	द्रव्य नाश	मृत्यु प्रद
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मृत्यु	मृत्यु	अशुभ	कार्य सिद्ध	१२	सुख	मृत्यु	अशुभ	कष्टप्रद

इसमें तिथि ३ = १३
कृष्ण पक्ष = ४ = १४
शुक्ल पक्ष ५ = १५

इस चक्र के अनुसार मास तिथि प्रहर दिशा आदि विचार कर यात्रा करे तो चक्र में बताये अनुसार फल होगा। इसके अनुसार यात्रा करने से चन्द्र बल, भद्रा योगिनी काल वास घात तिथि धात नक्षत्र घात चन्द्र व्यतीपात संक्रांति आदि अनेक कुयोगों के दोष नहीं होंगे। अमावस्या के दिन गमन न करें फल अच्छा न होगा।

राहु काल नल चक्र

जिस नक्षत्र राहु रहता है। वह नक्षत्र कर्तरी नक्षत्र से युक्त १३ नक्षत्र जीव पक्ष हैं। कर्तरी से आगे योग्य नक्षत्र १३ मृत पक्ष के हैं। कर्तरी १५ वां नक्षत्र ग्रस्त हैं। यहाँ राहु स्वाती पर हैं। इस कारण स्वाती नक्षत्र कर्तरी हुआ।

जीव पक्ष—विशा०, अनु०, ज्ये०, मूल, पूषा, उषा, अभि०, श्रव०, धनि०, शत०, पूभा, उभा रेवती ये १३ नक्षत्र जीव पक्ष के हैं।

मूल पक्ष—चित्रा, हस्त, उफा०, पूफा०, मघा, श्ले०, पुष्य, पुनर, आर्द्रा, मृग, रोह०, कृत, भरणी ये १३ मृत पक्ष के हैं।

ग्रस्त—कर्तरी से १५ वां नक्षत्र अश्व० है वह ग्रस्त हुआ। जीव पक्ष शुभ है। मृत पक्ष अशुभ है। मृत पक्ष से ग्रस्त शुभ है। और ग्रस्त से कर्तरी शुभ है। मृत पक्ष में सूर्य हो तो यात्रा करने से युद्ध में जय। मृत में चन्द्र जीव में सूर्य हो तो पराजय हो। दोनों सूर्य चन्द्र जीव में हो तो यात्रा शुभ है। मृत में सूर्य चन्द्र कष्ट दायक यात्रा अति अशुभ। जीव में चन्द्र तो युद्ध में जाने वाले अर्थात् यात्री की जय। सूर्य जीव में हो तो स्थाई की जय हो। मृत पक्ष से ग्रस्त संज्ञक नक्षत्र ऐसा शुभ है जैसे एक दिन में मरने वाले से २ दिन में मरने वाला अच्छा है।

यायी—जो लड़ने जाता है। स्थाई जो घर में रह कर लड़ता है। सूर्य चन्द्र दोनों जीव पक्ष में तो यायी और स्थाई दोनों की जीत मिलाप कारक हो। चन्द्र जीव पक्ष में यायी राजा को विजय। सूर्य जीव में स्थाई की विजय। दोनों मृत पक्ष में दोनों की पराजय। यात्रा के दिन सूर्य चन्द्र की स्थित देखने को वर्तमान राहु के नक्षत्र या से राहु काला नल चक्र बना कर विचारना।

यदि सूक्ष्म रीति से यायी की विजय पर विचारना है तो गणित से नक्षत्र का अन्तर भोग निकालना पड़ेगा।

२७ नक्षत्रों का अंतर भोग जानना

जिस नक्षत्र पर ग्रह हो उसका भयात (युक्त काल) और भयोग (पूर्ण काल) निकालने की रीति।

भभोग÷६ षष्ठचंश। भयात ÷ षष्ठचंश = भुक्तनाड़ी $\frac{\text{भभुक्त नाड़ी} \times ९}{२०}$ = लब्धि और शेष। ६० घड़ी में उस नक्षत्र का पूर्ण भोगना इतना है तो १ घड़ी में = षष्ठचंश। भभोग÷६ = षष्ठचंश। भयात में षष्ठचंश का भाग देने से भभुक्त नाड़ी प्राप्त होगी। भभुक्त नाड़ी में ९ का गुणा कर २० का भाग देने से जो लब्धि संख्या हो वह गत नक्षत्र होगा। ग्रह जो वर्तमान नक्षत्र में हो उससे लब्धि तक गिनना और जो शेष था उससे वर्तमान नक्षत्र आया। इसी प्रकार सब ग्रहों के भोग होते हैं।

उदाहरण—सम्वत् २०३३ ज्येष्ठ कृष्ण ४ सोमवार पूषा नक्षत्र ५०-१५ पर है। राहु स्वाती पर हैं। सूर्य कृतिका पर हैं। इष्ट ३५-६० पर चन्द्र और सूर्य का अन्तर भाग निकालना है। चन्द्र पूषा में जीव पक्ष में सै। सूर्य कृतिका मृत पक्ष में उपरोक्त चक्र से प्राप्त हुआ। अब इनका अन्तर योग निकालना है।

चंद्र का भुक्त भभोग साधन

६० – ०   घ० पल

५८ – ० इतवार को मूल   शेष पूषा = २ – ०

= २ – ० शेष पूषा   + सोमवार पूषा २५ – ३०

+ ५७–१५ सोमवार को पूषा   युक्त पूषा = २७ – ३०

भभोग = ५९–१५ वृषा का   × ६०

× ६०   १६२० + ३०

३५४० + १५   विपल युक्त पूषा = १६५० पल

भभोग ३५५५ फल ÷ ६० = ३५५५ षष्ठचंश   × ६०

युक्त पूषा ९९००० विपल भुभुक्त गड़ी   ९९००० विपल

भभोग षष्ठचंश   ३५५५ विपल = २७ – ५०

२७ – ५०

× ९   लब्धि – शेष

```
२०)२५०-३०(१२ १२  ६-३०                              ३५५५)९९०००(२७ घड़ी
   २०                                                    ७११०
   ५०    वर्तमान पूषा से १२ लब्धि तक                     २७९००
   ४०    गिना=१२वाँ रोहणी आया चक्र                       २४८८५
 १०-३०  में देखा यह मृत पक्ष में है ।                     ३०१५×६०
                                                 ३५५५) १८०९०० (५०
                                                         १७७७५  पल
                                                          ३१५०
```

सूर्य का भुक्त भभोग साधन

घ० प०

सूर्य रोहणी पर ज्येष्ठ कृष्ण ११ सोमवार=४०-४९ पर आया

,, कृतिका पर वैशाख शुक्ल ११ सोमवार=४७- ८ पर पहले था

अन्तर=१३ दिन—५३-४१ भभोग

```
          दिन  घ०-प०                                              घ० प०
भभोग      १३-५३-४१                  इष्ट ज्ये० कृ० ४ सोमवार=२५-३०
          ×६०                       ,, वैशाख शु० ११ ,,     =४७- ८
          ७८०+५३                    भुक्त      ६ दिन       =३८-२२
          ८५३ घड़ी             ६ - ३८ - २२   ५००२१)१४३४१२०(२८
          ×६०                  ×६०                  १०००४२
          ४९९८०+४१             ३६०+३८               ४३३७००
भभोग      ५००२१ पल÷६०          ३९८ घड़ी             ४००१६८
षष्ठ्यंश =५००२१ विपल           ×६०                   ३३५३२×६०
भुक्त विपल    घ० प०            २२=८०+२२         ५००२१)२०११९२०(४०
१४३४१२       २८-४०             =२३९०२ पल            २००१०५
५००२१                           ×६०                  १०८७०
                               १४३४१२० विपल
```

```
षष्ठ्यांश विपल          लब्धि शेष
   २८-४०                १२ १८-०
   ×९
२०)२५८-०(१२
   २०   लब्धि
   ५८
   ४०
   १८
```

वर्तमान सूर्य नक्षत्र कृतिका से १२ वाँ गिना तो स्वाती आया शेष भी था वर्तमान नक्षत्र विशाखा आया जो चक्र में जीव पक्ष में है ।

चन्द्र रोहणी मृत पक्ष में सूर्य जीव पक्ष में=पराजय होगी ।

चन्द्र रोहणी पर आयगा तब पराजय होगी ।

यात्रा में स्वर विचार—यात्रा के समय दाहिना या बांया जो स्वर चलता हो उसी ओर के चरण को आगे रख कर यात्रा करे । तो यात्रा सिद्ध हो । चन्द्र स्वर में सम

(२-४-६ कदम) सूर्य स्वर में विषम (१-३-५) पैर आगे रख कर यात्रा करने से सिद्ध होती है। दूर देश से जाना हो तो चन्द्र स्वर से और समीप देश में सूर्य स्वर से गमन करे। यात्रा के आरम्भ में विवाह या गृह नगर प्रवेश आदि सम्पूर्ण शुभ कर्म चन्द्र स्वर के चलने सिद्ध होते हैं।

गुरुवार शनिवार रविवार मङ्गल वार दक्षिण स्वर्ण प्रदेश में शुभ सोमवार बुधवार शुक्रवार वाम स्वर गमन में शुभ।

नाक के नथने से जो स्वर चलता है। उसमें दाहिने स्वर का नाम पिंगला है। यह सूर्य स्वर है। बांये स्वर को इड़ा कहते हैं। वह चन्द्र स्वर है। दोनों स्वर चलते हों उसे सुषमना स्वर कहते हैं।

त्रिशूल चक्र
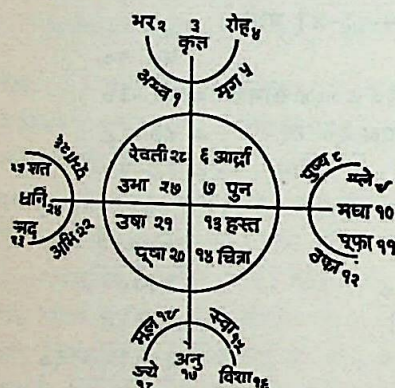
(१) युद्ध में जाना हो तो जो सूर्य नक्षत्र हो ऊपर त्रिशूल के जहाँ कृत० लिखा है वहाँ रख कर दिन नक्षत्र तक गिने।

(२) गमन करना हो तो कृतिका जहाँ है। वहाँ से दिन नक्षत्र तक गिने।

(३) दूसरे कार्यों में सूर्य नक्षत्र बीच में लिखकर चन्द्र नक्षत्र तक गिने।

(४) रोगी के प्रश्न में जिस नक्षत्र में मङ्गल में अग्र भाग में रख कर चन्द्र नक्षत्र तक गिने।

त्रिशूल के अग्रभाग में दिन नक्षत्र हो=मृत्यु। वाहरी अष्टक में हो=मध्यम। मध्याष्टक में हो = लाभ जयक्षेप आरोग्य प्राप्त हो।

चंद्र कालानल चक्र
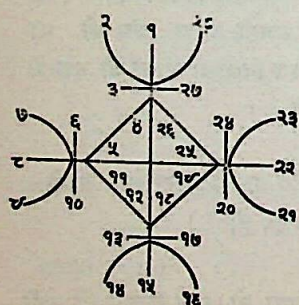
जो चन्द्र नक्षत्र हो उसे अग्रभाग में जहाँ १ लिखा है लिख दे और नक्षत्र संख्या जो हो वहाँ लिखे उस क्रम से जहाँ नाम नक्षत्र हो लिख कर उसकी संख्या लिख देवे फिर देखे नाम नक्षत्र कहाँ पड़ा है। यदि त्रिशूल में पड़ें मृत्यु हो और बांह में (त्रिशूल के नीचे जो सीधी रेखा है)। उसमें पड़ें तो फल मध्यम और बीच चौखटा के भीतर पड़ें तो लाभ और क्षेम प्राप्त हो। इस कालानल चक्र से युद्ध में नाम नक्षत्र का फल विचारना चाहिये।

युद्ध नाड़ी चक्र

→ → → →

आर्द्रा	पूफा०	उफा०	अनु०	ज्ये०	धनि०	शत०	मर०	कृत
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पूभा	अश्व	रोह०
पुष्य	श्ले	चित्रा	स्वा०	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

→ → → →

सूर्य, चन्द्र और नाम का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर लिखें। यदि सूर्य चन्द्र और नाम नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े तो मृत्यु हो। युद्ध में और रोग में भी इस चक्र से विचारना।

भूमि बलाबल ज्ञान—भूमि के अक्षर × ४ + तिथि + वार ÷ ३=शेष १=भूमि बल जानो।२=शून्य भूमि। ३=भूमि मृत्यु कारक।

नारद से युद्ध समय विचार—तिथि + वार ÷ ३ शेष। १=नारद स्वर्ग में। २=पाताल। ३ = मृत्यु लोक। मृत्यु लोक में नारद आवे तब युद्ध जानिये।

युद्ध काल ज्ञान—जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने। उसमें तिथि जोड़ कर ४ से गुणा कर ३ का भाग दे। शेष १=मृत्यु। २=घात। ०=सुख युक्त जानो यह काल ज्ञान युक्त समय विचारना चाहिये।

छाया विचार—जब अपनी छाया ८ पैर हो तो=बुधवार को गमन करे। ९ पैर—मङ्गलवार। १० पैर—गुरुवार। ११ पैर—इतवार। १२ पैर छाया हो तो सोमवार शुक्रवार शनिवार को गमन करे तो सर्व गुण युक्त सिद्धि प्राप्त हो। इस मुहूर्त में चन्द्रमा आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। यह छाया दिन में २ बार आती है। यदि उस समय अभिजित नक्षत्र भी आ जावे तो और भी उत्तम है।

युद्ध या यात्रा में कारक आदि विचार—(१) जन्म या यात्रा समय यदि शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जन्म या यात्रा शुभ नहीं।

(२) कारक ग्रह युद्ध या यात्रा में अवश्य देखना चाहिये क्योंकि यात्रा या युद्ध समय (१) नीच का ग्रह, (२) पराजित ग्रह, (३) किला लग्न का स्वामी, का जो शत्रु हो इन तीनों ग्रह की दशा में गमन नहीं करना।

(३) जन्म लग्न स्वामी की दशा या उसके मित्र की दशा में या चन्द्र से दूसरे स्थान में शुभ ग्रह हो तो उसकी दशा में या जिसका कारक है वही उस राशि का चन्द्र है तो युद्ध या यात्रा करने में जय हो सौख्य और धन प्राप्त हो। इनके अतिरिक्त दूसरे की दशा में कष्ट और हानि होती है।

(४) कारक का विचार ज्योतिष शिक्षा फलित खंड में दे दिया है।

युद्ध यात्रा में उपयोगी कुलाकुल आदि का विचार—अकुल—स्वा०, मर०, श्ले०, धनि०, रेव०, हस्त, अनु० पुन, रोह, तीनों उत्त० ये १२ नक्षत्र और १, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, ३० तिथियाँ और रविवार सोमवार शनिवार गुरुवार ये दिन अकुल संज्ञक हैं इन में युद्ध है की जय।

कुलाकुल—मूल, शत०, आर्द्रा अभिजित ये ४ नक्षत्र और २, ६, १० तिथियाँ, केवल एक दिन बुधवार कुलाकुल संज्ञक हैं। इनमें संधि व दोनों की जय हो।

कुल—तीनों पूर्वा, अश्व०, पुष्य, मघा, मृग०, श्रव, कृत०, विशा०, ज्ये०, चित्रा ये नक्षत्र ४, ८, १२, १४, ३० तिथि मङ्गलवार शुक्रवार इनमें मुद्दायले की जीत हो।

इनको गण कहते हैं, मुकदमे का आरम्भ, अर्जीदावा, ब्यान तहरीरी पर प्रथम हस्ताक्षर करने में शुभ मुहूर्त विचारना। अकुल संज्ञक तिथि वार नक्षत्र में यात्रा या युद्ध करने वाला यायी राजा लड़ाई में जीतने वाला है। और कुल संज्ञक तिथि वार नक्षत्र में युद्ध का आरम्भ करने वाला स्थाई राजा लड़ाई में जीतने वाला होता है। और कुलाकुल संज्ञक तिथि वार नक्षत्र में परस्पर युद्ध करने वाला यायी स्थाई इन दोनों राजाओं का मेल मिलाप होता है।

शुभ लग्न—यात्रा करने वाले के जन्म काल में जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो या जो राशि शत्रु की जन्म राशि से आठवीं हो या जो राशि वेशि संज्ञक (सूर्य से दूसरे स्थान में) हो इन तीनों में से जो राशि लग्न में हो वह यात्रा में विजय देने वाली होती है अथवा जातक के कहे हुए राज योगों में जो यात्रा होती है वह विजय देने वाली होती है।

दिग्द्वार राशि—यात्रा में दिग्द्वार राशि लग्न में हो अर्थात् सन्मुख या दाहिने हो तो यात्रा शुभ तथा धन आदि देने वाली और जीत कराने वाली होती है। वही दिग्द्वार राशि पीछे या बाँये हो तो यात्रा शत्रु से भय होने व हानिप्रद होती है।

दिग्द्वार यात्रा लग्न—दिग्द्वार की लग्न में यात्रा शुभ है अर्थात् जहाँ जाना हो दाहिने और सन्मुख शुभ है अर्थ और जय प्राप्त होती है बाँये हानिकारक है शत्रु से भय दायक है। इसी प्रकार चन्द्र का भी विचार करे।

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	उसी दिशा की लग्न
राशि	१, ५, ९	२, ६, १०	३, ७, ११	४, ८, १२	हो तो दिग्द्वार जानो।

पंच स्वर चक्र

स्वर	वर्ण	तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न	मास
बाल	अ क छ ड ध भ व	नंदा	रवि मं०	रेवतीआदि७	१,५,८	मार्ग,वै०,भाद्रपद
कुमार	इ ख ज ढ न म श	भद्रा	बु० चं०	पुन० ,, ५	३,४,६	आ०,श्राव, अश्व.
युवा	उ ग क्ष त प य ष	जया	गु०	उफा०,, ५	९,१२	चैत्र, पौष
वृद्ध	ए घ ट थ फ र स	रिक्ता	शु०	अनु० ,, ५	२,७	ज्ये०, कार्तिक
मृत	अ च ठ द व ल ह	पूर्णा	श०	श्रव० ,, ५	१०,११	माघ, फाल्गुन

इसमें ङ ञ ण अक्षर नहीं हैं। ङ=ग। ञ=ज। ण=ड।

इस चक्र का उपयोग ३ प्रकार के गण से हैं (१) अकुल=मुद्दई के जीत का समय (२) कुल=मुद्दायले की जीत और (३) कुलाकुल=दोनों को जय या संधि।

यहाँ जो वर्ण के अक्षर दिये हैं उससे नाम के पहिले अक्षर से बाल कुमार आदि विचारना होता है। जो नाम का अक्षर होगा उसका पहिला स्वर बाल होगा, बाद को कुमार युवा वृद्ध मृत गिना जायगा।

फल—वाल स्वर=थोड़ा लाभ। कुमार=आधा लाभ। युवा=सर्व सिद्धदायक। वृद्ध=मध्यम। मृत स्वर=अधम।

स्वर से परिणाम विचारने का उदाहरण।

मान लो फड़ेन्द्र सिंह मुद्दई है। जगन्नाथ सिंह मुद्दायले हैं। यद्यपि चक्र में फ को वृद्ध बताया है। परन्तु फ अक्षर के नाम को पहिले वाल गिनेगा।

स्वर	वार	तिथि	नक्षत्र
वाल	शु०	४, ९, १४	अनु०, ज्ये०, मू०, पूषा०, उषा०
कुमार	श०	५-१०-१५	श्रव०, धनि०, शत० पूभा०, उभा०
युवा	मं०र०	१-६-११	रेव०, अश्व०, भर०, कृ०, रो०, मृग०, आर्द्रा
वृद्ध	बु०चं०	२-७-१२	पुन०, पुष्य०, श्ले०, मघा, पूफा०
मृत	गु०	३-८-१३	उफा०, हस्त, चित्रा, स्वा०, विशा०

अकुल=मुद्दई के अनुकूल गण

वार	तिथि	नक्षत्र
रवि चंद्र	१,३,५,७,९	स्वा०, भर०, श्ले०, धनि०, रेव०, हस्त, अनु०
श० गु०	११-१५-१३	पुन०, रोह०, तीनों उत्तरा।

इसके अनुसार देखना पड़ेगा स्वर के अनुसार उसे कौन अनुकूल होगा।

स्वर	दिन	तिथि	नक्षत्र
युवा के अनुसार	रवि	१-११	रेवती, भरणी
कुमार ,,	श०	५-१५	उभा०
वाल ,,	×	९	उषा०

सबका परिणाम द० श० १,११,९,५,१५ रेव०, भर०, उभा०, उषा० जीत का समय है।

मुद्दायले जगन्नाथ का नाम ज० कुमार में दिया है परन्तु वाल स्वर आरंभ का होगा।

स्वर	दिन	तिथि	नक्षत्र
वाल	बु० चं०	२,७,१२	पुन०, पु०, श्ले०, म०, पूफा०
कुमार	गु०	३,८,१३	उफा०,ह०,चि०,स्वा०,विशा०
युवा	शु०	४-९,१४	अनु०,ज्ये०,मू०,पूषा०, उषा०
वृद्ध	श०	५-१०,१५	श्र०, ध०, श०, पूभा०,उभा०
मृत	मं०र०	१,६-११	रे.,अश्व.,भर.,कृ.,रो.,मृ.,आर्द्रा

मुद्दायले की जीत कुल गण में दिया वह मुद्दई को त्यागना होगा।

कुल गण—दिन	तिथि	नक्षत्र
मं० शु०	४-८-१२	तीनों पूर्वा, अश्व०, पुष्य, मघा, मृग०, कृति०,
	१४-३०	श्रव०, विशा०, ज्ये०, चित्रा।

मुद्दायले के मृत स्वर मं० र० है १-६-११ ति० रे.,अ.,भ.,कृ.,रो.,मृ.,आर्द्रा नक्षत्र है।
वृद्ध ,, श० है ५-१०-१५ ,, श्र., ध., श., पूभा., उभा. ,,

इसमें मुद्दई की जीत रविदिन १, ११ ति० १ रेवती भरणो मृत स्वर का है और वृद्ध में श दिन है वह मुद्दई के जीत का दिन है और तिथि ५, १५ है जो मुद्दायले की वृद्धि तिथि और मुद्दई की जीत की तिथि है उभा वृद्धा की नक्षत्र है जो मुद्दई की जोत का नक्षत्र है। इस विचार से रवि दिन १, ११ रेवती भरणी सबसे अच्छा समय है और शनिवार ५, १५ ति० उभा नक्षत्र ये भी अच्छा है।

नियम—यहाँ गण के विचार से प्रथम महत्व वार को है। इसके पश्चात् तिथि फिर अंत में नक्षत्र का विचार करना। परन्तु पंच स्वरा में तिथि की प्रवलता है।

(१) इससे देखना कि पंच स्वरा के अनुसार जो तिथि वार नक्षत्र युवा के मिलते हैं वे गण के अनुसार अनुकूल होते हैं या नहीं।

(२) अनुकूल न मिलें तो देखना वाल स्वर के अनुसार अनुकूल होते हैं या नहीं।

(३) यदि वह भी न मिले तो देखना वाल स्वर अनुकूल होते हैं या नहीं।

(४) तीनों प्रकार से विचार कर गण के वार (गण के वाल प्रवल हैं) पंच स्वरा के अनुकूल है तो उसे प्रथम विचारना।

(५) पंच स्वरा की जो तिथि अनुकूल होती हो यदि वह युवा स्वर की हो और गण के प्रतिकूल न पड़ती हो तो वह सबसे उत्तम होगीं। यदि ऐसा न हो तो कुमार स्वर की तिथि गण के अनुकूल होने से उत्तम है। या वाल स्वर की तिथि अनुकूल होने से ऐसी तिथि साधारण रूप से ग्रहण की जा सकती है।

(६) यदि उपरोक्त चुने हुए अनुकूल वार तिथि नक्षत्र विपक्षी के पंच स्वरा द्वारा मृत या वृद्ध हो तो वार तिथि नक्षत्र विपक्षी के अनुकूल गण के न हों तो बहुत उत्तम होता है अर्थात् अपना अनुकूल और विपक्षी के प्रतिकूल वार तिथि और नक्षत्र का होना अच्छा है।

(७) अपने अनुकूल नक्षत्र से ९ प्रकार के तारा का भी अनुकूल होना आवश्यक है।

(८) मुद्दई के लिये कार्य आरंभ का मुहूर्त ऐसा हो कि लग्नेश उत्तम स्थान में हो। ६, ८ घर शुद्ध हो और बलवान हो शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो। पाप ग्रह ३, ६, ११ में हो तो अच्छा है।

(९) मुद्दायले के लिए कार्य आरंभ लग्न से ४, १० घर शुद्ध रहना अच्छा है।

इन सब को युद्ध काल में विशेष विचारने योग्य है।

प्रश्न कालिक शुभ यात्रा योग—जिसकी जन्म राशि या जन्म लग्न की राशि यदि प्रश्न लग्न में हो या जन्म राशि का स्वामी या जन्म लग्नेश यदि प्रश्न लग्न में हो या जन्म राशि या जन्म लग्न से ३-६, १०, ११ स्थान में यदि प्रश्न लग्न पड़ती हो तो उस यात्रा करने वाले की विजय होगी।

जिसके शत्रु की जन्म राशि या जन्म लग्न की राशि प्रश्न लग्न से ४, ७ स्थान में हो या शत्रु के जन्म राशि का स्वामी या जन्म लग्नेश प्रश्न लग्न से ४-७ स्थान में हो या शत्रु की जन्म राशि या जन्म लग्न से ३, ६, १०, ११ की राशि यदि प्रश्न लग्न से ४, ७ स्थान में पड़ती हो या शुभ ग्रह का गृह होरा द्रेष्काण नवांश आदि षड्वर्ग प्रश्न

लग्न में हों या ३, ५, ६, ७, ८, ११ इनमें से कोई राशि प्रश्न लग्न में हो तो उस यात्रा करने वाले की विजय हो या यदि यात्रा करने वाला ऐसे स्थान से पूछे कि जहाँ की भूमि फूल, दूर्वा, देव मंदिर आदि शुभ वस्तुओं से अति मनोहर हो या यात्रा पूछने वाले के समय में कोई शुभ वस्तु देखने या सुनने में आवे। या पूछने वाला बड़े आदर से पूछे या १, ४, ७, १० राशियों में से कोई राशि प्रश्न लग्न में हो और शुभ ग्रह उसे देखते हों या उससे युक्त हों तो भी यात्रा करने वाले की विजय होगी।

प्रश्नकालिक अशुभ यात्रा योग—यदि प्रश्नकालिक लग्न चंद्र से युक्त होकर शनि से दृष्ट हो। या प्रश्नकालिक लग्न में सूर्य हो और उससे ७, ८ घर में चंद्र हो। या प्रश्न लग्न में या उससे ४, ७, ८ घर में पाप ग्रह हो तो यात्रा करने वाले की पराजय या नाश हो।

प्रश्न द्वारा यात्रा दिशा निर्णय—प्रश्न काल में यदि शनि बुध शुक्र गुरु या चारों ग्रह या इनमें से कोई एक ही ग्रह मंगल से ५-९ स्थान में हो या चंद्र यदि सूर्य से ५-९ घर में हो तो यात्रा करने वाला जिस दिशा में जाने का विचार करता है उस दिशा में यात्रा नहीं होगी परन्तु इस यात्रा प्रतिबंधक ग्रहों में से जो ग्रह बलवान हो वह अपनी ही दिशा में ले जाता है। अथवा जिस दिशा में जाने के विचार से प्रश्न किया गया हो उस दिशा का स्वामी प्रश्न लग्न से जिस दिशा में हो उस स्थान से पाँचवें स्थान में यदि कोई बहुत बलवान ग्रह हो तो वह ग्रह अपनी ही दिशा में यात्री को ले जाता है।

राजा की यात्रा में सन्मुख शुक्र दोष—जिस दिशा में शुक्र उदित हो अथवा गोल भ्रमण वश होकर (मेष से कन्या = उत्तर गोल। तुला से मीन = दक्षिण गोल) जिस दिशा में जाता हो या पिछले कहे हुए दिग्द्वारि नक्षत्रों को क्रम से जिस दिशा में हो इन ३ दिशाओं में रहने के कारण ३ प्रकार से शुक्र सन्मुख कहा जाता है। परन्तु राजा को चाहिये जिस दिशा में शुक्र उदित हो उस दिशा की यात्रा न करें।

वक्र नीच आदि शुक्र दोष, बुध योग—

वक्र मार्गी तथा नीच स्थान में शुक्र को रहते यात्रा करें तो राजा शत्रुओं के आधीन होता है। परन्तु शुक्र के वक्र आदि रहते भी यदि बुध अनुकूल अर्थात् पीछे हो तो यात्री राजा शत्रुओं को अवश्य जीत लेता है। यदि बुध सन्मुख हो तो जय नहीं होती।

शुक्र अंधा अस्त आदि पर विचार—जब तक शुक्र रेवती से लेकर कृतिका के पहिले चरण तक रहता है तब तक शुक्र अंधा रहता है उस समय सन्मुख या दाहिने दोष कारक नहीं होता। यदि मार्ग में शुक्र हो तो राजा को चाहिये कि जब तक फिर उदित न हो तब तक वहीं टिका रहे और उदित होने पर भी यदि सन्मुख पड़ता हो और जब तक फिर पीछे या बाँयें न हो तब तक वहीं टिका रहे।

शुक्र दोष विचार—यात्रा में दाहिने शुक्र–दुःख दायक। सन्मुख–कार्य नाशक। वाम भाग या पीछे–मंगल दायक। पूर्व में अस्त हो तो पश्चिम गमन शुभ। पश्चिम अस्त हो–पूर्व गमन शुभ।

शुक्र दोष नहीं— गाँव के गाँव में। शहर के शहर में। दुर्भिक्ष में तथा देश में उपद्रव होने में। विवाह समय में और तीर्थ यात्रा में सन्मुख दोष नहीं होता।

यात्रा में ग्रह स्थिति—कोण या केन्द्र में शुभ ग्रह अच्छे होते हैं ३, ६, १०, ११ में पाप ग्रह शुभ होते हैं सप्तम में शुक्र शुभ नहीं, दशम में शनि शुभ नहीं होता ९, १२, ६, ८, स्थानों में लग्नेश शुभ नहीं होता १, १२, ६, ८ स्थानों में चंद्र यात्रा समय शुभ नहीं होता।

यात्रा में ग्रह बल गर्ग मत से—१, ८, १२ भाव में पाप रहित ग्रह बल देखकर यात्रा करने से दिग्विजय हो कार्य सिद्ध हो। लग्न में गुरु बुध या शुक्र—५ दिन या १ मास में राज पद सुख या देश लाभ हो। दूसरे स्थान में ये ग्रह—वस्त्र हाथी घोड़ा १४ दिन या १ मास में लाभ हो। दूसरे में—कोई पाप ग्रह ३ मास में वित्त नाश या मृत्यु। तीसरे में गुरु शुक्र या चंद्र बुध—३ दिन या २ पक्ष में कार्य सिद्ध। चतुर्थ में शुभ ग्रह हो कोई क्रूर ग्रह न हो तो शुभ हैं—३ मास या १० दिन में कार्य सिद्ध हो। पंचम में चारों शुभ ग्रह हों तो शुभ—२ मास में इष्ट कार्य हो। छठे में चारों शुभ ग्रह हों—यात्रा सफल। मृग नक्षत्र का चंद्र इस स्थान में हो तो—१ मास में कार्य सिद्ध। सप्तम में गुरु या चंद्र बुध—यात्रा में विजय सर्व राजा २ मास या ५ दिन में वश हों। सप्तम में क्रूर ग्रह—मृत्यु कारक हैं यदि ये न हों सौम्य ग्रह हों—आयु वृद्धि। परन्तु चंद्र हो तो मृत्यु कारक। नवम में पाप ग्रह तथा चंद्र बलवान हों—३ मास या ४ दिन में कार्य सिद्ध। नवम में गुरु शुक्र या चंद्र बुध ये चर या स्थिर लग्न में हों तो कार्य सिद्ध। दशम में पाप ग्रह न हों सौम्य ग्रह चर या स्थिर लग्न में हो तो १ या ३ मास में कार्य सिद्ध। लाभ में पाप ग्रह चंद्र सहित या गुरु आदि सौम्य ग्रह हो तो—१ पक्ष या ३ दिन में कार्य सिद्ध हो। व्यय में सब शुभ ग्रह हों तो विचित्र लाभ हो। पाप ग्रह हो तो व्यय कारक है।

यात्रा में भाव संज्ञा—१ देह, २ कोष, ३ सेना, ४ वाहन, ५ मंत्र, ६ शत्रु, ७ मार्ग, ८ आयु, ९ हृदय, १० व्यापार, ११ लाभ, १२ व्यय।

यात्रा में किस को किसका बल—कहे हुए योग बल से राजाओं को, चंद्र तारा बल सहित विहित नक्षत्रों में ब्राह्मणों की, शकुन से चोरों की, मुहूर्त बल से अन्य मनुष्यों की यात्रा सफल होती है।

किस काम में कौन ग्रह विचारना—

विवाह	यात्रा	विद्या आरंभ	सब काल में	धन संग्रह	राज दर्शन में
गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	सूर्य

यात्रा के योग—(१) लग्न से तीसरे शुक्र, दशम में चंद्र, छठे शनि मङ्गल हो ऐसे योग में चलने वाला राजा शीघ्र ही अपने शत्रु को जीत लेता है।

(२) या तीसरे शनि, छठे मङ्गल, लग्न में गुरु, ग्यारहवें सूर्य हो और यदि शुक्र पीछे या वाम मार्ग में हो तो ऐसे योग में चलने वाले राजा की जय हो।

(३) लग्न में गुरु अष्टम चंद्र छठे सूर्य ऐसे योग में चले तो राजा अवश्य शत्रु को जीतता है।

(४) यदि लग्न में गुरु और २-११ स्थानों में शेष ग्रह हों ऐसे योग में यात्रा करने से विजय होती है।

(५) सप्तम चंद्र, लग्न में सूर्य, दूसरे में गुरु शुक्र बुध तीनों हों तो शत्रुओं को जीतता है।

(६) दूसरे बुध, तीसरे सूर्य, लग्न में शुक्र हो तो शत्रुओं को जीते।

(७) लग्न में सूर्य, छठे शनि, दशम चंद्र हो तो भी उपरोक्त फल हो।

(८) लग्न में शनि मङ्गल दोनों, दशम सूर्य, १० या ११ में बुध शुक्र हों तो उपरोक्त फल।

(९) ३, ६, ११ स्थान में कहीं मङ्गल शनि हो और गुरु बुध शुक्र ये बलवान होकर कहीं भी हों तो यात्री की विजय हो।

(१०) यदि लग्न में गुरु, सप्तम चंद्र, चतुर्थ में बुध शुक्र दोनों हों, तीसरे में पाप ग्रह हो तो उपरोक्त फल।

(११) लग्न में गुरु, सप्तम चंद्र, लाभ में सूर्य, दशम शुक्र बुध दोनों, तीसरे शनि मङ्गल दोनों हों तो उपरोक्त फल।

(१२) लग्न में गुरु व शुक्र, छठे सूर्य, पंचम बुध, दशम शनि, चतुर्थ शुक्र हो तो विजय हो माता के समान यात्रा हितकारी हो।

(१३) ७, ८, ९ इन स्थानों को छोड़कर अन्य स्थान में पाप ग्रह हो, ३, ४, ११ शुक्र हो जो केन्द्रीय गुरु से दृष्ट हो तो यात्री को धन समूह का लाभ हो।

(१४) लग्न में बली बुध, केन्द्र में गुरु, ३, ६, ९, १२ स्थान में निर्बल चंद्र हो तो विजय हो।

(१५) शुभ ग्रहों से दृष्ट बुध १, ४, १० में हो, १, ७, १२ स्थान छोड़ कर अन्य में शुभ ग्रह हो तो जय हो।

(१६) लग्न में गुरु, १०, ११ इन दोनों स्थानों में पाप ग्रह हो तो जय हो।

(१७) सप्तम में बुध गुरु शुक्र दोनों हों चतुर्थ चंद्र हो तो राज्य मिले।

(१८) लग्न में गुरु, छठे शुक्र, अष्टम चंद्र हो तो यात्री की जय हो।

(१९) चतुर्थ में बुध शुक्र दोनों सप्तम में चन्द्र हों तो जय हो।

(२०) चतुर्थ में चन्द्र, बुध, शुक्र दोनों के मध्य में हों तो जय हो।

(२१) लग्न में शुक्र, सप्तम गुरु, छठे मंगल, चतुर्थ बुध तीसरे शनि हों तो जय हो।

(२२) अथवा वृहस्पति के दिन छठें सूर्य, तीसरे चन्द्र, दशम मंगल, छठें बुध, लग्न में गुरु, चौथे शुक्र, लाभ में शनि हों तो यात्री राजा की विजय हो।

(२३) तीसरे स्थान में मंगल, अष्टम शुक्र, सप्तम बुध, छठें सूर्य, लग्न में गुरु हों तो जय हो।

(२४) ३, ४ इन दोनों स्थानों में गुरु शुक्र सूर्य हो छठें शनि मंगल दोनों हों तो यात्रा करने वाले राजा की जय हो।

(२५) लग्न में गुरु चन्द्र हो ६, ८ में सूर्य हो तो राजा शत्रु को जीते।

(१) शत्रु जय योग—लग्न में शुक्र, लाभ में सूर्य, चौथे चन्द्र हों तो बलवान शत्रु को मार डालें।
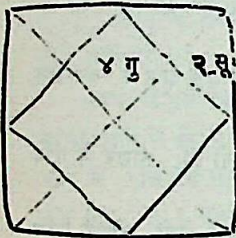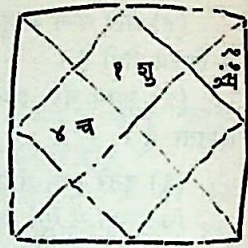
(२) पुंडरीक योग—कर्क का गुरु लग्न में हो लाभ में सूर्य हो तो यह पुंडरीक योग शत्रु पक्ष का नाश करे।
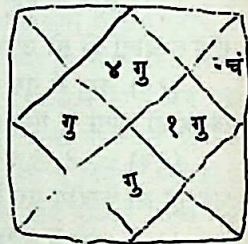
(३) कामदा योग—वृष का चन्द्र लाभ में हो केन्द्र में गुरु हो तो कामदा होता है जाने वाले को रण में कामना देने वाला है।
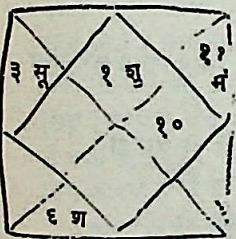
(४) पूर्ण चन्द्र योग—तीसरे सूर्य, छठे शनि, लाभ में मंगल, लग्न में शुक्र हो तो पूर्ण चन्द्र योग होता है यात्रा राज्यदायक है।
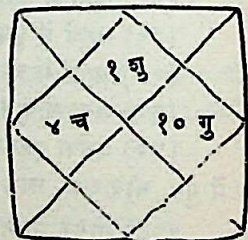
(५) मृगेन्द्र योग—लग्न में शुक्र चतुर्थ में चन्द्र दशम में गुरु हो तो मृगेन्द्र योग होता है यात्रा पर जाने वाले को सर्वार्थ साधक है।

यात्रा विवाह आदि में धन कारक योग—लग्नेश बलवान होकर केन्द्र त्रिकोण या लाभ में होकर लग्न को देखता हो तो धनवान हो। प्रश्न जन्म विवाह यात्रा तिलक में मनुष्य को राजा करता है। नीच कुल में भी उत्पन्न हो तो रोग रहित मोती के छत्र से युक्त हो।

यात्रा में कार्यसिद्धि योग—जन्म या यात्रा में सौम्य ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हो पाप ग्रह ३–११ में और ६ घर में हो तो अवश्य भूमि स्वामी होता है। यात्रा के समय काम सिद्ध होता है।

योगाधि आदि योग—योग संज्ञक योग = बुध गुरु शुक्र तीनों में से एक त्रिकोण या केन्द्र में हों तो उसमें यात्रा करने से राजाओं का कल्याण होता है।

अधि योग—इन तीनों ग्रह में से २ केन्द्र त्रिकोण में हों—यात्रा से कुशलता एवं जय होतो है।

योगाधि योग—ये तीनों ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हों तो यात्रा में यश क्षेम धन लाभ हो। अन्य मत से इसमें भूमि लाभ भी हो।

फल—योग में यात्रा से = क्षेम, अधि योग में = क्षेम व शत्रु का नाश। योगाधि योग में—क्षेम, यश तथा भूमि लाभ हो।

यात्रा में शुभ योग—यात्रा की लग्न में गुरु बुध शुक्र हो तो ५ वें दिन कार्य सिद्ध हो और राज्य व देश का लाभ हो अथवा एक मास में फल हो।

वांछित योग—लग्न में चन्द्र हो या वर्गोत्तम हो तो यात्रा वांछित फल देती है। नवांश शुभ नहीं है अर्थात् कुम्भ मीन वर्जित है।

प्रस्थान—यदि स्थान छोड़ने में किसी कारण विलम्ब हो और यात्रा का शुभ समय पहले ही होता हो तो ऐसी अवस्था में प्रस्थान करना चाहिये।

अर्थात् अपना कोई प्रिय पदार्थ, यज्ञोपवीत आदि को किसी अन्य पुरुष द्वारा यात्रा के समय में अपने घर से दूसरे घर या दूसरे गाँव में भेज देने की विधि को प्रस्थान कहते हैं। ब्राह्मण = यज्ञोपवीत। क्षत्रिय = हथियार। वैश्य = शहत। शूद्र = उत्तम फल। या जो वस्तु जिसको अधिक प्रिय हो उस वस्तु का प्रस्थान यात्रा की दिशा में करें। तदनन्तर आवश्यक कार्य हो जाने पर यात्रा करें। प्रस्थान में सुवर्ण वस्त्र धान्य आदि भी प्रस्थान में रख सकते हो।

प्रस्थान पर भी निषेध—प्रस्थान रखने पर भी बड़े दोष से युक्त दिन में यात्रा नहीं करना। जन्म दिन, अष्टम चंद्र, मंगल या शनिवार को, या अत्यन्त निन्दित दिन में प्रस्थान रखने पर भी यात्रा नहीं करना।

प्रस्थान स्थान—गर्ग मतानुसार एक घर से दूसरे घर में प्रस्थान रखना चाहिये। भृगु मत से सरहद के बाहर। भरद्वाज—जहाँ तक बाण पहुँचे उतनी दूर प्रस्थान रखना चाहिये। वशिष्ठ—नगर के बाहर प्रस्थान रखना चाहिये। शुक्र—अपने गाँव की सीमा लाँघ कर दूसरे गाँव की सीमा पर बसे। गर्ग—घर से चलकर समीप ही किसी अन्य के घर में भी यदि रहे तो भी यात्रा हो जाती है। वशिष्ठ—गाँव से यात्रा कर बाहर रहे।

दूरी—कोई आचार्य यात्रा के प्रस्थान से ५०० धनुष पर ४।। फरलांग करीब (१ धनुष = ४ हाथ) कोई २०० धनुष पर कोई १० धनुष पर प्रस्थान करना कहते हैं वह भी जिस दिशा में जाना हो उसी में सावधानता से करना चाहिये और जो कोई अपने घर से स्वयं चल चुका है वह भी यात्रा ही है।

प्रस्थान फल—वस्तु प्रस्थान आधा फल । अंग प्रस्थान पूर्ण फल ।

प्रस्थान दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
व अवधि	७ दिन तक स्थिर रहे	५ दिन	३ दिन	२ दिन

राजा १० दिन तक । सामंत (जमीदार) ७ दिन तक । सामान्य मनुष्य ५ दिन तक । इस समय के भीतर यात्रा पर न जा सके तो फिर दूसरे मुहूर्त पर यात्रा करना ।

प्रस्थानिक यात्रा नक्षत्र विचार–जिस दिशा में यात्रा करनी हो उसी दिशा में अपने घर से मृग नक्षत्र से चलकर आर्द्रा नक्षत्र पर किसी के घर में टिक कर उत्तर में वहाँ से ही यात्रा करे । अनु० में अपने घर से चलकर ज्येष्ठा नक्षत्र पर टिक कर मूल नक्षत्र में वहाँ से ही यात्रा करे तो शत्रुओं को जीते । हस्त में अपने घर से चलकर चित्रा और स्वाती दोनों दिन भर वहाँ से टिक कर विशाखा में वहाँ से ही यात्रा करे और धनिष्ठा रेवती पुष्य इनमें अपने घर से चलकर गाँव की सीमा पर एक रात्रि टिक कर वहाँ से यात्रा करे तो वह राजा पृथ्वी को जीतता है ।

प्रस्थान के दिन वर्जित—कोप, क्षौर, स्त्री संग, परिश्रम, मांस, गुड़, घृत, रोदन, चिन्ता, दूध, मद्य, क्षार, अभ्यंग, अन्य विषयक भय, श्वेत वस्त्र, गमन, तेल, कटु पदार्थ वर्जित है ।

यात्रा में शुभ शगुन—ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गाय, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, नीलकंठ, न्योला, बँधा हुआ एक पशु, मांस, अच्छा वचन, पुष्प, ईख, पानी से भरा घड़ा, छत्र, मृतिका, कन्या, रत्न, पगड़ी, सफेद बैल, शराब, पुत्र सहित स्त्री, जली हुई अग्नि, आरसी, आंजन, धुला हुआ वस्त्र लिए धोबी, मछली, घी, सिंहासन, मुर्दा यदि उसके साथ रोने वाले न हों, ध्वजा, शहद, बकरा, गौलोचन, भरद्वाज पक्षी, पालकी, वेद पाठ की ध्वनि, मंगल के गीत, अंकुश, बहुत ब्राह्मण, घोड़ा, मदहीन हाथी, रस्सी से बँधा बैल ये सब पदार्थ सन्मुख दिखने पर शुभ फल प्रद हैं । खाली घड़ा पीछे आता हो जो पानी भरने के लिए जाता है शुभ है ।

यात्रा में वाम भाग में शुभ शकुन—कोयली, छिपकली, कबूतर, गर्गाइया, रला, पिंगला, छछूंदरो, शिकारी और पुरुष संज्ञक अर्थात् कबूतर, खंजन, तीतर, हंस आदि ये वाम भाग में मिलें तो शुभ है, बाँये गधे का शब्द शुभ है दाहिने अशुभ है ।

दाहिने भाग में शुभ शकुन—छिकारा (छोटी जाति का मृग) रूरू मृग, वानर, नीलकंठ, स्त्री नाम वाले जीव, काक, कुत्ता, मृग यदि विषम संख्या में हों तो अति शुभ, पक्षी ये सब यात्रा में दाहिने तर्फ चलते हुए मिलें तो शुभ है ।

और भी मङ्गल कारक शकुन—वाजनों के साथ नक्कारा का शब्द, आओ यह शब्द आगे हो तो शुभ पृष्ठ भाग में अशुभ । जाओ शब्द पीठ पीछे शुभ, आगे अशुभ । बड़े-बड़े सफेद पुष्प, पूर्ण कुम्भ, जल के पक्षी, मत्स्य का मांस, देवता, मित्र, हरी दूब, गोवर, सोना, रूपा, ताँबा और सर्व रत्न, औषधि, सर्वज्ञ पुरुष, यव, श्वेत सरसों, खंग, पात्र, आयुध, आसन, समस्त राजचिह्न, रोदन रहित मृतक, आशीर्वादिक शब्द, वाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द, गांधार, षड्ज, ऋणज ये राग और अच्छे गाये स्वर सुन्दर मोहक पवन ये सब विघ्न नाशक हैं । अच्छे अनुकूल पदार्थ, अच्छा और सुख स्पर्श सुख

कारी होते हैं। जो वस्तु मन को प्यारी हो उसका दर्शन उत्तम और जय कारक है। यात्रा समय हर्ष शुभ तथा लाभदायक है। विजय बाद और मङ्गल प्राप्ति का श्रवण शुभ है।

दाहिने-बाँये कब शुभ—मयूर, कुत्ता, उलू, पक्षी, गर्दभ, जंबुक ये प्रस्थान समय बायें हों तो गमन में शुभ और प्रवेश समय दक्षिण भाग में शुभ हैं।

यात्रा में अप शकुन—बाँझ स्त्री, चमड़ा, भूसी, हड्डी, साँप, नमक, आग का अङ्गार 'कोयला', लकड़ी, (ईंधन), हिजड़ा, विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषधि युक्त मनुष्य, शत्रु, जटाधारी योगी, घास, रोगी मनुष्य, नङ्गा, (बच्चों को छोड़कर नङ्गा) तेल लगाया हुआ बाल बिखरा संन्यासी, जाति से पतित, अङ्ग हीन, भूखा आदमी, रुधिर, रजोवती स्त्री का रुधिर, छिपकली, गिरगिट, घर का जलना, बिल्लियों का लड़ना, छींक, गेरुआ वस्त्र ओढ़े प्राणी, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा आदमी, कुटुम्ब में कलह, वस्त्र आदि देह से गिरना, भैंसों का युद्ध, काले रङ्ग का अनाज, कपास, वगन होना, दाहिनी ओर गधे का शब्द, अति क्रोध, गर्भिणी स्त्री, सिर मुड़ा आदमी, पीला कपड़ा, अन्धा, दुष्ट वचन, बहिरा, गुड़, छाँछ (मठा) ये यात्रा में सन्मुख दिखें तो अशुभ हैं।

और भी अप शकुन—कहाँ जाता है "ठहर जा", "यहाँ आ", "वहाँ जाकर क्या करेगा" इत्यादि शब्द यात्रा समय विपत्ति करने वाले होते हैं। उपला (कण्डे) ये प्रस्थान समय आगे से आवें तो अशुभ, केश को धोता मनुष्य, ऐसे पदार्थ जिसके सार निकाल लिये गये हों, चण्डाल, प्रेत, वध कर्ता, बन्दियों का रक्षक, भस्म, कपाल, अस्थि, रीते या टूटे वर्तन, मरा हुआ सारंग पक्षी, पताका के ऊपर काक बैठा, अग्नि दान, वाहनों का गिरना, वस्त्र लपेटता हुआ मनुष्य, वर्ण सङ्कर मनुष्य, नीच यवन आदि।

शुभाशुभ शब्द या दर्शन—यात्रा काल में गोह, जम्बुक, सूकर, सर्प, शशक (खरहा) इन सबका नाम अपने मुँह से उच्चारण करना या किसी अन्य के मुख से सुनना शुभ होता है परन्तु इन सब का शब्द और दर्शन अशुभ होता है। परन्तु बानर तथा ऋक्षों का शब्द तथा दर्शन शुभ होता है परन्तु उनके नाम का उच्चारण अशुभ होता है।

विपरीत शकुन—जिस यात्रा में कहीं उतरना या कोई भय कार्य या गृह प्रवेश या युद्ध या गुमी हुई वस्तु का खोजना हो उसमें पूर्वोक्त शकुन विपरीत हो जाते हैं अर्थात् ब्राह्मण आदि शुभ शकुन विपरीत अर्थात् अशुभ हो जाते हैं। और वंध्या, चमड़ा आदि अशुभ शकुन शुभ हो जाते हैं परन्तु राजा के दर्शनार्थ या यात्रा में पूर्वोक्त ब्राह्मण आदि शुभ शकुन शुभ ही होते हैं और वंध्या चमड़ा आदि अप शकुन अशुभ ही होते हैं।

अप शकुन परिहार—यदि पहला अपशकुन देखने में आवे तो ठहर कर ११ स्वांस लेकर फिर चले। दूसरा अपशकुन देखने में आवे तो १६ स्वांस रोककर फिर यात्रा करे। तीसरा अपशकुन देखने में आवे तो फिर यात्रा न करे। एक कोस चले जाने के उपरांत शुभ या अशुभ शकुनों का फल नहीं होता २० लघु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगे उसे १ प्राण कहते हैं इस प्रकार अन्य विचार से पहले अपशकुन में ११ प्राण रुके दूसरे अपशकुन में १६ प्राण तक रुके। तीसरे में यात्रा न करे। अशुभ शकुन हानिकारक होते हैं इसके लिए ईश्वर की पूजा और स्तोत्र का पाठ करे।

काल होरा–होरा के अनुसार शकुन आगे दिया है। वार का होरा निकालना पहले दे चुके हैं। १ घण्टा या २॥ घड़ी का दिन रात में छटा-छटा वार का होरा होता है। इस प्रकार २४ होरा एक वार में होते हैं।

होरा जानने को $(\text{इष्ट काल} \times २) - \left(\frac{\text{इष्ट काल} \times २}{५} \text{ का शेष}\right) \div ७$ शेष उस वार के आगे उतनी संख्या क्रमशः और गिनो जो मिले वह उस वार का होरा होगा जैसे—

इष्ट ८ है। $(८ \times २) - (\frac{८ \times २}{५} \text{ का शेष}) \div ७ = (१६ - \frac{१६}{५} \text{ का शेष}) \div ७ = १६ - १ \div ७ = \frac{१५}{७} =$ शेष। यदि सोमवार है तो १ जोड़ा अर्थात् १ वार और आगे = मङ्गल का होरा हुआ।

उपयोग—जिस वार में ज कर्म कहा है उस वार के होरा में वही कर्म कर सकते हो। और जिस नक्षत्र में जो कर्म कहा है, उसके स्वामी के नवांश में वही कर्म कर सकते हो। परन्तु दिशाशूल आदि का विचार भी उस समय करना और परिघ दण्ड का भी उलङ्घन नहीं करना।

होरा शकुन—किस वार के होरा में यात्रा करने से क्या शकुन मिलेगा।

रवि के होरा में—३ काग, ४ ब्राह्मण, २ न्यौला, २ चाष, १ बैल या गाय धोबी कन्या या वस्त्र मिले मार्ग में।

चन्द्र—मार्ग में २ ब्राह्मण, कौवा, मृदङ्ग या नफीरी बाजा, न्यौला, गर्दभ, ऊँट, घोड़ा, गाय, मेढ़ा, पुष्प, दो स्त्री या दो बिल्लियाँ।

मङ्गल—दो बिल्लियों की लड़ाई, या दो स्त्री की कलह या कुटुम्ब कलह, रजस्वला स्त्रो या जलता हुआ घर, नपुंसक, विधवा स्त्री, अग्नि, नग्न, ३ कुत्ता।

बुध—पुत्र सहित स्त्री, जल पूर्ण कलश, चातक या चाष (नीलकंठ) गज, फूल, अन्न, दर्पण, बन्धन या ४ बालक।

गुरु—ब्राह्मण, गणिका, गाय, पुत्र सहित स्त्री, जलपूर्ण घट, ऊनी वस्त्र, काक, न्योला, बगला, हंस, ज्योतिपी पण्डित, राजा का बालक, सवारी, बहुत वैश्य।

शुक्र—ब्राह्मण, गणिका, ३ काग, नपुंसक, मद्य मांस, धान्य, ज्योतिषी, ३ शूद्र, वैश्य।

शनि—नग्न, मुसलमान, रजस्वला स्त्री, प्रेत, पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक, प्रचंड तरुण पुरुष या मतवाला।

गमनकाल में इनमें से कोई शकुन मिलना संभव है। गमनकाल में पूर्वोक्त शकुनों का श्रवण दर्शन न हो तो इनका स्मरण कर गमन करे।

ग्रह अनुसार मार्ग में शकुन—यात्रा में गुरु शुक्र की लग्न–सन्मुख ब्राह्मण और स्त्री मिले। बुध शुक्र केन्द्र में–बछड़ा सहित गाय मिले। सूर्य चंद्र दशमेश–दीप दर्शन हो, फूल, कपड़ा धोते धोबी मिले। पंचम बुध–सन्मुख बँधा बैल मिले। चन्द्र गुरु तीसरे–वाम भाग में कुत्ता मिले। सम्पूर्ण ग्रह ९,१०,११ घर में–निवला, भरद्वाज पक्षी मिले, नीलकंठ वाम मार्ग में मिले तो अत्यन्त दुर्लभ है। शनि, राहु, सूर्य तीसरे—कुमारियां, युवती स्त्री, सौभाग्यवती स्त्री मिलें इनका दर्शन सब कामना दायक है। ६-३-१० घर में मंगल–तो भी उपरोक्त फल। लाभ हो तथा दासी, वेश्या व मदिरा

पास देखे तो लाभदायक है। ७, ८, ५ घर में बुध व गुरु हो तो दर्पण, फूल, मांस, मदिरा देखे तो लाभदायक हैं। राहु मंगल शनि लग्न से तीसरे—पशु गोबर करते देखे तो शीघ्र धन लाभ हो।

यात्रा में द्रेष्काण—पूर्वोक्त लग्न में स्थित ग्रहों का जिस प्रकार फल कहा है यात्रा में उन्हीं सब ग्रहों के नवांशों में भी उसी प्रकार फल विचारना। शुभ ग्रहों के द्रेष्काण में, सौम्य रूप द्रेष्काण में फल पुष्प युक्त द्रेष्काण में रत्न भांडान्वित द्रेष्काण में और द्रेष्काणों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होने से जय होती है। उद्यतास्त्र द्रेष्काण में, निग्रह द्रेष्काण में, पाप युक्त द्रेष्काण में यात्रा से अग्नि में दाह और बंधन होता है।

द्रेष्काण के स्वरूप आदि फलित व प्रश्न खंड में दे चुके हैं।

नाव की यात्रा—जलचर लग्न में या जल राशि के नवांश में की हुई नाव की यात्रा सिद्धि दायक है। नौका चलाने में जन्म लग्न प्रसिद्ध है।

यात्रा में दिन का फल—रविवार को यात्रा–मार्ग में क्लेश, अर्थ हानि। सोमवार–बंधु और प्रिय दर्शन। मंगल–ज्वर, अग्नि, चोर भय। बुध–द्रव्य और सुख प्राप्ति। गुरु–आरोग्य और सुख। शुक्र–लाभ और शुभ फल। शनि–बंधन, रोग, मरण।

यात्रा से लौटकर गृह प्रवेश—यात्रा से लौटने पर चित्रा, अनु०, मृग०, रेव०, रोह०, तीनों उत्तरा इनमें घर में जाना (गृह प्रवेश) शुभ है। यदि अश्व०, पुष्य, हस्त०, अभि०, श्रव०, धनि०, शत०, पुन०, स्वा० इनमें गृह प्रवेश हो तो शीघ्र ही यात्रा करनी पड़ती है। इससे ये नक्षत्र गृह प्रवेश में मध्यम हैं। यदि विशाखा में गृह प्रवेश हो तो स्त्री का नाश। कृतिका में घर का नाश। मूल०, ज्ये०, आर्द्रा, श्ले० में गृह प्रवेश हो तो अपना ही नाश हो।

१२, ८, ६ और रिक्ता तिथि में जब राजा यात्रा से लौटकर आवे गृह प्रवेश वर्जित है। तथा शुभ दिन हो उस दिन मंदिर में प्रवेश करे। प्रवेश से यात्रा या यात्रा से प्रवेश नवें दिन, नवें नक्षत्र तथा नवमी तिथि वर्जित हैं।

रुद्रयामले द्विघटिका मुहूर्त

उद्देश—यह महादेव जी का द्विघटिका मुहूर्त है। यह सब मुहूर्तों का सार है। इस मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यम योग, काल, चंद्र तथा दिगशूल, योगनी, राशि (लग्न), काल होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रांति, भद्रा, अशुभ दिन आदि इतने कुयोग इस मुहूर्त में विचारने की आवश्यकता नहीं है। यह सब विघ्नों को शांत करता है। यह महादेव जी का वचन अन्यथा नहीं होगा।

इसमें १६ मुहूर्त हैं वे ३ गुणों के प्रयोग से दिन रात चलते हैं।

१६ मुहूर्त के नाम और फल

मुहूर्त	फल	मुहूर्त	फल
१ रौद्र	रौद्र तर घोर कर्म शुभ	९ रावण	वैर साधन करे
२ श्वेत	हाथी बंधन शुभ	१० वालव	युद्ध कार्य करे
३ मैत्र	स्नान दानादि श्रेष्ठ	११ विभीषण	शुभ कार्य करे
४ चर्वाट	स्तंभन प्रतिष्ठाआदि शुभ	१२ सुनंदन	मंत्र अर्थात् पैंच लगावे
५ जयदेव	सर्व काम शुभ	१३ याम्य	मारण कार्य करे
६ वैरोचन	राजगद्दी शुभ	१४ सौम्य	सभा प्रवेश करे
७ तुरदेव	शास्त्राभ्यास शुभ	१५ भार्गव	स्त्री प्रसङ्ग करे
८ अभिजित	ग्राम प्रवेश सदा शुभ	१६ सावित्र	विद्या पढ़े

वार अनुसार मुहूर्त का उदय

वार	इतवार	सोमवार	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
दिन में	१ रौद्र	३ मैत्र	५ जयदेव	७ तुरदेव	८ रावण	११ विभीषण	१३ याम्य
रात्रि में	२ श्वेत	४ चर्वाट	६ वैरोचन	८ अभिजित	१०वालव	१२ नंदन	१४ सौम्य

वार अनुसार गुणोदय और फल

वार	रविवार	सोमवार	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिवार
गुण	तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण
फल	अशुभ कार्य तोड़-फोड़ करना या काटना शुभ मोक्ष मार्ग शुभ	सिद्धि साधन करे	धन संपदा साधन करे	अशुभ कर्म आदि	सिद्धि साधन	धन संपदा साधन	अशुभकर्म आदि

४ रेखा ज्ञान व फल

नाम रेखा	अमृत	काल	विघ्न	शून्य
संज्ञा	श्री विष्णु	मृत्युपाद	युग्म	शून्य, नभ
इतर नाम	अमृत सिद्धि	यम, काल	गणाधिप	ख, अभ्र

रेखा चिह्न ज्ञान और फल

रेखा चिह्न	6	ठ	⌒	0
फल	सिद्धिकर	मृत्युकर	विघ्नकर	कार्यहानि

टिप्पणी—विघ्न रेखा धनुषाकार होकर २ घरों में रहती है जैसा आगे चक्र में दिया है।

गुण के घात वर्ण लग्न और कार्य

गुण	सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण
घात वर्ण	गौर	श्याम	कृष्ण
घात लग्न	४, ९, १२	१, २, ७, ८	३,५,६,१०,११
कार्य	सिद्ध साधन करे।	धन संपदा साधन।	छेद, भेद काटना तोड़ना फोड़ना।

इन राशियों में ये गुण घातक हैं गौर वर्ण को सतोगुण, स्याम को रजोगुण कृष्ण को तमोगुण मृत्यु दायक है।

गुण का जो घात राशि है इनके विपरीत शुभ है।

आगे मुहूर्त दिन और रात्रि के प्रत्येक वार के पृथक २ दिये हैं। उन प्रत्येक को मास के अनुसार तीन हिस्सों में विभाजित किया है।

I माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और श्रावण एवं भाद्रपद। II आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष। III ज्येष्ठ, आषाढ़ एवं मलमास।

इन्हीं महीनों के अनुसार वार के दिन या रात्रि का मुहूर्त आगे चक्र में दिया है। इष्ट मास में इष्ट वार का दिन या रात्रि का मुहूर्त खोजना।

रविवार के दिन का मुहूर्त चक्र—

मुहूर्त	१ रौद्र	२ श्वेत	३ मैत्र	४ चर्वाट	५ जय०	६ वैरोचन	७ तुरदेव	८ अभि०	९ रावण	१० वालव	११ विभी०	१२ सुनंदन	१३ याम्य	१४ सौम्य	१५ भार्गव	१६ सावि०
गुण	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत
I माघ से वैशाख तक व श्रावण भाद्रपद	०	6	6	6	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6	6	०	⌒	⌒	⌒	⌒
	शून्य रेखा	अमृत रेखा			विघ्न रेखा		विघ्न रेखा		अमृत रेखा			शून्य रेखा	विघ्न रेखा		विघ्न रेखा	
II आश्विन से पौष	6	6	6	☿	☿	⌒	⌒	6	6	०	०	☿	6	6	6	☿
	अमृत			कालरेखा		विघ्न		अमृत		शून्य		काल	अमृत			काल
III ज्येष्ठ आषाढ़ मल मास	०	०	6	6	⌒	⌒	☿	⌒	⌒	०	6	6	6	6	⌒	⌒

रविवार की रात्रि का मुहूर्त चक्र—

मुहूर्त	२ श्वेत	३ मैत्र	४ चर्वाट	५ जय०	६ वैरो०	७ तुर	८ अभि०	९ रावण	१० वालव	११ विभी०	१२ सुन०	१३ याम्य	१४ सौम्य	१५ भार्गव	१६ सावि०	१ रौद्र
गुण	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम
I माघ से वैशाख व श्रा० भाद्र	6	6	6	⌒	⌒	०	☿	6	6	6	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6
II आश्विन से पौष	☿	⌒	⌒	०	6	6	6	⌒	⌒	☿	☿	6	6	०	6	6
III ज्ये० आषाढ़ मल मास	6	6	6	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6	6

सोमवार के दिन का मुहूर्त—

मुहूर्त	३ मैत्र	४ चा०	५ जय०	६ वैरो०	७ तुर०	८ अभि०	९ रावण	१० बाल०	११ विभी०	१२ सुनं०	१३ याम्य	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौद्र	२ श्वेत
गुण	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज
I माघ से वैशाख व श्रा० भाद्र०	6	6	⌒		⌒		6	6	6	0	⌒		⌒		6	6
II आश्विन से पौष	8	⌒		0	0	6	6	6	0	⌒		6	6	0	6	6
III ज्ये० आ० मलमास	⌒		⌒		0	6	6	6	0	⌒		6	6	6	6	0

सोमवार की रात्रि का मुहूर्त—

मुहूर्त	४ चा०	५ जय०	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०	९ रावण	१० वा०	११ विभी०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौद्र	२ श्वेत	३ मैत्र
गुण	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत
I माघ से वैशाख श्रा० भाद्र०	8	0	0	6	6	0	⌒		6	6	6	6	⌒		⌒	
II आ० से पौष	8	0	⌒		6	6	6	⌒		⌒		6	6	0	6	6
III ज्ये० आ० मलमास	⌒		⌒		6	6	8	0	6	6	⌒		6	6	6	8

मङ्गल के दिन का मुहूर्त—

मुहूर्त	५ जय०	६ वैरो०	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौद्र	२ श्वे०	३ मै०	४ चा०
गुण	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम
I माघ आदि	♉	♉	6	6	6	6	⌒		⌒		6	6	⌒		⌒	
II आश्विन आदि	⌒		⌒		o	6	6	o	⌒		6	6	6	o	⌒	
III ज्येष्ठ आदि	o	o	6	6	⌒		o	6	6	⌒		⌒		⌒		6

मंगल की रात्रि का मुहूर्त—

मुहूर्त	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११विमी०	१२ सुन०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मैत्र	४ चा०	५ जय०
गुण	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज
I माघ०	⌒		♉	♉	6	6	6	♉	♉	♉	6	6	6	o	6	6
II आ०	⌒		⌒		o	6	6	6	⌒		o	6	6	6	⌒	
III ज्ये०	⌒		⌒		o	⌒		⌒		♉	6	o	⌒		6	6

बुध के दिन का मुहूर्त—

मुहूर्त	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ भा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मै०	४ चा०	५ जय	६ वै०
गुण	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत
I माघ०	⌒		6	6	Ö	Ö	6	6	6	⌒		6	6	Ö	Ö	6
II आ०	⌒		6	6	6	Ö	Ö	6	6	6	6	⌒		⌒		0
III ज्ये०	6	⌒		⌒		6	6	⌒		⌒		6	6	6	6	Ö

बुध की रात्रि का मुहूर्त --

मुहूर्त	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मै०	४ चा०	५ जय	६ वै०	७ तुर०
गुण	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम
I माघ०	6	6	6	6	6	⌒		0	6	6	6	6	⌒		⌒	
II आ०	Ö	Ö	6	6	0	Ö	Ö	6	6	6	⌒		⌒		0	0
III ज्ये०	6	⌒		6	6	0	⌒		⌒		6	6	0	0	6	6

गुरुवार के दिन का मुहूर्त चक्र—

मुहूर्त	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ भा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मि०	४ चा०	५ जय०	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०
गुण	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज
I मा०	6	6	6	6	⌒		⌒		o	6	6	6	⌒		⌒	
II आ०	6	6	o	⌒		6	6	6	6	⌒		6	⌒		⌒	
III ज्ये०	6	6	⌒		o	6	6	6	o	ȣ	ȣ	ȣ	ȣ	6	6	6

गुरुवार की रात्रि का मुहूर्त का चक्र—

मुहूर्त	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ भा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मि०	४ चा०	५ जय०	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०
गुण	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत
I मा०	ȣ	6	6	6	ȣ	ȣ	ȣ	ȣ	o	6	6	6	⌒		6	6
II आ०	ȣ	6	6	6	o	⌒		ȣ	ȣ	6	6	6	o	⌒		6
III ज्ये०	o	o	6	6	6	o	⌒		⌒		6	6	⌒		ȣ	ȣ

शुक्रवार के दिन का मुहूर्त का चक्र—

मुहूर्त	११ वि०	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मि०	४ चा०	५ जय०	६ वैं०	७ तुर०	८ अमि०	९ रा०	१० वा०
गुण	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम
I माघ०	6	6	ǒ	ǒ	o	6	6	6	⌒		⌒		6	6	6	o
II आ०	6	⌒		6	6	6	6	⌒		⌒		6	6	6	o	ǒ
III ज्ये०	⌒		6	6	6	o	⌒		⌒		6	6	⌒		ǒ	ǒ

शुक्रवार की रात्रि का मुहूर्त चक्र—

मुहूर्त	१२ सुनं०	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मित्र	४ चा०	५ जय०	६ वैं०	७ तुर०	८ अमि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०
गुण	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज
I माघ०	ǒ	ǒ	6	6	6	o	⌒		ǒ	ǒ	6	6	6	o	ǒ	ǒ
II आश्व०	⌒		6	6	6	o	⌒		6	6	6	⌒		o	⌒	
III ज्येष्ठ	⌒		6	6	6	6	⌒		o	6	6	6	o	ǒ	ǒ	6

शनिवार के दिन का मुहूर्त चक्र—

मुहूर्त	१३ या०	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मि०	४ चा०	५ जय०	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०
गुण	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत
I माघ०	♉	6	0	0	0	0	6	6	6	6	0	6	6	0	6	6
II आम्ब्र०	♉	6	0	6	0	6	6	0	6	♉	6	6	0	6	6	♉
III ज्येष्ठ	6	⌒	⌒	6	6	0	6	6	6	6	0	6	6	0	6	0

शनिवार रात्रि के मुहूर्त का चक्र—

मुहूर्त	१४ सौ०	१५ मा०	१६ सा०	१ रौ०	२ श्वे०	३ मित्र	४ चा०	५ जय०	६ वै०	७ तुर०	८ अभि०	९ रा०	१० वा०	११ वि०	१२ सुनं०	१३ याम्य०
गुण	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम	सत	सत	रज	रज	तम	तम
I माघ०	0	♉	♉	6	6	6	0	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6	6	♉	♉
II आम्ब्र०	♉	0	♉	6	6	6	6	⌒	⌒	⌒	⌒	6	6	6	0	♉
III ज्येष्ठ०	6	⌒	⌒	6	6	0	0	⌒	⌒	6	6	0	6	6	6	0

मुहूर्त देखने की रीति—

इष्ट मास में जैसा ३ प्रकार के ऊपर बताये गये इष्ट दिन का फल जानना है तो इष्ट दिन का दिनमान या रात्रिमान में १६ का भाग देना तो १ मुहूर्त का भुक्त काल प्रगट हो जायगा फिर इष्ट दिन का भुक्त काल इष्ट समय का जानकर देखो कौन समय कौन मुहूर्त कौन गुण कौन रेखा है और वह समय कार्योचित है या नहीं या कौन समय में इष्ट कार्य को उस दिन शुभ समय होगा।

यह भी देखना कौन राशि वाले को कौन रंग का व कौन सत आदि गुण घातक होता है। इसमें १६ मुहूर्तों का क्या फल है। ३ गुण में कौन गुण है उसका क्या फल होता है। और रेखा कौन है उसका क्या फल है। इन सब बातों पर विचार कर इष्ट कार्य के अनुसार मुहूर्त खोज कर निर्णय करना।

पल्ली पतन (ऊपर से अंग पर छिपकिली गिरने) का फल—

मस्तक या सिर–सुख	दक्षिण अंगुली–इष्ट पदार्थ प्राप्त	विछौने पर सोते या बैठते गिरे–	अशुभ की वृद्धि
वाम कपोल–इष्ट मित्र भेंट।	नख–धन हानि	आसन पर बैठे बाद	शुभ व अशुभ दोनों
दक्षिणगंड–इष्ट सम्पति प्राप्त	दक्षिण हाथ के मध्य–महान सुख	भोजन करते उच्छिष्टान्न पर	भाइयों की परस्पर मित्रता
केश बंध–रोग उत्पन्न	पीठ–इष्ट मित्रों का समाचार सुने		
केश अग्रभाग–नाश	दोनों पार्श्व भाग–भाइयों से भेंट	रास्ता चलते अंग पर	उस अंग का शुभाशुभ अपने शत्रु पर होगा।
व्रह्म रंध्र–मरण	पेट–धन प्राप्त वृद्धि सौख्य		
ललाट–लक्ष्मी प्राप्त	पुरुष दोनों स्तन–भाग्य होय	भोजन करते अन्नपर	अन्न त्याग कर दो
भृकुंटी–धन नाश	वाम वाहु–वहुत क्लेश	अन्न विना थाली या पात्र पर	रोग शोक भय उत्पन्न
भृकुटी मध्य–द्रव्य नाश	दक्षिण वाहु–यश		
दक्षिण नेत्र–शुभ	वाम हस्त–कुटुम्व से क्लेश	जिस भाग पर रसोई करते हैं या करेंगे–	स्त्री की मृत्यु
वाम नेत्र–वंधन प्राप्त	वाम मणि बंध–धन नष्ट		
मुख–मिष्ठान्न भोजन	वाम हस्त के पीठ ऊपर–अलंकार प्राप्त	देवालय–राजा का नाश	
नाक–सौभाग्य प्राप्त	अंगुली–अलंकार प्राप्त	सभा में–सभा करने वालों का नाश	
नासिका अग्र–द्रव्य प्राप्त	वाम हस्त के नख–नाश	गृह के मध्य में–घर वालों का नाश	
दक्षिण कर्ण–लाभ	वाम हस्त के मध्य–धन प्राप्त	दो के बीच गिरे–दोनों का नाश	

वाम कर्ण—दुःख
गला के मध्य—सुभोजन
अधरोष्ठ—धन ऐश्वर्य प्राप्त
ऊर्ध्वोष्ठ—कलह
दोनों ओंठ का संपुट—मृत्यु
अधरोष्ठ के नीचे—राज
हनु पर विग्रह
कंठ—मित्र आगमन
कंठ के वहिर्भाग—शत्रुक्षय
दक्षिण स्कंध—विजय
वाम स्कंध—पराजय
दक्षिण कर—द्रव्य नाश
दक्षिण मणिवंध—अलंकार प्राप्त
दक्षिण हाथ की पीठ—द्रव्य हानि

कमर—वस्त्र अलंकार प्राप्त
नाभि—जय कीर्ति
वंधन—नाभि के अधोभाग को वस्ति का भाग कहते हैं
लिंग—मृत्यु
उरू—वस्त्र नाश
जघन—कटि के नीचे के अंग भाग पर
गुदा—रोग धन नाश
जानू के नीचे जंघा पर—प्रवास होय
पैर—वंधन
जुड़े हुए पैरों पर—मृत्यु
पैर की पीठ पर—सुख
पैर की अंगुली—पुत्र नाश
पैर के नख—पशु और सेवक नाश
पैर का तलुवा—शत्रु नाश

पल्ली आपस में लड़ते गिरें	सब दुःख दूर हो गृह वाली को सुख
पल्ले गिरे से	घर का नाश
दीपक बुझे	३ मास घर त्यागे
अपने वस्त्र या अलंकार पर	स्वमान की हानि या किसी से क्लेश
तलवार आदि आयुध पर	शत्रु से युद्ध अपने द्वारा शत्रु का नाश
अश्व आदि वाहनों पर	कष्ट से प्रवास

स्त्री के अंग पर पल्ली गिरने का फल—

मस्तक—लक्ष्मी प्राप्त
वह्मरंध्र—मृत्यु
वेणी—रोग
केश—मरण
ग्रीवा—नित्य कलह
ललाट—धन क्षय
दक्षिण गाल—विधवा
वाम गाल—प्रिय वस्तु का दर्शन
दक्षिण कर्ण—दीर्घ आयु
वाम कर्ण—स्वर्ण अलंकार प्राप्त
दक्षिण नेत्र—दुःख
वाम नेत्र—प्रिय का दर्शन
नाक—रोग
उर्द्ध ओंठ—लड़ाई

अधरोष्ठ—धन ऐश्वर्य प्राप्त
दोनों ओंठ का पुट—नाश
अधरोष्ठ के नीचे हनु पर—कलह
मुख—अलंकार
दोनों काँख—सुख प्राप्ति
पीठ—भाइयों का वियोग
दोनों पार्श्व—भाइयों से भेंट
दोनों कंधे—सुख
दोनों वाहु—मणियुक्त अलंकार।
दक्षिण हस्त—द्रव्य नाश
वाम हस्त—शीघ्र लाभ
दक्षिण वंध—मन को ताप
वाम वंध—भूषण प्राप्त
हाथ—वहुत सुख
हाथ की अंगुली-अलंकारप्राप्त।

नखों पर—वड़ा दुःख
छाती पर—सौख्य वृद्धि
दोनों कुक्षि—उत्तम पुत्र
कन्या के पीठ पर—विवाह
नाभि—सुवृद्ध सत कीर्ति
योनि—मरण
कमर—उत्तम वस्त्र मिले
वगल पर—घर का नाश
गुदा—रोग
दांतों पर—कन्या या पुत्र
जानु पर—वंधन
जानु के नीचे जंघा पर—द्रव्य नाश
गुल्फ—मरण
दक्षिण पैर—सवारी मिले
वाम पैर—शत्रु नाश
पैर की अंगुली—वहुत पुत्र

यहाँ जो पल्ली पतन का फल कहा है वही सरठ (गिरगिट) चढ़ने का फल है। पुरुष या स्त्री के जिस जिस अंग पर पल्ली गिरने का फल कहा है उसी-उसी अंग पर गिरगिट चढ़ने का शुभाशुभ फल विचारना। इसके विरुद्ध यदि अंग में पल्ली चढ़े और गिरगिट गिर पड़े तो नाश योग, नहीं तो शुभ जानो।

कदाचित गिरगिट शरीर पर गिर कर चढ़ जाय तो पतन का फल अति उत्तम है। जो केवल चढ़े तो कुछ अल्प फल होवे।

सरठ का अवरोहण और पतन के लक्षण—उर्द्ध मुख होय के उतरे तो उसको पतन कहते हैं इस लक्षण से युक्त जो पतन व अवरोहण है तो शीघ्र फल प्राप्त हो।

पल्ली गिरकर जिस दिशा को भागे उसका फल।

पूर्व जाय—चित्त व कार्य सुफल, अग्नि कोण—अग्नि भय, दक्षिण—मरण, नैऋत्य—कलह, पश्चिम—धन लाभ, वायव्य—रोग, उत्तर—कीर्ति, ईशान—चिंता कार्य सिद्ध। बार फल—सोम, बुध, गुरु, शुक्र—धन लाभ, रवि, भौम, शनि—धन हानि।

तिथि फल	नक्षत्र फल	योग आदि का फल
१—सर्व लोक अनुकूल हो	१ अश्व—आयुष, आरोग्य प्राप्ति	वैधृति, व्यतीपात,उत्पात
२—राज मिले	२ भर०—रोग	यमघंट योग, मृत्यु योग,
३—इष्ट लाभ	३ कृत—धन हानि	दग्ध योग काल नाड़िका
४—रोग उत्पन्न	४ रोह, ५ मृग } सम्पत्ति	जिस दिन गिरे—सब अशुभ है। बिना नाड़ी में और
५, ६, ७—धन मिले	६ आर्द्रा, ७ पुनर } मृत्यु	क्रूर ग्रह युक्त लग्न में अंग
८, ९, १०—मरण	८ पुष्य, ९ श्ले० } मृत्यु	पर श्रेष्ठ जगह भी गिरे तो
११—पुत्र लाभ	१० मघा—कल्याण	अशुभ है। ग्रहण के दिन
१२—पुत्र और सम्पत्ति मिलें	११ पूफा—रोग आदि	अंग पर गिरे तो अशुभ फल
१३—हानि	१२ उफा, १३ हस्त शुभ	हो। धूम केतु आदि जिस
१४—वंधु नाश	१४ चित्रा, १५ स्वा० } धन नाश	दिन उदय हो उस दिन
३०—धन नाश	१६ विशा० } धन नाश	गिरे तो नाश हो।

लग्न फल—	
१, २—लाभ	१७ अनु०—राज भोग
३—कन्या हानि	१८ ज्ये०—नाश
४—बुद्धि	१९ मूल—सुख
५—सुत	२० पूषा—मृत्यु
६—नाश	२१ उषा—कल्याण
७, ८, ९—वस्त्र लाभ	२२ श्रव—राज्य
९-१०—धन मिले	२३ धनि०—क्षय
११—हानि	२४ शत०—सुख
१२—संताप हो	२५ पूभा—शुभ
	२६ उभा, २७ रेव० } राज्य प्राप्त

दोष शांति के लिए स्नान कर शिव मंदिर में घृत दीप जलाये ११०० शिव मंत्र जपे। तिल उड़द का दान देवे।

जब पल्ली का स्पर्श हो उसी समय स्नान कर पंच गव्य प्राशन करे दूध, दही, घी गौमूत्र और गोबर ये पंच गव्य हैं।

अंग स्फुरण फल

पुरुषों के दाहिने और स्त्रियों के बांये अङ्ग का फल विचारना।

सिर–पृथ्वी लाभ	ग्रीवा–शत्रु भय	बस्ति (पेंड़)–भाग्योदय
ललाट–स्थान लाभ	पृष्ट–पराजय	उरु–वस्त्र लाभ
भृकुटी मध्य–प्रिय दर्शन	स्कंध–मित्र लाभ	जानु–शत्रु से संधि
दोनों भ्रू–सुख	भुजा–प्रिय मिलाप	जंघा–हानि
कर्ण–शुभ वार्ता सुने	भुजा के बीच–धन लाभ	चरण का ऊपरी भाग—स्थान लाभ
नेत्र–देव दर्शन	हाथ–द्रव्य प्राप्ति	चरण के नीचे का भाग–लाभ
नेत्र के कोण–लक्ष्मी प्राप्त	वक्षस्थल–विजय	हनु (टोड़ी)–भाग
नेत्र के नीचे के पक्ष–जय	कटि–आनंद, बल प्राप्ति	गुदा–वाहन लाभ
गंड–स्त्री सुख	पार्श्व (बगल) प्रसन्नता	मुख–मधुर भोजन
नासिका–सुगन्ध प्राप्त	जीभ–यात्रा	लिङ्ग–स्त्री प्राप्ति
ऊपर का ओंठ–वार्तालाप	आंते–धन लाभ	कंठ–भूषण प्राप्त
नीचे के ओंठ–चुम्वन	उदर–द्रव्य लाभ	अंडकोष–पुत्र लाभ
नाभि–स्थान भ्रंश	कंठ मध्य–राज प्राप्ति	ऊपर का पलक—दुःख मिटे धन प्राप्त
		नीचे का पलक–पराजय

स्त्रियों का अङ्ग स्फुरण भ्रूमध्य में पुरुषों के समान है। परन्तु और सब अङ्ग विपरीत हैं। अर्थात् स्त्रियों का बाँया अङ्ग शुभ है। दाहिना अशुभ है। पुरुषों का दाहिना अङ्ग शुभ है वांया अशुभ है।

अङ्ग में लहसुन, मसे, तिल का फल अङ्ग स्फुरण के समान है।

काक शब्द विचारना

काक शब्द सुनकर अपनी छाया नापे + १३ ÷ ६

शेष १—लाभ। २—खेद। ३—सुख। ४–भोजन। ५–धन प्राप्त। १०–अशुभ।

पिङ्गल शब्द विचार—किलिपिल शब्द हो—उल्लास। चिल्लिल—भोजन प्राप्त खिटखिट—बंधन। कुर्कुर–महाभय।

छींक–पूर्व की अशुभ। आग्नेय–शोक दुःख। दक्षिण-अरिष्ट। नैऋत्य-शुभ। पश्चिम–मिष्ठ भोजन। वायव्य-धन दायक। उत्तर-कलह। ईशान-शुभ। अपनी छींक–बहुत भय। ऊपर को शुभ। मध्य की–बड़ा भय। आसन में, सोते में, दान में, भोजन में बाईं ओर और पीछे की हो तो शुभ है।

छींक से छाया विचार—छींक सुनकर अपने पैर से छाया नापे + १३ ÷ ८ १—लाभ। २–सिद्धि। ३–हानि। ४–शोक। ५—भय। ६—लक्ष्मी। ७—दुःख। ०—निष्फल।

खंजन (धोवन चिड़िया) के दर्शन का फल

जल के समीप, हाथी के मस्तक पर, देव स्थान में, ब्राह्मण के समीप, आकाश में, भारी वन में इन स्थानों में पहिले खंजन दर्शन शुभ है।

पूर्व दिशा में देखे–धन मिले सिद्धि होय। आग्नेय–अग्नि भय। दक्षिण–रोग। नैॠत्य–कलह। पश्चिम–लक्ष्मी प्राप्त। वायव्य–वस्त्र लाभ। उत्तर–दिव्यांगना मिले। ईशान–मरण।

स्वप्न विचार

स्वप्न ७ प्रकार के होते है। (१) दृश्य–दिन में देखे हुए को स्वप्न में देखना। (२) श्रुत–सुने हुए को देखना। (३) अनुभूत–जागते समय परिक्षित बात को देखना। (४) प्रार्थित–जगने में इच्छा की हुई बातें देखना। (५) कल्पित–दिन में कल्पना की हुई बात देखना। (६) भाविक–न कभी देखी, न सुनी ऐसी विलक्षण बात देखना। (७) दोषज–बीमारी के बात पित्त कफ के विकार से जो दिखे।

इनमें ५ प्रकार १ दृश्य, २ श्रुत, ३ अनुभूत, ४ प्रार्थित और ५ कल्पित ये स्वप्न निष्फल हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल अवश्य ठीक-ठीक मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी की आरोग्य एवं कष्ट वृद्धि का कारण होता है।

स्वप्न के बाद सो जाने से तथा भूल जाने से भी निष्फल हो जाना संभव है। जागने के पहिले अरुणोदय का स्वप्न टीक-ठीक फल देता है। भुनसारे प्रहर का स्वप्न प्रायः ठीक निकलता है। रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे स्वप्न का फल १ वर्ष में। दूसरे का–६ महीने में। तीसरे का–३ मास में। चौथे प्रहर का–१ मास में। अरुणोदय का–१० दिन में। सूर्योदय के आसन्न का स्वप्न तुरन्त फल देता है।

शुभ स्वप्न—नदी या समुद्र में तैरना, आकाश में उड़नां, ग्रह नक्षत्र आदि या, ध्रुव तारे, सूर्य मंडल, चन्द्र मंडल आदि देखना मकान व देव स्थान पर चढ़ना देखे तो सिद्धि प्राप्त होने वाली है। स्वप्न में मदिरा पान, अंतड़ियों के मांस का भक्षण, कीड़ा विष्ठा व रक्त का शरीर में लेपन करना, दधि भात का भोजन सफेद वस्त्र व चंदन, रत्न, आभरण (गहने) को देखना अच्छा है।

सफेद वस्त्र धारण किये और फूल लिये देव, ब्राह्मण, राजा को और स्वच्छ वस्त्र तथा श्रेष्ठ वस्त्र धारण किये स्त्री का दिखना, सांड़ हाथी, पर्वत, ऊमर का वृक्ष तथा फले फूले वृक्ष पर चढ़ना, दर्पण, मांस, फूल की प्राप्ति देखे तो बड़ा लाभ हो, रोग से मुक्त हो।

जिसे जोंक, भ्रमरी, सर्प या मधुमक्खी काटे तो रोग दूर हो या धन मिले। सुन्दर फूल, वस्त्र, मांस, मछली और फल मिले तो रोग दूर हो धन मिले।

स्वप्न में मङ्गल ग्रह या चाँद देखे तो रोगी का रोग दूर हो अन्य को धन मिले। स्वप्न में दाहिने हाथ में सांप काटे तो शीघ्र दशवें दिन धन मिले। बेड़ी पड़े या पास में खूब बंधा देखे तो सुपुत्र प्राप्त हो, प्रतिष्ठा भी मिले।

स्वप्न में रक्त या मदिरा पीता है तो ब्राह्मण को धन, क्षत्रिय को भूमि और धन, वैश्य को धन सम्पत्ति, शूद्र को धन घर द्वार से सुखी होगा। जो स्वप्न में फेन आये हुए तुरन्त के दुहे हुए दूध को पीता है उसे १० दिन में शीघ्र सम्पत्ति मिलती है।

स्वप्न में नवीन बना भात और दूध खाता पीता है उसे धन मिले। सफेद फूल माला और निर्मल वस्त्र तथा छत्ता एवं चंदन भी मिले तो धन प्राप्त हो। स्वप्न में आसन में, शयन में, सवारी में, शरीर में, वाहन में घर में जलता हुआ जाग उठे अर्थात् बच जाय तो चारों ओर से लक्ष्मी प्राप्त हो।

स्वप्न में तालाव में कमल पत्र पर बैठकर दही व खीर खाता है वह राजा होता है। अपने शरीर में रक्त बहता देखता है या रुधिर से स्नान करता है या जिस का सिर छेदन होता है वह शीघ्र राज्य प्राप्त करता है।

पीताम्बर पहिने, पीत केशरिया चंदन धारण करने वाली अर्थात् कुमकुमादि से जिसका शरीर भूषित हो ऐसी सुहावनी स्त्री को स्वप्न में आलिङ्गन करे तो उसका कल्याण होता है। स्वप्न में उज्ज्वल सफेद वस्त्र धारण करने वाला श्वेत फूलों की माला पहिने स्त्री का आलिङ्गन करे तो वह जहाँ जाय लक्ष्मी प्राप्त होती है।

स्वप्न में राजा, हाथी, घोड़ा, सुवर्ण वैल गौ इनको देखे तो कुटुम्ब बढ़ता है। वैल और वृक्ष पर चढ़ कर जो स्थिर रहता है उसे जागने पर धन मिलता है। सफेद सर्प दाहिनी भुजा में काटे तो १० दिन में सहस्र धन का लाभ हो। जल में स्थिर विच्छू या सर्प ग्रस ले तो यश, पुत्र, धन, लाभ हो। वलाका, कुक्कुटी, कौंची इनके दर्शन से स्त्री प्राप्त होती है। दधि के लाभ से वेद की प्राप्ति, दूध के पीने और घृत के लाभ में यश। आँतों में लिपटा दिखे तो राज्य। मनुष्य के चरण का मांस भक्षण करे तो १०० मुद्रा लाभ। वाहु के भक्षण में सहस्र व शिर के मांस भक्षण में राज्य या सहस्र धन मिले। श्वेत सरसों के दर्शन में लाभ। स्वप्न में पान देखे या कपूर मिले और सफेद पुष्प मिले तो चारों ओर से लक्ष्मी मिले।

अशुभ स्वप्न—छिपले के वृक्ष पर, वमीठे पर, नीम पर चढ़ना बुरा है। तेल, कपास, खली या लोह की प्राप्ति विपत्ति सूचक है। स्वप्न में विवाह होना, लाल फूल की माला और लाल वस्त्र धारण करना, जल के प्रवाह में वहना, पके मांस का भक्षण खराब होता है। प्रकाश हीन सूर्य चन्द्र को देखना, नक्षत्रों का गिरना मरण शोक कराता है। नौका पर चढ़े तो प्रवास होता है। अपने दांत गिरे देखने वालों को भी जो गिरा हुआ देखे उसका धन नाश होने वाला है। या बीमारी होने वाली हैं। सींग वाले भैंसा या बैल आदि तथा दाढ़ वाले सिंह शेर आदि या बन्दर कूकर जिस पर झपटे उसे राज कुल से भय होता है। रज, तेल या घी या किसी अन्य पदार्थ से लिपटा हुआ देखे तो कोई बीमारी होने वाली है। लाल कपड़ा धारण किये लाल चंदन लगाये

यदि स्त्री आलिङ्गन करे तो मृत्यु होने वाली है। काले वस्त्र धारण किये, काला भयंकर चंदन लगाये स्त्री को देखे या आलिङ्गन करे तो मृत्यु भय हो। स्वप्न में अशुभ बाल बनाये या बनवाये, विवाह होना दिखे तथा अपने घर में नाच देखे तो मृत्यु समीप समझो। स्वप्न में बिना वस्त्र के नागा सन्यासी को या मूड़ मुड़ाये गुसाइयों को लाल काले कपड़ा पहिने, कुबड़े, कुरूप, भयानक काले, हाथ में फाँसी का हथियार लिये पुरुष को देखे तो रोग होने वाला है तथा परिणाम में हानि होने वाली है। बाँधते हुए, पकड़ते हुए दक्षिण की ओर रहने वाले और भैंसे, ऊँट, गधा पर स्त्री व पुरुष को देखना वह यदि स्वस्थ है तो बीमार होगा। बीमार है तो मृत्यु होगी। अपने को पर्वत से गिरता देखे या जल में डूबता देखे या कुत्ता काटता है, मगर, बड़ी मछली से लीला जाना देखे, नेत्र को बन्द कर दीपक को बुझाता देखे वह स्वस्थ है तो बीमार होगा बीमार है तो मृत्यु होगी। या प्राण संकट में पड़े।

स्वप्न में सफेद वस्तु देखना प्रायः शुभ होता है केवल भात, मट्ठा और भस्म को छोड़कर, गाय, हाथी तथा देवता को छोड़ कर सभी काली वस्तु खराब होती है।

स्वप्न में तेल और मदिरा का पान करना, लोह तथा तिलों का प्राप्त करना। पक्वान्न लेना या खाना और कुआ में एवं भूमि के भीतर प्रवेश करना देखे तो स्वस्थ मनुष्य बीमार हो बीमार हो तो प्राण संकट में पड़े।

काक स्पर्श मैथुन आदि—कौवा यदि मनुष्य के सिर पर बैठे या सुप्त अवस्था में शब्द करते हुए या बिना शब्द किये शरीर को स्पर्श करे या संध्या के समय स्पर्श करे या सिर या छाती में पंख मारे या नख से विदारण करे या दिन या रात्रि में मैथुन करता दिखे तो अपना व अपने कुटुम्बियों का मरण तुल्य कष्ट या स्थान च्युत करता है।

दोष निवारण के लिए उसी समय, स्नान, दान व विधिपूर्वक शांति करे।

उपरोक्त दोष निवारण की सूक्ष्म शांति विधि—

७ प्रकार के अनाज दान करे और दक्षिणा देवे। उड़द दाल को पिठी का कौवा की आकृति बना कर गंध पुष्प आदि से पूजन करे उड़द की पिठी अर्पण करे सात मुख का एक आटे की दीपक बना कर पूजन करे फिर सबको मिट्टी के पात्र में रख कर चौराहे पर रख दे और स्वतः पंच गव्य युक्त जल में मिलाकर स्नान कर शंकर भगवान का जप ध्यान पूजन करने से काक मैथुन आदि का दोष शांत हो जाता है।

काक यदि मध्य रात्रि को गृह में प्रवेश करे तो अरिष्ट होता है उसकी भी विधि पूर्वक शांति कर लेना चाहिये।

संक्रांति आदि का विचार—

पूर्व राशि से अगली राशि में ग्रह जाने का नाम संक्रांति है यद्यपि हर ग्रहों की संक्रांति होती है। यहाँ सूर्य की संक्रांति का विचार दिया है।

संक्रांति नाम	नक्षत्र	वार	फल
१ घोरा	तीनों पूर्वा, भरणी मघा	रविवार	शूद्रों को सुख देने वाली
२ ध्वांक्षी	हस्त, अश्वनी, पुष्य, अभिजित	सोमवार	वैश्यों को ,, ,,

संक्रांति नाम	नक्षत्र	वार	फल
३ महोदरी	स्वाती, पुन०, श्रवण, धनि०, शत०	मंगलवार	चोरों को सुख देनेवाली
४ मंदाकिनी	मृग०, रेवती, चित्रा, अनु०	बुधवार	क्षत्रियों को ,, ,,
५ मंदा	तीनों उत्तरा, रोहणी	गुरुवार	ब्राह्मणों को ,, ,,
६ मिश्रा	विशाखा, कृतिका	शुक्रवार	पशुओं को ,, ,,
७ राक्षसी	मूल, ज्ये०, आर्द्रा, श्ले०	शनिवार	चंडाल आदि को ,,

दिनमान के विभाग करके संक्रांति का फल—

(१)	दिन के प्रथम भाग में—क्षत्रियों का नाश	रात्रि पहले प्रहर—भूत पिशाचों का नाश
(२)	,, दूसरे ,, —ब्राह्मणों ,,	,, दूसरे ,, —राक्षसों का नाश
(३)	,, तीसरे ,, —वैश्यों ,,	,, तीसरे ,, —नटों का नाश
(४)	सूर्यास्त काल में —शूद्रों ,,	,, चौथे ,, —पशुपालक (अहीरों) ,,
		सूर्योदय काल में—पाखंडियों का नाश

शेष संक्रांतियों के नाम (कर्क मकर संक्रांति छोड़ कर)

षड्शीति मुखा—मिथुन, कन्या, धन, मीन, संक्रांति का नाम

विषुव —मेष, तुला, संक्रांति

विष्णुपदा —वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ की संक्रांति

संक्रांति का पुण्य काल पर विचार—

सूर्य की संक्रांति जिस काल में हो उससे पहिले और पश्चात् १६-१६ घड़ी का अर्थात् सब मिलाकर ३२ घड़ी का पुण्य काल जानना।

आधी रात के पूर्व संक्रांति हो तो पूर्व दिन का उत्तरार्द्ध पुण्य काल और आधी रात के उपरांत हो तो पर दिन का पूर्वार्द्ध पुण्य काल होगा। जब पूरे आधी रात समय में पुण्य काल हो तो पूर्व और पर दोनों दिन तक पर्व काल होगा।

प्रातः संध्या में कर्क संक्रांति—सूर्योदय के बाद सम्पूर्ण दिन पुण्य काल सायंकाल में मकर संक्रांति—सूर्य अस्त काल के पूर्व सम्पूर्ण दिन पुण्य काल होगा।

संध्या काल का प्रमाण

जिस काल में आधे सूर्य बिम्ब का उदय हो उस काल से पूर्व ३ घड़ी = प्रातः संध्या और सूर्य बिम्ब का आधा अस्त हो उस काल से पूर्व ३ घड़ी = सायं सन्ध्या जानना।

याम्यायन व विष्णुपद आदि का विशेष पुण्य काल—

कर्क संक्रांति और विष्णुपद (२, ५, ८, ११ राशि) की संक्रांतियाँ जब हों उस काल से पूर्व ही १६ घड़ी पुण्य काल होता है। और पर में १६ घड़ी का पुण्य काल नहीं होता जैसा कि पूर्व कहा है।

मेष, तुला संक्रांतियां जिस काल में हों उस काल से पूर्व १६ घड़ी व पर १६ घड़ी मिलकर ३२ घड़ी का या पूर्व ८, पर ८ मिलकर १६ घड़ी का पुण्य काल होता है।

३, ६, ९, १०, १२ राशि की संक्रांति काल में पर १६ घड़ी ही पुण्य काल होता है और पूर्व १६ घड़ी पुण्य काल नहीं होता जैसा कि पूर्व कहा है।

सायन सूर्य की संक्रांति –

ये अयन संक्रांति दान, जप, होम, श्राद्धादि पुण्य कर्म करने के लिये बहुत पुण्य दायक हैं। मकर चल संक्रांति को छोड़ अन्य ११ चल संक्रमणों में पूर्वोक्त ही पुण्य काल होता है और मकर चल संक्रमण में हो तो पूर्व ही २० घड़ी का पुण्य काल होता है।

नक्षत्रों के विचार से संक्रांति का मुहूर्त

१५ मुहूर्त—जघन्य नक्षत्र—श्लें०, शत०, आर्द्रा, स्वा०, ज्ये०, भरणी
४५ मुहूर्त—वृहत " —रोह०, उफा०, उषा०, उभा०, विशा०, पुनर०
३० मुहूर्त—सम " —मृग०, रेव०, अनु०, चित्रा०, अश्व०, पुष्य, हस्त०
(१ मुहूर्त—२ घड़ी) " —धनि०, श्रव०, कृति०, मघा, तीनों पूर्वा०, मूल

अन्न भाव विचार --

जिस महीने में संक्रांति १५ मुहूर्त वाली = उस महीने में = अन्न महँगा
" " ४५ " = " = अन्न सस्ता
" " ३० " " = " " = भाव सम

ऐसा ही चन्द्रोदय से अन्न के भाव विचारना –

जघन्य नक्षत्रों में जिस मास में संक्रांति के = १५ मुहूर्त = उस मास = महँगा
वृहत " " " " " " = ४५ " = " " = सस्ता
सम " " " ' " " = ३० " = " " = सम

अर्थात् जघन्य नक्षत्रों में चन्द्र का उदय हो उस महीने भर अन्न महँगा। वृहत् में सस्ता, सम में उस महीने भर अनाज का सम भाव रहेगा।

कर्क संक्रांति का वार के अनुसार अब्द विशोपिका—

रविवार	सोमवार	मङ्गलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१०	२०	८	१२	१८	१८	५

कर्क राशि की सूर्य संक्रांति यदि इन वारों में हो तो चक्र के अनुसार अब्द विशोपिका होते हैं। अर्थात् जिस सम्वत्सर में कर्क की संक्रांति जिस दिन होती है उसी दिन के अनुसार उस सम्वत्सर के विश्वा पंचांग में लिखे जाते हैं।

संक्रांति की सुप्त आदि अवस्था और फल—

अवस्था	करण	फल
सोते हुए =	तैतिल, नाग, चतुष्पद	अन्न आदि की महँगी, अवर्षण कारक।
बैठे हुए =	गर, वणिज, भद्रा, वव, वालव	,, सम, इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं।
खड़े हुए =	किंतुघ्न, शकुनी, कौलव	श्रेष्ठ, अन्न आदि सस्ता व वर्षाकारक।

संक्रान्ति का वाहन वस्त्र आयुध आदि विचार—

करण	वाहन	वस्त्र धारण	आयुध	भक्षण	लेपन	जाति	फूल लिये
वव में	सिंह	उजला	भुसुंडी	अन्न	कस्तूरी	देवता	नाग केशर का
वालव	व्याघ्र	पीत	गदा	खीर	कुंकुम	भूत	चमेली
कौलव	वाराह	हरा	तलवार	भिक्षा से प्राप्त अन्न	लाल चंदन	सर्प	मौलश्री
तैतिल	गधा	थोड़ा पीला	दंडा	पक्वान पुआ आदि	मट्टी	पक्षी	केतकी
गर	हाथी	लाल	धनुष	दूध	गौरोचन	पशु	वेला
वणिज	भैंसा	श्याम	तोमर मथानीवत	दही	महावर	मृग	मदार
विष्टि	घोड़ा	काला	वरछी	मिश्रित पके अन्न	विलार के पसीने से	ब्राह्मण	दूब
शकुनी	कुत्ता	चित्र अनेक रंग	पाश (फाँसी)	गुड़	हल्दी	क्षत्रिय	कमल
चतुष्पद	मेढ़ा	कम्बल	अंकुश	मधु	सुरमा	वैश्य	चमेली
नाग	बैल गौ	नंगी	अस्त्र	घी	अगर	शुद्र	पांढर
किंतुघ्न	मुर्गं	मेघ वर्ण	तीर	शक्कर	कपूर	वर्ण शंकर	गुड़हर

विषुव संक्रांति—मेष, तुला। अयन संक्रांति—कर्क मकर।

संक्रांति फल—जिस महीने की संक्रांति के जो वाहन वस्त्र भक्ष्य आदि कहे हैं उस महीने में उन सबका नाश अथवा उन वस्तुओं से जीविका करने वालों का नाश। सूर्य की जो सोते उठते बैठते ३ अवस्था कही है उन अवस्थाओं में वर्तमान संक्रांति जिस अवस्था में हो उसके पूर्व नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिने। यदि संक्रांति पूर्व नक्षत्र पर से ३ नक्षत्रों में जन्म नक्षत्र हो तो—कहीं जाना पड़े। चौथे से ६ नक्षत्रों में पड़े—सुख। दसवें से लेकर ३ नक्षत्रों में पड़े—शरीर पीड़ा। तेरवें से लेकर ६ नक्षत्रों में पड़े—वस्त्र की प्राप्ति। १९ वें से लेकर ३ नक्षत्रों में पड़े—द्रव्य आदि की हानि। २२ वें से लेकर ६ नक्षत्रों में पड़े—धन की प्राप्ति।

३	६	३	६	३	६ = योग २७
पंथा यात्रा करायें	सुख	व्यथा पीड़ा	वस्त्र प्राप्त	हानि अर्थ की	धन मिले फल

अन्य मत—विषुव संक्रांति को छोड़ कर अन्य में इसका विचार करें।

चंद्र अनुसार संक्रांति फल—

जैसे अच्छे या बुरे स्थान में चंद्र शुभाशुभ फल देता है। इसी प्रकार अच्छे या बुरे चंद्र की अर्की हुई संक्रांति चंद्रमा के अनुसार फल दायक होती है।

चंद्रराशि	१–४–८	७–९–१२	२-३-६	५-१०-११
वर्ण	रक्त	पीत	श्वेत	कृष्ण
फल	दु:खदाई	लक्ष्मी प्राप्ति	शुभ, सुखप्रद	मृत्युदाई

विषुव संक्रांति का नराकार चक्र—

अंग	बांया पैर	दा० पैर	बांया हाथ	दा० हाथ	छाती	मुख	सिर
नक्षत्र	३	३	३	३	५	३	७
फल	मृत्यु	देश भ्रमण	भिक्षा मांगे	स्त्री लाभ	धन लाभ	विद्या लाभ	भूमि लाभ

यह विचार अपने नक्षत्र से करें। विषुव संक्रांति पुष्यकाल में होती है तो उससे एक नक्षत्र छोड़ कर विचार करना अर्थात् पुष्य के आगे के ३ नक्षत्र श्ले० मघा पूफा० बांये पैर में पड़ेंगे।

संक्रांति की वर्जित घड़ी—

अयन और विषुव संक्रांतियों में पूर्व मध्य और पर दिन शुभ कार्यों में वर्जित है। शेष संक्रांतियों में, संक्रांति से पहिले और पीछे १६–१६ घड़ी वर्जित करना। सूर्य संक्रांति से पूर्व पर की ३३ घड़ी। चंद्रमा के संक्रमण में २ घटी। मंगल में–९ घटी। बुध–६। गुरु–८८। शुक्र–९। शनि–१६० घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करना, विशेषता सूर्य की अतिनिंदित है।

जन्म नक्षत्र आदि से संक्रांति फल—

जन्म नक्षत्र पर अर्क	जन्म मास में	जन्म तिथि में संक्रांति पड़े
किसी से वैर	क्लेश	धन क्षय

और भी संक्रांति के पुण्य काल पर विचार –

पूरी आधी रात को संक्राति लगे तो दोनों दिन पूर्व और पर काल पर पुण्य काल होगा। सूर्योदय के पूर्व वा सूर्योदय के पर याम्यायन उत्तरायण क्रम से संक्रांति लगे तो पूर्व पर दिन पुण्य काल होगा।

अर्द्धरात्रि में संक्रान्ति	सूर्योदय बाद याम्यायन	सूर्यास्त बाद सौम्यायन
दोनों दिन पूर्व और पर दिन	पूर्व दिन पुण्य काल	पर दिन पुण्य काल

सूर्य के अर्द्ध विम्ब के उदित या अस्त से पहले या बाद संक्रांति लगे याम्यायन सौम्यायन क्रम से ३ घड़ी तक अर्थात् सूर्योदय अर्द्ध विब के प्रथम ३ घड़ी तक याम्यायन संज्ञक अर्थात् कर्क की संक्रान्ति लगे और सूर्यास्त के अर्द्ध विम्ब के उपरांत ३ घड़ी तक,

सौम्यायन अर्थात् मकर को संक्रान्ति लगे तो पर पूर्व दिन पुण्य काल क्रम से जानो अर्थात् याम्यायन के पर दिन और सौम्यायन के पूर्व दिन जानियें।

सौम्यायन और विष्णुपदी संज्ञक संक्रान्ति के आदि में पुण्यकाल होता है और तुला और मेष की संक्रान्ति के बीच में पुण्यकाल होता है। २–५–११ की संक्रान्ति में पूर्व ही १६ घड़ी पुण्य काल होता है। ३–६–९–१२ की संक्रान्ति में पर १६ घड़ी पुण्य काल होता है। १ व ७ की संक्रान्ति के दोनों ओर १०–१० घड़ी पुण्य काल होता है। कर्क की संक्रान्ति के पूर्व ही ३० घड़ी पुण्य काल होता है। वृश्चिक संक्रान्ति में २० घड़ी का पुण्यकाल होता है। मकर संक्रान्ति में ४० घड़ी पर पूर्व दिन पुण्य काल होता है ऐसा भी अन्य मत है।

अर्घ ज्ञान—संक्रान्ति का नक्षत्र + तिथि + वार + धान्य के नाम के अक्षर = योग ÷ ३ = शेष १ = धान्य मंदा। २ = सामान्य। ३ = महँगा।

अन्य मत—संक्रान्ति की घड़ी + गत तिथि + वार + नक्षत्र + धान्य के नामाक्षर = योग ÷ ३ = शेष १ = मंदा। २ = साधारण। ३ = महँगा।

अन्य मत—संक्रान्ति की घड़ी + ९ × ७ ÷ ३ = शेष का फल उपरोक्त संक्रान्ति का फल। सूर्य संक्रान्ति इतवार, मंगल, शनिवार को पड़े तो उस मास में भय, दुर्भिक्ष, अवृष्टि हो, चोर भय हो।

मेष संक्रान्ति = भरणी आदि ४ नक्षत्रों में = अन्नादि वृद्धि। मघादि १० नक्षत्रों में हानि। अन्य नक्षत्रों में सौख्य।

जन्म नक्षत्र संक्रान्ति—राजाओं को सुख, अन्य को क्लेश धनक्षय।

संक्रान्ति से	१, ६, १२, ४ राशि में	११, ९, ५, ३	२, ८, ७, १०
वर्षा फल	सुख सुभिक्ष	रोग युद्ध	रोग, चोर भय

सुप्त आदि से वर्षा विचार—

सूर्य सुप्त—करण तैतिल, नाग, चतुष्पद में जब संक्रान्ति हो वर्षा नेष्ट।

सूर्य ऊर्ध्व (खड़ी)—किंस्तुघ्न, शकुनि, कौलव में जब संक्रांति हो वर्षा श्रेष्ठ।

सूर्य विविष्ठ (बैठे)—वव, गर, वणिज, विष्ठि, बालव में संक्रांति हो वर्षा सम।

करण के अनुसार संक्रांति आयुध, वाहन आदि पर और भी विचार—

करण	वव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्ठि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न
स्थिति	बैठी	बैठी	खड़ी	सुप्त	बैठी	खड़ी	बैठी	सुप्त	खड़ी	सुप्त	खड़ी
फल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्यम	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	अश्व	कूकर	मेढ़ा	बैल	कुक्कुट
उपवाहन	गज	अश्व	बैल	मेढ़ा	गर्दभ	ऊँट	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीड़ा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कंबल	नग्न	घन वर्ण
आयुध	भुशुंडी	गदा	खंग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण

पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रा	गुड़	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गौरोचन	अलक्त	दलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बैल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नुपूर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	पन्ना	सुवर्ण
कंचुकी	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सीत	पाटल	नील	कृष्ण	अंजन	बल्कल	पांडुर
व्रय	बाल	कुमारी	गताल-का	युवा	प्रौढ़ा	प्रगल्भ	वृद्धा	बंध्या	अति-बंध्या	सुतार्थी	संन्यासी

संक्रांति जिस वाहन या जो वस्तु धारण करे उस सबका नाश होता है।

वार नक्षत्र अनुसार संक्रान्ति फल—

वार	नक्षत्र	संक्रान्ति नाम	फल	काल में	फल इनका नाश	दिशा
रविवार	उग्र	घोरा	शूद्रों को सुख	पूर्वाह्न	विप्र राजाओं का	पूर्व को
सोमवार	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्यों को सुख	मध्याह्न	वैश्यों का	पश्चिम को
मंगल	चर	महोदरी	चोरों को सुख	अपराह्न	शूद्रों का	दक्षिण को
बुध	मैत्र	मंदाकिनी	राजाओं को सुख	प्रदोष	पिशाचों का	दक्षिण को
गुरु	ध्रुव	मंदा	द्विजगणों को सुख	अर्धरात्रि	राक्षसों का	उत्तर को
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुओं को सुख	अपर रात्रि	नट आदिकों का	पूर्व को
शनिवार	दारुण	राक्षसी	चंडालों को सुख	प्रत्यूष काल	पशुपालको का	पश्चिम को

अधिकमास क्षयमास विचार—

अधिमास (मल मास)—शुक्ल १ से अमावस तक चंद्र मास होता है। जिस चंद्र मास में स्पष्ट सूर्य की संक्रांति न हो वह अधिमास है। मास ३२ दिन १६ घड़ी ७ वीतने पर अधिमास होता है। सूर्य सिद्धांत के अनुसार ३३-५३५१ चंद्रमासों में ३२-५३४३ सौर मास होता है। इस कारण सौर मासों को चंद्रमास बनाने को ३२ मांसों के उपरांत (२ वर्ष ८ मास) बाद अधिक मास होगा। अधिमास—(वर्तमान शाका—९२५) ÷१९ शेष ३—चैत्र, ११—वैशाख, ०—ज्येष्ठ। १६—अषाढ़। ५—श्रावण। १३—भाद्र०। २—अश्विन। शेष में वृद्धि नहीं। क्षय मास—जिस मास में स्पष्ट सूर्य की दो संक्रांतियां हों वह क्षय मास कहा जाता है। जिस सम्वत में क्षय मास पड़े उससे १४१ या १९ वर्ष बाद फिर क्षय मास संभव है। यह कभी-कभी होता है कि क्षय मास केवल कार्तिक आदि तीन महीनों में पड़ता है और महीनों में नहीं। जिस वर्ष क्षय मास होता है उस वर्ष एक वर्ष में दो अधिमास पड़ते हैं।

उस क्षय मास में तिथि के पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध भागों के सम्बन्ध से पहला और दूसरा मास जानना चाहिये अर्थात उस एक ही क्षय मास में दो मास माने जाते हैं। शुक्ल पक्ष

को पहिला कृष्ण पक्ष को दूसरा मास। यदि तिथि के पूर्वार्द्ध में किसी का मरण या जन्म हो तो उसका जन्म दिन या क्षयाह श्राद्ध पहिले मास में और तिथि के उत्तरार्द्ध में जन्म या मरण हुआ हो तो उसका जन्म दिन या क्षयाह श्राद्ध दूसरे मास में होता है।

मास प्रकार—

चंद्र मास शुक्ल १ से अमावस्या तक। सौर मास—संक्रांति से आगे की संक्रांति तक। सावन मास—कृष्ण १ से शुक्ल १५ तक। चंद्र नक्षत्र मास-नक्षत्र से नक्षत्र तक।

चंद्रमास के नक्षत्र—चैत्र—चित्रा से स्वाती। वैशाख—विशा० से अनु०। ज्ये०—ज्येष्ठा से मूल। आषाढ़—पूषा से अभि०। श्रावण—श्रवण से शत०। भाद्र०—पूभा से रेवती। आश्वि०—अश्वि० से भरणी। कार्तिक—कृति से रोह०। अगहन—मृग० से पुन०। पौष—पुष्य से श्ले०। माघ—मघा से पूफा०। फाल्गुन—उफा० से हस्त। इसी प्रकार १२ महीनों के ३०—३० नक्षत्र होते हैं। जैसे चैत्र महीना चित्रा से हस्ततक अभिजित सहित २ नक्षत्र हुए फिर द्वितीय दूसरे का चित्रा २९ वां हुआ। फिर द्वितीया वृत्ति की स्वाती तक तीसों नक्षत्र हो जाते हैं। अर्थात द्वितीय आवृत्ति को स्वाती तक चैत्र मासांत हुआ।

किस कार्य में कौन मास लेना—

विवाहादिक कार्य में सौर मास लेना। यज्ञादि में सावन मास। पितृ कर्म में चंद्र मास। व्रत दानादि में नक्षत्र मास लेना।

ऋतु—सूर्य राशि	१०—११	१२—१	२—३	४—५	६—७	८—९
ऋतु	शिशिर	वसंत	ग्रीष्म	वर्षा	शरद	हेमंत

अयन के कार्य—उत्तरायण में—गृह प्रवेश विवाह, देव प्रतिष्ठा; मुंडन, जनेऊ, दीक्षा आदि शुभ कर्म। दक्षिणायन में—अशुभ कर्म करना। १३ दिन का पक्ष—एक पक्ष में १३ दिन हों तो—घोड़ा हाथी या मनुष्य का नाश हो।

सम्वतसर नाम—

१ प्रभव	११ ईश्वर	२१ सर्वजित	३१ हेमलम्बी	४१ प्लवंग	५१ पिंगल
२ विभव	१२ बहुधान्य	२२ सर्वधारी	३२ विलम्बी	४२ कीलक	५२ कालयुक्त
३ शुक्ल	१३ प्रमाथी	२३ विरोधी	३३ विकारी	४३ सौम्य	५३ सिद्धार्थी
४ प्रमोद	१४ विक्रम	२४ विकृति	३४ शार्वरी	४४ साधारण	५४ रौद्र
५ प्रजापति	१५ वृष	२५ स्वर	३५ प्लव	४५ विरोधकृत	५५ दुर्मति
६ अंगिरा	१६ चित्रभानु	२६ नंदन	३६ शुभकृत	४६ परिधावी	५६ दुंदुभि
७ श्री मुख	१७ सुभानु	२७ विजय	३७ शोभन	४७ प्रमादी	५७ रुधिरोद्गारी
८ भाव:	१८ तारण	२८ जय	३८ क्रोधी	४८ आनंद	५८ रक्ताक्षी
९ युवा	१९ पार्थिव	२९ मन्मथ	३९ विश्वावसु	४९ राक्षस	५९ क्रोधन
१० धाता	२० व्यय	३० दुर्मुख	४० पराभव	५० मल	६० क्षय

सम्वत्सर का नाम जानना बृहस्पति के मत अनुसार—

(शाका × २२ + ४२९१) ÷ १८७५ की लब्धि

(शाका + प्राप्त लब्धि) ÷ ६० = जो शेष बचे प्रभव आदि गणना के गत सम्वत्सर होगा।

१८७५ के भाग देने से बचा शेष × १२ ÷ १८७५ = लब्धि मास–भुक्त सम्वत्सर का। (शेष × ३०) ÷ १८७५ = लब्धि दिन। (शेष × ६०) ÷ १८७५=लब्धि घड़ी। (शेष × ६०) ÷ १८७५ = लब्धि पल

ये मास दिन घड़ी पल भुक्त सम्वत्सर के होंगे १२ मास में से उसे घटाने पर वर्तमान का भोग्य मास आदि होंगे।

उदाहरण–सम्वत २०३३ का शाका। १८९८ हैं इसका जानना है।

```
शाका        १८७५)४६०४७(२४       शाका      शेष २ विभव गत सम्वत्सर
१८९८            ३७५०  लब्धि    १८९८      हुआ वर्तमान ३ शुक्ल होगा
 ×२२            ८५४७          + २४ लब्धि
३७९६            ७५००      ६०)१९२२(३२
३७९६            १०४७          १८०
=४१७५६          ×१२            १२२
+४२९१    १८७५)१२५६४(६ मास      १२०
४६०४७           ११२५०            २ शेष
                १३१४×३०                   मास  दि.  घ.  प.
         १८७५)३९४२०(२१ दिन          पूर्ण  १२   ०    ०    ०
                ३७५०                 भुक्त  ६   २१   १   २६
१८७५)४९५००(२६ पल  १९२०              भोग्य  ५    ८   ५८   ३४
     ३७५०          १८७५           वर्तमान ३ शुक्ल सम्वत्सर का
     १२०००          ४५×६०         भोग्य  मा.  दि.  घ.  प के बाद
     ११२५० १८७५)२७००(१ घड़ी              ५    ८   ५८  ३४
       ७५०      १८७५              आगे का चौथा प्रमोद सम्वत्सर
=भुक्त मास दिन घ. पल  ८२५×६०     लगेगा।
 ६  २१  १  २६  ४९५००
```

सम्वत्सर की संक्रांति का वार अनुसार कार्याधिप—

संक्रांति–	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
कार्याधिप–	मंत्री	कोषाधिप	मेघाधिप	सस्याधिप	सैन्याधिप	क्षत्राधिप	रसाधिप	आज्ञाधिप	धान्याधिप	नीरसाधिप	व्यवहार अधिप	व्यापार अधिप

अर्थात् मेष संक्रांति को जो वार होगा वह वर्ष का मंत्री होगा। वृष संक्रांति को जो वार होगा वह वर्ष का कोषाधिप होगा इत्यादि उपरोक्त समझना।

सम्वत के अधिकर्त्ता राजा–चैत्र शुक्ल १ को सूर्योदय पर जो वार होगा

मंत्री–मेषार्क प्रवेश में जो वार होगा

मेघ का स्वामी—आर्द्रा प्रवेश में जो वार होगा
दास्य ,, —कर्क संक्रांति में जो वार होगा
(खेती का)
रस का स्वामी—तुला संक्रांति में जो वार होगा
धान्य ,, —धन संक्रांति में जो वार होगा
नीरसेश ,, —मकर ,, ,, ,, ,, ,,

राजादि का फल—गुरु शुक्र या चंद्र राजा–मनुष्यों को सुख हो, सुभिक्ष हो, अच्छी वर्षा हो तथा देश में स्वस्थता हो। शनि मंगल राजा–दुर्भिक्ष, विग्रह हो। सूर्य राजा–दुःख हो। वुध राजा–अल्प सुख।

सम्वत्सर के स्वामी ५ वर्ष का एक अनुसार ६० में १२ युग के देवता—

५ तक	बाद ५	वाद५	वाद५	बाद ५	बाद	बाद	बाद	बाद	बाद	बाद	बाद
विष्णु	गुरु	इंद्र	अग्नि	त्वष्टा देव	अहिर्बु-ध्न्य	पितर	विश्वे देव	चंद्र	अग्नि कुमार	अत्रि देव	भग

अन्य मत—

क्रम ४८ आनंद से ६० क्षय और आगे प्रभव से ७ वां श्रीमुख तक २० का स्वामी ब्रह्मा सृष्टि कर्त्ता। आगे ८ वां भाव से २७ वां विजय तक का स्वामी विष्णु पालन कर्ता। आगे २८ वां जय से ४७ वां प्रमादी तक २० का स्वामी रुद्र संहार कर्ता है।

सम्वत्सर में भिन्न विश्वा लाना—

इस में ५ प्रकार से गणित द्वारा विश्वा भिन्न प्रकार का प्राप्त होता है I शाका × ३ ÷ ७ = लब्धि जो प्राप्त होगी आगे गणित में काम आयगी। शेष × २ + ५ = वर्षा का विश्वा। प्राप्त लब्धि × ३ ÷ ७ = लब्धि आगे काम आयगी। शेष × २ + ५ धान्य का विश्वा होगा। इसी प्रकार जो लब्धि मिलती जाय उसमें ३ का गुणा कर ७ का भाग देना शेष में २ का गुणा करके ५ जोड़ना इस प्रकार (१) वर्षा (२) धान्य (३) तृण (३) शीत, (५) तेज, (६) वायु, (७) वृद्धि, (८) क्षय, (९) विग्रह के विश्वा आगे उपरोक्त प्रकार से गणित करते जा ने से प्राप्त होंगे। उदाहरण :—

सम्वत २०३३ शाका १८९८ में उपरोक्त विश्वा निकालना है।

I शाका	लब्धि ८१३×३=२४३९÷७	३४८×३ = १०४४ ÷ ७
१८९८ × ३=५६९४ ÷ ७	= लब्धि ३४८ शेष ३	लब्धि १४९ शेष १
= लब्धि ८१३ शेष ३	शेष ३ + २ + ५ = ११	शेष १ × २ + ५=७
शेष ३ × २ + ५=११	११ धान्य (२)	(३) तृण ७ विश्वा
११ वर्षा (१)		
पूर्व ल० १४९×३=४४७	पूर्व ल० ६३×३=१८९ ÷ ७	पूर्व ल० २७×३=८१ ÷ ७
÷ ७=लब्धि ६३ शेष ६	=लब्धि २७ शेष०	=लब्धि ११ शेष ४
शेष ६×२ + ५=१७	शेष ०×२ + ५=५	शेष ४×२ + ५=१३

(४) शीत १७	(५) तेज ५	(६) वायु १३
पूर्व ल० ११×३=३३÷७	पूर्व ल० ४×३=१२÷७	पूर्व ल० १×३=३÷७
लब्धि ४ शेष ५	लब्धि १ शेष ५	लब्धि ० शेष ३
शेष ५×२+५=१५	शेष ५×२+५=१५	शेष ३×२+५=११
(७) वृद्धि १५	(८) क्षय १५	(९) विग्रह ११,

II शाके×४÷७=लब्धि पृथक रखो शेष×२+३ का गणित कर प्राप्त लब्धि के आधार से उपरोक्त प्रकार से बारम्बार करने से (१) क्षुधा, (२) तृषा, (३) निद्रा (४) आलस्य, (५) उद्यम, (६) शांति, (७) क्रोध, (८) दम्भ अर्थात् पाखंड, (९) लोभ, (१०) मैथुन, (११) रस, (१२) फूल, (१३) उत्साह के विश्वा प्राप्त होंगे।

उदाहरण—शाके	प्राप्त लब्धि	पूर्व लब्धि
१८९८×४=७५९२÷७	१०८४×४=४३३६÷७	६१९×४=२४७६÷७
=लब्धि १०८४ शेष ४	=लब्धि ६१९ शेष ३	=लब्धि ३५३ शेष ५
शेष ४×२+३=११	शेष ३×२+३=९	शेष ५×२+३=१३
(१) क्षुधा ११ विश्वा	(२) तृषा ९	(३) निद्रा १३

इसी प्रकार जो लब्धि मिलते हैं उसमें ४ का गुणा कर ७ का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त होगी आगे काम देगी। प्राप्त शेष×२+३ से उसके विश्वा प्राप्त होंगे (४) आलस्य १३, (५) उद्यम १५, (६) शांति ५, (७) क्रोध ५, (८) दंभ ५, (९) लोभ ३, (१०) मैथुन १५, (११) रसोत्पत्ति ९, (१२) फल १३, (१३) उत्साह के ११ विश्वा पूर्वोक्त प्रकार से गणित करने से प्राप्त हुए।

III शाका×८÷७=की लब्धि आगे काम देगी। शेष×२+१ करने से उपरोक्त प्रकार से प्राप्त लब्धि के आधार पर गणित करने से (१) उग्र, (२) पाप, (३) पुण्य, (४) व्याधि (५) व्याधि नाश, (६) आचार, (७) अनाचार, (८) मृत्यु, (९) जन्म, (१०) देशोपद्रव, (११) देश स्वास्थ, (१२) चोर भय, (१३) चोर नाश, (१४) अग्नि (१५) अग्नि शांत के विश्वा प्राप्त होंगे। उदाहरण—

शाके	लब्धि	पूर्व लब्धि
१८९८×८=१५१८४÷९	१६८७×८=१३३९७÷९	१४८८×८=११९०४÷९
लब्धि १६८७ शेष १	=लब्धि १४८८ शेष ४	लब्धि १३२२ शेष ६
शेष १×२+१=३	शेष ४×२+१=९	शेष ६×२+१=१३
(१) उग्र ३ विश्वा	(२) पाप ९	(३) पुण्य १३

इसी प्रकार प्राप्त लब्धि के आधार पर गणित करने से आगे (४) व्याधि ३ (५) व्याधि नाश ९, (६) आचार १, (७) अनाचार १७, (८) मृत्यु ९, (९) जन्म १३, (१०) देशोपद्रव १५, (११) देश स्वास्थ्य १७, (१२) चोर भय ३, (१३) चोर नाश ९, (१४) अग्नि ३, (१५) अग्नि शांत ३ के विश्वा प्राप्त हुए।

IV शाका×७ ÷ ९ लब्धि आगे गणित में काम देगी। शेष×२ + ३ विश्वा प्राप्त होंगे इस प्रकार लब्धि के आधार पर गणित करने से (१) शलभ या टिड्डी, (२) शुक तोता, (३) मूषक, (४) सोना, (५) तांवा, (६) स्वचक्र, (७) परचक्र, (८) वृष्टि, (९) वृष्टि नाश के विश्वा प्राप्त होंगे।

उदाहरण—शाके

१८९८×७=१३२८६ ÷ ९

लब्धि १४७६ शेष २

शेष २×२ + ३=७

(१) शलभ ७ विश्वा

प्राप्त लब्धि

१४७६×७=१०३३२ ÷ ९

लब्धि ११४८ शेष ०

शेष ०×२ + ३=३

(२) शुक ३

इसी प्रकार प्राप्त लब्धि के आधार पर गणित पूर्व रीति से करने में (३) मूषक १९, (४) सोना १७, (५) तांबा ३, (६) स्वचक्र ७, (७) परचक्र १९, (८) वृष्टि १७, (९) वृष्टि नाश के विश्वा प्राप्त हुए।

V चार स्थानों में पृथक ५, ७, ९१ और ११ का गुणा कर प्रत्येक में ७ का भाग देने से शेष×२ + ३ से क्रमानुसार (१) उद्भिज, (२) जरायुज, (३) अंडज, (४) स्वेदज के विश्वा प्राप्त होंगे।

उदाहरण आगे दिया है—

शाका

१८९८ × ५=९४९० ÷ ७

लब्धि १३५५ शेष ५

शेष ५ × २ + ३ = १३

(१) उद्भिज १३

१८९८ × ७=१३२८६ ÷ ७

= लब्धि १८९८ शेष ०

शेष ० × २ + ३ = ३

(२) जरायुज ३

१८९८ × ९१=१७२७१८ ÷ ७

लब्धि २४६७४ शेष ०

शेष ० × २ + ३ = ३

(३) अंडज ३ विश्वा

शाके

१८९८ × ११ = २०८७८ ÷ ७

लब्धि २९८३ शेष ४

शेष ४५२ + ३ = ११

(४) स्वेदज ११ विश्वा

सम्वत्सर के विश्वा—कर्क संक्रांति जिस दिन हो उसी अनुसार विश्वा जानना।

संक्रांति का दिन	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सम्वत्सर विश्वा	१०	२०	८	१२	१८	१८	५

मेघ प्रकार—शाके + ३५ ÷ ४ = शेष १ आवर्तक मेघ। २ = संवर्तक मेघ ३ = पुष्कर मेघ। ४ = द्रोण संज्ञक मेघ।

फल—१ आवर्तक–महावर्त हो। २ संवर्तक–बहुत जल वर्षे। ३ पुष्कर–चित्र विचित्र वर्षा। ४ द्रोण–बूड़ा होगा। उदाहरण

शाका १८९८ + ३५ = १९३३÷४ शेष १ आवर्तक मेघ।

अन्य मत शाका × १४ ÷ ८ = शेष १—आवर्त। २—संवर्तक। ३—पुष्कर। ४—द्रोण। ५—कलिक। ६—नील। ७—वरुण। ८—वायु स्तंभ।

सम्वत्सर में लाभ व्यय का ज्ञान अष्टोतरी मत अनुसार

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ये अष्टोतरी महादशा के
ध्रुवांक	६	१५	८	१७	१९	२१	१०	वर्ष हैं।

अष्टोतरी मत विंध्य पर्वत से दक्षिण में

अपनी राशि स्वामी का ध्रुवांक + सम्वत के राजा का ध्रुवांक × ३ + ५ ÷ १५ शेष लाभ और भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हुई × ३ + ५ ÷ १५=शेष खर्च। उदाहरण संवत २०२३ में वर्ष का राजा बुध है उस का अंक १७।। कुंभ राशि का लाभ खर्च जानना है। कुंभ का स्वामी शनि १० + १७ राजा=२७। २७ × ३ = ८१ + ५ = ८६÷१५=५ लब्धि शेष ११ लाभ। लब्धि ५ × ३ = १५ + ५ = २० ÷ १५ = शेष ५ खर्च = लाभ ११ खर्च ५।

विंध्य के उत्तर देश में विंशोत्तरी महादशा के अनुसार लाभ खर्च

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ये विंशोत्तरी महादशा
ध्रुवांक	६	१०	७	१७	१६	२०	१८	के वर्ष हैं।

उदाहरण—कुंभ का स्वामी शनि १९ + राजा बुध १७ = ३६ × ३ = १०८ १०८ + ५=११३ ÷ १५=लब्धि ७ शेष ८ लाभ। लब्धि ७ × ३=२१ + ५=२६÷१६= शेष ११ खर्च। लाभ ८ खर्च ११।

लाभ खर्च का फल विचार

लाभ खर्च के अंक जोड़कर १ घटा देना फिर ८ का भाग देना शेष का फल

शेष	१	२	३	४	५	६	७	०
फल	लाभ	सौख्य	क्लेश	रोग	अपवाद	सम्मान	विजय	हानि

सम्वत्सर दुर्भिक्ष आदि का विचार

प्रभव आदि सम्वत्सर संख्या × २—३÷७ शेष १ या ४ दुर्भिक्ष। २—५ = सुभिक्ष ३—६ सम। ०—पीड़ा।

दुर्भिक्ष सुभिक्ष—अषाढ़ कृष्ण १०, ११, १२ इन तीनों दिनों में रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष, मध्यम और दुर्भिक्ष ३ फल क्रमानुसार होगा।

अन्य विचार—रात्रि मेघ रहित हो, प्रातः मेघ गरजे मध्याह्न में बूंद पड़े ऐसे लक्षण जिस सम्वत्सर में हों उसमें महर्घता जानो।

अगस्त्य उदय—स्थानिक पलभा × ८ = अंश + ९८ = योग ÷ ३० = लब्धि सूर्य की राशि, शेष अंश पर अगस्त्य का उदय। जैसे पलभा किसी स्थान का ५ है। ५ × ८ = ४०° + ९८ = १३८° ÷ ३=४ लब्धि १८ शेष। ४ राशि १८ अंश पर अगस्त्य का वहाँ उदय जानना।

प्रभव सम्वत्सर आरंभ—माघ मास में धनिष्ठा के पहिले चरण में गुरु उदय हो तब सब सम्वत्सरों में पहिला प्रभव नाम श्रेष्ठ सम्वत्सर होता है।

अर्द्धोदय योग—माघ में रविवार की अमावस्या व्यतीपात योग और श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो अर्द्धोदय योग होता है। सौ सूर्य पर्वों से भी अधिक फलदायक है। यह योग दिन में होना चाहिये रात्रि में नहीं। इस योग में कुछ न्यूनता हो तो महायोग होता है।

गज छाया योग—आश्विन मास के पितृ पक्ष की त्रयोदशी के दिन हस्त नक्षत्र पर सूर्य और मघा पर चंद्र हों। इस योग में श्राद्ध में अक्षय फल होता है।

कपिला षष्ठी—आश्विन मास में कृष्ण पक्ष की षष्ठी मङ्गलवार रोहिणी नक्षत्र व्यतीपात युक्त, अनंत फल दायक है।

गोचर प्रकरण—

जन्म कालिक चन्द्रमा जिस राशि में हो वही जन्म राशि है। उसी जन्म राशि से ग्रहों के शुभाशुभ का विचार गोचर से होता है। पंचांग में ग्रहों की चाल के अनुसार बदलती ग्रहों की स्थिति दी रहती है वे ही ग्रह गोचर कहलाते हैं।

ग्रहों के शुभ स्थान वेध स्थान अशुभ स्थान सूचक चक्र

स्थान	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	०	०	शु।९	०।१०	०।११	शु।१२	०	०	०।३	शु।४	शु।५	०।६
चंद्र	शु।५	०।७	शु।९	०।१०	०।१	शु।१२	शु।२	०।११	०।३	शु।४	शु।८	०।६
मंगल	०	०	शु।१२	०	०	शु।९	०	०	०	०	शु।५	०
बुध	०।८	शु।५	०।४	शु।३	०।२	शु।९	०	शु।१	०।६	शु।८	शु।१२	०।११
गुरु	०	शु।१२	०।७	०।५	शु।४	०	शु।३	०।११	शु।१०	०।९	शु।७	०।२
शुक्र	शु।८	शु।७	शु।१	शु।१०	शु।९	०।१२	०।२	शु।५	शु।११	०।४	०।३	शु।६
शनि	०	०	शु।१२	०	०	शु।९	०	०	०	०	शु।५	०
राहु	०	०	शु।१२	०	०	शु।९	०	०	०	०	शु।५	०

स्पष्टीकरण—शु=शुभ। ०=अशुभ। शुभ के आगे दिये अंक वेध सूचक हैं। अशुभ के आगे दिये अंक वाम वेध सूचक हैं। शुभ स्थान के आगे दिये अंक वेध सूचक हैं जहाँ कोई ग्रह होने से अशुभ हो जाता है। जैसे सूर्य ३ स्थान में शु।९ दिया है। अर्थात् सूर्य ३ स्थान में शुभ है यदि वेध स्थान ९ में कोई ग्रह न हों। सूर्य ४ स्थान में ०।१० दिया है अर्थात् सूर्य का ४ स्थान अशुभ है वहाँ यदि सूर्य हो तो वाम वेध स्थान १० में कोई ग्रह होने से शुभ हो जायगा। इसमें पिता पुत्र सूर्य शनि हैं इनका वेध नहीं माना जाता इसी प्रकार चन्द्र बुध का वेध नहीं मानना। अर्थात् ये वेध स्थान में हों तो इनका वेध नहीं माना जायगा। अपनी जो राशि हो उस स्थान में ग्रहों के स्थान विचारना।

ग्रह वेध—

सूर्य—सूर्यादि ग्रह ६-१२ आदि स्थानों में क्रमशः शुभ या विद्ध हो जाते हैं अर्थात् जब जन्म राशि से छठे स्थान में स्थित सूर्य शुभ है यदि बारहवें स्थान में शनि को

छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वही विद्ध अर्थात् शुभ के स्थान में अशुभ हो जाता है। दशम में सूर्य शुभ है यदि चौथे स्थान में शनि को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वही विद्ध (अशुभ) हो जाता है। तीसरे स्थान में सूर्य शुभ है यदि नवम स्थान में शनि को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वही विद्ध हो जाता है। ग्यारहवें स्थान में सूर्य शुभ है यदि पंचम में शनि को छोड़ कर और कोई ग्रह हो तो विद्ध हो जाता है।

मंगल शनि राहु केतु—ये जन्म राशि से छठे स्थान में शुभ हैं नवें स्थान में अन्य ग्रह हो तो विद्ध। ऐसे ही ग्यारहवें में शुभ हैं यदि पंचम में कोई ग्रह हो तो विद्ध। तीसरे में शुभ यदि बारहवें में कोई ग्रह हो तो विद्ध परन्तु शनि भी सूर्य से विद्ध नहीं होता क्योंकि पिता पुत्र का वेध नहीं होता।

चन्द्र—जन्म राशि से दशमें शुभ यदि चौथे में बुध को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो विद्ध। तीसरे में शुभ यदि नवम में बुध को छोड़ कर अन्य ग्रह हो तो विद्ध। ग्यारहवें में चन्द्र शुभ यदि अष्टम में बुध को छोड़ कर और ग्रह हो तो विद्ध। सदा वेध में यहाँ बुध को छोड़कर और ग्रहों से वेध मानना। पहिले में शुभ पंचम में ग्रह होने से विद्ध। छटे शुभ बारहवें से विद्ध। सप्तम शुभ दूसरे में ग्रह से विद्ध।

बुध—चन्द्र को छोड़ कर और ग्रह हो तो वेध मानना। बुध दूसरे में शुभ पंचम के ग्रह से विद्ध। चौथे में शुभ तीसरे में ग्रह से विद्ध। छठवें शुभ नवम ग्रह से विद्ध। अष्टम में शुभ पहिले के ग्रह से विद्ध। दशम में शुभ अष्टम ग्रह से विद्ध। ग्यारहवें शुभ बारहवें स्थान में ग्रह हो तो विद्ध।

गुरु—शुभ स्थान ५ २ ९ ७ ११ नीचे बताये वेध स्थान में कोई ग्रह हो
वेध स्थान ४ १२ १० ३ ८ तो विद्ध (अशुभ) हो जाता है।

ग्रहों के शुभ स्थान वेध स्थान और वाम वेध का चक्र नीचे दिया है।

सूर्य शुभ	३	६	१०	११	चंद्र शुभ	१	३	६	७	१०	११	शुक्ल पक्ष	२	९	५
वेध	९	१२	४	५	वेध	५	९	१२	२	४	८	वेध	६	८	४
वाम	९	१२	४	५	वाम	५	९	१२	२	४	८	वाम	६	८	४
वेध	३	६	१०	११	वेध	१	३	६	७	१०	११	वेध	२	९	५

शनि मंगल	३	६	११	शुभ	गुरु शुभ	२	५	७	९	११
राहु	१२	९	५		वेध	१२	४	३	१०	८
वाम	१२	९	५		वाम	१२	४	३	१०	८
वेध	३	६	११		वेध	२	५	७	९	११

बुध शुभ	२	४	६	८	१०	११	शुक्रशुभ	१	२	३	४	५	८	९	११	१२
वेध	५	३	९	१	८	१२	वेध	८	७	१	१०	९	५	११	३	६
वाम	५	३	९	१	८	१२	वाम	८	७	१	१०	९	५	११	३	६
वेध	२	४	६	८	१०	११	वेध	१	२	३	४	५	८	९	११	१२

गोचर में ग्रह का जो शुभ है यदि उसमें वह ग्रह हो और उसके वेध स्थान में कोई ग्रह हो तो उसकी शुभता नष्ट होकर वह अशुभ हो जाता है जैसे मंगल का शुभ तीसरा स्थान है उसमें मंगल हो और उसके वेध स्थान १२ में कोई ग्रह हो तो वह अशुभ हो जाता है। परन्तु यदि कोई ग्रह अशुभ स्थान में हो और उसके शुभ स्थान में कोई ग्रह हो तो उसकी अशुमता नष्ट होकर वह शुभ हो जाता है। जैसे मंगल १२ वें अशुभ (वेध) स्थान में है तो वह अशुभ है यदि उसके शुभ स्थान ३ में कोई ग्रह हो तो वह वाम वेध से शुभ हो जाता है।

गोचर फल—सूर्य मंगल प्रवेश काल में शुभाशुभ फल देते हैं। गुरु शुक्र मध्य में। शनि चंद्र शेष समय में। बुध सदा फल देता है।

चंद्र—संचार काल में चंद्रमा शुद्ध होने से गोचर फल न्यूनाधिक होता है। चंद्र यदि भिन्न ग्रहों से संचार समय में चंद्रमा गोचर में शुद्ध होता है अर्थात दोनों पक्ष में शुभ फल देता है। जन्म से ७,३,११,६,१० और १ का व कृष्ण पक्ष में २-५-९ स्थान का चंद्र जन्म राशि से हो तो गोचर में अशुभ होने पर भी शुभ फल देता है और ग्रहों के संचार समय चंद्रमा शुभ न हो तो अशुभ फल देता है गोचर में ग्रह शुभ हो संचार काल में चंद्रमां शुभ हो तो शुभ फल देता है। चंद्रमा के संचार काल में गोचर चंद्र अशुभ होने पर भी शुभ करता है। इसी प्रकार सूर्य संचार समय चंद्रमा शुद्ध होने से सूर्य अशुभ भी हो तो शुभ करता है। मंगल बुध गुरु शुक्र शनि इनके संचार समय सूर्य गोचर में शुद्ध हो तो उक्त पांचों अशुभ होने पर भी शुभ फल करते हैं।

ग्रह	सूर्य	मंगल	चंद्र	राहु	शनि	गुरु	शुक्र	बुध
१ राशि में ग्रह समय	१ मास	३ पक्ष	२। दिन	१॥ वर्ष	२॥ वर्ष	१ वर्ष	२८दिन	१८दिन
विरुद्ध में इतने समय बाद शुभ फल	१३ दिन	१६ दिन	१॥दिन	११मास	३महीना	८महीना	१४दिन	९ दिन

किन्तु उक्त नियमित काल के पूर्व विरुद्ध ग्रह होने से उनमें उपनयन आदि शुभ कार्य नहीं करना।

चंद्र का विशेष शुभाशुमत्व—दो पाप ग्रहों के मध्य में स्थित या पाप ग्रह युक्त चंद्र यदि पाप ग्रहों के स्थान से सप्तम स्थान में हो तो शुभ भी चंद्र अशुभ फल देने वाला होता है। यदि शुभ ग्रहों के नवांश में वा अपने अधिमित्र के नवांश में हो और गुरु से दृष्ट हो तो अशुभ भी चंद्र शुभ फल देने वाला होता है।

शुक्ल पक्ष की परिवा में जिसका चंद्र शुभ होता है उसका पक्षभर शुभ ही रहता है। यदि कृष्ण पक्ष की परिवा में जिसका चंद्र अशुभ होता है उसका पक्षभर अशुभ ही रहता है। इसके विपरीत शुक्ल १ में जिसका चंद्र अशुभ हो तो सम्पूर्ण पक्ष उसका अशुभ हो जाता है।

चंद्रमा का बल—किसी संकट अर्थात अत्यंत आवश्यक विवाह यात्रा आदि में यदि तात्कालिक चंद्र शुद्ध न हो तब उपरोक्त विचारना चाहिये अन्यथा नहीं ।

जन्म नक्षत्र से ग्रह के नक्षत्र तक विचारने से वह ग्रह का प्रभाव वर्तमान में किस अंग पर चढ़ रहा है और उसके फल विचारने का चक्र—

सूर्य—

सूर्य	मुख	दाहिनाहाथ	पांव	बाँईबाहु	मुख	नेत्र	मस्तक	गुदा
संक्रांति	२	४	६	४	५	४	१	१
से जन्म नक्षत्र तक	रोग	लाभ	चलना	बंधन	लाभ	लक्ष्मी	राज पूज्य	अप मृत्यु

चंद्र—

जन्म नक्षत्र	मस्तक	मुख	दा०हाथ	हृदय	बाँ०हाथ	कुक्षि	दा.हाथ	बाँ.पाँव
से चंद्र नक्षत्र	६	१	३	६	३	६	१	१
तक	लाभ	द्रव्य हरण	हानिकर	सुख	रोग	शोक	हानि	रोग

मंगल—

जन्म नक्षत्र	सिर	मुख	दा०हाथ	पाँव	बाँ०हाथ	गुदा	नेत्र	हृदय
सेमंगल के	६	३	३	६	३	१	२	३
नक्षत्र तक	विजय	रोग	लक्ष्मी प्राप्त	मार्ग चलना	भय	मृत्यु	मृत्यु	सुख

बुध—

जन्म नक्षत्र	मस्तक	मुख	नेत्र	नाभि	पाँव	बाँ.हाथ	दा.हाथ	गुदा
से बुध के	३	१	२	५	६	४	४	२
नक्षत्र तक	राजप्राप्त	धन	प्रीत लाभ	लक्ष्मी	प्रवास	धन लाभ	धर्य लाभ	बंधन मरण

गुरु—

गुरुकेनक्षत्र	मस्तक	दा.हाथ	कंठ	मुख	पाँव	बाँ.हाथ	नेत्र
से जन्म	४	४	१	५	६	४	३
नक्षत्र तक	राज्य	लक्ष्मीप्राप्त	धनलाभ	पीड़ा	मृत्यु	सुख	सुखप्राप्त

शुक्र—

शुक्रकेनक्षत्र	मुख	मस्तक	दा.पाँव	बाँ.पांव	हृदय	हाथ	गुदा
से जन्म	३	५	३	३	२	८	३
नक्षत्र तक	उत्तम लाभ	शुभ	क्लेश हानि	क्लेश हानि	धन सौख्य	मित्र सुख	स्त्री लाभ

शनि—

शनि नक्षत्र	मस्तक	मुख	दा.हाथ	पाँव	बाँ.हाथ	हृदय	नेत्र	मस्तक	गुदा
से जन्म	१	१	४	६	४	३	४	१	१
नक्षत्र तक	रोग	रोग	लाभ	मार्ग चलना	बंधन	लाभ	प्रीति लाभ	पूजा	मृत्यु

राहु—

जन्म नक्षत्र	मस्तक	दा.हाथ	पाँव	बाँ.हाथ	हृदय	कंठ	मुख	नेत्र	गुदा
से राहु	३	४	६	४	३	१	२	२	२
नक्षत्र तक	राज्य	रिपुक्षय	मार्गचलना	मृत्यु	लाभ	रोग	जय	सौख्य	कष्ट

केतु—

जन्म नक्षत्र	मस्तक	मुख	हाथ	पांव	हृदय	कंठ	गुह्य
से केतु	५	५	४	६	२	४	१
नक्षत्र तक	जय	बड़ाभय	विजय	सुख	शोक	व्याधि	बड़ाभय

अन्य मत जन्म नक्षत्र कहाँ पड़ा है, सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने से।

मस्तक	मुख	स्कंध	भुजा	कर हथेली	हृदय	नाभि	गुह्य	जानु	पाँव
३	३	२	२	२	५	१	१	५	६
राज्य	मिष्ठान	बलवान	बल	चोर	ऐश्वर्य	सुख	स्त्री से लम्पट	देश वास	अल्पायु

चंद्र अवस्था और उसका फल

(अश्वनी आदि गत नक्षत्र × ६० + वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घड़ी) × ४ ÷ ४५ = लब्धि मेष आदि राशियों में स्थित चंद्र की भुक्त अवस्था होगी और शेष वर्तमान अवस्था होगी। यदि लब्धि १२ से अधिक ÷ १२ = शेष भुक्त अवस्था।

अवस्था के नाम

(१) प्रवास, (२) नाश, (३) मरण, (४) जय, (५) हास्य, (६) रति, (७) क्रीड़ा, (हर्ष) (८) सुप्त, (९) युक्त, (१०) ज्वर, (११) कम्प, (१२) स्थिरता।

अवस्था क्रम—मेष के चंद्र में प्रवास आदि से। वृण में नाश से, मिथुन में मरण आदि से निम्न अनुसार गणना करना।

चंद्र मेष १=१ प्रवास आदि से	५ सिंह=५ हास्यादि क्रम से	९ धन=९ युक्तादि क्रम से
२ वृष=२ नाश ,,	६ कन्या=६ रति ,,	१० मकर=१० ज्वर ,,
३ मिथुन=३ मरण ,,	७ तुला=७ क्रीड़ा ,,	११ कुंभ=११ कम्प ,,
४ कर्क=४ जय ,,	८ वृश्चिक=८ सुप्तादि ,,	१२ मीन=१२ स्थिर ,,

इनका फल नाम सदृश है अर्थात् चंद्र की प्रवास अवस्था जिस काल में हो यदि कोई यात्रा करे तो उसको प्रवास आदि हो।

नक्षत्र, अवस्था और उनका समय—

अश्वनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
मघा	पूभा	उफा	हस्त	चित्रा
मूल	पूषा	उषा	श्रव	धनि०
११। प्रवास	७॥ रति	३॥। कम्प	११। हास्य	७॥। ज्वर
२२॥ नाश	१८॥। क्रीड़ा	१५ स्थिर	२२। रति	१८॥। कम्प

२३।।। मरण	३० सुख	२६। प्रवास	३३।।। क्रीड़ा	३० स्थिर
४५ जय	४१। भुक्ति	३७।। नाश	४५ सुख	४१। प्रवाश
५६। हास्य	५२।। ज्वर	४८।।। मरण	५६। भुक्त	५२।। नाश
६० रति	२० कम्प	६० जय	६० ज्वर	६० मरण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा
स्वा०	विशा०	अनु०	ज्ये०
शत०	पूभा०	उभा०	रेवती
३।।। मृति	११। भुक्त	७।। नाश	३।।। क्रीड़ा
१५ जय	२२।। ज्वर	१८।।। मरन	१५ सुख
२६। हास्य	३३।।। कम्प	३० जय	२६। भुक्ति
३७।। रति	४५ स्थिर	४१। हास्य	३७।। ज्वर
४८।।। क्रीड़ा	५६। प्रयास	५२।। रति	४८।।। कम्प
६० सुख	६० नाश	६० क्रीड़ा	६० स्थिर

चंद्र=२० दिन=१३५ घड़ी=१२ अवस्था। १३५÷१२=११। घड़ी की एक अवस्था। अश्वनी से प्रयास आरंभ कर ३१। घड़ी जोड़ते जाने से २२।। नाश उसी प्रकार ११। आगे जोड़ते जाने से हास्य ५६। घड़ी हुई। इसमें ११। जोड़ा ६७।। रति हुई ६० घड़ी से अधिक होने से अश्व० के नीचे ६० वना कर शेष ७।। भरणी के नीचे रति वताई गई हैं। अश्व० मघा मूल इन की एक सी अवस्था है।

चंद्र मास में दिन के अनुसार जन्म नक्षत्र पड़ने का फल :—

रविवार	सोमवार	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रास्ता चलना पड़े	उत्तम भोजन मिले	अग्नि भय	धर्म मति	वस्त्र प्राप्त	सौख्य	दुःख प्राप्त

गोचर चंद्र—शुक्ल १ में चंद्र अनिष्ट हो तो पक्ष भर अनिष्ट रहेगा। यदि शुक्ल १ में चंद्र शुभ हो तो पक्ष भर शुभ। कृष्ण १ में चंद्र अनिष्ट हो तो पक्ष भर शुभ यदि शुभ हो तो पक्ष भर अनिष्ट रहेगा।

ग्रह राशि में जाने के पूर्व कितने दिन में फल देते हैं।
ग्रह अगली राशि में जाने के पहिले ही फल देने लगते हैं।

सूर्य	मंगल	बुध	शुक्र	चंद्र	राहु	शनि	गुरु
५ दिन	८ दिन	७ दिन	७ दिन	३ घड़ी	३ मास	६ मास	२ मास

अर्थात् गुरु २७° के ऊपर स्पष्ट हो तभी से आगे राशि का फल देने लगता है।

सूर्य मंगल राशि के पहिले दशांश में जाकर फल दायक होते हैं गुरु शुक्र राशि के मध्य दशांश में, चंद्र शनि राशि के अंतिम दशांश में फलदायक होते हैं। बुध सदा जब तक राशि में रहे फल देता है। सूर्य मंगल राश्यादि १०° में पूर्ण फल अन्य में अल्प फल गुरु शुक्र मध्य में १०° शनि अंत के १०° में पूर्ण फल देते हैं बुध पूरे ३०° फल देता है।

ग्रहों के नक्षत्र अनुसार क्रम से गोचर फल—

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध गुरु शुक्र	शनि राहु केतु
नक्षत्र फल	नक्षत्र फल	नक्षत्र फल	नक्षत्र फल	१—दुःख
१—नाश	१–२ बहुत भय	१–२ दुर्घटना	१–३ चिंता	२–५ सुख
२–५ धन लाभ	३–६ कुशल क्षेम	३–८ कलह	४–६ लाभ	६–८ प्रवास
६–९ सफलता	७–८ विरोधियों पर जय	९–११ सिद्धि	७–१२ अनर्थ	९–११ नाश
१०–१३ धन लाभ	९–१० अर्थ प्राप्ति	१२–१५ धन नाश	१३–१७ धन लाभ	१२–१५ लाभ
१४–१९ धन लाभ	११–१५ आनंद	१६–१७ लाभ	१८–१९ नाश	१६–३० विलास
२०–२३ देह पीड़ा	१६–१८ झगड़ा झंझट	१८–२१ भय	२०–२७ मान कीर्ति लाभ	२१–२५ शुभ
२४–२५ लाभ	१९–२४ परदेश गमन	२२–२५ सुख		२६–२७ भय
२६–२७ मृत्यु भय	२५–२७ धन लाभ	२६–२७ प्रवास		

अपने जन्म नक्षत्र से गिनने पर क्रमशः उपरोक्त ग्रहों का फल विचारना ।

ग्रहण का फल जन्म राशि के अनुसार जन्म राशि से ग्रहण की राशि—

ग्रहण जन्म नक्षत्र पर हो तो मृत्यु । पहिले में घात (शरीर पीड़ा) । जन्मराशि से दूसरे में हो तो धन नाश, हानि । तीसरे में द्रव्य मिले । चौथे में व्यथा । पंचम—पुत्रादि की चिंता । छटे—सुख । सप्तम—स्त्री पीड़ा । अष्टम—अपना मरण । नवम—मान नाश । दशम—सुख । ग्यारहवें—लाभ । बारहवें—मृत्यु या व्यय ।

ज्योतिष में मरण का ८ प्रकार से फल विचारना—

(१) व्यथा, (२) दुःख, (३) भय, (४) लज्जा, (५) रोग, (६) शोक, (७) बंधन, (८) अपमान ।

अशुभ फल वालों को ग्रहण नहीं देखना चाहिये मन्त्रों का जाप करते रहना और यथाशक्ति दान देना चाहिये ।

चंद्र सूर्य ग्रहण समय—

पूर्णमासी के निशा शेष प्रतिपदा की संधि में चंद्र ग्रहण होता है और अमावस्या और प्रतिपदा की संधि में सूर्य ग्रहण होता है। कृष्ण परिवा को जो नक्षत्र हो उससे

१६ वां नक्षत्र अमावस्या को पड़े और अमावस में परिवा मिले तो सूर्य ग्रहण हो। जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे १५ वां नक्षत्र पूर्णमासी को पड़े और रात्रि को परिवा मिले तो चंद्र ग्रहण हो।

एक मास में दोनों ग्रहण—जब एक मास में चंद्र और सूर्य दोनों ग्रहण पड़े तो शस्त्र कोप से भय हो अर्थात् बड़े राजाओं में परस्पर युद्ध होना संभव है।

सूर्य चंद्र ग्रहण समय—राहु की राशि में या राहु से २,६,७,१२ वी राशि में सूर्य चंद्र हो तो ग्रहण पड़े।

पूर्णिमा या अमावस्या की जितनी घड़ी पल पंचांग में लिखा हो सूर्योदय से उतने ही इष्ट घड़ी पल पर ग्रहण का मध्य होगा। मध्य काल में स्थित अर्द्ध घटाने से मुख (स्पर्श काल) होता है और मध्य ग्रहण में स्थित अर्द्ध जोड़ने से मोक्षकाल होता है।

अन्य मत से–ग्रहण की राशि से अपनी राशि तक। ३,४,८,११ ५,९,६ १,२,७,१०,१२
उत्तम मध्यम अधम

देश के अनुसार इवं इतर को सूर्य चंद्र के ग्रहण की राशि फल—

ग्रहण राशि मेष—काम्बोज, आंध्र, किरात, पंचाल कलिंग इन देशों को पीड़ा

वृष—गोप, पशु, पथिक, महात्मा लोग व साधु को पीड़ा

मिथुन—सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री और वाल्हिक देश, मत्स्य देश यमुना तट वासियों को पीड़ा।

कर्क—मल्ल आदि को पीड़ा तथा अंतर वेद, सर्वार व मत्स्य देश का विनाश करे।

सिंह—सर्व वन वासियों को पीड़ा, राजन को, राज सम मनुष्यों को पीड़ा।

कन्या—त्रिपुष्कर देश वासिन को पीड़ा, धान्य को नाश करे कवि व लेखकों को पीड़ा।

तुला—दशार्ण, वाहुक, आडुक, परुव, परान्य देशों को पीड़ा।

वृश्चिक—सर्पन को पीड़ा, दुम्बर देश, भद्र देश, चोल देश, अयोध्या वासिन को पीड़ा।

धन—मत्स्य देश वासिन को पीड़ा, विदेह, मल्ल, व पंचाल देशों को पीड़ा।

मकर—नीच यंत्र वादिन को पीड़ा, वृद्ध और योद्धाओं को पीड़ा, चित्रकूट वासिन को क्षय।

कुंभ—पश्चिमस्त देश वाले, अर्वुद देश वालों को पीड़ा, चोर रोगिन की मृत्यु हो। पंडित लोग भी पीड़ित हों।

मीन—जल द्रव्य, सागर व जलीय जीवों को पीड़ा अर्थात जल से जिनकी जीविका है व जल के पास जो रहते हैं उनको पीड़ा।

केतु उदय और ग्रह युद्ध का फल—

जब ग्रह युद्ध हो अर्थात एक राशि पर २ ग्रह आवें तब ग्रह युद्ध कहा जाता है (जिसका गणित खंड में स्पष्ट बताया है) तथा केतु पुच्छ सहित उदय हो तो राज युद्ध हो संसार को पीड़ा हो ।

नक्षत्र अनुसार केतु उदय का फल—

इन देश के राजाओं को हनै—

१ अश्व=लंका पति को हनै	१० मघा=वंग देश पति को हनै	१९ मूल=आंध्र व मद्र देश
२ भर०=किरातदेश केराजाको	११ पूफा०=पांड्रु ,, ,,	२० पूषा=काशीराज
३ कृत०=कलिंग देश पति को हनै	१२ उफा०=उज्जयिनी ,,	२१ उषा=पांड्रु व शैल व मैथिल देश
४ रोह०=सूर सेन ,, ,,	१३ हस्त=दंडक ,, ,,	२२ श्रव०=केकय देश
५ मृग =काशी ,, ,,	१४ चित्रा=कुरु देश,, ,,	२३ धनि०=पंजाब के राजा
६ आर्द्रा=जलद ,, ,,	१५ स्वा०=काश्मीर व कम्बोज	२४ शत०=सिंहल देश
७ पुन०=अष्मक ,, ,,	१६ विशा०=इच्छाकु व कुरु ,,	२५ पूभा०=वंग देश
८ पुष्य=मगध ,, ,,	१७ अनु०=उग्र देश ,, ,,	२६ उभा०=मैथिल देश
९ श्ले०=काशीराज ,, ,,	१८ ज्ये०=सब राजाओं को	२७ रेव०=किरात देश

केतु उदय का फल पूर्वोक्त है यदि धूमाकार पूछ सहित उदय हो तो संसार को पीड़ा देवे ।

वस्तु मँहगी—धूम्राकार केतु उदय हो या इंद्र धनुष निकले तथा ग्रहण पड़े तो सब वस्तु मँहगी हों ।

इन्द्र धनुष आदि कुयोग फल—रात्रि को इन्द्र धनुष दिखे, दिन को उल्कापात हो या तारा टूटे, रात्रि को धूम्र केतु उदय हो या भूकम्प आदि दुष्ट चिन्ह हो तो देश में क्षय हो ।

रवि चंद्र मंडल फल—सूर्य चन्द्र का मंडल प्रथम प्रहर में=पीड़ा । दूसरे=वर्षा । तीसरे=धन धान्य नाश । चौथे में=राज्य भंग हो ।

पशु पक्षी आदि नाश योग—कार्तिक की अमावस्या शनि रवि या मंगलवार को पड़े तथा स्वाती नक्षत्र हो व आयुष्मान योग पड़े तो आकाश में जीव पक्षी आदि व पशु व स्थावर जंगम व राजा तथा घोड़े हाथियों का नाश हो ।

अषाढ़ पूर्णिमा पवन फल—अषाढ़ पूर्णिमा को हवा नैऋत्य दिशा को चले–तो अनावृष्टि हो, धान्य नाश हो, कूप जल सूखे । वायव्य–लोक में सुख प्रीति हो गीत व बाद्य परायण हो । अग्नि कोण–अग्नि भय । पश्चिम–जल का भय । शेष दिशाओं में हवा चले तो सुभिक्ष हो ।

होलिका पवन फल—होलिका की वायु पूर्व में जाय–राजा प्रजा सुखी हो । दक्षिण पराजित हो । दुर्भिक्ष हो । पश्चिम–तृण बहुत पैदा हो । उत्तर–धान्य पैदा हो । आकाश को जाय–राजा का किला छूट जाय ।

ग्रहों की शांति को रत्न धारण—नौ कांटे का एक सोने का यंत्र बनाकर उसके पूर्व कोष्ट में शुक्र की प्रसन्नता को = हीरा । आग्नेय चन्द्र = मोती । दक्षिण मंगल = मूंगा । नैऋत्य राहु=गोमेद । पश्चिम शनि = नीलम । वायव्य केतु=वैडूर्य । उत्तर गुरु = पुखराज । ईशान बुध = मरकत मणि । मध्य सूर्य माणिक्य (चुन्नी) जड़ाकर दक्षिण भुजा में बांधने से ग्रह बाधा नहीं होती ।

ग्रह की प्रसन्नता को सूर्य = माणिक्य । चन्द्र = मोती । मंगल = मूंगा । बुध = मरकत । गुरु = पुखराज । शुक्र = हीरा । शनि=नीलम । राहु = गोमेद । केतु=वैडूर्य । ये मणि प्रथक-प्रथक भी धारण करना चाहिये । बड़े मोल के ये रत्न न हों तो थोड़े मूल्य की ये उपरोक्त मणि धारण करना चाहिये या बुध = सुवर्ण । राहु केतु=लज्जावत मणि । शुक्र चन्द्र = चाँदी । गुरु = मोती । शनि=लोहा । मंगल सूर्य को = मूंगा भी धारण कर सकते हो ।

ग्रहों की शांति को औषधि युक्त जल से स्नान ।

लज्जावती, कूट, वरियारी, कांकुनी या मालकांगनी, मोथा, सरसों, हल्की, देवदारु सरफोंका, लोध इन औषधियों से मिले जल में स्नान करने से ग्रहों का दोष शांत होता है ।

ग्रहों की औषधि

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वेल	दूदिया	गो-जिह्वा	विधारा	भारंगी	सिंहपुच्छी	विछली	चन्दन	असगंध

इन औषधियों की जड़ी भी ग्रह शांति को धारण कर सकते हो ।

———

परिशिष्ट

(१) सर्व घात चक्र पर और भी विचार

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मास	कार्तिक	मार्ग०	आषाढ़	पौष	ज्ये०	भाद्र	माघ	आश्व०	श्राव०	वैशा०	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१,६	५,१०	२	२,७	३,८	५,१०	४,९	१,६	३,८	४,९	३,८	५,१०
	११	१५	७,१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
चंद्र	१	५	९	२	३	१०	३	७	४	८	११	१२
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा०	अनु०	मूल	श्रव०	शत०	रेव०	भर०	रोह०	आर्द्रा०	श्ले०
नक्षत्र	कृति०	चित्रा	शत०	मघा	धनि०	आर्द्रा	मूल	रोह०	पूमा०	मघा	मूल	पूमा०
चरण	१	२	३	३	१	३	२	४	३	४	४	३
योग	विस्कु०	सुकर्मा	परि०	व्याघ्र	धृति	शूल	सुकर्मा	व्यती०	वज्र	धृति	गंड	वज्र
करण	वत्र	शकु०	चतु०	नाग	वव	कौल०	तैति०	ग्रह	तैति०	शकु	किंनु०	चतु०
लग्न	१	३	६	१०	१	५	१२	३	५	८	१	४
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४ था

घात चक्र के अनुसार जब एक से अधिक घात समय मिलतां हो तो यात्रा, रोग, रण में विचार के अतिरिक्त जब ग्रह दशा गोचर आदि में अधिक अशुभ समय हो तो सावधान रहने की आवश्यकता है हानि दुर्घटना आदि होने की सम्भावना रहती है। इस कारण घात समय पर ध्यान देना आवश्यक है।

—: ० :—

(२) वर-कन्या का गुणैक्यबोध

वर—अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	भर०	४	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
	कृति०	१	१	२	१॥	३	५	०	७	८	२७॥
वृष०	कृति०	३	१	२	१॥	३	३	०	०	८	१८॥
	रोह०	४	१	२	१॥	२	३	६	०	८	२३॥
	मृग०	२	१	२	१॥	२	३	६	०	८	२३॥
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२५
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	३	॥	६	७	०	१९
	पुन०	३	१	१	१॥	३	॥	६	७	०	२०
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	३	४	६	७	०	२२॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	३	४	४	७	८	३०॥
	श्ले०	४	०	१	३	३	४	०	७	८	२६
सिंह	मघा	४	१	०	३	३	५	०	०	८	२०
	पूफा०	४	१	०	३	३	५	६	०	८	२६
	उफा०	१	१	०	१॥	३	५	६	०	०	१६॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	३	॥	६	०	०	१३
	हस्त०	४	१	१	१॥	०	॥	६	०	०	१०
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	०	८	१३
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	३	०	७	८	२२॥
	स्वाती	४	१	१	१।	०	३	६	७	८	२७॥
	विशा०	३	१	१	१॥	१	३	०	७	८	२२॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	१	५	०	०	८	१६॥
	अनु०	४	०	१	१॥	३	५	६	०	८	२४॥
	ज्ये०	४	०	१	३	३	५	०	०	०	१२
धन	मूल	४	१	१	३	२	५	०	०	०	१२
	पूषा०	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	उषा०	१	१	२	१॥	२	५	६	०	८	२५॥
मकर	उषा०	३	१	२	१॥	२	॥	६	७	८	२८
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	॥	६	७	८	२८
	धनि०	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०

वर—अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री॰	भकूट	नाड़ी	योग
कुंभ	धनि॰	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०
	शत॰	४	१	१	१॥	४	॥	०	७	०	१५
	पूभा॰	३	१	१	१॥	१	४॥	६	७	०	१८
मीन	पूभा॰	१	०	२	१॥	०	५	६	०	०	१५॥
	उभा॰	४	०	२	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
	रेवती	४	०	२	३	२	५	६	०	८	२६

वर—भरणी, मेष राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व॰	४	१	२	३	२	५	५	७	८	३३
	भर॰	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	कृति॰	१	१	२	३	३	५	०	७	८	२९
वृष॰	कृति॰	३	१	२	३	३	३	०	०	८	२०
	रोह॰	४	१	२	१॥	२	३	६	०	८	२३॥
	मृग॰	२	१	२	१॥	३	३	५	०	०	१४॥
मि॰	मृग॰	२	१	१	१॥	२	॥	५	७	०	१८
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	पुन॰	३	१	१	१॥	३	॥	५	७	८	२७
कर्क	पुन॰	१	०	१	१॥	३	४	५	७	८	२९॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	३	४	५	७	०	२१॥
	श्ले॰	४	०	१	१॥	३	४	०	७	८	२४॥
सिंह	मघा	४	१	०	३	३	५	०	०	८	२०
	पूफा॰	४	१	०	३	३	५	६	०	०	१८
	उफा॰	१	१	०	३	३	५	६	०	८	२६
कन्या	उफा॰	३	१	१	३	३	॥	६	०	८	२२॥
	हस्त॰	४	१	१	१॥	३	॥	५	०	८	२०
	चित्रा	२	१	१	१॥	२	॥	०	०	०	६
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	२	३	०	७	०	१५॥
	स्वा॰	४	१	१	१॥	३	३	५	७	८	२९॥
	विशा॰	३	१	१	१॥	३	३	०	७	८	२३॥

वर—भरणी, मेष राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	अनु०	४	०	१	१॥	३	५	५	०	०	१५॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	३	५	०	०	८	१८॥
धन०	मूल०	४	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	पूषा०	४	१	२	३	२	५	६	०	०	१९
	उषा०	१	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
मकर	उषा०	३	१	२	३	२	॥	६	७	८	२९॥
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	॥	५	७	८	३७
	धनि०	२	१	१	१॥	०	॥	०	७	०	११
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	०	॥	०	७	०	११
	शत०	४	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२१
	पूभा०	३	१	१	१॥	०	॥	६	७	८	२५
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	०	४	६	०	८	२०॥
	उभा०	४	०	१	१॥	३	४	६	०	०	१५॥
	रेवती	४	०	१	१॥	४	४	५	०	८	२३॥

वर—कृतिका १ चरण, मेष राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	२	१॥	३	५	१	७	८	२८॥
	भर०	४	१	२	३	३	५	०	७	८	२९
	कृति०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
वृष०	कृत्ति०	३	१	२	३	४	३	६	०	०	१९
	रोह०	४	१	२	३	२	३	०	०	०	११
	मृग०	२	१	२	१॥	२	३	१	०	८	१८॥
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	१	७	८	२२
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२१
	पुन०	३	१	१	१॥	३	॥	१	७	८	३३
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	३	४	०	७	८	२४॥
	पुष्य०	४	०	१	१॥	४	४	१	७	८	२६॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	३	४	६	७	०	२२॥
सिंह	मघा	४	१	०	१॥	२	५	६	०	०	१५॥
	पूफा०	४	१	०	३	२	५	०	०	८	१९
	उफा०	१	१	०	३	३	५	०	०	८	२०

कन्या—

वर—कृतिका १ चरण, मेष राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	१	१	३	३	॥	०	०	८	१६॥
	हस्त	४	१	१	३	३	॥	१	०	८	१७॥
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	५	०	८	१८
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	३	५	७	८	२७॥
	स्वा०	४	१	१	१॥	३	३	१	७	०	१७॥
	विशा०	३	१	१	१॥	१	३	६	७	०	२०॥
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	१॥	१	५	६	०	०	१४॥
	अनु०	४	०	१	१॥	३	५	१	०	८	१९॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	३	५	६	०	८	२४
धनि०	मूल	४	१	१	१॥	२	५	६	०	८	२४॥
	पूषा०	४	१	१	३	०	५	०	०	८	१८
	उषा०	१	१	२	३	३	५	०	०	०	१४
मकर	उषा०	३	१	२	३	३	॥	०	७	०	१६॥
	श्रव०	४	१	२	३	०	॥	१	७	०	३४॥
	धनि०	२	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	३६
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	३६
	शत०	४	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	३८
	पूभा०	३	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	५	०	०	८	१६॥
	उभा०	४	०	१	१॥	३	५	०	०	८	१८॥
	रेवती	४	०	१	१॥	३	५	१	०	०	११॥

कन्या—

वर—कृतिका ३ चरण, वृष राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	२	१॥	३	३	१	०	८	१८॥
	भर०	४	०	२	३	३	३	०	०	८	१९
	कृति०	१	०	२	३	४	३	६	०	०	१८
वृष०	कृति०	३	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	रोह०	४	१	२	३	२	५	०	७	०	२०
	मृग०	२	१	२	१॥	२	५	१	७	८	२७॥
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	५	१	०	८	१९॥
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	पुन०	३	१	१	१॥	२	५	१	०	८	२०॥

वर—कृतिका ३ चरण, वृष राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
कर्क	पुन०	१	१	१	१॥	३	॥	१	७	८	२३
	पुष्य०	४	१	१	१॥	४	॥	१	७	८	२४
	श्ले०	४	१	१	१॥	४	॥	६	७	०	२०
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	०	६	७	०	१६॥
	पूफा०	४	०	०	३	२	०	०	७	८	२०
	उफा०	१	०	०	३	३	०	०	७	८	२१
कन्या	उफा०	३	१	१	३	३	५	०	०	८	२१
	हस्त०	४	१	१	३	३	५	१	०	८	२२
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
	स्वा०	४	१	१	१॥	३	५	१	०	०	१२॥
	विशा०	३	१	१	१॥	१	५	६	०	०	१५॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	१	३	६	७	०	१९॥
	अनु०	४	०	१	१॥	३	३	१	७	८	२४॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	३	३	६	७	८	२९॥
धन०	मूल	४	०	१	१॥	२	॥	६	०	८	१९
	पूषा०	४	०	२	३	०	॥	०	०	८	१३॥
	उषा०	१	०	२	३	३	॥	०	०	०	८॥
मकर	उषा०	३	१	२	३	३	५	०	०	०	१४
	श्रव०	४	१	२	३	०	५	१	०	०	१२
	धनि०	२	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	१	५	६	७	८	३०॥
	शत०	४	१	१	१॥	३	५	६	७	८	३२॥
	पूभा०	३	१	१	१॥	१	५	०	७	८	२४॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	॥	०	७	८	१९
	उभा०	४	०	१	१॥	३	॥	०	७	८	२१
	रेव०	४	०	१	१॥	३	॥	१	७	८	१४

कन्या—

वर—रोहणी ४ चरण, वृष राशि

			१	२	२	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्णं	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	२	१॥	२	३	५	०	८	२१॥
	भरणी	४	०	२	१॥	२	३	६	०	८	२२॥
	कृति०	१	०	२	३	२	३	०	०	०	१०
वृष	कृति०	३	१	२	३	२	५	०	७	०	२०
	रोह०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	मृग०	२	१	२	३	२	५	५	७	८	३३
मि०	मृग०	२	१	१	३	२	५	५	०	८	२५
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	५	६	०	८	२४॥
	पुनर०	३	१	१	१॥	१	५	५	०	८	२३॥
कर्क	पुनर०	१	०	१	१॥	१	॥	५	७	८	२४
	पुष्य०	४	०	१	१॥	२	॥	५	७	८	२५
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	॥	०	७	०	११
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	१	०	०	७	०	९॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	१	०	६	७	८	२३॥
	उफा०	१	०	०	३	१	०	६	७	८	२५
कन्या	उफा०	३	१	१	३	१	५	६	०	८	२५
	हस्त०	४	१	१	३	२	५	५	०	८	२५
	चित्रा	२	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
तुला	चित्रा	२	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	५	५	०	०	१५
	विशा०	३	१	१	१॥	२	५	०	०	०	१०॥
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	१॥	२	३	०	७	०	१४॥
	अनु०	४	०	१	१॥	२	३	५	७	८	२७॥
	ज्येष्ठा	४	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२२॥
धन	मूल	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	॥	६	०	८	२०
	उषा०	१	०	२	३	०	॥	६	०	०	११॥
मकर	उषा०	३	१	२	३	०	५	६	०	०	१७
	श्रव०	४	१	१	३	२	५	५	०	०	१७
	धनि०	२	१	१	३	२	५	०	०	८	२०

कन्या—

वर—रोहिणी ४ चरण, वृष राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कुम्भ	धनि०	२	१	१	३	२	५	०	७	८	२७
	शत०	४	१	१	३	२	५	०	७	८	२७
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	उभा०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	५	७	०	१७

कन्या—

वर—मृगशिरा २ चरण, वृष राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	२	१॥	२	३	६	०	८	२२॥
	भरणी	४	०	२	१॥	२	३	६	०	०	१४॥
	कृतिका	१	०	२	१॥	२	३	०	०	८	१६॥
वृष	कृतिका	३	१	२	१॥	२	५	०	७	८	२६॥
	रोहणी	४	१	२	३	४	५	६	७	८	३६
	मृग०	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
मि०	मृग०	२	१	१	३	४	५	६	०	०	२०
	आर्द्रा	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	पुन०	३	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५
	पुष्य०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	०	१८
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	॥	०	७	८	१९
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	१	०	०	७	८	१७॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	१	०	६	७	०	१५॥
	उफा०	१	०	०	१॥	१	०	६	७	८	२३॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
	हस्त	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	चित्रा	२	१	१	३	२	५	०	०	०	१२
तुला	चित्रा	२	१	१	३	२	५	०	०	०	१२
	स्वा०	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	विशा०	३	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥

वर—मृगशिरा २ चरण, वृष राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२२॥
	अनु०	४	०	१	१॥	२	३	६	७	०	२०॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२२॥
धन	मूल०	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
	पूषा०	४	०	३	१॥	२	॥	६	०	०	१२
	उषा०	१	०	२	१॥	०	॥	६	०	८	१८
मकर	उषा०	३	१	२	१॥	०	५	६	०	८	२३॥
	श्रव०	४	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	धनि०	२	१	२	३	२	५	०	०	०	१३
कुम्भ	धनि०	२	१	१	३	२	५	०	७	०	१९
	शत०	४	१	१	३	२	५	०	७	८	२७
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	उभा०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	०	१७
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६

वर—मृगशिरा ३-४ चरण, मिथुन राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	भर०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	०	१८
	कृति०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	रोह०	४	०	१	३	४	५	६	०	८	२७
	मृग०	२	०	१	३	४	५	६	०	०	१९
मि०	मृग०	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	आर्द्रा	४	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
	पुन०	३	१	२	१॥	१	५	६	७	८	३१॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	१	१	६	०	८	१८॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	२	१	६	०	०	११॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	१	०	०	८	१२॥
सिंह	मघा	४	०	१	१॥	१	४	०	७	८	२१॥
	पूफा०	४	०	१	१॥	१	४	६	७	०	१९॥
	उफा०	१	०	१	१॥	१	४	६	७	८	२७॥

कन्या— वर—मृगशिरा ३-४ चरण, मिथुन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	१	५	६	७	८	३०॥
	हस्त०	४	०	२	३	२	५	६	७	८	३३
	चित्रा	२	०	२	३	२	५	०	७	०	१९
तुला	चित्रा	२	१	२	३	२	५	०	०	०	१३
	स्वा०	४	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	विशा०	३	१	२	१॥	२	५	०	०	८	१९
वृश्चिक	विशा	१	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
	अनु०	४	०	१	१॥	२	॥	६	०	०	११
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
धन	मूल	४	०	२	१॥	२	॥	०	७	८	२१
	पूषा०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	०	१८
	उषा०	१	०	१	१॥	०	॥	६	७	८	२४
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	०	४	६	०	८	२०॥
	श्रव०	४	०	१	३	२	४	६	०	८	२४
	धनि०	२	०	१	३	२	४	०	०	०	१०
कुंभ	धनि०	२	०	२	३	२	४	०	०	०	११
	शत०	४	१	२	३	२	४	०	०	८	२०
	पूभा०	३	१	२	१॥	२	४	६	०	८	२४॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	उभा०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	०	१७
	रेवती	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५

कन्या— वर—आर्द्रा ४ चरण, मिथुन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	२	॥	५	७	०	१७
	भर०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	कृति	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	रोह०	४	०	१	१॥	२	५	६	०	८	२३॥
	मृग०	२	०	१	३	२	५	५	०	८	२४
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	५	५	७	८	३३
	आर्द्रा	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	पुनर०	३	१	२	३	१	५	५	७	०	२४

वर—आर्द्रा ४ चरण, मिथुन राशि

—संख्या

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	याग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
कर्क	पुनर०	१	०	१	३	१	१	५	०	०	११
	पुष्य०	४	०	१	१॥	२	१	५	०	८	१८॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	१	०	०	८	११॥
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	१	४	०	७	८	२१॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	१	४	६	७	८	२७॥
	उफा०	१	०	०	१॥	२	४	६	७	०	२०॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	२	५	६	७	०	२३॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	२	५	५	७	०	२२॥
	चित्रा	२	०	२	३	१	५	०	७	८	२६
तुला	चित्रा	२	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
	स्वा०	४	१	२	३	२	५	५	०	८	२६
	विशा०	३	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
वृ०	विशा०	१	०	१	३	१	॥	०	०	८	१३॥
	अनु०	४	०	१	१॥	०	॥	५	०	८	१६
	ज्ये०	४	०	१	१॥	०	॥	०	०	०	३
धनि०	मूल०	४	०	२	१॥	४	॥	०	७	०	१५
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	४	६	०	८	२२॥
	श्रव०	४	०	१	१॥	२	४	५	०	८	२१॥
	धनि०	२	०	१	३	१	४	०	०	८	१७
कुम्भ	धनि०	२	१	२	३	१	४	०	०	८	१८
	शत०	४	१	२	३	२	४	०	०	०	१२
	पूभा०	३	१	२	३	१	४	६	०	०	१७
मीन	पूभा०	१	०	१	३	१	॥	६	७	०	१८
	उभा०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	५	७	८	२५

कन्या—

वर—पुनर्वसु ३ चरण, मिथुन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	०	१९
	भर०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२७
	कृति०	१	०	१	१॥	३	॥	०	७	८	२१
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	३	५	०	०	८	१८॥
	रोह०	४	०	१	१॥	१	५	६	०	८	२२॥
	मृग०	२	०	१	१॥	१	५	६	०	८	२२॥
मि०	मृग०	२	१	२	१॥	१	५	६	७	८	३१॥
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	५	६	७	०	२५
	पुन०	३	१	२	३	४	५	६	७	८	२८
कर्क	पुन०	१	०	१	३	४	१	६	०	०	१५
	पुष्य	४	०	१	३	३	१	६	०	८	२२
	श्ले०	४	०	१	१॥	४	१	०	०	८	१५॥
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	०	४	०	७	८	२०॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	०	४	६	७	८	२६॥
	उफा०	१	०	०	१॥	२	४	६	७	०	२०॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	२	५	६	७	०	२३॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	२	५	६	७	०	२३॥
	चित्रा	२	०	२	१॥	१	५	०	७	८	२४॥
तुला	चित्रा	२	१	२	१॥	१	५	०	०	८	१८॥
	स्वा०	४	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	विशा०	३	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
वृ०	विशा०	१	०	१	३	१	॥	०	०	८	१३॥
	अनु०	४	०	१	३	२	॥	६	०	८	२०॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	०	५
धन०	मूल	४	०	२	१॥	१	॥	०	७	०	१२
	पूषा०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	४	६	०	८	२२॥
	श्रव०	४	०	१	१॥	२	४	६	०	८	२२॥
	धनि०	२	०	१	१॥	२	४	०	०	८	१६॥

वर—पुनर्वसु ३ चरण, मिथुन राशि

कन्या— राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कुंभ	धनि०	२	१	२	१॥	२	४	०	०	८	१८॥
	शत०	४	१	२	३	२	४	०	०	०	१३
	पूभा०	३	१	२	३	२	४	६	०	०	१८
मीन	पूभा०	१	०	१	३	२	॥	६	७	०	१९॥
	उभा०	४	०	१	३	२	॥	६	७	८	२७॥
	रेव०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२७

वर—पुनर्वसु १ चरण, कर्क राशि

कन्या— राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	३	४	६	७	०	२३॥
	भर०	४	१	१	१॥	३	४	६	७	८	३१॥
	कृति०	१	१	१	॥	३	४	०	७	८	२५॥
वृष०	कृति०	३	१	१	१॥	३	॥	०	७	८	२२
	रोह०	४	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	मृग०	२	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	२६
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	१	१	६	०	८	१९॥
	आर्द्रा	४	१	१	३	१	१	६	०	०	१३
	पुन०	३	१	१	३	४	१	६	०	०	१६
कर्क	पुन०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	पुष्य	४	१	२	३	३	५	६	७	८	३५
	श्लो०	४	१	२	१॥	४	५	०	७	८	२८
सिंह	मघा	४	१	२	१॥	०	५	०	०	८	१७॥
	पूफा०	४	१	१	१॥	०	५	६	०	८	२२॥
	उफा०	१	१	१	१॥	२	५	६	०	०	१६॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	२	१	६	७	०	१९॥
	हस्त०	४	१	१	१॥	२	१	६	७	०	१९॥
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	१	०	७	८	२०॥
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०
	स्वा०	४	१	१	३	२	॥	६	७	८	२८॥
	विशा०	३	१	१	३	१	॥	०	७	८	२१॥

वर—पुनर्वसु १ चरण, कर्क राशि

कन्या-			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
वृश्चि०	विशा०	१	१	१	३	१	४	०	०	८	१८
	अनु०	४	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	ज्ये०	४	१	१	१॥	२	४	०	०	०	९॥
धन०	मूल०	४	१	१	१॥	१	४	०	०	०	८॥
	पूषा०	४	१	१	१॥	२	४	६	०	८	२३॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	४	६	०	८	२३॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	॥	६	७	८	२८
	धनि०	२	१	२	१॥	२	॥	०	७	८	२२
कुंभ	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	०	०	८	१४
	शत०	४	१	१	३	३	॥	०	०	८	८॥
	पूभा०	३	१	१	३	२	॥	६	०	०	१३॥
मीन	पूभा०	१	१	२	३	२	४	६	०	०	१८
	उभा०	४	१	२	३	२	४	६	०	८	२६
	रेवती	४	१	२	१॥	३	४	६	०	८	२५॥

वर—पुष्य ४ चरण, कर्क राशि

कन्या-			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	३	४	६	७	८	३१॥
	भर०	४	१	१	१॥	३	४	६	७	०	२३॥
	कृत्ति०	१	१	१	१॥	४	४	०	७	८	२६॥
वृष	कृत्ति०	३	१	१	१॥	४	॥	०	७	८	२३
	रोह०	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	०	१९
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	१	६	०	०	१२॥
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	१	६	०	८	२०॥
	पुन०	३	१	१	३	३	१	६	०	८	२३
कर्क	पुन०	१	१	२	३	३	५	६	७	८	३५
	पुष्य०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	श्ले०	४	१	२	३	३	५	०	७	८	२९
सिंह	मघा	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	पूफा०	४	१	१	१॥	२	५	६	०	०	१६॥
	उफा०	१	१	१	१॥	३	५	६	०	८	२५॥

वर—पुष्य ४ चरण, कर्क राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	३	१	६	७	८	२८॥
	हस्त	४	१	१	१॥	३	१	६	७	८	२८॥
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	१	०	७	०	१२॥
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	०	११॥
	स्वा०	४	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	२८
	विशा०	३	१	१	३	१	॥	०	७	८	२१॥
वृ०	विशा०	१	१	१	३	१	४	०	०	८	१८
	अनु०	४	१	१	३	३	४	६	०	०	१८
	ज्ये०	४	१	१	३	३	४	०	०	८	२०
धन०	मूल	४	१	१	१॥	२	४	०	०	८	१७॥
	पूषा०	४	१	१	१॥	०	४	६	०	०	१३॥
	उषा०	१	१	१	१॥	३	४	६	०	८	२४॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	२८
	श्रव०	४	१	२	१॥	०	॥	५	७	८	२६
	धनि०	२	१	२	१॥	१	॥	०	७	०	१३
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	१	॥	०	०	०	५
	शत०	४	१	१	१॥	३	॥	०	०	८	१५
	पूभा०	३	१	१	३	१	॥	६	०	८	२०॥
मीन	पूभा०	१	१	२	३	१	४	६	०	८	२५
	उभा०	४	१	२	३	३	४	६	०	०	१९
	रेवती	४	१	२	३	३	४	६	०	८	२७

वर—अश्लेषा ४ चरण, कर्क राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	३	३	४	१	७	८	२८
	भर०	४	१	१	१॥	३	४	०	७	८	२५॥
	कृति०	१	१	१	१॥	३	४	६	७	०	२३॥
वृष०	कृति०	३	१	१	१॥	३	॥	६	७	०	२०
	रोह०	४	४	१	१॥	१	॥	०	७	०	१२
	मृग०	२	१	१	१॥	१	॥	१	७	८	२१
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	१	१	१	०	८	१४॥
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	१	१	०	०	८	१३॥
	पुन०	३	१	१	१॥	४	१	१	०	८	१७॥

कन्या—

वर—अश्लेषा ४ चरण, कर्क राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
कर्क	पुन०	१	१	२	१॥	४	५	१	७	८	२९
	पुष्य	४	१	२	३	३	५	१	७	८	३०
	श्ले०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
सिंह	मघा	४	१	१	३	०	५	६	०	०	१६
	पूफा०	४	१	१	१॥	०	५	०	०	८	१६॥
	उफा०	१	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	२	१	०	७	८	२१॥
	हस्त	४	१	१	१॥	२	१	१	७	८	२२॥
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	१	६	७	८	२६॥
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	॥	१	७	०	१४
	विशा०	३	१	१	१॥	१	॥	६	७	०	१८
वृ०	विशा०	१	१	१	१॥	१	४	६	०	०	१४॥
	अनु०	४	१	१	३	२	४	१	०	८	२०
	ज्ये०	४	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
धन	मूल	४	१	१	३	१	४	६	०	८	२४
	पूषा	४	१	१	१॥	२	४	०	०	८	१७॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	४	०	०	०	९॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२॥
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	॥	१	७	०	१५
	धनि०	२	१	२	१॥	२	॥	६	७	७	२८
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	६	०	८	२०
	शत०	४	१	१	१॥	३	॥	६	०	८	२१
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	०	८	१४
मीन	पूभा०	१	१	२	१॥	२	४	०	०	८	१८॥
	उभा०	४	१	२	३	२	४	०	०	८	२०
	रेव०	४	१	२	३	३	४	१	०	०	१४

कन्या—

वर—मघा ४ चरण, सिंह राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	०	३	३	५	१	०	८	२१
	भरणी	४	१	०	३	३	५	०	०	८	२०
	कृति०	१	१	०	१।।	२	५	६	०	०	१५।।
वृष०	कृति०	३	१	०	१।।	२	०	६	७	०	१७।।
	रोह०	४	१	०	१।।	१	०	०	७	०	१०।।
	मृग०	२	१	०	१।।	१	०	१	७	८	१९।।
मि०	मृग०	२	१	०	१।।	१	४	१	७	८	२३।।
	आर्द्रा	४	१	०	१।।	१	४	०	७	८	२२।।
	पुन०	३	१	०	१।।	०	४	१	७	८	२२।।
कर्क	पुन०	१	०	१	१।।	०	५	१	०	८	१६।।
	पुष्य०	४	०	१	१।।	२	५	१	०	८	१८।।
	श्ले०	४	०	१	३	०	५	६	०	०	१५
सिंह	मघा	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	पूफा०	४	१	२	३	४	५	०	७	८	३०
	उफा०	१	१	२	१।।	२	५	०	७	८	२६।।
कन्या	उफा०	३	१	०	१।।	२	४	०	०	८	१६।।
	हस्त०	४	१	०	१।।	३	४	१	०	८	१७।।
	चित्रा	२	१	०	१।।	२	४	६	०	८	२२।।
तुला	चित्रा	२	१	०	१।।	२	०	६	७	८	२५।।
	स्वा०	४	१	०	१।।	२	०	१	७	०	१२।।
	विशा०	३	१	०	१।।	२	०	६	७	०	१७।।
वृ०	विशा०	१	०	०	१।।	२	५	६	७	०	२१।।
	अनु०	४	०	०	१।।	२	५	१	७	८	२४।।
	ज्ये०	४	०	०	३	२	५	६	७	८	३१
धन०	मूल	४	१	०	३	१	५	६	०	८	२४
	पूषा०	४	१	०	३	२	५	०	०	८	१९
	उषा०	१	१	०	१।।	२	५	०	०	०	९।।
मकर	उषा०	३	१	०	१।।	२	०	०	०	०	४।।
	श्रव०	४	१	२	१।।	२	०	१	०	०	७।।
	धनि०	२	१	२	१।।	१	०	६	०	८	१९।।

कन्या—

वर—मघा ४ चरण, सिंह राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कुम्भ	धनि०	२	१	०	१॥	१	०	६	७	८	२४॥
	शत०	४	१	०	१॥	३	०	६	७	८	२६॥
	पूभा०	३	१	०	१॥	१	०	०	७	८	१८॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	५	०	०	८	१६॥
	उभा०	४	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	रेवती	४	०	१	३	३	५	१	०	०	१३

कन्या—

वर—पूर्वा फाल्गुनी ४ चरण, सिंह राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	०	३	३	५	५	०	८	२५
	भर०	४	१	०	३	३	५	६	०	०	१८॥
	कृति०	१	१	०	३	२	५	०	०	८	१९
वृष	कृति०	३	१	०	३	२	०	०	७	८	२१
	रोह०	४	१	०	१॥	१	०	६	७	८	२४॥
	मृग०	२	१	०	१॥	१	०	५	७	०	१५॥
मि०	मृग०	२	१	०	१॥	१	४	५	७	०	१९॥
	आर्द्रा	४	१	०	१॥	१	४	६	७	८	२८॥
	पुन०	३	१	०	१॥	०	४	५	७	८	२६॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	०	५	५	०	८	२०॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	२	५	५	०	०	१४॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	०	५	०	०	८	१५॥
सिंह	मघा	४	१	२	३	४	५	०	७	८	३०
	पूफा०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	उफा०	१	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
कन्या	उफा०	३	१	०	३	२	४	६	०	८	२४
	हस्त०	४	१	०	१॥	२	४	५	०	८	२१॥
	चित्रा	२	१	०	१॥	२	४	०	०	०	८॥
तुला	चित्रा	२	१	०	१॥	२	०	०	७	०	११॥
	स्वाती	४	१	०	१॥	२	०	५	७	८	२४॥
	विशा०	३	१	०	१॥	२	०	०	७	८	१९॥

कन्या—

वर—पूर्वा फाल्गुनी ४ चरण, सिंह राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
वृ०	विशा०	१	०	०	१॥	२	५	०	७	८	२३॥
	अनु०	४	०	०	१॥	२	५	५	७	०	२०॥
	ज्ये०	४	०	०	१॥	२	५	०	७	८	२३॥
धन	मूल	४	१	०	३	१	५	०	०	८	१८
	पूषा०	४	१	०	३	२	५	६	०	०	१७
	उषा०	१	१	०	३	२	५	६	०	८	२१
मकर	उषा०	३	१	०	३	२	०	६	०	८	२०
	श्रव०	४	१	१	१॥	२	०	५	०	८	१८॥
	धनि०	२	१	१	१॥	१	०	०	०	०	४॥
कुंभ	धनि०	२	१	०	१॥	१	०	०	७	०	१०॥
	शत०	४	१	०	१॥	३	०	०	७	८	२०॥
	पूभा०	३	१	०	१॥	१	०	६	७	८	२४॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	५	६	०	८	२२॥
	उभा०	४	०	१	१॥	२	५	६	०	०	१५॥
	रेवती	४	०	१	१॥	३	५	५	०	८	२३॥

कन्या—

वर—उत्तर फाल्गुनी १ चरण, सिंह राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	०	१॥	३	५	५	०	०	१५॥
	भर०	४	१	०	३	३	५	६	०	८	२६
	कृति०	१	१	०	३	३	५	०	०	८	२०
वृष०	कृति०	३	१	०	३	३	०	०	७	०	२२
	रोह०	४	१	०	३	१	०	६	७	८	२६
	मृग०	२	१	०	१॥	१	०	५	७	८	२३॥
मि०	मृग०	२	१	०	१॥	१	४	५	७	८	२७॥
	आर्द्रा	४	१	०	१॥	२	४	६	७	०	२१॥
	पुन०	३	१	०	१॥	२	४	५	७	०	२०॥
कर्क	पुन०	१	१	०	१॥	२	५	५	०	०	१४॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	३	५	५	०	८	२३॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
सिंह	मघा	४	१	२	१॥	२	५	०	७	८	२६॥
	पूफा०	४	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
	उफा०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८

वर—उत्तर फाल्गुनी १ चरण, सिंह राशि

कन्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	१	०	३	४	४	६	०	०	१८
	हस्त०	४	१	०	३	३	४	५	०	०	१६
	चित्रा	२	१	०	१॥	०	४	०	०	८	१४॥
तुला	चित्रा	२	१	०	१॥	०	॥	०	७	८	१८
	स्वा०	४	१	०	१॥	३	०	५	७	८	२६
	विशा०	३	१	०	१॥	०	॥	०	७	८	१८
वृ०	विशा०	१	०	०	१॥	०	५	०	७	८	२१॥
	अनु०	४	०	२	१॥	३	५	५	७	८	३१॥
	ज्ये०	४	०	२	१॥	३	५	०	७	०	१८॥
धन०	मूल	४	१	०	१॥	२	५	०	०	०	९॥
	पूषा०	४	१	०	३	२	५	६	०	८	२५
	उषा०	१	१	०	३	२	५	६	०	८	२५
मकर	उषा०	३	१	०	३	२	०	६	०	८	२०
	श्रव०	४	१	१	३	२	०	५	०	८	२०
	धनि०	२	१	१	१॥	१	०	०	०	८	१२॥
कुंभ	धनि०	२	१	१	१॥	३	०	०	७	८	१९॥
	शत०	४	१	०	१॥	३	०	०	७	०	१२॥
	पूभा०	३	१	०	१॥	१	०	६	७	०	१६॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	५	६	०	०	१४॥
	उभा०	४	०	१	१॥	४	५	६	०	८	२५॥
	रेवती	४	०	१	१॥	३	५	५	०	८	२३॥

वर—उत्तर फाल्गुनी ३ चरण, कन्या राशि

कन्या—			१	२	३	३	४	५	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	३	॥	५	०	०	१०
	भर०	४	०	१	३	३	॥	६	०	८	२१॥
	कृति०	१	०	१	३	६	॥	०	०	८	१६॥
वृष०	कृति०	३	१	१	३	३	५	०	०	८	२१
	रोह०	४	१	३	१	५	५	६	०	८	२५
	मृग०	२	१	१	१॥	१	५	५	०	८	२२॥
मि०	मृग०	२	१	२	१॥	१	५	५	७	८	३०॥
	आर्द्रा	४	१	२	१॥	२	५	६	७	०	२४॥
	पुन०	३	१	२	१॥	६	५	५	७	०	२३॥

वर—उत्तर फाल्गुनी ३ चरण, कन्या राशि

संख्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	मकूट	नाड़ी	योग
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	६	१	५	७	०	१७॥
	पुष्य०	४	०	१	१॥	३	१	५	७	८	२६॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	१	०	७	८	२०॥
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	४	०	०	८	१५॥
	पूफा०	४	०	०	३	२	४	६	०	८	२३
	उफा०	१	०	०	३	४	४	६	०	०	१७
कन्या	उफा०	३	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	हस्त०	४	१	२	३	३	५	५	७	०	२६
	चित्रा	२	१	२	१॥	०	५	०	७	८	२४॥
तुला	चित्रा	२	१	२	१॥	०	५	०	०	८	१७॥
	स्वा०	४	१	२	१॥	३	५	५	०	८	२५॥
	विशा०	३	१	२	१॥	०	५	०	०	८	१७॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	०	॥	०	७	८	१८
	अनु०	४	०	१	१॥	३	॥	५	७	८	२६
	ज्ये०	४	०	१	१॥	३	॥	०	७	०	१३
धन	मूल	४	०	२	१॥	२	॥	०	७	०	१३
	पूषा०	४	०	२	३	२	॥	६	७	८	२८॥
	उषा०	१	०	१	३	२	॥	६	७	८	२७॥
मकर	उषा०	३	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	श्रव०	४	१	१	३	२	४	५	०	८	२४
	धनि०	२	१	१	१॥	१	४	०	०	८	१६॥
कुम्भ	धनि०	२	१	२	१॥	१	४	०	०	८	१७॥
	शत०	४	१	२	१॥	३	४	०	०	०	११॥
	पूभा०	३	१	२	१॥	१	४	६	०	०	१५॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	॥	६	७	०	१७
	उभा०	४	०	१	१॥	४	॥	६	७	८	२८
	रेवती	४	०	१	१॥	३	॥	५	७	८	२६

वर—हस्त ४ चरण, कन्या राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	०	॥	६	०	०	९
	भर०	४	०	१	१॥	३	॥	६	०	८	२०
	कृति०	१	०	१	३	३	॥	०	०	८	१५॥
वृष०	कृति०	३	१	१	३	३	५	०	०	८	२१
	रोह०	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	मृग०	२	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
	आर्द्रा	४	१	२	१॥	२	५	६	७	०	२४॥
	पुन०	३	१	२	१॥	२	५	६	७	०	२४॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	२	१	६	७	०	१८॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	३	१	६	७	८	२७॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	१	०	७	८	२०॥
सिंह	मघा	४	०	१	१॥	२	४	०	०	८	१५॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	२	४	६	०	८	२१॥
	उफा०	१	०	०	३	३	४	६	०	०	१६
कन्या	उफा०	३	१	२	३	३	५	६	७	०	२७
	हस्त०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	चित्रा	२	१	२	३	१	५	०	७	८	२७
तुला	चित्रा	२	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
	स्वाती	४	१	२	१॥	४	५	६	०	८	२७॥
	विशा०	३	१	२	१॥	१	५	०	०	८	१८॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	१	॥	०	७	८	१९
	अनु०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२६
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२
धन	मूल	४	०	२	१॥	२	॥	०	७	०	१३
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	उषा०	१	०	१	३	२	॥	६	७	८	२७॥
मकर	उषा०	३	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	श्रव०	४	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	धनि०	२	१	१	३	३	४	०	०	८	२०

कन्या—

वर—हस्त ४ चरण, कन्या राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कुंभ	घनि०	२	१	२	३	३	४	०	०	८	२१
	शत०	४	१	२	१॥	०	४	०	०	०	८॥
	पूभा०	३	१	२	१॥	३	४	६	०	०	१७॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	३	॥	६	७	०	१९
	उभा०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२७
	रेवती	४	०	१	१॥	३	०	६	७	८	२७

कन्या—

वर—चित्रा २ चरण, कन्या राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	॥	१	०	८	१३
	भर०	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	०	५
	कृति०	१	०	१	१॥	१	॥	६	०	८	१८
वृष०	कृति०	३	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
	रोह०	४	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	मृग०	२	१	१	३	२	५	१	०	०	१३
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	५	१	७	०	२१
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	५	०	७	८	२७
	पुन०	३	१	२	१॥	१	५	१	७	८	२१॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	१	१	१	७	८	२०॥
	पुष्य	४	०	१	१॥	१	१	१	७	०	१२॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	१	६	७	८	२५॥
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	४	६	०	८	२१॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	२	४	०	०	०	७॥
	उफा०	१	०	०	१॥	०	४	०	०	८	१३॥
कन्या	उफा०	३	१	२	१॥	०	५	०	७	८	२४॥
	हस्त०	४	१	२	३	१	५	१	७	८	२८
	चित्रा	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
तुला	चित्रा	२	१	२	३	४	५	६	०	०	२१
	स्वा०	४	१	२	३	१	५	१	०	८	२१
	विशा०	३	१	२	१॥	४	५	६	०	८	२७॥

वर—चित्रा २ चरण, कन्या राशि

कन्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	मकूट	नाड़ो	योग
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	१॥	४	॥	६	७	८	२८
	अनु०	४	०	१	१॥	१	॥	१	७	०	१२
	ज्ये०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५
धन०	मूल०	४	०	२	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	पूषा०	४	०	२	१॥	१	॥	०	७	०	१२
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	४	०	०	८	१७॥
	श्रव०	४	१	१	३	१	४	१	०	८	१९
	धनि०	२	१	१	३	२	४	६	०	०	१७
कुम्भ	धनि०	२	१	२	३	२	४	६	०	०	१८
	शत०	४	१	२	३	१	४	६	०	८	२५
	पूभा०	३	१	२	१॥	२	४	०	०	८	१८॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
	उभा०	४	०	१	१॥	०	॥	०	७	०	१०
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	१	७	८	२१

वर—चित्रा २ चरण, तुला राशि

कन्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	मकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	३	१	७	८	२२॥
	भर०	४	०	१	१॥	२	३	०	७	०	१४॥
	कृति०	१	०	१	१॥	१	३	६	७	८	२७॥
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	१	५	६	०	८	२२॥
	रोह०	४	०	१	३	२	५	०	०	८	१९
	मृग०	२	०	१	३	२	५	१	०	०	१२
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	५	१	०	०	१४
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
	पुन०	३	१	२	१॥	१	५	१	०	८	१९॥
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	१	॥	१	७	८	२०
	पुष्य०	४	०	१	१॥	१	॥	१	७	०	१२
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	०	६	७	८	२४॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	२	०	०	७	०	१०॥
	उफा०	१	०	०	१॥	०	०	०	७	८	१६॥

वर—चित्रा २ चरण, तुला राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	०	५	०	०	८	१६॥
	हस्त	४	०	२	३	१	५	१	०	८	२०
	चित्रा	२	०	२	३	४	५	६	०	०	२०
तुला	चित्रा	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	स्वा०	४	१	२	३	१	५	१	७	८	२८
	विशा०	३	१	२	१॥	४	५	६	७	८	३४॥
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	१॥	४	३	६	०	८	२३॥
	अनु०	४	०	१	१॥	१	३	१	०	०	७॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	१	३	६	०	८	२०॥
धनि०	मूल	४	०	३	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	पूषा०	४	०	२	१॥	१	॥	०	७	०	१२
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	०	७	८	२४॥
	श्रव०	४	०	१	३	१	५	१	७	८	२६
	धनि०	२	०	१	३	२	५	६	७	०	२४
कुम्भ	धनि०	२	१	२	३	२	५	६	०	०	१९
	शत०	४	१	२	३	१	५	६	०	८	२६
	पूभा०	३	१	२	१॥	२	५	०	०	८	१९॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
	उभा०	४	०	१	१॥	०	॥	०	०	०	३
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	१	०	८	१४॥

वर—स्वाती ४ चरण, तुला राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
मेष	अश्वि०	४	०	१	१॥	०	३	६	७	८	२६॥
	भर०	४	०	१	१॥	३	३	६	७	८	२९॥
	क्रुति०	१	०	१	१॥	३	३	०	७	०	१५॥
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	३	५	०	०	०	१०॥
	रोह०	४	०	१	१॥	२	५	६	०	०	१५॥
	मृग०	२	०	१	३	२	५	६	०	८	२५
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	आर्द्रा	४	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	पुन०	३	१	२	३	२	५	६	०	८	२७

वर—स्वाती ४ चरण, तुला राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कर्क	पुन०	१	०	१	३	२	॥	६	७	८	२८
	पुष्य०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२६॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	०	०	७	०	१०॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	२	०	६	७	८	२४॥
	उफा०	१	०	०	१॥	३	०	६	७	८	२५॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	४	५	६	०	८	२६॥
	चित्रा	२	०	२	३	१	५	०	०	८	१९
तुला	चित्रा	२	१	२	३	१	५	०	७	८	२७
	स्वा०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	विशा०	३	१	२	३	१	५	०	७	०	१९
वृ०	विशा०	१	०	१	३	१	३	०	०	०	८
	अनु०	४	०	१	१॥	२	३	६	०	८	२१॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	३	०	०	८	१५॥
धन०	मूल	४	०	२	१॥	२	॥	०	७	८	२१॥
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	०	१८
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	६	७	०	२२॥
	श्रव०	४	०	२	१॥	२	५	६	७	०	२३॥
	धनि०	२	०	१	३	३	५	०	७	८	२७
कुम्भ	धनि०	२	१	२	३	३	५	०	०	८	२२
	शत०	४	१	२	३	०	५	०	०	८	१९
	पूभा०	३	१	२	३	२	५	६	०	८	२८
मीन	पूभा०	१	०	१	३	३	॥	६	०	८	२१॥
	उभा०	४	०	१	१॥	३	॥	६	०	८	२०
	रेव०	४	०	१	१॥	३	॥	६	०	०	१२

कन्या—

वर—विशाखा ३ चरण, तुला राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण (१)	वश्य (२)	तारा (२)	योनि (४)	ग्रहमैत्री (५)	गणमैत्री (६)	भकूट (७)	नाड़ी (८)	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	३	१	७	८	२२॥
	भरणी	४	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२२॥
	कृति०	१	०	१	१॥	१	३	६	७	०	१९॥
वृष	कृति०	३	०	१	१॥	१	५	६	०	०	१४॥
	रोह०	४	०	१	१॥	२	५	०	०	०	९॥
	मृग०	२	०	१	१॥	२	५	१	०	८	१८॥
मि०	मृग०	२	१	२	१॥	२	५	१	०	८	२०॥
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	५	०	०	८	२०
	पुनर०	३	१	२	३	१	५	१	०	८	२१
कर्क	पुनर०	१	०	१	३	१	॥	१	०	८	२१।
	पुष्य०	४	०	१	३	१	॥	१	७	८	२१॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	१	॥	६	७	०	१७
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	०	६	७	०	१६॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	२	०	०	७	८	१८॥
	उफा०	१	०	०	१॥	०	०	०	७	८	१६॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	०	५	०	०	८	१६॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	१	५	१	०	८	१८॥
	चित्रा	२	०	२	१॥	४	५	६	०	८	२६॥
तुला	चित्रा	२	१	२	१॥	४	५	६	७	८	३४॥
	स्वा०	४	१	२	३	१	५	१	७	०	२०
	विशा०	३	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
वृश्चि०	विशा०	१	०	१	३	४	३	६	०	०	१७
	अनु०	४	०	१	३	१	३	१	०	८	१७
	ज्येष्ठा	४	०	१	१॥	१	३	६	०	८	२०॥
धन	मूल	४	०	२	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	पूषा०	४	०	२	१॥	१	॥	०	७	८	२०
	उषा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	०	७	०	१६॥
	श्रव०	४	०	१	१॥	१	५	१	७	०	१६॥
	धनि०	२	०	१	१॥	२	५	६	७	८	३०॥

कन्या—

वर—विशाखा ३ चरण, तुला राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कुम्भ	धनि०	२	०	२	१॥	२	५	६	०	८	२५॥
	शत०	४	१	२	३	१	५	६	०	८	२६
	पूभा०	३	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
मीन	पूभा०	१	०	१	३	२	॥	०	०	८	१४
	उभा०	४	०	१	३	०	॥	०	०	८	१२॥
	रेवती	४	०	१	१॥	२	॥	१	०	०	६

कन्या—

वर—विशाखा १ चरण, वृश्चिक राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	५	१	०	८	१८॥
	भरणी	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	कृतिका	१	१	१	१॥	१	५	६	०	०	१५॥
वृष	कृतिका	३	१	१	१॥	१	३	६	७	०	२०॥
	रोहणी	४	१	१	१॥	२	३	०	७	०	१५॥
	मृग०	२	१	१	१॥	२	३	१	७	८	२४॥
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	१	०	८	१५
	आर्द्रा	४	१	१	३	१	॥	०	०	८	१४॥
	पुन०	३	१	१	३	१	॥	१	०	८	१५॥
कर्क	पुन०	१	१	१	३	१	४	१	०	८	१९
	पुष्य०	४	१	१	३	१	४	१	०	८	१९
	श्ले०	४	१	१	१॥	१	४	६	०	०	१४॥
सिंह	मघा	४	१	०	१॥	२	५	६	७	०	२२॥
	पूफा०	४	१	०	१॥	२	५	०	७	८	२४॥
	उफा०	१	१	०	१॥	०	५	०	७	८	२२॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	०	॥	०	७	८	१९
	हस्त	४	१	१	१॥	१	॥	१	७	८	२१
	चित्रा	२	१	१	१॥	४	॥	६	७	८	२९
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	४	३	६	०	८	२४॥
	स्वा०	४	१	१	३	१	३	१	०	०	१०
	विशा०	३	१	१	३	४	३	६	०	०	१८

कन्या—

वर—विशाखा १ चरण, वृश्चिक राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
वृ०	विशा०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	अनु०	४	१	२	३	१	५	१	७	८	२८
	ज्ये०	४	१	२	१॥	१	५	६	७	८	३१॥
धन	मूल०	४	१	१	१॥	१	२	६	०	८	२३॥
	पूषा०	४	१	१	१॥	१	५	०	०	८	१७॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	५	०	०	०	१०॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	७	०	१३
	श्रव०	४	१	१	१॥	१	॥	१	७	०	१३
	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	शत०	४	१	१	३	१	॥	६	७	८	२७॥
	पूभा०	३	१	१	३	२	॥	०	७	८	२२॥
मीन	पूभा०	१	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	उभा०	४	१	१	३	०	५	०	०	८	१८
	रेवती	४	१	१	१॥	२	५	१	०	०	११॥

कन्या—

वर—अनुराधा ४ चरण, वृश्चिक राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
	भर०	४	१	१	१॥	३	५	६	०	०	१७॥
	कृति०	१	१	१	१॥	३	५	०	०	८	१९॥
वृष०	कृति०	३	१	१	१॥	३	३	०	७	८	२४॥
	रोह०	४	१	१	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
	मृग०	२	१	१	१॥	२	३	६	७	०	२१॥
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	६	०	०	१२
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	०	॥	६	०	८	१८
	पुन०	३	१	१	३	२	॥	६	०	८	२१
कर्क	पुन०	१	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	पुष्य	४	१	१	३	३	४	६	०	०	१८
	श्ले०	४	१	१	३	२	४	०	०	८	१९
सिंह	मघा	४	१	०	१॥	२	५	०	७	८	२४॥
	पूफा०	४	१	०	१॥	२	५	६	७	०	२२॥
	उफा०	१	१	१	१॥	३	५	६	७	८	३२॥

कन्या—

वर—अनुराधा ४ चरण, वृश्चिक राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कन्या	उफा॰	३	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	२८
	हस्त॰	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	०	१२
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	३	०	०	०	७॥
	स्वा॰	४	१	१	१॥	२	३	६	०	८	२२॥
	विशा॰	३	१	१	३	१	३	०	०	८	१७
वृश्चिक	विशा	१	१	२	३	१	५	०	७	८	२७
	अनु॰	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	ज्ये॰	४	१	२	३	४	५	०	७	८	३०
धन	मूल	४	१	१	१॥	०	५	०	०	८	१६॥
	पूषा॰	४	१	१	१॥	२	५	६	०	०	१६॥
	उषा॰	१	१	१	१॥	२	५	६	०	८	२४॥
मकर	उषा॰	३	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	श्रव॰	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	धनि॰	२	१	१	१॥	२	॥	०	७	०	१३
कुंभ	धनि॰	२	१	१	१॥	२	॥	०	७	०	१३
	शत॰	४	१	१	१॥	३	॥	०	७	८	२२
	पूभा॰	३	१	१	३	२	॥	६	७	८	२८॥
मीन	पूभा॰	१	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	उभा॰	४	१	१	३	३	५	६	०	०	१९
	रेवती	४	१	१	३	३	५	६	०	८	२७

कन्या—

वर—ज्येष्ठा ४ चरण, वृश्चिक राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व॰	४	१	१	३	३	५	१	०	०	१४
	भर॰	४	१	१	१॥	३	५	०	०	८	१९॥
	कृति	१	१	१	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
वृष॰	कृति॰	३	१	१	१॥	३	३	६	७	८	३०॥
	रोह॰	४	१	१	१॥	२	३	०	७	८	२३॥
	मृग॰	२	१	१	१॥	२	३	१	७	८	२४॥
मि॰	मृग॰	२	१	१	१॥	२	॥	१	०	८	१५
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	०	॥	०	०	०	४
	पुनर॰	३	१	१	१॥	२	॥	१	०	०	७

वर—ज्येष्ठा ४ चरण, वृश्चिक राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	याग
कर्क	पुनर०	१	१	१	१॥	२	४	१	०	०	१०॥
	पुष्य०	४	१	१	३	३	४	१	०	८	२१
	श्ले०	४	३	१	३	२	४	६	०	८	२५
सिंह	मघा	४	१	०	३	२	५	६	७	८	३२
	पूफा०	४	१	०	१॥	२	५	०	७	८	२४॥
	उफा०	१	१	०	१॥	३	५	०	७	०	१७॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	३	॥	०	७	०	१४
	हस्त०	४	१	१	१॥	२	॥	१	७	०	१४
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	२६
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	३	६	०	८	२१॥
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	३	१	०	८	१७॥
	विशा०	३	१	१	१॥	१	३	६	०	८	२१॥
वृ०	विशा०	१	१	२	१॥	१	५	६	७	८	३१॥
	अनु०	४	१	२	३	४	५	१	७	८	३१
	ज्ये०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
धनि०	मूल०	४	१	१	३	०	५	६	०	०	१६
	पूषा०	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२१
	श्रव०	४	१	१	१॥	२	॥	१	७	८	२२
	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	शत०	४	१	१	१॥	३	॥	६	७	०	२०
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	७	०	१३
मीन	पूभा०	१	१	१	१॥	२	५	०	०	०	१०॥
	उषा०	४	१	१	३	३	५	०	०	८	२१
	रेवती	४	१	१	३	३	५	१	०	८	२२

कन्या—

वर—मूल ४ चरण, धन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	३	२	५	१	०	०	१३
	भर०	४	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	कृति०	१	१	१	१।।	२	५	६	०	८	२४।।
वृष०	कृति०	३	१	१	१।।	२	।।	६	०	८	२०
	रोह०	४	१	१	१।।	२	।।	०	०	८	१४
	मृग०	२	१	१	१।।	२	।।	१	०	८	१५
मि०	मृग०	२	१	२	१।।	२	।।	१	७	८	२३
	आर्द्रा	४	१	२	१।।	४	।।	०	७	०	१६
	पुन०	३	१	२	१।।	१	।।	१	७	०	१४
कर्क	पुन०	१	०	१	१।।	१	४	१	०	०	८।।
	पुष्य	४	०	१	१।।	२	४	१	०	८	१७।।
	श्ले०	४	०	१	३	१	४	६	०	८	२३
सिंह	मघा	४	१	०	३	१	५	६	०	८	२४
	पूफा०	४	१	०	३	१	५	०	०	८	१८
	उफा०	१	१	०	१।।	२	५	०	०	०	९।।
कन्या	उफा०	३	१	२	१।।	२	।।	०	७	०	१४
	हस्त०	४	१	२	१।।	२	।।	१	७	०	१५
	चित्रा	२	१	२	१।।	१	।।	६	७	८	२७
तुला	चित्रा	२	१	२	१।।	१	।।	६	७	८	२७
	स्वा०	४	१	२	१।।	२	।।	१	७	८	२३
	विशा०	३	१	२	१।।	१	।।	६	७	८	२७
वृ०	विशा०	१	०	१	१।।	१	५	६	०	८	२३।।
	अनु०	४	०	१	१।।	०	५	१	०	८	१६।।
	ज्ये०	४	०	१	३	०	५	६	०	०	१५
धन०	मूल	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	पूषा०	४	१	२	३	२	५	०	७	८	२८
	उषा०	१	१	१	१।।	२	५	०	७	८	२५।।
मकर	उषा०	३	१	१	१।।	२	३	०	०	८	१६।।
	श्रव०	४	१	१	१।।	२	३	१	०	८	१७।।
	धनि०	२	१	१	१।।	१	३	६	०	८	२१।।

कन्या—

वर—मूल ४ चरण, धन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कुंभ	धनि०	२	१	२	१॥	१	३	६	७	८	२९॥
	शत०	४	१	२	१॥	२	३	६	७	०	२२॥
	पूभा०	३	१	२	१॥	१	३	०	७	०	१५॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	१	५	०	७	०	१५॥
	उभा०	४	०	१	१॥	२	५	०	७	८	२४॥
	रेव०	४	०	१	३	२	५	१	७	८	२७

कन्या—

वर—पूर्वाषाढ़ा ४ चरण, धन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	२	३	२	५	५	०	८	२६
	भर०	४	१	२	३	२	५	६	०	०	१९
	कृति०	१	१	२	३	०	५	०	०	८	१९
वृष०	कृति०	३	१	२	३	०	॥	०	०	८	१४॥
	रोह०	४	१	२	१॥	२	॥	६	०	८	२१
	मृग०	२	१	२	१॥	२	॥	५	०	०	१२
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	५	७	०	१८
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	पुन०	३	१	०	१॥	२	॥	५	७	८	२६
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	२	४	५	०	८	२१
	पुष्य	४	०	१	१॥	०	४	५	०	०	१०॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	४	०	०	८	१५॥
सिंह	मघा	४	१	०	३	२	५	०	०	८	१९
	पूफा०	४	१	०	३	२	५	६	०	०	१७
	उफा०	१	१	०	३	२	५	६	०	८	२५
कन्या	उफा०	३	१	१	३	२	॥	६	७	८	२८॥
	हस्त०	४	१	१	१॥	२	॥	५	७	८	२६
	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	०	१२
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	१	॥	०	७	०	१२
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	॥	५	७	८	१५
	विशा०	३	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०

वर—पूर्वाषाढ़ा ४ चरण, धन राशि

कन्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	१	५	०	०	८	१५॥
	अनु०	४	०	१	१॥	२	५	५	०	०	१४॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
धन०	मूल०	४	१	१	३	२	५	०	७	८	२७
	पूषा०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	उषा०	१	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
मकर	उषा०	३	१	१	३	२	३	६	०	८	२४
	श्रव०	४	१	१	१॥	४	३	५	०	८	२३॥
	धनि०	२	१	१	१॥	२	३	०	०	०	८॥
कुंभ	धनि०	२	१	१	१॥	२	३	०	७	०	१५॥
	शत०	४	१	१	१॥	२	३	०	७	८	२३॥
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
मीन	पूभा०	१	०	२	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
	उभा०	४	०	२	१॥	२	५	६	७	०	२३
	रेवती	४	१	२	१॥	२	५	५	७	८	३०॥

वर—उत्तराषाढ़ा १ चरण, धन राशि

कन्या—			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	२	१॥	२	५	५	०	८	२४॥
	भर०	४	१	२	३	२	५	६	०	८	२७
	कृति०	१	१	२	३	३	५	०	०	०	१४
वृष	कृति०	३	१	२	३	३	॥	०	०	०	९॥
	रोह०	४	१	२	३	०	॥	६	०	०	१२॥
	मृग०	२	१	२	१॥	०	॥	५	०	८	१८
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	०	॥	५	७	८	२४
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	पुन०	३	१	१	१॥	२	॥	५	७	८	२६
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	२	४	५	०	८	२१॥
	पुष्य०	४	०	१	१॥	३	४	५	०	८	२२॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	४	०	०	०	८॥
सिंह	मघा	४	१	०	१॥	२	५	०	०	०	९॥
	पूफा०	४	१	०	३	२	५	६	०	८	२५
	उफा०	१	१	०	३	२	५	६	०	८	२५

कन्या—

वर—उत्तराषाढ़ा १ चरण, धन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	१	१	३	२	।।	६	७	८	२८।।
	हस्त	४	१	१	३	२	।।	५	७	८	२७।।
	चित्रा	२	१	१	१।।	२	।।	०	७	८	२१
तुला	चित्रा	२	१	१	१।।	२	।।	०	७	८	२१
	स्वा०	४	१	१	१।।	२	।।	५	७	०	१८
	विशा०	३	१	१	१।।	२	।।	०	७	०	१३
वृ०	विशा०	१	०	१	१।।	२	५	०	०	०	९।।
	अनु०	४	०	१	१।।	२	५	५	०	८	२२।।
	ज्ये०	४	०	१	१।।	२	५	०	०	८	१७।।
धन०	मूल	४	१	१	१।।	२	५	०	७	८	२५।।
	पूषा०	४	१	२	३	२	५	६	७	८	३४
	उषा०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
मकर	उषा०	३	१	२	३	४	३	६	०	०	१९
	श्रव०	४	१	२	३	२	३	५	०	०	१६
	धनि०	२	१	१	१।।	२	३	०	०	८	१६।।
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१।।	२	३	०	७	८	२३।।
	शत०	४	१	१	१।।	२	३	०	७	८	२३।।
	पूभा०	३	१	१	१।।	२	३	६	७	८	२९।।
मीन	पूभा०	१	०	१	१।।	२	५	६	७	८	३०।।
	उभा०	४	०	१	१।।	२	५	६	७	८	३०।।
	रेवती	४	०	१	१।।	२	५	५	७	०	२१।।

कन्या—

वर—उत्तराषाढ़ा ३ चरण, मकर राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	२	१।।	२	।।	५	७	८	२६
	भर०	४	०	२	३	२	।।	६	७	८	२८।।
	कृति०	१	०	२	३	३	।।	०	७	०	१५।।
वृष०	कृति०	३	१	२	३	३	५	०	०	०	१४
	रोह०	४	१	२	३	०	५	६	०	०	१७
	मृग०	२	१	२	१।।	०	५	५	०	८	२२।।
मि०	मृग०	२	१	१	१।।	०	४	५	०	८	२०।।
	आर्द्रा	४	१	१	१।।	२	४	६	०	८	२३।।
	पुन०	३	१	१	१।।	२	४	५	०	८	२२।।

कन्या—

वर—उत्तराढ़ा ३ चरण, मकर राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कर्क	पुन०	१	०	१	१॥	२	॥	५	७	८	२५
	पुष्य	४	०	१	१॥	३	॥	५	७	८	२६
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१५
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	२	०	०	०	०	३॥
	पूफा०	४	०	०	३	२	०	६	०	८	१९
	उफा०	१	०	०	३	२	०	६	०	८	१९
कन्या	उफा०	३	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	हस्त	४	१	१	३	२	४	५	०	८	२४
	चित्रा	२	१	१	१॥	२	४	०	०	८	१७॥
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	२	५	०	७	८	२५॥
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	५	५	७	०	२२॥
	विशा०	३	१	१	१॥	२	५	०	७	०	१७॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२
	अनु०	४	०	१	१॥	२	॥	५	७	८	२५
	ज्ये०	४	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
धन	मूल	४	०	१	१॥	२	३	०	०	८	१५॥
	पूषा	४	०	१	३	२	३	६	०	८	२३
	उषा०	१	०	२	३	४	३	६	०	०	१८
मकर	उषा०	३	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	श्रव०	४	१	२	३	२	५	५	७	०	२५
	धनि०	२	१	१	१॥	२	५	०	७	८	२५॥
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	शत०	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	५	६	०	८	२४॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	२	३	६	७	८	२८॥
	उभा०	४	०	१	१॥	२	३	६	७	८	२८॥
	रेव०	४	०	१	१॥	२	३	५	७	०	१९॥

कन्या—

वर—श्रवण ४ चरण, मकर राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
			१	२	३	४	५	६	७	८	
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	भरणी	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	कृति०	१	०	१	३	०	॥	०	७	०	११॥
वृष०	कृति०	३	१	१	३	०	५	०	०	०	१०
	रोह०	४	१	१	३	२	५	६	०	०	१८
	मृग०	२	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
मि०	मृग०	२	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	४	६	०	८	२३॥
	पुन०	३	१	१	१॥	२	४	६	०	८	२३॥
कर्क	पुन०	१	०	२	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	पुष्य०	४	०	२	१॥	०	॥	६	७	८	२५
	श्ले०	४	०	२	१॥	२	॥	०	७	०	१३
सिंह	मघा	४	०	१	१॥	२	०	०	०	०	४॥
	पूफा०	४	०	१	१॥	२	०	६	०	८	१८॥
	उफा०	१	०	१	३	२	०	६	०	८	२०
कन्या	उफा०	३	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	हस्त०	४	१	१	३	२	४	६	०	८	२५
	चित्रा	२	१	१	३	१	४	०	०	८	१८
तुला	चित्रा	२	१	१	३	१	५	०	७	८	२६
	स्वा०	४	१	१	१॥	२	५	६	७	०	२३॥
	विशा०	३	१	१	१॥	१	५	०	७	०	१६॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	१	॥	०	७	०	११
	अनु०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
धन०	मूल	४	०	१	१॥	२	३	०	०	८	१५॥
	पूषा०	४	०	१	१॥	४	३	६	०	०	२३॥
	उषा०	१	०	१	३	२	३	६	०	०	१५
मकर	उषा०	३	१	१	३	२	५	६	७	०	२५
	श्रव०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	धनि०	२	१	२	३	२	५	०	७	८	२८

कन्या—

वर—श्रवण ४ चरण, मकर राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कुम्भ	धनि०	२	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	शत०	४	१	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	पूभा०	३	१	१	१॥	२	५	६	०	८	२४॥
मीन	पूभा०	१	०	२	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
	उभा०	४	०	२	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
	रेवती	४	०	२	१॥	२	३	६	७	०	२२॥

कन्या—

वर—धनिष्ठा २ चरण, मकर राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	॥	१	७	८	२०
	भर०	४	०	१	१॥	०	॥	०	७	०	१०
	कृति०	१	०	१	१॥	१	॥	६	७	८	२५
वृष	कृति०	३	१	१	१॥	१	५	६	०	८	२३॥
	रोह०	४	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	मृग०	२	१	१	३	२	५	१	०	०	१३
मि०	मृग०	२	१	१	३	२	४	१	०	०	१२
	आर्द्रा	४	१	१	३	१	४	०	०	८	१८
	पुन०	३	१	१	१॥	२	४	१	०	८	१८॥
कर्क	पुन०	१	०	२	१॥	२	॥	१	७	८	२२
	पुष्य	४	०	२	१॥	१	॥	७	०	८	१३
	श्ले०	४	०	२	१॥	२	॥	६	७	८	२७
सिंह	मघा	४	०	१	१॥	१	०	६	०	८	१७॥
	पूफा०	४	०	१	१॥	१	०	०	०	०	३॥
	उफा०	१	०	१	१॥	१	०	०	०	८	११॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	१	४	०	०	८	१६॥
	हस्त०	४	१	१	३	३	४	१	०	८	२१
	चित्रा	२	१	१	३	२	४	६	०	०	१७
तुला	चित्रा	२	१	१	३	२	५	६	७	०	२५
	स्वाती	४	१	१	३	३	५	१	७	८	२९
	विशा०	३	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१।

वर—धनिष्ठा २ चरण, मकर राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
वृ०	विशा०	१	०	१	१।।	२	।।	६	७	८	२६
	अनु०	४	०	१	१।।	२	।।	१	७	०	१३
	ज्ये०	४	०	१	१।।	२	।।	६	७	८	२६
धन	मूल	४	०	१	१।।	१	३	६	०	८	२०।।
	पूषा०	४	०	१	१।।	२	३	०	०	०	७।।
	उषा०	१	०	१	१।।	२	३	०	०	८	१५।।
मकर	उषा०	३	१	१	१।।	२	५	०	७	८	२५।।
	श्रव०	४	१	२	३	२	५	१	७	८	२९
	धनि०	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
कुंभ	धनि०	२	१	१	३	४	५	६	०	०	२०
	शत०	४	१	१	३	१	५	६	०	८	२५
	पूभा०	३	१	१	१।।	४	५	०	०	८	२०।।
मीन	पूभा०	१	०	२	१।।	४	३	०	७	८	२५।।
	उभा०	४	०	२	१।।	१	३	०	७	०	१४।।
	रेवती	४	०	२	१।।	०	३	१	७	८	२२।।

वर—धनिष्ठा २ चरण, कुंभ राशि

कन्या—

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१।।	१	।।	१	७	८	२०
	भर०	४	०	१	१।।	०	।।	०	७	०	१०
	कृति०	१	०	१	१।।	१	।।	६	७	८	२५
वृष०	कृति०	३	०	१	१।।	१	५	६	७	८	२९।।
	रोह०	४	०	१	३	२	५	०	७	८	२६
	मृग०	२	०	१	३	२	५	१	७	०	१९
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	४	१	०	०	१३
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	४	०	०	८	१९
	पुन०	३	१	२	१।।	२	४	१	०	८	१९।।
कर्क	पुन०	१	०	१	१।।	२	।।	१	०	८	१४
	पुष्य	४	०	१	१।।	१	।।	१	०	०	५
	श्लें०	४	१	१	१।।	२	।।	६	०	८	१९
सिंह	मघा	४	०	०	१।।	१	०	६	७	८	२३।।
	पूफा०	४	०	०	१।।	१	०	०	७	०	९।।
	उफा०	१	०	१	१।।	१	०	०	७	८	१८।।

वर—धनिष्ठा २ चरण, कुम्भ राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	१	४	०	०	८	१६॥
	हस्त०	४	०	२	३	३	४	१	०	८	२१
	चित्रा	२	०	२	३	२	४	६	०	०	१७
तुला	चित्रा	२	१	२	३	२	५	६	०	०	१९
	स्वा०	४	१	२	३	३	५	१	०	८	२३
	विशा०	३	१	२	१॥	२	५	६	०	८	२५॥
वृ०	विशा०	१	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
	अनु०	४	०	१	१॥	२	॥	१	७	०	१३
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	६	७	८	२६
धन०	मूल	४	०	२	१॥	१	३	६	७	८	२८॥
	पूषा०	४	०	१	१॥	२	३	०	७	०	१४॥
	उषा०	१	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२३॥
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	श्रव०	४	०	१	३	२	५	१	०	८	२०
	घनि०	२	०	१	३	४	५	६	०	०	१९
कुंभ	धनि०	२	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	शत०	४	१	२	३	१	५	६	७	८	३३
	पूभा०	३	१	२	१॥	४	५	०	७	८	२८॥
मीन	पूभा०	१	०	१	१॥	४	३	०	०	८	१७॥
	उभा०	४	०	१	१॥	१	३	०	०	०	६॥
	रेवती	४	०	१	१॥	०	३	१	०	८	१४॥

वर—शतभिषा ४ चरण, कुम्भ राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	३ योनि	४ ग्रहमैत्री	५ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	४	॥	१	७	०	१५
	भर०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	८	२०
	कृति०	१	०	१	१॥	३	॥	६	७	८	२७
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	३	५	६	७	८	३१॥
	रोह०	४	०	[illegible]	१॥	३	५	०	७	८	३४॥
	मृग०	२	०	१	३	२	५	१	७	८	२७
मि०	मृग०	२	१	२	३	२	४	१	०	८	२१
	आर्द्रा	४	१	२	३	२	४	०	०	०	१२
	पुन०	३	१	२	३	३	४	१	०	०	१४

कन्या—

वर—शतभिषा ४ चरण, कुम्भ राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कर्क	पुन०	१	०	१	३	३	॥	१	०	०	८॥
	पुष्य०	४	०	१	१॥	३	॥	१	०	८	१५
	श्ले०	४	०	१	१॥	३	॥	६	०	८	२०
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	३	०	६	७	८	२५॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	३	०	०	७	८	१९॥
	उफा०	१	०	०	१॥	३	०	०	७	०	११॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	३	४	०	०	०	१०॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	०	४	१	०	०	८॥
	चित्रा	२	०	२	३	१	४	६	०	८	२४
तुला	चित्रा	२	१	२	३	१	५	६	०	८	२६
	स्वा०	४	१	२	३	०	५	१	०	८	२०
	विशा०	३	१	२	३	१	५	६	०	८	२६
वृ०	विशा०	१	०	१	३	१	॥	६	७	८	२६॥
	अनु०	४	०	१	१॥	३	॥	१	७	८	२२
	ज्ये०	४	०	१	१॥	३	॥	६	७	०	१९
धन	मूल	४	०	२	१॥	२	३	६	७	०	२१॥
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	३	०	७	८	२३॥
	उषा०	१	०	१	१॥	२	३	०	७	८	२२॥
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	०	०	८	१७॥
	श्रव०	४	०	१	१॥	२	५	१	०	८	१८॥
	धनि०	२	०	१	३	१	५	६	०	८	२४
कुम्भ	धनि०	२	१	२	३	१	५	६	७	८	३३
	शत०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	पूभा०	३	१	२	३	१	५	०	७	०	१९
मीन	पूभा०	१	०	१	३	१	३	०	०	०	८
	उभा०	४	०	१	१॥	३	३	०	०	८	१६॥
	रेवती	४	०	१	१॥	२	३	१	०	८	१६॥

कन्या—

वर—पूर्व भाद्रपद ३ चरण, कुंभ राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	०	१	१॥	१	॥	५	७	०	१६
	भर०	४	०	१	१॥	०	॥	६	७	८	२४
	कृति०	१	०	१	१॥	१	॥	०	७	८	१९
वृष०	कृति०	३	०	१	१॥	१	५	०	७	८	२३॥
	रोह०	४	०	१	१॥	२	५	६	७	८	३०॥
	मृग०	२	०	१	१॥	२	५	५	७	८	२९॥
मि०	मृग०	२	१	२	१॥	२	४	५	०	८	२३॥
	आर्द्रा	४	१	२	३	१	४	६	०	०	१७
	पुन०	३	१	२	३	२	४	५	०	०	१७
कर्क	पुन०	१	०	१	३	२	॥	५	०	०	११॥
	पुष्य	४	०	१	३	१	॥	५	०	८	१८॥
	श्ले०	४	०	१	१॥	२	॥	०	०	८	१३
सिंह	मघा	४	०	०	१॥	१	०	०	७	८	१७॥
	पूफा०	४	०	०	१॥	१	०	६	७	८	२३॥
	उफा०	१	०	०	१॥	१	०	६	७	०	१५॥
कन्या	उफा०	३	०	२	१॥	१	४	६	०	०	१४॥
	हस्त०	४	०	२	१॥	३	४	५	०	०	१५॥
	चित्रा	२	०	२	१॥	२	४	०	०	८	१९॥
तुला	चित्रा	२	१	२	१॥	२	५	०	०	८	१९॥
	स्वाती	४	१	२	३	३	५	५	०	८	२७
	विशा०	३	१	२	३	२	५	०	०	८	२१
वृ०	विशा०	१	०	१	३	२	॥	०	७	८	२१॥
	अनु०	४	०	१	३	२	॥	५	७	८	२६॥
	ज्ये०	४	०	१	१॥	२	॥	०	७	०	१२
धन	मूल	४	०	२	१॥	१	३	०	७	०	१४॥
	पूषा०	४	०	२	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
	उषा०	१	०	१	१॥	२	३	६	७	८	२८॥
मकर	उषा०	३	०	१	१॥	२	५	६	०	८	२३॥
	श्रव०	४	०	१	१॥	२	५	५	०	८	२२॥
	घनि०	२	०	१	१॥	४	५	०	०	८	१९॥

कन्या—

वर—पूर्व भाद्रपद ३ चरण, कुंभ राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कुंभ	धनि०	२	१	२	१॥	४	५	०	७	८	२८॥
	शत०	४	१	२	३	१	५	०	७	०	१९
	पूभा०	३	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
मीन	पूभा०	१	०	१	३	४	३	६	०	०	१७
	उभा०	४	०	१	२	१	३	६	०	८	२२
	रेवती	४	०	१	१॥	०	३	५	०	८	१८॥

कन्या—

वर—पूर्व भाद्रपद १ चरण, मीन राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	१	५	५	०	०	१४॥
	भर०	४	१	१	१॥	०	५	६	०	८	२२॥
	कृति०	१	१	१	१॥	१	५	०	०	८	१७॥
वृष०	कृति०	३	१	१	१॥	१	॥	०	७	८	२०
	रोह०	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	५	७	८	२६
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	२	॥	५	७	८	२६
	आर्द्रा	४	१	१	३	१	॥	६	७	०	१९॥
	पुन०	३	१	१	३	२	॥	५	७	०	१९॥
कर्क	पुन०	१	१	२	३	२	४	५	०	८	१७
	पुष्य	४	१	२	३	१	४	५	०	८	२४
	श्ले०	४	१	२	१॥	२	४	०	०	८	१८॥
सिंह	मघा	४	१	१	१॥	१	५	०	०	८	१७॥
	पूफा०	४	१	१	१॥	१	५	६	०	०	२३॥
	उफा०	१	१	१	१॥	१	५	६	०	०	१५॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	१	॥	६	७	०	१८
	हस्त०	४	१	१	१॥	३	॥	५	७	०	१९
	चित्रा	२	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२१
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	२	॥	०	०	८	१४
	स्वा०	४	१	१	३	३	॥	५	०	८	२१॥
	विशा०	३	१	१	३	२	५	०	०	८	१५॥

कन्या—

वर—पूर्व भाद्रपद १ चरण, मीन राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
वृश्चि०	विशा०	१	१	१	३	२	५	०	०	८	२०
	अनु०	४	१	१	३	२	५	५	०	८	२५
	ज्ये०	४	१	१	१॥	२	५	०	०	०	१०॥
धन०	मूल०	४	१	१	१॥	१	५	०	७	०	१६॥
	पूषा०	४	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	३	६	७	८	२९॥
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	३	५	७	८	२९॥
	धनि०	२	१	२	१॥	४	३	०	७	८	२६॥
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	४	३	०	०	८	१८॥
	शत०	४	१	१	३	१	३	०	०	०	९
	पूभा०	३	१	१	३	४	३	६	०	०	१८
मीन	पूभा०	१	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	उभा०	४	१	२	३	१	५	६	७	८	३३
	रेवती	४	१	२	१॥	०	५	५	७	८	२९॥

कन्या—

वर—उत्तर भाद्रपद ४ चरण, मीन राशि

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	१॥	३	५	५	॥	८	२५
	भर०	४	१	१	१॥	३	५	६	॥	०	१७॥
	कृत्ति०	१	१	१	१॥	३	५	०	॥	८	१९॥
वृष०	कृत्ति०	३	१	१	१॥	३	॥	०	७	८	२२
	रोहि०	४	१	१	१॥	१	॥	६	७	८	२६
	मृग०	२	१	१	१॥	१	॥	५	७	०	१७
मि०	मृग०	२	१	१	१॥	१	॥	५	७	०	१७
	आर्द्रा	४	१	१	१॥	२	॥	६	७	८	२७
	पुन०	३	१	१	३	२	॥	५	७	८	२७॥
कर्क	पुन०	१	१	२	३	२	४	५	०	८	२५
	पुष्य०	४	१	२	३	२	४	५	०	०	१८
	श्ले०	४	१	२	३	२	४	०	०	८	२०
सिंह	मघा	४	२	१	१॥	२	५	०	०	८	१८॥
	पूफा०	४	१	१	१॥	२	५	६	०	०	१६॥
	उफा०	१	१	१	१॥	४	५	६	०	८	२६॥

वर—उत्तर भाद्रपद ४ चरण, मीन राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
कन्या	उफा०	३	१	१	१।।	४	।।	६	७	८	२९
	हस्त	४	१	१	१।।	३	।।	५	७	८	२७
	चित्रा	२	१	१	१।।	०	।।	०	७	०	११
तुला	चित्रा	२	१	१	१।।	०	।।	०	०	०	४
	स्वा०	४	१	१	१।।	३	।।	५	०	८	२०
	विशा०	३	१	१	३	०	।।	०	०	८	१३।।
वृश्चि०	विशा०	१	१	१	३	०	५	०	०	८	१८
	अनु०	४	१	१	३	३	५	५	०	०	१८
	ज्ये०	४	१	१	३	३	५	०	०	८	२१
धनि०	मूल	४	१	१	१।।	२	५	०	७	८	२५।।
	पूषा०	४	१	१	१।।	२	५	६	७	०	२३।।
	उषा०	१	१	१	१।।	२	५	६	७	८	३१।।
मकर	उषा०	३	१	१	१।।	२	३	६	७	८	२९।।
	श्रव०	४	१	२	१।।	२	३	५	७	८	२९।।
	धनि०	२	१	२	१।।	१	३	०	७	०	१५।।
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१।।	१	३	०	०	०	७।।
	शत०	४	१	१	१।।	३	३	०	०	८	१७।।
	पूभा०	३	१	१	३	१	३	६	०	८	२३
मीन	पूभा०	१	१	२	३	१	५	६	७	८	३३
	उभा०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८
	रेवती	४	१	२	३	३	५	५	७	८	३४

वर—रेवती ४ चरण, मीन राशि

कन्या—

राशि	नक्षत्र	चरण	१ वर्ण	२ वश्य	३ तारा	४ योनि	५ ग्रहमैत्री	६ गणमैत्री	७ भकूट	८ नाड़ी	योग
मेष	अश्व०	४	१	१	३	२	५	६	०	८	२६
	भर०	४	१	१	१।।	४	५	६	०	८	२६।।
	कृति०	१	१	१	१।।	३	५	०	०	०	११।।
वृष०	कृति०	३	१	१	१।।	३	।।	०	७	०	१४
	रोह०	४	१	१	१।।	२	।।	६	७	०	१९
	मृग०	२	१	१	१।।	२	।।	६	७	८	२७
मि०	मृग०	२	१	१	१।।	२	।।	६	७	८	२७
	आर्द्रा	४	१	१	१।।	२	।।	६	७	८	२७
	पुन०	३	१	१	१।।	३	।।	६	७	८	२८

कन्या—

वर—रेवती ४ चरण, मीन राशि

			१	२	३	४	५	६	७	८	
राशि	नक्षत्र	चरण	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्रहमैत्री	गणमैत्री	भकूट	नाड़ी	योग
कर्क	पुन०	१	१	२	१॥	३	४	६	०	८	२५॥
	पुष्य०	४	१	२	३	३	४	६	०	८	२७
	श्ले०	४	१	२	३	२	४	०	०	०	१३
सिंह	मघा	४	१	१	३	३	५	०	०	०	१३
	पूफा०	४	१	१	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
	उफा०	१	१	१	१॥	३	५	६	०	८	२५॥
कन्या	उफा०	३	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	२८
	हस्त०	४	१	१	१॥	३	॥	६	७	८	२८
	चित्रा	२	१	१	१॥	२	॥	०	७	८	२१
तुला	चित्रा	२	१	१	१॥	२	॥	०	०	८	१४
	स्वा०	४	१	१	१॥	३	॥	६	०	०	१३
	विशा०	३	१	१	१॥	२	॥	०	०	०	६
वृ०	विशा०	१	१	१	१॥	२	५	०	०	०	१०॥
	अनु०	४	१	१	३	३	५	६	०	८	२७
	ज्ये०	४	१	१	३	२	५	०	०	८	२१
धन०	मूल	४	१	१	३	२	५	०	७	८	२७
	पूषा०	४	१	१	१॥	२	५	६	७	८	३१॥
	उषा०	१	१	१	१॥	२	५	६	७	०	२३
मकर	उषा०	३	१	१	१॥	२	३	६	७	०	२१॥
	श्रव०	४	१	२	१॥	२	३	६	७	०	२२॥
	धनि०	२	१	२	१॥	०	३	०	७	८	२२॥
कुम्भ	धनि०	२	१	१	१॥	०	३	०	०	८	१४॥
	शत०	४	१	१	१॥	३	३	०	०	८	१६॥
	पूभा०	३	१	१	१॥	०	३	६	०	८	२०॥
मीन	पूभा०	१	१	२	१॥	०	५	६	७	८	३०॥
	उभा०	४	१	२	३	३	५	६	७	८	३५
	रेव०	४	१	२	३	४	५	६	७	०	२८

—०—

सचित्र ज्योतिष-शिक्षा

बी० एल० ठाकुर

ज्योतिष के अधिकतर ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। किन्तु संस्कृत से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए इस माध्यम से विषय का अध्ययन कठिन है। इसलिए हिन्दी में एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता थी, जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति ज्योतिष का सरलता से अध्ययन कर सके।

इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत पुस्तक सात खण्डों में प्रकाशित की गई है। ये सात खण्ड प्रारम्भिक ज्ञान, गणित, फलित, वर्ष-फल, प्रश्न, मुहूर्त्त तथा संहिता खण्ड हैं।

प्रारम्भिक ज्ञान खण्ड : इस खण्ड के अध्ययन से ज्योतिष-सम्बन्धी बहुत-सी बातें समझ में आ जाती हैं, जैसे किसी के जन्म का सम्वत्, मास, पक्ष, दिन, समय आदि ज्ञात न हो, तो केवल कुण्डली-चक्र देखकर सभी बातें बताई जा सकती हैं। बिना पंचाङ्ग के तिथि, नक्षत्र, करण, वार, सूर्य, चन्द्र आदि स्पष्ट बताए जा सकते हैं।

गणित खण्ड : इसके दो भाग हैं। इसमें पूरी जन्मपत्नी बनाने की विधि है। प्रत्येक गणित करने की सोदाहरण रीति देकर पूरी गणित-प्रक्रिया दी गई है।

फलित खण्ड : प्रथम भाग : इसमें फलित-सम्बन्धी बातें दी गई हैं और महापुरुषों की कुण्डलियों से उदाहरण देकर समझाया गया है।

द्वितीय भाग : इसमें ग्रहों की दृष्टि, योग, वर्ग, स्थान आदि ज्योतिष के आवश्यक विषयों पर सूक्ष्म विवेचन किया गया है।

तृतीय भाग : इसमें विस्तृत दशा-विचार के साथ भाग्य, धर्म, कीर्ति, विद्या, बुद्धि, सुख-दुःख आदि विषयों पर विचार प्रकट किया गया है।

वर्ष-फल खण्ड : इसमें वर्ष-फल बनाने का पूरा गणित उदाहरण देकर समझाया गया है।

प्रश्न-खण्ड : इसमें प्रश्न-ज्योतिष सम्बन्धी बातें दी गई हैं और किसी प्रश्न का उत्तर देने का अभ्यास उदाहरण देकर समझाया गया है।

मुहूर्त्त-खण्ड : इसमें मुहूर्त्त-सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। शुभाशुभ मुहूर्त्तों का विवरण दिया गया है।

संहिता-खण्ड : इसमें राष्ट्रीय ज्योतिष-सम्बन्धी विषयों पर विस्तार से विचार किया गया है।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली • मुम्बई • कलकत्ता • चेन्नई • बंगलौर

पुणे • वाराणसी • पटना

मूल्य: रु० ९०